मिथिला पारिजात मञ्जरी

डॉ. रंगनाथ दिवाकर

मिथिला पारिजात मञ्जरी

(मैथिली आलेख-संग्रह)

डॉ. रंगनाथ दिवाकर

अनुप्रास पेपरबैक्स

जय-राम शोध संस्थान, सुलतानपुरक तत्त्वावधानमे मनोलिता प्रकाशन, दरभंगा/पटना प्रस्तुत करैत अछि... 'मिथिला पारिजात मञ्जरी'

अनुप्रास पेपरबैक्स
ISBN : 978-93-91371-56-2

प्रकाशक : अनुप्रास प्रकाशन
कार्यालय : इन्द्र परिसर, लहेरियागंज,
मधुबनी, मिथिला (बिहार) 847 211
वेबसाइट : www.anuprasprakashan.com
ईमेल : info@anuprasprakashan.com
anuprasprakashan@gmail.com
मोबाइल : +91 8862977228

मिथिला पारिजात मञ्जरी
(मैथिली आलेख-संग्रह)

© **डॉ. रंगनाथ दिवाकर**

पहिल संस्करण : 2024
मूल्य : ₹ 300/-

पोथी प्राप्तिक स्थान :
• 102,अनंत विकास अपार्टमेंट,
वेदनगर, रुकनपुरा, पटना-800014
• श्री मनोज कुमार चौधरी
न्यू बलभद्रपुर, लहेरियासराय,
दरभंगा (मिथिला), बिहार- 846001
मोबाइल : +91 9155221944 /8709610336

आवरण : अनुप्रास इंडिजाइन
थॉमसन प्रेस इंडिया लिमिटेड, नयी दिल्ली द्वारा मुद्रित

Mithila Parijat Manjari
by **Dr. Rangnath Divakar**
Published by ANUPRAS PRAKASHAN
First Edition : 2024
Price : ₹ 300/-

समर्पण

अपन जीवन यात्रामे असफलताकेँ सफलताक सोपान मानि निरन्तर संघर्षरत कर्मयोगी, प्रगतिकामी प्रयोगधर्मी, गाछी-बिरछीक संरक्षक प्रकृतिप्रेमी, निष्णात् तबला वादक आ दक्ष चिकित्सक पूज्य छोटका बाबू ***डॉ. गोविन्द नारायण चौधरी***

(अवतरण 1931, गोलोकप्रयाण 21 नवम्बर 2016)क

श्रीचरणमे हमर ई

मिथिला पारिजात मञ्जरी *रूपी पुष्प*

सादर समर्पित।

(रंगनाथ दिवाकर)

विषयानुक्रम

1. मनोलय 09
2. काव्यमे सीताक चित्रण 13
3. के स्नेहलता ? 24
4. मैथिलीक कालिदास आचार्य सुरेन्द्र झा 'सुमन' 38
5. कविपंचानन विजय नारायण मिश्र 'प्रवासी साहित्यालंकार' 50
6. मिथिला विमर्शक पुरोधा पं. सहदेव झा 66
7. मैथिल गांधी कारोबाबू 75
8. मैथिलीक अद्‌भुत अभियानी जटाशंकर दास 80
9. निष्काम कर्मयोगी प्रो. अखिलेश दास 86
10. मैथिल बियाहमे जयमाल प्रसंग 90
11. श्वेतांग सभक स्याह आत्मा 99
12. तिलकेश्वरधाम : एक अध्ययन यात्रा 109
13. सिल्डा यात्राक बहन्ने खुदीरामक स्मरण 120
14. मिथिलाक इतिहासमे कन्दर्पीघाट 128
15. शंकर-मंडन शास्त्रार्थ : एक पुनर्मूल्यांकन 144
16. भारतीय संस्कृतिमे जातीय जीवन 156
17. विकलजीक रेडियो नाटक चित्रप्रिया, दासी आ चोखगर खोँच : रेडियो नाट्य जगत् केर त्रिवेणी 'चोखगर खोँच' 166

मनोलय

24 अप्रैल! हमरा सभक जीवनमे एहि दिनक विचित्र महत्त्व अछि। 2014मे आजुक दिन पितृहीन भेल रही। किछु सुझा नहि रहल छल। औनाइत रही, लागए जेना जीवनमे सगरो अन्हरिया पसरि गेल अछि। की करी की नहि किछु फुरा नहि रहल छल। फेर हुनके नामक दीप हमरा सभक पथ-प्रदर्शक भेल। बिछोहकेँ उचित दिशामे मोड़ि ओहिसँ प्रेरणा लेल जा सकैछ। ई प्रेरणा असीम आनन्दक अक्षय स्त्रोत सेहो भऽ सकैछ। जीवनक एहि रहस्यसँ साक्षात्कार एक अनिर्वचनीय अनुभूति दैत अछि। आब हमसब उत्साहपूर्वक हुनक पुण्यतिथिपर सारस्वत समारोहमे हुनका स्मरण करैत छी। विषादसँ उत्साह धरिक एहि यात्रामे परिवार-समाज, सर-कुटुम्ब, इष्ट-मित्र, हित-अपेक्षित सभक संग समयक सेहो महत्त्वपूर्ण योगदान रहैछ। हम स्वयंकेँ बड़भागी मानैत छी जे हमरा सभक संग भेटल आ प्रतिवर्ष हुनक पुण्यतिथिपर समारोहपूर्वक हमसब हुनक सारस्वत तर्पण करैत छी।

2014मे पूज्य पिताक महाप्रयाणक बाद वर्ष 2015मे 24 अप्रैलकेँ मधुबनीक माध्यमिक शिक्षक संघ भवनमे मैथिली कथासंग्रह 'भखरैत नील रंग'क लोकार्पण उदयचन्द्र झा विनोद सहित मधुबनीक साहित्यिक-सांस्कृतिक व्यक्तित्व सभक जुटानमे भेल छल। 24 अप्रैल 2016केँ अपरिहार्य कारणवश मात्र स्मरणांजलि देल गेल। 24 अप्रैल 2017केँ गाँधी संग्रहालय, पटनाक सभागारमे अनुज डॉ. अमरनाथक मैथिली उपन्यास 'सिनुरिया आमक गाछ' केर लोकार्पण राजनीतिमे सन्त पूर्व मान. मंत्री श्री राम लषण राम 'रमण'जीक कर-कमलसँ भेल। 24 अप्रैल 2018केँ शुद्ध कविताक अंतिम स्वर कविपंचानन विजय नारायण मिश्र 'प्रवासी साहित्यालंकार'क एकमात्र काव्यसंकलन 'प्रवासी प्रतिबिम्ब'क लोकार्पण गजहरा गाममे हुनके कर-कमलसँ भेल। एहि वर्ष जय-राम शोध संस्थान, सुलतानपुर अस्तित्वमे आएल आ सद्गृहस्थ सन्त जगन्नाथ चौधरी शोध सम्मान शुरू भेल। पहिल सम्मान डॉ. नरेश कुमार 'विकल'जीकेँ भारतीय साहित्यकार

संसद, समस्तीपुरक समारोहमे दि. 21 जून 2018कैं पूर्व गृहसचिव श्री जियालाल आर्यक कर-कमलसँ प्रदान कयल गेल।

24 अप्रैल 2019कैं गाम सुलतानपुरमे पूज्य पिताक पाँचम पुण्यतिथिपर आयोजित समारोहमे हुनक समाधि स्थलपर निर्मित 'जगन्नाथ स्मृति' आ हमर पोथी 'सुलतानपुर सौरभ'क अनावरण सुप्रसिद्ध कविद्वय श्री उदयचंद्र झा 'विनोद' आओर डॉ. नरेश कुमार 'विकल'क कर-कमलसँ भेल। समारोहमे श्री भैरव लाल दासकैं सद्गृहस्थ सन्त जगन्नाथ चौधरी शोध सम्मानसँ अलंकृत कयल गेल। हमर गाम सुलतानपुरक प्रथम अमर शहीद सुरेश रायक वीरमाता श्रीमती प्रभा देवीक सम्मान भेल। उपस्थित जनसमुदाय अपन करतल ध्वनिसँ अमर शहीद सुरेश रायक प्रति सम्मान प्रदर्शित कयलनि। श्री उदय चन्द्र झा विनोदजीक अध्यक्षतामे आयोजित कविगोष्ठीमे हुनका अतिरिक्त सर्वश्री डॉ. नरेश कुमार विकल, प्रीतम कुमार निषाद, अर्जुन कविराज आ सुरेन्द्र शैलक काव्यपाठ भेल।

कोरोना कारणेँ 2020 आ 2021मे कोनो प्रकारक समारोह नहि भेल मात्र हुनक स्मरण कयल गेल। 24 अप्रैल 2022कैं मिथिलारत्न डॉ प्रभाकर पाठकजीक अध्यक्षतामे आयोजित समारोहमे डॉ. महेन्द्र नारायण रामकैं सद्गृहस्थ सन्त जगन्नाथ चौधरी शोध सम्मान देल गेल। सद्यः प्रकाशितपोथी 'महाकविक महाप्रयाण' (डॉ. रंगनाथ दिवाकर), 'शान्ति निबन्धावली' (आचार्य पं. महेश झा) आ 'मिथिला गौरव प्रतीक कन्दर्पी' (डॉ. रंगनाथ दिवाकर)क दोसर संस्करण केर लोकार्पण भेल। श्री उदय चन्द्र झा विनोदजीक अध्यक्षतामे आयोजित कवि सम्मेलनमे हुनका अतिरिक्त सर्वश्री जय कृष्ण पाठक, सुरेन्द्र शैल, डॉ. महेन्द्र नारायण राम आ दीप नारायण काव्यपाठ कयलनि। 24 अप्रैल 2023कैं पं. (डॉ.) शशिनाथ झाक अध्यक्षता आ पं. डॉ. जगदीश मिश्रक गरिमामय उपस्थितिमे डॉ. रमानन्द झा 'रमण'जीकैं सद्गृहस्थ सन्त जगन्नाथ चौधरी शोध सम्मानसँ अलंकृत कयल गेल। एहि बेरसँ पूज्य पिताक 10म पुण्यतिथिपर शुद्ध कवितापर एक नव पुरस्कार 'वासुदेव-गोविन्द काव्य शिरोमणि सम्मान' शुरू भेल अछि। जय-राम शोध संस्थान, सुलतानपुरक पुरस्कार विषयक त्रि सदस्यीय चयन समिति सुप्रसिद्ध भाषाविज्ञानी आ अन्तरराष्ट्रीय शोध विद्वान् प्रो. रामावतार यादवजीकैं सद्गृहस्थ सन्त जगन्नाथ चौधरी शोध सम्मान आ अकविताक घटाटोप अन्हरियामे प्रभविष्णु सुच्चा कवि श्री शंकर मधुपांशजीकैं प्रथम वासुदेव-गोविन्द काव्य शिरोमणि सम्मानसँ अलंकृत करबाक निर्णय लेलक।

एहि आलेख-संग्रहमे कुल 16टा आलेख संकलित भेल अछि। प्राय: सभटा आलेख यत्र-तत्र पठित वा प्रकाशित अछि। पूर्व प्रकाशित/पठित आलेखमे यत्किंचित् परिमार्जन भेल अछि। आलेख कविपंचानन विजय नारायण मिश्र 'प्रवासी साहित्यालंकार' हुनक एकमात्र प्रकाशित काव्य संकलन 'प्रवासी प्रतिबिम्ब'क सम्पादकीयपर आधारित अछि। आलेख विकलजीक 'चोखगर खोँच' हुनक पोथीक भूमिकापर आश्रित अछि आ 'भारतीय संस्कृतिमे जातीय जीवन' डॉ. महेन्द्र नारायण रामक एहि नामक पूर्व प्रकाशित पोथीक आमुखसँ लेल गेल अछि। यद्यपि आलेख सभकेँ अद्यतन करबाक प्रयास सेहो भेल अछि। एहि संकलनमे निबंधकेँ आलेख बनएबाक प्रयास भेल अछि एहि प्रयासमे कहाँ धरि सफलता भेटल अछि ई हम सुधी पाठके सभपर छोड़ैत छी। कोनो रचना अपन परिचय स्वयं दियए यैह उचित।

दीप नारायणजी तऽ आब हमरा सभक समाङ भऽ गेल छथि। तथापि हुनक परिष्कृत रूचि, सौन्दर्यशास्त्रीय दृष्टि, सुन्दरसँ सुन्दरतर आ सुन्दरतम करबाक हुनक अथक परिश्रमक लेल आशीर्वाद दैत छी।

हम ओहि समस्त महानुभावक प्रति विनयावनत छी जनिक कोनो सामग्री (लिखित, मौखिक वा अन्तर्जालपर उपलब्ध)क उपयोग कयलहुँ। पाथेयसँ सम्बलित कएनिहार एहन समस्त श्रेष्ठजनकेँ धन्यवाद सहित आभार प्रकट करैत छी।

कोनो त्रुटि, कमी वा अशुद्धिक लेल क्षमाप्रार्थी छी। सुधीजन संकेत अवश्य करथि से विनम्र निवेदन।

(रंगनाथ दिवाकर)

सद्‌गृहस्थ सन्त जगन्नाथ चौधरी महाप्रयाण दिवस, 2024

***जय-राम**, सुलतानपुर*

24 अप्रैल 2024

काव्यमे सीताक चित्रण

जाहि जगहपर जगज्जननी जानकी प्रकट भेलीह ओहि परमपुनीत धरतीकेँ नमन! सीताक धरतीपर सीता विषयक विमर्शक सौभाग्य देबाक लेल साहित्य अकादेमीक प्रति आभार प्रकट करैत छी।

भूमिक गर्भसँ सिराउरसँ उत्पन्न आ फेर भूमिमे समा गेनिहारि सीताक अनुपम चरित्रक कथा सामान्य सीतासँ जगज्जननी जानकी बनबाक कथा थिक। विश्व वाङ्मयमे एहन कोनो नारी चरित्र नहि छथि जनिकासँ जानकी चरित्रक तुलना कएल जा सकए। यूनान, मिस्र आ रोमक जे पौराणिक देवी सभ छथि ओहि सभमेसँ केओ सीताक समान नहि छथि। अरिन्नीति सूर्यक, डायोन भविष्यवाणीक आ गजा धरतीक देवी छथि मुदा कोइ सीता समान नहि छथि। एफ्रोडाइट, नेफरतीति, क्लियोपैट्रा, हेलेन प्रभृति नारी अनिंद्य सुन्दरी अवश्य छथि मुदा ओ सब सेहो सौन्दर्यमे सीताक समता नहि कऽ सकैत छथि। सौन्दर्यक संग जे शुचिताक मानदंड अपेक्षित अछि ओहिमे सीता हिनका सभसँ बहुत आगू छथि। रोमन आधिपत्यकेँ चुनौती देनिहारि बाउडिका, असीरियाक योद्धा रानी सेमिरामिस, मिस्रक सत्ता प्राप्त कऽ रोमक प्रतिरोध केनिहारि जेनोबिया, सय सालक युद्धमे विजयश्री दिएनिहारि आ मृत्युक लगभग पाँच सय वर्ष बाद सामान्य किसान कन्यासँ देवी रूपमे मान्य जीन डी' आर्क प्रभृति सम्मानित योद्धा नारी पात्र सभसँ सीता श्रेष्ठ छथि। हिनका सभक अन्त गरिमामय नहि रहल। पराजय आ कारागार यैह नियति रहल। भारतीय वाङ्मयमे लक्ष्मी, पार्वती, राधा, द्रौपदी आदि चरित्र सेहो सीता चरित्रक धवलताक समता नहि प्राप्त करैत छथि। द्रौपदी छोड़ि आन किनको सीता जकाँ कष्टो नहि भोगए पड़ल। द्रौपदी यज्ञाग्निसँ उत्पन्न छथि, अपन अपमानक प्रतिशोध लैत छथि

मुदा सीता तऽ सेहो नहि करैत छथि। समस्त दुख-तकलीफ, कष्ट, लांक्षण, मिथ्या कलंक, परित्यागक दंशकेँ अपन नियति मानि सहि जाइत छथि। भूमिजाक एक नाम तँ सर्वंसहा अछि। सर्वंसहा सीताक एहने चरित्र लोकगीत, लोकगाथा वा शिष्ट साहित्यमे, खंडकाव्यसँ महाकाव्य धरिमे अभरल अछि।

मैथिली काव्यमे सीताक चित्रण केर विश्लेषणसँ दू धारा स्पष्ट होइत अछि। पहिल जाहिमे सीता श्रीरामक अर्द्धांगिनी छथि, शक्ति स्वरूपा छथि। एहिमे 'जैं राम तैं सीता'क पारम्परिक स्वर अछि। दोसर धारामे सीता सामान्य स्त्री, शौर्यवती, शीलवती, धैर्यवती, शिक्षिका, अभिभावक इत्यादि रूपमे चित्रित छथि। एहि धाराक मूल स्वर रामपर सीताक अधिमान दैत अछि।

आइ एहि बातक हम संक्षिप्त चर्च अवश्य करए चाहब जे सीताक नैहर मिथिलामे सीता-राम विषयक काव्य रचनामे सहस्राब्दी किएक गुदश्त भऽ गेल जखन कि वियतनामक चम्पाक एक प्रथम शताब्दीक खंडित व जीर्ण-शीर्ण शिलालेखमे वाल्मीकि रामायण (2/110/1)क शब्द 'लोकस्यास्यगतागतिम्' ओहिना उत्कीर्ण भेटल अछि। वाल्मीकि, कालिदास, कुमारदास, स्वयंभू, तुलसीदास, कृत्तिवास, कम्ब इत्यादि पुराकवि सभक रामकाव्य रहैत मिथिलामे 1701-3 ई.मे रचित रामप्रिया दासक सीतायणसँ पहिने रामकाव्यक रचना नहि भेल। एकर मूल कारण सीता परित्यागक रूपमे जानकी लेल रामक अनुचित व्यवहार अछि। मिथिलाक सर्वगुणसंपन्न सर्वकालिक सर्वश्रेष्ठ सुता सीताक जीवन कष्टक समुद्रे बनल रहल, कहियो सुख नहि भेटल तैं सीता सीता छथि। आम मैथिल मानस जमाय रूपमे रामक प्रति आक्रोशिते रहल। मिथिलामे सीताक पति रूपमे रामकेँ लोकप्रियता नहि रहल। बहुत बादमे 1648 ई.क बाद सूरकिशोरक प्रयाससँ मिथिला-अवध बीच सम्बन्ध सेतुपर जमल बर्फ पघीलि गेल आ 1886मे कवीश्वर चन्दा झा एवं 1913-14 ई.मे महाकवि पं. लालदास अपन-अपन रामायण रचलनि। रामक प्रति आक्रोशक सान्द्रता एहि तथ्यसँ जानल जाय जे अखनो मिथिलामे शुभ दिन रहैत कोइ पिता अपन दुहिताक बियाह विवाह पंचमी दिन नहि करैत छथि। यैह आक्रोश मिथिलाक रामकथा विषयक दोसर धारामे प्रतिबिम्बित भेल अछि।

पहिल धारामे सीता आदिशक्ति स्वरूपा छथि। वाम हाथसँ पिनाक उठा तृण-कुश साफ करैत सीताक शौर्य देखि जनकजीकेँ भान होइछ जे सीता योगमाया छथि—

अनायास निपितहि धनु धाय। बामहि करसौँ लेल उठाय॥
बाम हाथ धनु अवनत माथ। नोचथि तृण कुश दहिना हाथ॥
अयला नृप कयनहि असनान। देखि चकित कृत मन अनुमान॥
शिवधनु उठि नहि ककरो बूत। से सीता धयलनि अजगूत॥
बुझलहुँ निश्चय दृढ़ अनुमान। थिकथि योगमाया नहि आन॥

(रामायण : लालदास, साहित्य अकादेमी, पृष्ठ 55)

कविवर सीताराम झाक सीता सामान्य मैथिल बाला छथि जे कुटिया-पिसिया करैत छथि, अरिपन दैत छथि, भोजन बनबैत छथि—

टकुरी चरखा सिबिया बुनिया, एपन पुरहर कुटिया पिसिया।
खोपा खोपी जूड़ा बान्हब, दालि-भात-तरकारी रान्हब।

बियाह बाद सीता जनकपुरसँ अयोध्या अबैत छथि। रामक राजतिलकसँ पूर्व षड्यंत्रसँ हुनका 14 वर्षक वनवास भेटैत अछि। सीता अड़ि जाइत छथि जे हम सेहो वन जाएब। अपन तर्कशक्तिसँ रामकेँ विवश करैत ओ वन जाइत छथि। हुनक चारित्रिक दृढ़ता केर परिचिति एहि पाँती सभमे भेटैछ—

हम जानल पतिसेवा सार। तेहि बिनु थिक असार संसार॥
अहँ बिनु हमर रहत नहि प्राण। अहीँ करब विपिनहुँमे त्राण॥
जौँ प्राणेश संग नहि लेब। एहि खन प्राण त्यागि हम देब॥

(लालदास, रामायण, पृष्ठ 116)

सीता सहचरी बनि रामक संग वन जाइत छथि। हरण होइत छनि। रावण अपन स्वर्णमयी लंका सीताकेँ निछाउरमे देबाक लेल तत्पर अछि मुदा सीता पटरानी बनबाक ओकर प्रस्तावकेँ, ओकर समस्त शक्ति आ वैभवकेँ नकारि रामक प्रति अपन एकनिष्ठतापर अडिग रहैत छथि। रावण वध भेलापर सहजतासँ अग्निपरीक्षा दैत छथि, यद्यपि एकरा नारीक प्रति समाजक अन्याय कहैत छथि—

नारिक प्रति ई न्याय समाजक, उचित न जानि पड़य प्राणेश।

सीता चरित्रक वास्तविक औदात्य एतहिसँ शुरू होइत अछि। रामकाव्य परम्परामे भले सीताक अग्निपरीक्षाकेँ केहनो गरिमामय आवरण देल जाय जेना सीताकेँ छुबिते तपसँ रावण भस्म भऽ जयतै तेँ अग्निदेव लऽग मूल सीता राखल गेल छलीह आ छाया सीताक हरण भेल। पुन: मूल सीताकेँ आपस लेबाक लेल अग्निपरीक्षाक नाटक भेल। रामक ई कृत्य उचित नहि छल। एहिना एहि अग्निपरीक्षाक बादो राजा राम एकटा धोबीक कथापर विश्वास कऽ जे सीताक परित्याग कयलनि ओ रामक हिमाद्रि-तुंग-शृंग चरित्रपर कलंक अछि। रामचरित्रक धवलता एहिसँ धूमिल भेल। जेना पसारल स्वच्छ धवल धोतीपर एक ठोप करिखा दूरेसँ झलकि जाइत अछि ओहने हाल अछि। रावण विजयक बाद राम अश्वमेध यज्ञ करबाक नेयार करैत छथि। सीता एकरा अहंकारक प्रकटन मानैत छथि—

जन-धन-बल सामर्थ्यक अहंकारे ने रहैछ
अश्वमेध सन यज्ञक जड़िमे,
अहंकार स्वयं थिक महापाप—
पापसँ पुण्यक अर्जन, तर्कहीन, असंगत।

(काञ्चीनाथ झा किरण : पराशर, ऋचापाठ, पृष्ठ 11)

सीता अपन नैहर मिथिलाक चिन्ता करैत छथि जे अश्वमेध यज्ञक घोड़ा मैथिल शूर अवश्य पकड़ि लेताह आ फेर भारी विनाश होयत। एहिसँ पूर्व हमरे मारि देल जाय। राम एकरा राजद्रोह मानि सीताकेँ निर्वासित करैत छथि।

सम्पूर्ण रामकाव्य परम्परामे सीता निर्वासनपर प्रथम प्रश्नचिह्न महाकवि कालिदास लगबैत छथि—

वाच्यस्त्वया मद्वचनात्स राजा वह्नौ विशुद्धामपि यत्समक्षम्।
मां लोकवादश्रवणादहासी: श्रुतस्य किं तत्सदृशं कुलस्य॥

(कालिदास : रघुवंशम्, 14/61)

सीता निर्वासन प्रसंगमे अभरल महाकवि कालिदासक आक्रोश आ प्रश्नचिह्न सीता चरित्र विषयक दोसर धारामे आर भकरार भेल अछि। ओना कोनो ने कोनो रूपमे ई स्वर दुनू धारामे अभरल अछि। कवीश्वर चन्दा झा एकरा 'अनीति' कहैत छथि—

त्यागल पर-अपवादक रीति। अहह रघूत्तम कयल अनीति॥

(चन्दा झा : रामायण, उत्तरकांड, पृष्ठ 406)

मुंशी रघुनन्दन दास एकरा 'भ्रष्ट ज्ञानक भावना' आ अन्याय (रघुनन्दन दास रचनावली, वीर बालक, प्रथम सर्ग, पृष्ठ 250 आ पृष्ठ 273) कहैत छथि—

दिव्यमे कुलपति समक्षहिँ अग्नि शोधल जाहि।
भ्रष्ट ज्ञानक भावनासँ की तेजब थिक ताहि॥

जनक कहु, सीता पवित्रा अग्नि शोधित भेलि।
इतर जन क क्रोधित कथनपर वास वन की देल॥
नीति रघुवंशक प्रशंसित अहँक सन गुरु पाय।
तदपि मम दुहिताक दुर्गति कयल की बुझि न्याय॥

वनमे राजा राम द्वारा अपन त्यागक बात सुनि सीता विलाप करैत छथि, मूर्छित होइत छथि। लक्ष्मण चिचिया उठैत छथि—

माय माय! सिय उठू, गाय सम चिकरथि लखन सुजान।
धयल उठाय धरणिसँ करमे, सियकेँ तनिक ने ध्यान।

एहन विकराल कालोमे सेहो सीता चरित्रक आत्मविश्वास सोझाँ अबैछ जखन ओ अपन होश सम्हारि संकटक सामना स्वयं करैत लक्ष्मणकेँ आपस जयबाक लेल कहैत छथि—

आँखि ताकि कहलनि हे लक्ष्मण! जाउ अहाँ निज थान।
वनदेवी वनदेव सहायक छथि, करता मिलिकेँ त्राण।
लक्ष्मणसँ पुनि कहलनि सीता, सब विधि होश सम्हारि।
सुनु प्रिय लक्ष्मण! हमर विनय सब देब ने अहाँ बिसारि।
क्रम क्रम कहबनि सकल मायसँ, हमर सप्रेम प्रणाम।
एहि अभागलिक विनती प्रभुसँ, जे छथि सब गुणधाम।

हुनके अंश करैछ गर्भमे, सन्तति रूपेँ वास।
आशीर्वाद कर्म मन वचनसँ, देथि सहित उल्लास।
कहबनि अहाँ राजा रामसँ, हमर विनय विस्तारि।
अपने सम्मुख कएल परीक्षा, देखा देलहुँ तन जारि।

(विधुजी : सीतायन, पृष्ठ 565)

धन्य छथि सीता! पाठकक कोँढ़ फाटि जाइत अछि जे पहाड़ सन कष्ट देनिहार रामक लेल, हुनक वंशबीजक लेल, भ्राता लक्ष्मणक लेल आ तीनू मायक लेल एहन मात्सर्य भाव!

सीताकेँ कल्याणक योग्यता छनि ओ गर्भिणी छथि ताहिपर निर्वासन केर कठोर दंड भेटैत छनि। सीता रघुकुलक बीज सुरक्षा हेतु जीबैत छथि अन्यथा माहुर खा लितथि। ओ राजाकेँ सफल मित्र नहि होयबाक बात सुनने रहथि, आइ प्रत्यक्ष देखि रहल छलीह—

गर्भ भरालस अंगे, नहि परिचारिणी जनि एक संगे।
मरितौँ गरल हम खाये, होइत बड़गोट कुल अन्याये।
आब बचत नहि प्राणे, रघुवर ह्रदय कि भेल पषाणे।
यहन करत के आने, हित-जन-वचन न धयलनि काने।
कत दिन काटब कानी, कयल कुटिल जन बड़ मन-हानी।
भूपति होथि न मित्रे, शुनितहिँ छलहुँ से देखल चरित्रे।

सीता अपन नैहर, अपन माता-पिताक प्रतिष्ठा आ अपन नाम नहि हँसाए एहि लेल चिन्तित छथि। भले फूल इन्द्रक बज्र भऽ जाय मुदा अहाँक जेठ हमरापर अकरुण नहि होथि—

हमरहि हेतु दशानन मारल, कपिगण संग लगाय रे।
तखन पतिव्रत हमर देखल सभ, अनलमे गेलहुँ समाय रे।
नैहर जौँ मिथिला चलि जायब, कहत बाप की माय रे।
पुरुष परशमणि-कर हम सोपल, अयली कि नाम हँसाय रे।
सिरिस सुमन वरु होइ अशनि सन अशनि तेहन भय जाय रे।
से बरु होथि नहि अकरुण, अहँकाँ बड़का भाय रे।

(चन्दा झा, रामायण, पृष्ठ 394)

रामक अश्वमेध यज्ञक घोड़ा कुश-लव पकड़ि लैत छथि। सीतायन (पृष्ठ 605) मे कविश्रेष्ठ वैद्यनाथ मल्लिक विधु स्पष्ट रूपसँ दोसर धाराक प्रतिनिधित्व करैत आदिकविक इच्छा रूपमे सीता अपमानक प्रतिशोध लेबाक आ रामदलक पराजयक कामना करैत छथि—

बनि सिय सुपुत्र प्रतिशोध लैत निज मातृग्लानिकेँ चूर्ण करथि।
बनि विजयी बलशाली कुमारयुग हमर कामना पूर्ण करथि।

मल्लिकजी (पृष्ठ 613) रामकेँ धिक्कारैत सती सीता त्यागक पापक कारणेँ हुनक पराजय केर स्पष्ट उल्लेख करैत छथि—

कहलनि कुश ई समरभूमि थिक हमहूँ वीर छी अछि ई ज्ञात।
पौरुषहीन व्यक्तिकेँ नहि होइछ महि मध्य बड़ाई मान।
जे ने कयल रक्षा निज नारिक छलि पवित्र शुचि सती महान्।
गर्भवतीकेँ व्याघ्र सिंह भोजन वन देलनि टारि निदान।
निर्दय राम सएह जँ छी अहँ तँ हम निश्चय देब पछारि।
सीता त्यागक पापक कारण निश्चय अहाँ जाएब रण हारि।

यैह होइत अछि। कुश-लव पराजित श्रीराम सहित चारू म्रियमाण भ्राताक वस्त्राभूषण उतारि सीताकेँ देखबैत छथि। द्रवित सीता वस्त्राभूषण आ पीपरक गाछमे रस्सासँ बान्हल हनुमानकेँ देखिते विकल होइत छथि। हनुमानक प्रति सीताक मात्सर्य आ कुश-लवकेँ हुनका अग्रज मानि प्रणाम करबाक लेल कहब मर्मन्तुद अछि। लंकामे हनुमानक उपकार हुनका एहि कष्टोमे मोन अछि। पुत्रक पराक्रमसँ विजयी माता सीता बान्हल हनुमानकेँ जे जेठ बेटा कहैत छथि एहिसँ हुनक चरित्रक उदारता अभरैछ—

बान्हल छथि हनुमान महाबल, कहल सीअ खोलू झट बाउ।
ई बड़का भैया अहँसभक छथि, करिअनु प्रणाम चट जाउ।

हनुमानकेँ बंधनमुक्त करा सीता वाल्मीकिसँ पुत्रद्वयकेँ पितृघाती आ सत्यानाशी तक कहैत छथि। तखने आदिकवि सीताकेँ शक्तिरूपा कहैत रामकेँ सीता परित्यागक दंड भेटबाक बात (पृष्ठ 614) कहैत छथि—

बंधनमुक्त करा हनुमानहि, अइली सिय घुरि कुटी हताश।
ध्यानमग्न मुनिवरसँ कहलनि, कएलनि ई सब सत्यानाश।
पिता घातकर्ता युग बालक, लेलनि जाए बापहुँक प्राण।
मुनि कहलनि चिन्ता न करू सिय, निद्रित छथि श्रीराम सुजान।
अहाँक त्याग केर प्रतिफल पओलनि तथा अहाँक सतीत्व प्रमाण।
अहाँ शक्तिरूपा छी सीता, अहिँक शक्तिसँ हरि बलवान।
अहाँक त्याग कएने अशक्त, भक्तक इच्छा पुराओल भगवान।

म्रियमाण रामदलकेँ सीता अपन सतीत्वक बलेँ जीवित करैत छथि। ओ सगर्व अपन आत्मबलक घोषणा करैत छथि—

जँ हो निश्चल प्रेम हमर सीता सतीत्व जँ साँच।
जागी एहि द्रुतनिद्रासँ भऽ जाय पुनः ई जाँच।

सीता चरित्रक शुचिताक एहने चित्र सुप्रसिद्ध पुराणवेत्ता ठाढ़ी ग्राम गौरव पं. कालीकान्त झाक हनुमान चरित (पद 37)मे अभरल अछि—

परमसती मिथिलेश नन्दिनी कय पति-पद-युग ध्यान।
कहलनि यदि कखनहुँ हम पति तजि नहि सुमरी किछु आन।
तऽ सौमित्र सहित सब सेना लगले जीवन पाबथु।
मम अनजान सुतक अपमानक बात ध्यान नहि लाबथु।

सीताक चरित्र उदात्त अछि। महाराज जनक केर पुत्री, चक्रवर्ती सम्राट् दशरथ केर पुत्रवधू, दशानन विजेता राजा रामक गर्भिणी पत्नी सीता रने-वने बौआइत छथि, वनमे कष्ट सहैत दुनू पुत्रक परिपालन करैत छथि मुदा महर्षिकेँ यज्ञमे अयबाक आमंत्रण सुनि सभटा कष्ट बिसरा प्रमुदित होइत कहैत छथि—

जँ पुछि बैसथि नाथ अपन नारिकेँ सम्बन्धमे।
कहि सुनेबनि सिय तपस्वी संग छथि आनन्दमे।

(खड्गवल्लभ दास 'स्वजन' : सीता शील, पृष्ठ 208)

कष्टक सागरमे रहितो अपन आनन्दक बात कहब, सेहो राम द्वारा पुछलापर, ई मात्र सीता सन विरल चरित्रे कऽ सकैत छथि!

पाठक तखन विह्वल होइत छथि जखन सब कष्टक मूल अपन पति केर यज्ञक सफलताक ओ कामना करैत छथि— चाहैत छी हमहूँ खिधाँस ने होनि प्रिय प्राणेशकेँ। एहने भाव अच्युतानंद दत्त अपन अनुवादग्रंथ सीतादाइ (पृष्ठ 119)मे प्रकट करैत छथि—

हमर त्याग अपन इच्छासँ कएल न ओ मतिमान।
हमरे जन्म-जन्ममे सम्पादित अछि जे बड़ पाप।
तकरे फलसौँ ई हमरा भेटल अछि दुस्तर पाप॥

मैथिली महाकाव्य वा खंडकाव्यमे सर्वत्र सीताक एहने सर्वंसहा चरित्र अभरैत अछि। विधाता केर विपत्तिक सभटा डाङ सहबाक लेल तैयार सीता मुहसँ उफ तक नहि करैत छथि मुदा हुनक सर्वंसहा अनुपम सतीत्व बलेँ ओ सब विपत्ति सीताक गरामे पुष्पहार बनि सुशोभित होइत अछि। सीता चरित्रक एहि रूपसँ अलग स्वतंत्र रूप सेहो किछु ग्रंथमे अभरल अछि।

महाकवि पं. लालदास अपन रामायणक पुष्कर काण्ड आ जानकी रामायणमे सीता चरित्रकेँ रामक चरित्रपर अधिमान देने छथि। सहस्त्रमुख रावणक हाथेँ म्रियमाण राम सहित अपन दलक रक्षा करैत छथि। सीता ब्रह्मा समान अपन रोमकूपसँ अनन्त मातृका सभक सर्जना करैत छथि, विष्णु समान विष्णु अंश रामकेँ जीवन दैत छथि आ महाकालीक रूप धरैत शिव समान सहस्त्रमुख केर संहार करैत छथि। एकहि संग हुनकामे ब्रह्मा, विष्णु आ महेश साकार छथि। लक्ष्मण आ राम दुनूक मुहेँ सीताक स्तुति करा लालदास 'जैँ सीता तैँ राम'क अवधारणाक प्रतिनिधि कवि बनैत छथि।

लवहरि कुशहरिमे सीताक जे स्वतंत्र चरित्र चित्रण भेल अछि ओ रामक आभासँ मुक्त अछि। सीता असहाय नहि छथि। ओ सक्षम अभिभावक जकाँ कुश-लव केर पालन करैत वेद-पुराण, ज्ञान-विज्ञान, अस्त्र-शस्त्रक संग शास्त्र सभक शिक्षा दैत सुदक्ष गुरुक भूमिकामे छथि। उमाकान्तजीक नाटक सीतामे सेहो सीताक विद्रोही स्वर अभरल अछि। प्रो.दयानन्द झा सहस्त्रमुख संग भेल युद्धमे रामदलक पराजय आ सीता शौर्यक अतुलित रूप कारणेँ भेटल विजयमे अपमानक काइनिकेँ सीता परित्यागक मूल कहैत छथि—

कैल उपेक्षा कैल परीक्षा, अग्निप्रविष्टा स्वच्छ प्रवाद।
किन्तु की तैयो काइन बिसरल वनहि पठाओल धोबी बात।
काइन रहनि हुनि शक्ति सफलता सहसबाहु हति सीता लेल।
किन्तु जे पगड़ी अवधक राखलि, काटलि हार्थैं घड़ी भेल।

सीताक पाताल प्रवेश एहिना विस्मयकारी अछि। सभामे वाल्मीकि जखन अपन समस्त तप-बल सीताक सतीत्वपर बलिदान करैत कहैत छथि—

वरुणक हम छी दशम कुमार। शपथ करैत छी बारम्बार।
तप-फल हमरा आब न काज। जँ दुष्टा सीता महाराज।

एकर बादो रामक अपन प्रजाक लेल खटराग— वनवास वही दे सकती है, रनिवास वही दे सकती है, सुनि सीता अपन शुचिताक तेहन प्रमाण दैत छथि जे कालक कपालपर ध्रुवतारा जकाँ अमिट शिलालेख बनि जाइत अछि। सीता एहनो शपथ खा सकैत छलीह जे प्रजाजन केर सन्देहो मेटा जएतय आ ओ फेर अयोध्याक महारानी बनि जएतीह। मुदा नहि! की पता जे फेर अग्निपरीक्षा देबए पड़य! तेँ एहि बेर तेहन प्रमाण देलनि जे सीता नामकेँ अनन्त कालक लेल अक्षरा बना देलक। ओ अपन मातासँ विवरयाचना कयलनि—

शुनु शुनु सकल सदस्य सत्यकरणी
शपथ करैत छी आज रघुवर घरणी
मनसहु आनक चिन्तना नहि कयलहुँ
रघुवर पति आश सर्व शोक हरणी
सत्य पतिव्रत जौँ तनय दुहु प्रभुहिक
हमरा विवर देती माता देवी धरणी
फणिपति फणपर सिंहासन वर तेहि ऊपर भूदेवि विराज
धरणी विवर ऊपर जन देखल बड़ अद्‌भुत मन मानल काज
पुत्रि पुत्रि कहि सीताकाँ ओ लेल अंक अपन आरोपि
गेलि पाताल सहित फणिपतिसौँ विवर मृत्तिकासँ दय तोपि।

समस्त नारी जातिक गरिमाक रक्षा लेल ने कहियो एहन आह्वान आ ने कोनो कालमे एहन अपूर्व निर्वाण! तेँ सीता चरित्र अनुपम अछि। सीताक एहने अनुपम

चरित्र कवीश्वर चन्दा झाक रामायण, महाकवि पं. लालदासक रामायण केर पुष्कर काण्ड आ जानकी रामायण, मुंशी रघुनन्दन दासक वीर बालक, पं. सीताराम झाक अम्बचरित, महाकवि वैद्यनाथ मल्लिक विधुजीक सीतायन, आ. रामलोचन शरणक मैथिली रामचरितमानस, कविश्रेष्ठ खड्गवल्लभ दास 'स्वजन'जीक सीताशील, लब्धप्रतिष्ठ कवि हीरालाल झा 'हेम'जीक सीताचरितामृत, आशुकवि कपिलदेव ठाकुर 'स्नेहलता'जीक सीतावतरण, सुप्रसिद्ध संतकवि मैथिलीपुत्र प्रदीपजीक श्री सीता अवतरण, विश्वनाथ झा विषपायीजीक रामसुयशसागर, जयकान्त झा श्रुतिधरजीक सीतायन, सुप्रसिद्ध गीतकार रवीन्द्रनाथ ठाकुरजीक सीता, सुकवि भुवनेश्वर प्रसाद 'अध्यापक'जीक मैथिली बालरामायण, मनीषी काञ्चीनाथ झा 'किरण'जीक पराशर, पं. जीवनाथ झाजीक रावणवध, पं. कपिलेश्वर मिश्र 'वैयाकरण'जीक सीतादाइ, वैजू मिश्र 'देहाती'जीक मैथिली रामायण, पं. कालीकान्त झाक हनुमान चरित, प्रसिद्ध गीतकार चन्द्रमणिजीक दोहामे सीता शतक, श्री राजेन्द्र लाल दासक सीताक प्रस्थान, महीयसी उषा किरण खाँक कथाकाव्य जाइसँ पहिने इत्यादिमे प्रतिबिम्बित भेल।

सीता चरित्रक समता विश्व वाङ्मयक कोनो नारी पात्रसँ संभव नहि अछि। निष्कर्षत: कहि सकैत छी जे सीता सौन्दर्यमे रतिकेँ लज्जित करैत छथि। ओ शीलमे समुद्र, सर्जनामे ब्रह्मा, प्रतिपालमे विष्णु, संहारमे शिव, ज्ञानमे सरस्वती, सेवामे सावित्री, धैर्यमे धरित्री, शौर्यमे नारायण आ त्यागमे दधीचि छथि। एतेक गुण कोनो एक पात्रमे संभवे नहि तेँ सीताक परतर किनकोसँ संभव नहि अछि। एहन चरित्र ने कहियो पूर्वमे भेल आ ने भविष्यमे होयत। तेँ सीता सीता छथि, जगज्जननी छथि!

[साहित्य अकादेमी, दिल्ली आ मैथिली साहित्य सम्मेलन, पुपरीक संयुक्त तत्त्वावधानमे 'मैथिली साहित्यमे सीता' विषयक आयोजित द्विदिवसीय संगोष्ठीमे दि. 17 दिसम्बर 2023केँ पठित आलेख]

के स्नेहलता ?

वर्ष 2016मे साहित्यक नोबेल पुरस्कार लोकगायक रॉबर्ट एलेन जिम्मरमैन (बादक प्रसिद्ध नाम बॉब डिलन)केँ देल गेल छल। बॉब डिलन अपन देश अमेरिके नहि सम्पूर्ण विश्वमे अपन कार्यक्रम करैत रहलाह अछि। लोकधुनमे सहज सरल गीत रचि ओकर संगीतमय प्रस्तुति डिलन महोदयक वैशिष्ट्य मानल जाइत अछि। वाचिक परम्पराक एहि जनप्रिय कविकेँ समकालीन कविताक झंडाबरदार सभ हुनकर उपहास करैत छलाह। हुनक गीत सभकेँ पाठ्यक्रममे स्थान दिएबाक प्रस्तावकेँ कथित समीक्षक सभक भयंकर विरोध भेल। हुनका 1963मे जखन टॉम पैने पुरस्कार देल गेल तखन बॉब डिलनकेँ व्यंग्य रूपमे स्नानागारक कवि, गलीक गायक, सस्तौआ माल आर नहि जानि की-की ने कहल गेल। एहन आक्षेप सभक कारण कोनो साहित्यिक उच्चावच नहि अछि अपितु सहज काव्यगुणकेँ हीन आ चिन्तनशील प्रज्ञाकेँ श्रेष्ठ मानबाक प्रवृत्ति अछि। अपन-अपन सीमा अछि। जँ सहज कविकेँ विद्वान् नहि कहल जा सकैछ तहिना केहनो विद्वान्, जे मात्र गद्ये लिखैत छथि केँ कवि सेहो नहि कहल जा सकैछ। कवि आ गीतकारमे सेहो द्वन्द्व मचल अछि। अगरम-बगरम टँगटुट्टा कविता लिखि आत्ममुग्धताक दम्भसँ भरल किछु कविसभ सुच्चा गीतकारकेँ कवि नहि मानैत छथि। ई तऽ अन्हेर अछि। तथ्यात्मक यैह अछि जे सभटा गीत निश्चित रूपसँ एक कविता थिक मुदा सभटा कविता गीत नहि भऽ सकैछ। स्पष्टत: सभटा गीतकार कवि छथि मुदा सभटा कवि गीतकार नहि। एहि नग्न यथार्थसँ के कतेक पानिमे छथि एकर थाह लागि जाइत अछि। शब्द, स्वर लिपि, मात्रा, गुण, धर्म, गति,रस, अलंकारादि काव्यशास्त्रीय निकष केर सन्तुलन आ प्रवाह संग प्रभावोत्पादकताक निर्वहन ओतेक सहज नहि अछि जतेक समकालीन गद्यिताक कथित कवि सब मानैत छथि। गीतकारकेँ कविगण

अकारण स्वयंसँ हीन मानैत छथि। किएक समीक्षकगण वा मैथिली साहित्यक इतिहासकार लोकनि वा विभिन्न संस्था सभक कर्णधार लोकनि स्नेहलताजीकेँ ओ स्थान आ सम्मान नहि देलनि जकर ओ सुच्चा अधिकारी छलाह? कोनो विभूति नहि, कोनो रत्न नहि आ ने कोनो उचित सम्मान! हिनक महाप्रयाणक 14 वर्ष बाद 2007मे भारतीय साहित्यक निर्माता शृंखलाक अन्तर्गत श्री योगानन्द झाक विनिबंध 'स्नेहलता' प्रकाशित कऽ साहित्य अकादेमी अपन कर्मक इतिश्री मानि लेलक। जँ इहो नहि भेल रहैत तखन तऽ किछु दिन बाद के स्नेहलता? एहि प्रश्नक उत्तरो भेटब कठिन रहैत। दुखद ई जे हुनक गीत सभक ध्वन्यंकित माध्यम केर विवरणिकामे बेसी ठाम हुनक नाम नहि देल गेल अछि। गायक/गायिकाक नाम रहैछ। आश्चर्य तखन होइत अछि जखन प्रबुद्ध वर्ग सेहो हिनक गीत सभकेँ गायक/गायिकाक गीत मानि लैत छथि। हिनक पोथी 'विनय पदावली संकीर्त्तन' 1952मे कन्हैयालाल कृष्णदास, दरभंगासँ प्रकाशित भेल छल। 'वैदेही विवाह संकीर्त्तन' केर वृहत् संस्करण मिथिला पुस्तक केन्द्र, दरभंगासँ 2018मे प्रकाशित भेल। प्रबंधकाव्य 'श्रीसीतावतरण' लोक कला संस्कृति संस्थान, विदेह नगर डरोड़ीसँ पहिल बेर 2011मे प्रकाशित भेल। श्री योगानन्द झाजीकेँ ई श्रेय भेटबाक चाही जे ओ जतनपूर्वक ताकि-हेरि एहि प्रबंधकाव्यकेँ संकलित कएलनि आ ई सभक समक्ष आबि सकल। एकर एक पृष्ठपर आशीर्वाद स्वरूप पोथी स्नेहलताजी द्वारा श्री योगानन्दजीकेँ प्रदान करबाक उल्लेख आ पोथीपर हुनक हस्ताक्षर अछि जे योगानन्दजीक लेल अमूल्य निधि तऽ अछिए हमरा सन सामान्य पाठको लेल हुनक हस्तलिपि केर दर्शन जगज्जननी जानकीक कृपे थिक। साधुवाद श्रीमन्! दुर्योग रहल जे इहो पोथी सब कालक गालमे बिला गेल। मुदा माधुर्यमंडित हिनक अनुपम गीतसब कालक कल्ला अलगा जनकंठमे बसि गेल। तथापि ई कहबामे कोनो कष्ट नहि जे एहि अमर गीतकारकेँ हमसब उचित स्थान नहि देल।

नहि जानि किएक हम भारतीय विशेषरूपसँ हम मैथिल तेहन आत्महीनतासँ ग्रसित छी जे अपन उत्कृष्टो वस्तुकेँ तखने श्रेष्ठ मानैत छी जखन ओकरा कोनो बाह्य विद्वान् विशेष रूपसँ कोनो आंग्ल नामधारी विद्वान् हुनका अपन भाषामे श्रेष्ठ कहने हो। अखन धरि कोनो आंग्ल नामधारी विद्वान् स्नेहलताजीक रचनापर कलम नहि तोड़ने छथि। तेँ स्नेहलताजीकेँ कथित शिष्ट वर्गमे उचित सम्मान नहि भेटल ने पोथीमे आ ने कोनो मंचपर ! एहन सम्मान देनिहार प्रभुवर्ग रखने रहथु अपन सम्मान! आमजन अपन एहि अनुपम लोककविकेँ चीन्हलक आ अपन हृदयमे जे स्थान देलक ओ कोनो संस्थाक कोनो सम्मानसँ पैघ अछि। अपन लोकप्रिय

गीतक बलेँ आम मैथिलक विशेष रूपसँ नारी वर्गक हृत्सिंहासनपर स्नेहलता तेना आरूढ़ भेलाह जे सभटा उपाधि बेमानी भऽ गेल। जनमानसमे ई रूढ़ भेल अछि जे मिथिलामे बिनु वेद मंत्रक बियाह भऽ सकैछ मुदा बिनु स्नेहलताक गीतकेँ बियाह नहि भऽ सकैछ। ई थिक स्नेहलताजीक जनप्रियता, अपरिहार्यता आ लोक मानसमे रचल-बसल हुनका प्रति एकात्म भाव! भाव आ भाषाक लेल एहन समर्पण अन्यत्र नहि भेटैछ—

अपना किशोरीजीक टहल बजेबइ हे हम मिथिलेमे रहबइ।
घरही मे हमरा चारू धाम॥

मैथिली आ हिन्दीमे अपन सर्जनाक जे संसार स्नेहलता सजओलनि ओ सरिपहुँ सुन्दर अछि। हिनक अन्तरेच्छामे मिथिलाक लेल जे मात्सर्य अभरल अछि ओ अनुपम अछि—

चाह नहीं इहलोक सधे नहि चाह मुझे सुरलोक सिधाऊँ।
चाह नहीं सुख सम्पत्ति की नहि चाह कभी अणिमादिक पाऊँ॥
योनि अनेक मिले तो मिले मंजूर मुझे सब योनि में जाऊँ।
स्नेहलतानित चाह यही मिथिला में रहूँ मिथिले की कहाऊँ॥

समस्तीपुर जिलाक डरोड़ी गाममे पिता नथुनी ठाकुरक चारि पुत्रमे दोसर पुत्र रूपमे मिथिलामे अवतरित कपिलदेव ठाकुर बादमे डरोड़ीक सन्त स्नेहलता रूपमे प्रतिष्ठित भेलाह। हिनक जन्मतिथि ज्ञात नहि अछि मुदा 85वर्षक आयुमे भेल हिनक महाप्रयाण (दि. 17 जनवरी 1993 ई.)सँ श्री योगानन्द झाजी (स्नेहलता, साहित्य अका., 2013 संस्क., पृष्ठ 12) हिनक समय 1909ई.क लगपास मानने छथि। एहि विमर्शमे हम हुनक साहित्य आ समाजकेँ देखबाक अद्‌भुत दृष्टि, नाड़ी परीक्षण केर अपूर्व क्षमता, आशु कवित्वक अनुपम स्वरूपादिपर विचार करैत हुनकर मूल्यांकन केर एक प्रयास करब, हुनका चीन्हबाक प्रयत्न करब। भाषा, भाव-नाद-विचार सौन्दर्य, प्रभाव, गुण, रस, छन्द, अलंकारादि निकषपर कसि एहि अद्‌भुत जनकविक मूल्यांकनक कोशिश करब।

स्नेहलताजीक अक्षर ब्रह्मक सारस्वत यात्रा शुरू होइत अछि जनकपुरधाममे हिनक कीर्त्तनमंडलीक अपमान, प्रस्तुतिपर निषेध आ नेपाली प्रहरी सभक प्रहारसँ

व्यथित बासापर आबि कनैत-कनैत भिनसरबामे सुतल स्नेहलताजीकेँ स्वप्नमे सद्य:विवाहित सीताक दर्शनसँ, स्वप्नेमे स्नेहलता द्वारा रचल एहि गीतसँ—

कओने नगरिया एलै बरियतिया हे रसप्रीति माती।
कओने नगरिया भेलै शोर हे रसप्रीति माती॥
अवध नगरियासँ एलै बरियतिया हे रसप्रीति माती।
मिथिला नगरिया भेलै शोर हे रसप्रीति माती॥
परिछय चललनि सखिया सहेलिया हे रसप्रीति माती।
रोशनीसँ भऽ गेलै इजोर हे रसप्रीति माती॥
गाबथि कपिलदेव' महल दुअरिया हे रसप्रीति माती।
देखि देखि भऽ गेल विभोर हे रसप्रीति माती॥

ई घटना 1938ई.क अछि। स्वप्नमे सीता हिनका अपन गाम डरोड़ीमे वैदेही विवाहोत्सवक आयोजनक निदेश आ ओहिमे अपन उपस्थितिक वचन देलनि। गाम आबि जे 1939मे वैदेही विवाहोत्सव आरम्भ कएलनि ओ आइयो आयोजित होइत अछि। कहि सकैत छी जे उच्चैठ भगवतीक कृपासँ जहिना एक निपट-गँमार कलुआ महाकवि कालिदास रूपमे परिणत भेलाह तहिना स्वप्नमे सीतासँ साक्षात्कारक बादे मात्र छठा वर्ग उत्तीर्ण कपिलदेव, साधारण सन स्नेहलता एक रससिद्ध आ कालजयी गीतकार भेलाह। दुनूक वाग्दानक कथा समाने अछि। दुनू आरम्भमे साधारण। एक तऽ निपट मूर्ख दोसर सेहो कहुना छठा धरि पढ़ल! दुनूपर भगवतीक असीम कृपा! मैथिल संस्कार, रीति-रेवाज, विधि-व्यवहार, नदी-सरोवर सभठाम स्नेहलताजीक सुच्चा मैथिल स्वरूपे सोझाँ अबैछ। जाहि सीतासँ रमा, उमा, ब्रह्माणी आदि उद्‌भूत छथि, जनिक चरण कमलमे जल-थल-गगन-समीर आश्रित छथि ओ सीता कमला नदीसँ श्यामसुन्दर श्रीरामकेँ वर रूपमे प्राप्त करबाक लेल दैन्य भावसँ अपन तकदीर माँगि रहल छथि। भावक पराकाष्ठाक ई दू पाँती भावुक करैत अछि—

आइ कमला पूजन जाथि सिया।
रमा, उमा, कमला, ब्रह्माणी जनिकासँ सभ प्रकटीया।
से सीता कमलासँ माँगथि श्याम सुन्दर वर पीया॥

***

आइ करथि विधिवत वैदेही पूजन कमला तीर हे।
नारिवृन्द मिलि मंगल गाबथि के कह कतबा भीर हे।
लोकलाज से सकुचित लोचन मुख-मण्डल गम्भीर हे।
हिय-मन्दिरमे रघुवर राजित पुलकित सकल शरीर हे।
जिनका चरण-कमलपर निर्भर जल-थल-गगन-समीर हे।
से सिया कमलासँ माँगथि दीन जकाँ तकदीर हे।
विनय करथि पुनि-पुनि कमला से तुअ यश चहुँयुग थीर हे।
स्नेहलता' कृपा करू वर दए होथि हमर रघुवीर हे।

सामान्य सन गीतक असाधारण भाव स्नेहलताजीक अपन खानगी भाव-वैशिष्ट्य अछि। सर्वशक्तिमान रहितो साधारणजन जकाँ दैन्य भावसँ याचना करब, कमला नदीकेँ महत्त्व देब एकटा सुन्दर भावलोकक सर्जना करैछ जाहिमे श्रेष्ठक सम्मान अछि, परम्परा-संस्कारक लेल आदर अछि। स्नेहलताजीक यैह दैन्य भाव अभरैत अछि एहि अमर गीतमे जखन ओ स्वयंकेँ भोलेनाथक चाकर जकाँ प्रस्तुत करैत छथि—

बाबा वैजनाथ हम आएल छी भिखरिया अहाँक दुअरिया ना।

***

बमभोला हमरा चाकर रखता कहबनि हे गौरी।
भाँग निशामे बेमत रहता रखतनि के झोड़ी।
हम तऽ हरदम हाजिर रहबनि दुनू कर जोड़ी॥
बाघ-बड़द-मूस-मयूर-साँपमे उठतनि हरहोरी।
बिन हमरे नहि झगड़ मेटायत भगता घर छोड़ी॥
नित उठि फूल अकोनक आनब बेलपात तोरी।
बाबाके सिंगार सजायब नाचब भय भोरी॥
जखने कहता पीसि पिआयब भाँग-धथुर तोड़ी।
स्नेहलता' लतराय चरणपर लतरब बलजोड़ी॥

स्नेहलता सरस्वती-गणेश, सीता-राम, राधा-कृष्ण, गौरी-महादेव, हनुमान आदि देवी-देवताक गीत रचलनि। फाग, गोआलरी, जेवनार, डहकन, विधि-व्यवहारक गीत लिखलनि। कहल जाइत अछि जे ओ कोनो मुंडन, उपनयन, विवाहादि संस्कारमे गेलापर गृहपतिक अनुरोधपर तत्क्षण गीत रचि दैत छलाह जे हुनक

आशुकवित्वक परिचय दैत अछि। हिनक आशुकवित्वक अनेक कथा समस्तीपुर प्रक्षेत्रमे प्रचलित अछि।

अपन मनोभावसँ स्नेहलताजी जाहि भावलोकक रचना कयलनि ओ अनुपम अछि। हिनक भावयित्री प्रतिभाक प्रासाद भव्य अछि। सरल, मनोहारी आ दिव्य! आब स्नेहलताजीक कारयित्री प्रतिभाक दिग्दर्शन करब। अक्षर ब्रह्म थिक आ तहिना शब्द सेहो। शब्दक तीन धर्म होइत अछि— भावधर्म, चित्रधर्म आ संगीत धर्म। एहि तीनू धर्मक सम्यक् निर्वहन स्नेहलताजीक एहि लोकप्रिय गीतमे भेल अछि—

मोहि लेलथिन सजनी मोर मनमा, पहुनमा राघो
ए हो पहुनमा राघो, सिया के सजनमा राघो
घुँघची जुलुफिया कारी, माथे मणि मौड़िया न्यारी
लाल लाल भालपर चननमा, पहुनमा राघो।
अँखियनमे काजर काली, ठोरवापर पानक लाली
मुसुकैत श्यामल बदनमा, पहुनमा राघो।
दोपटा चपकन लगनौती, पहिरे बियहुती धोती
पहुँचीपर अमुआँ के कंगनमा, पहुनमा राघो।
धनि-धनि किशोरी मोरी, देखल सिनेहिया जोरी
हिय मोर कोहबर के भवनमा, पहुनमा राघो।

एहि पद केर मुखड़ा आ अन्तरा दुनूक सौन्दर्य बेजोड़ अछि। यति केर समुचित प्रयोग भेल अछि। अन्तराक अंतिम पंक्ति वा पूरक पंक्तिमे अभरल प्रहारक तुक आ लय टेकक तुक आ लयसँ समान अछि। तेँ जखन अन्तराक पूरक पंक्तिकेँ टेक संग दोहराओल जाइत अछि तखन श्रोता भावविभोर होइत ब्रह्मानंद सहोदर प्राप्त करैत छथि। गीत संरचनाक एहि अनुपम वैशिष्ट्यक कारणेँ स्नेहलताजी आइयो लोकप्रिय छथि, कालजयी छथि। हृदय कोबराघर अछि आ एहिमे ब्रह्म-जीव एकाकार होइत अछि। की अद्भुत भाव!

ई उल्लेख करब उचित जे एहि सुप्रसिद्ध गीतकेँ पद्मश्रीसँ अलंकृत श्रीमती शारदा सिन्हा सहित अनेक कलाकार अलग-अलग ढंगसँ गएने छथि। शब्द सभमे सेहो अन्तर अछि मुदा भाव एकहि अछि।

ई एक गीत गीतकारकेँ अमर करबामे सक्षम अछि। शब्दक तीनू धर्मक सम्यक् साक्षात्कार होइछ। यत्र-तत्र 'मा' केर मसृणता गजब कएलक अछि। दुल्हा

बनल राघव रूप सखीक मोन मोहि लेलक। की सुन्दर भाव! जे रूप मोन मोहलक ओ केहन अछि? श्यामल शरीर, सुन्दर लगनौती चपकन, बियहुती धोती, आँखिमे कारी काजर, ठोरपर पानक लाली! एहि ठाम प्रयुक्त शब्द सब सम्पूर्णतामे सफल भेल अछि अपन चित्रधर्मक निर्वहनमे। सुन्दर सलोना दुल्हा रूपमे रामक चित्र आँखिमे खचित भऽ जाइत अछि।

संगीत धर्मक निर्वहन तऽ एहने अछि जे अर्द्ध शताब्दीसँ बेसी समय बीति गेल मुदा ई गीत अखनो लोकप्रिय अछि आ विभिन्न कलाकार अपन स्वरमे ई गीत गाबि गर्वित आ चर्चित होइत छथि। मनमा, सजनमा, पहुनमा, बदनमा, कंगनमामे सायास प्रयुक्त मैथिली संज्ञाक गुरुतम स्वरूप 'मा' प्रत्ययान्त जे मसृणता आनलक ओकर टेक केर 'मा'युक्त शब्द युग्मक संग भेल अभिनव प्रयोग आ लाल-लाल भाल सन शब्द समूह एहि गीतक ध्वन्यात्मक सौन्दर्यकेँ कतेक गुना बढ़ा देलक। ई नादसौन्दर्य एकरा संगीतमय प्रस्तुति लेल बेहतरीन बना देलक। टेक आ अन्तराक अनुपम जोड़ पदकेँ बेजोड़ बना देलक।

रस काव्यक आत्मा थिक। आचार्य भरत नाट्यशास्त्रमे विभावानुभाव व्यभिचारिसंयोगाद्रसनिष्पत्ति: कहैत छथि अर्थात् विभाव, अनुभाव आ व्यभिचारी भाव केर संयोगसँ रसक अनुभूति होइछ। आचार्य विश्वनाथ साहित्य दर्पणमे वाक्यं रसात्मकं काव्यम् कहि रसकेँ काव्यक आत्मा वा प्राण कहने छथि। स्नेहलताजीक समस्त गीत रससँ आपूरित अछि।

चलिअउ चलिअउ पाहुन राम, पहिरू फूलक खड़ाम।
चलिअउ करिअउ आराम, कोहबर घरमे॥
फूलक सुन्दर महल बनाओल, फूलक सेजिया सजाओल।
फूलक देखब दृश्य तमाम, कोहबर घरमे॥

राम आलम्बन विभाव; फूलक महल, सेज आदि उद्दीपन ; आराम, फूलक दृश्य, मनोरथपूर्त्ति आदि अनुभाव एवं हर्षोल्लास आदि व्यभिचारी भावसँ रति संयोग शृंगार रूपमे निष्पन्न भेल अछि।

स्नेहलताजीक हास-परिहासमे जे प्रत्युत्पन्नमतित्व अभरल अछि ओकर दार्शनिक भावपर एक स्वतंत्र पोथी तैयार भऽ सकैछ। दू सखिक सहज प्रश्नोत्तरमे गूढ़ दर्शनक भाव नुकाएल अछि—

देखू रसे-रसे दुलहा चलै छथि कोना।
कोल्हूमे बरदा चलै अछि जेना॥
कहू कोल्हू के बरदा कहलियैन्ह कोना।
विमुखी कैँ चौरासीमे पेरथि जेना॥
डेग नमहर से दुलहा चलै छथि कोना।
बुझू बंधनमे बकरा भगै छथि कोना॥
कहू दुलहा के बकरा कहलियैन कोना।
छथि अज कुलके ई सब बालक जेना॥
ठाढ़ अँगनामे दुलहा लगै छथि कोना।
बुझू धरतीमे गाड़ल हो खम्हा जेना।
कहू खम्हसँ उपमा कहलियैन्ह कोना।
हरिणकशिपु के खम्हा से उगला जेना॥
आब पुछथि स्नेहलता चलता कोना।
हम अंगुरी इशारा देखबियैन्ह जेना॥

ब्रह्मकैँ मैथिलानीए आँगुरपर नचा सकैत छथि। विप्रलम्भ श्रृंगार, हास्य, करुण, रौद्र, वीर, वात्सल्य आदि रस स्नेहलताजीक रचनामे देखाइत अछि। भक्ति रस हिनक रचना सभक अंगी रस अछि। एहि भक्तिमे शान्त, सख्य, वात्सल्य आ श्रृंगार प्रमुखतासँ उपस्थित अछि।

स्नेहलताजीक रचनामे छन्दविन्यास एकदम सहज, सरल आ नैसर्गिक रूपसँ प्रकट भेल अछि। छन्दक विभिन्न अवयव यथा पाद, मात्रा, गति, यति, तुक, प्रवाह आदि नादसौन्दर्यक आधारभूमि रहैछ। यैह तत्त्व रचनाकैँ गेय बनबैत अछि। गेयधर्मिता स्नेहलताजीक समस्त गीतक प्राण अछि। दोहा, चौपाई, सोरठादि सरल छन्दक अनुशासन रखैत अवश्य छथि मुदा आवश्यकतानुसार एहि मात्रा गणनासँ विचलनकैँ सेहो सहजतासँ स्वीकार कएने छथि।

हे कमलनयन हे करुणाकर अपराध बहुत हम कयने छी।
तैयो अपन कल्याण हेतु अपनहि पर आशा धयने छी।

एकर प्रत्येक चरणमे 16-16 मात्रा अछि, प्रथम आ तृतीय चरणान्तपर यति एवं द्वितीय आ चारिम चरणान्तमे तुकक विन्यास भेल अछि। ओना गेयताक रक्षण

निमित्त हिनक गीतमे कतेक ठाम हीया, धीया, पीया, हरी, माती आदि दीर्घ रूप केर प्रयोग सेहो भेल अछि।

वामन (रीतिरात्मा काव्यस्य) रीतिकेँ आ आनन्दवर्द्धन (काव्यस्य आत्मा ध्वनि:) ध्वनिकेँ काव्य केर आत्मा मानैत छथि। स्नेहलताजी सभठाम एहि सरस निकषकेँ साधने छथि। एहि वैशिष्ट्य संग जे साधल शब्द संचयन सुगुम्फित भेल से सोनमे सुगंध आनि देलक।

आचार्य दण्डी कहैत छथि— काव्य शोभाकरान् धर्माण अलंकारान् प्रचक्षते। विभिन्न अलंकारसँ काव्यक लावण्य बढ़ि जाइत अछि। स्नेहलताक रचनामे अलंकार अनायासे सहजतापूर्वक आबि गेल अछि।

जादू भरे नैन तोरे जादू भरे नैन
ओ हमारे मोहना जुलुम तोरे नैन।

माथे मणि मौड़िया जुलुफ कारी-कारी
श्यामल ललाट पर तिलक उजियारी
लागे जेना चन्द्रमा के तरे-तरे रैन।
ओ हमारे मोहना...

भृकुटी कटीली गुलाब केर डारी
काते-काते अँखिया कयल कजरारी
लागे जेना भौँरा पसारे दुनू डैन॥
ओ हमारे मोहना...

कारी-कारी केशपर श्वेताभ मणिक मौड़ी, श्यामल ललाटपर श्वेत तिलक जेना अन्तसमे रातिक अन्हरिया नेने चन्द्र इजोरिया बिलहि रहल हो। भौंह गुलाबक डारि हो आ दुनू कात आँखि जेना कोनो कारी भ्रमर अपन दुनू पंख पसारि देने हो। टेक आ अन्तराक पूरक पंक्तिक संयोग बेहतरीन भेल अछि। चन्द्रमाक तरे-तरे रैन आ भौँरा पसारे दुनू डैनसँ एहि गीतक आन्तरिक सौन्दर्य विह्वल करैत अछि। विलक्षण उपमा! अप्रतिम उत्प्रेक्षा! महाकवि कालिदासक स्मरण होएब अस्वाभाविक नहि।

धनि धनि सुनयनाजीक अंगनमा, दुलहिन दुलहनमा।
मिथिला के मानसरोवर मंडप अति पावन सुन्दर ताहि बीच हंसिन ओ हंसनमा।

एहि गीतमे सुनयनाक आँगनक मंडपमे अप्रस्तुत मानसरोवर आ ओहिमे हंस-हंसिनी रूपमे राम-सीताक आरोपनसँ रूपक अलंकार केर सुन्दर सर्जना भेल अछि। अनेक गीतमे स्नेहलताजीक दार्शनिक भाव अभरल अछि। हृदय मिथिलाक सुन्दर कोबर अछि जाहिठाम हंस-हंसिनी रूपमे ब्रह्म आ जीव एकाकार होइत अछि। सरल शब्दमे गूढ़ बात कहबाक कलामे स्नेहलताजी निष्णात छथि।

स्नेहलता पदावलीमे अनुप्रास अलंकारक अप्रतिम आयोजन अभरल अछि। किछु उदाहरण द्रष्टव्य—

'मोहिनी मुरतिया देखि मोहे मोर मनमा हे मनमोहन दुलहा'

(वृत्यानुप्रास)

'विधि हरि हर सुर नर मुनि किन्नर हे महरानी सीया

(छेकानुप्रास)

पदावलीमे सर्वत्र अन्त्यानुप्रासक प्रयोग भेल अछि। यैह हिनक गेयधर्मिताक मूलाधार रहल अछि। 'अति कराल कलिकाल काल सम व्याल विकट मुह बौने'मे यमक आ—

'रामलखन सुन्दर वरकेँ जुनि पढ़ियौन केओ गारी हे
केवल हास विनोदक पुछियौन उचित कथा दुइ चारी हे...'

मे व्याजोक्ति अलंकारक सुन्दर रूप भेटैछ। रूपकातिशयोक्ति अलंकारक सुष्ठु उद्धरणमे स्नेहलताजीक जाहि पद आ आगूक उद्धरण प्रस्तुत अछि ओ समीक्षक द्वारा स्नेहलताजीकेँ किछु हल्लुक-फल्लुक रचनाकार आ तुकबंदी माननिहार सभकेँ विस्मिते नहि करत, हुनका सभकेँ चकबिदोर सेहो लगा देत। हिनक एहि पदपर आ अगिला पदपर विचार कयल जाय—

सखि हे नीलकमल मुस्काय।
सिय लछुमन तन स्वर्ण सरोवर दुति जल पूरण छाय।
ता बिच नीलम नाल विराजित ऊपर सुमन फुलाय॥
युग मधुकर तेहि ऊपर गुंजत चारू झुमि झुमि जाय।
प्रेम प्रफुल्लित मिलत परस्पर पिबत पराग अघाय॥

श्याम घटा घिर आय कमलपर रद वक पाँति सजाय।
विधि हरिहर तहँ शिखन मनोहर नाचि नाचि पुलकाय॥
सुरगण सौरभ लेत पवन गति मन्द बहुत अलसाय।
स्नेहलता लखि अनुपम झाँकी जीवन के क्षण पाय॥

एहि पद केर जेहने भावसौन्दर्य तेहने काव्यसौन्दर्य! दुनू बेछप अछि। गोर सीता आ गोर लखनलालक स्वर्णिम शोभासँ सरोवरक जल सोन सन आभासँ चमकि रहल अछि। एहि मध्य नीलाभ कमल-नाल सन ग्रीवावला श्रीरामक नीलकमल मुख प्रफुल्लित अछि। श्यामल घटा आएल अछि, श्यामल मुखमे धवल दंतपंक्ति जेना कारी बादलमे श्वेत बगुलाक पाँति सुशोभित हो। ब्रह्मा, विष्णु आ महेश एहि सुन्दर सरोवरक अनुपम दृश्य देखि पुलकित होइत नचैत छथि। देवगण नीलकमलक पराग लऽ रहल छथि। अलसाइत पवन एहि दृश्यक बेसीसँ बेसी आनन्द लेबाक लेल मन्द भेल अछि। गीतकारक मोन जतबे एकर सुन्दर बिम्बविधानमे रमल अछि ओतबे गस्सल एकर बनावट सेहो अछि। विद्यापतिक पद ‘पल्लवराज चरणयुग शोभित गति गजराजक माने...’ आ सूरदासक ‘अद्‌भुत एक अनुपम बाग, जुगल कमलपर गजवर क्रीड़त तापर सिंह करत अनुराग’क सौन्दर्य सेहो समाने ढंगसँ अभिव्यंजित भेल अछि। तीनू प्रातिभक अपन-अपन वैशिष्ट्य अछि। चमत्कार केर सौन्दर्यमे विद्यापति आ सूरकँ आगू अवश्य कहि सकैत छी मुदा सहजताक एक जे अपन फराक् सौन्दर्य होइछ ओहिमे स्नेहलताजीक परतर अन्यत्र नहि अछि। हुनक ई वैशिष्ट्य अनुपम अछि। किछु एहने भावभित्तिपर आधारित एहि पद केर सौन्दर्य देखल जाय—

एकटा कनक कुमुदनीक फूल।
मणि-मण्डप पर नील सरोवर दुति जल पूरक कूल।
अन्तर विकसित नलिनि नालपर किछु कारण प्रतिकूल।
त्रय विंशत संग कल्पवृक्ष इक जतय कुमुदनीक मूल।
नहि प्रगटित पुनि सब फल दायक याचक मन अनुकूल।
पाँच प्रवाल लाल सुरतरु पर प्रेम जौहरी झूल।
मोती पाँच अरुण अरु सजनी ओहि पाँचक समतूल।
तीन नलिन पुनि सखि बड़ सुन्दर एक से एक अतूल।
स्नेहलता लखि लखि छवि अनुपम तनमन की सुधि भूल।...

कनक कुमुदिनी सीता मणि-मंडपपर अभरल रामक आभासँ निर्मित नील सरोवरमे सुशोभित छथि। एहि कुमुदिनीक मूल स्थानमे 23 देव संग कल्पवृक्ष छथि जे याचक सभकेँ मनोनुकूल फलदायक छथि, मनोकामना पूर्ण करैत छथि। एहि कल्पवृक्षपर पाँच लाल प्रवाल झुलि रहल छथि आ हिनक समतूल पाँच अरुणाभ मोती सेहो एहि सरोवरमे छथि। कुल 23 + 5 + 5 = 33 कोटि देवताक प्रतीक अछि जेकर मूल सियाजी छथि। अर्थात् सियासुकुमारी समस्त तैंतीस कोटि देवक अधिष्ठात्री छथि। हिनक तीन सखि— उर्मिला, मांडवी आ श्रुतिकीर्त्ति सेहो एहि सरोवरमे कुमुदिनी रूपमे शोभायमान छथि। रागानुगा भक्तिक पाँच प्रकार अछि— शान्त, दास्य, सख्य, वात्सल्य आ श्रृंगार। भावक सान्द्रत्वसँ शान्त दास्यमे, दास्य सख्यमे, सख्य वात्सल्यमे आ वात्सल्य श्रृंगारमे ओतप्रोत अछि। पाँच प्रवाल यथार्थमे पंच प्राण— प्राण, उदान, समान, व्यान आ अपान अछि। एहिना एहि पदमे उल्लिखित पाँच मोती पंच प्राणक क्रमशः उप प्राण- नाग, देवदत्त, वृकल, धनंजय आ कूर्म अछि। पंच तन्मात्रा पंचभूत केर सूक्ष्म रूप अछि। स्थूल रूप पाँच इन्द्रिय— नेत्र (रूप तत्त्व ग्रहण लेल), कान (श्रवण तत्त्व ग्रहण लेल), नाक (गंध तत्त्व ग्रहण लेल),जी (रस तत्त्व ग्रहण लेल) आ त्वचा (स्पर्श तत्त्व ग्रहण लेल) अछि। ध्यातव्य जे पंच महाभूत— धरती, जल, अग्नि, आकाश आ वायुसँ निर्मित एहि शरीरकेँ त्रिदोष— कफ, पित्त आ वायु भेलेपर कोनो बीमारी पकड़ैत अछि। इहो उल्लेखनीय अछि जे आयुर्वेदमे प्रवाल पंचामृत अनेक असाध्य रोग सभक उपचारमे कारगर अछि जाहिमे प्रवाल भस्म, मोती भस्म, शंख भस्मादि केर प्रयोग होइत अछि। स्नेहलताजी अपन आयुर्वेदक नीक ज्ञान आ दर्शनक गूढ़ तत्त्वसँ सहज साक्षात्कारक सुन्दर सदुपयोग एहि पदमे कयने छथि। ध्यातव्य जे एहि पदमे प्रयुक्त प्रत्येक वस्तु जलसँ संबंधित अछि। समुद्रमंथनसँ उत्पन्न कल्पवृक्ष अछि। पाँच प्रवाल (मूँगा), पाँच मोती आ चारिटा नलिनी सभक संबंध जलसँ। जल जीवनक आधार! चारू कुमुदिनी चारि अवस्था— जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति आ तुरीय अवस्था केर द्योतक। सीता तुरीयावस्थाक प्रतीक छथि जाहिमे चारू अवस्थाक लय अछि। एहि चारू अवस्थाक स्वामी विश्व, तेजस, प्राज्ञ आ ब्रह्म छथि। सीता आदिशक्ति ब्रह्मस्वरूपा छथि। ई चारि क्रिया— यज्ञक्रिया, श्रद्धाक्रिया, योगक्रिया आ ज्ञानक्रिया समाहित अछि जेकर चारि फल— धर्म, अर्थ, काम आ मोक्ष अछि। सीता एहि सभक मूल छथि जे चारू लीला— संस्कारलीला, श्रृंगारलीला, विहारलीला आ संहारलीला करैत छथि। एहि सीता रूपी कनक कुमुदिनीक जड़िसँ कल्पवृक्ष उद्भूत अछि जे मनोनुकूल फलदायी अछि। ब्रह्म आ जीव केर एकात्म

भावक अनुपम प्रस्तुति! स्नेहलताजी अपन दर्शनमे द्वैत-अद्वैत सन गूढ़ घुरछी, ब्रह्म आ जीव केर ऐक्य-अनैक्यपर ओझराएल गेँठी आ कर्म-ज्ञान-भक्तिपर ओझराएल भावकेँ सहजतासँ सोझरा दैत छथि। पंचदेवापासक रहितो स्नेहलता सीताकेँ सखि मानि श्रोता सभकेँ जे रामाश्रयी रसिक सखी सम्प्रदायक मधुरोपासना भक्तिक राजमार्ग धरा देलनि ओ अनुपम अछि। मिथिलामे रामाश्रयी रसिक सखी सम्प्रदायमे स्नेहलता शीर्ष आचार्य भेलाह। एकहि संग आचार्य, आशुकवि, गीतकार, व्याख्याता, गायक, वादक, कीर्त्तनियाँ, वैद्यराज रहितो स्नेहलताजी एक सहज मैथिल मानुष छलाह। अपन रचनामे स्नेहलता परम्परागत भावकेँ पल्लवित मात्र नहि कएलनि अनेक ठाम मौलिक अवधारणा सेहो देलनि। श्रीसीतावतरणमे रामक जन्मपर अयोध्या जा जे जनकजी जमाय रूपमे रामकेँ ग्रहण करबाक कामना करैत छथि ओ मौलिक अवधारणा अछि। एहिमे जे दगरिन आ कौशल्या संवाद (पृष्ठ 19-20) अछि ओ समाजशास्त्रीय आ काव्यशास्त्रीय दुनू दृष्टिसँ मौलिक आ अनुपम अछि। भक्त कवि-गीतकार रहलाक बादो हुनक दृष्टि समाज सापेक्ष छल। एहन नहि अछि जे ओ मात्र भक्तिमे रमल छलाह वा आरतीक थारीक धाहमे मगन रहलाह। ओ किसानक आह अकानि लेलनि, युग चेतनाक समकालीन स्वर सेहो सुनलनि। हुनक संवेदनशील कविमन किसानक दीनताक चित्रणक बादो हुनक हृदयक विशालताक वर्णन करैत अछि—

हम किसानकेँ धन्य कहै छी जे जगकेँ बिलमौने छै।
तकरे हाँ हाँ एहि बिहारमे निर्बल दीन बनौने छै।
शीत-घाममे खेतक कारण तन केर खून सुखौने छै।
जे सबकेँ सब दिन सुख देलक तकरे हृदय दुखौने छै।
तैयो हृदय विशाल बना कऽ नीति अपन बनौने छै।
देशक दुख मेटाबय नितदिन स्नेहलता' लतरौने छै।

किसानक दुरावस्थाक बादो स्नेहलता किसानी करबाक लेल वा भूख मेटाबय लेल उद्धत छथि—

बाबा आनि दियउ खुरपी कोदारी रे, हमहूँ करब खेतिया॥
जोति कोड़ि कऽ खाद पटायब, ढेला चौकीसँ चौकिआयब।
बीज पूसासँ लऽ आयब सरकारी रे, हमहूँ करब खेतिया॥
अन्नसँ भरबै हम गोदाम, भूखक रहऽ न देबै नाम।
हम तऽ स्नेहलता'लतरायब सभक दुआरी रे, हमहूँ करब खेतिया॥

बाढ़ि, अनावृष्टि, राशन लेल मारामारी, राजनीति, चर्खा, दहेजप्रथा, ऊँच-नीच, हताशा, निराशा, बेरोजगारी आदि समसामयिक विषयपर गीत रचि स्नेहलता अपन युग चेतनाकेँ स्वर देलनि। स्नेहलताजीक परिचिति यैह अछि। आशा नहि विश्वास अछि जे स्नेहलता के? एहि प्रश्नक उत्तर भेटि गेल होयत। साधारणमे असाधारण! सरलतामे वैशिष्ट्य!! तथापि एकर कचोट अछि जे स्नेहलताजीकेँ कोनो सम्मान नहि भेटि सकल। हँ, एहि बातक आत्मतोष अवश्य अछि जे आम जनकंठमे हुनक स्थायी स्थान अछि, आम मैथिलक हृदयमे अत्युच्च सम्मान अछि।

अखन हालेमे अमर गीतकार गुलजार (मूल नाम सम्पूरन सिंह कालरा) एवं बाल्यकालेसँ निपट सूरदास, भारतवर्षक सर्वश्रेष्ठ जीवित मेधासूर्य, मानसमर्मज्ञ आ शताधिक ग्रंथ सभक यशस्वी रचयिता रामभद्राचार्यजीकेँ ज्ञानपीठ पुरस्कारक घोषणापर आयातित काव्यशास्त्रक व्याख्याता आ अवकाशप्राप्त सम्पादक श्री ओम थानवीजीक आक्रोश देखल। ओ गुलजारजी आ रामभद्राचार्यजीकेँ पुरस्कृत करबकेँ ज्ञानपीठ पुरस्कारक पतन कहलनि। गीतकारकेँ किएक ई प्रतिष्ठित पुरस्कार देल गेल जखन अनेक कवि एहि पुरस्कारसँ वंचित छथि, ई प्रश्न हुनक साहित्यिक सोचपर प्रश्नचिह्न ठाढ़ करैत अछि। श्री रामभद्राचार्यजीक शताधिक व्याख्यानमाला ग्रंथ, महाकाव्य आदिसँ कोनो एक पोथीक उच्चताक शतांशक स्पर्श जखन हिनक आदर्श अज्ञेयजी नहि कऽ सकलाह तखन ओम थानवीजीक कोन हस्ती! ई अक्षरशः ओहने अछि जेकर चर्च आरम्भमे बॉब डिलन केर सन्दर्भमे कएने रही। गीतकार सभकेँ एहने अछरकटुआ समीक्षक कवि वा साहित्यकार नहि मानैत छथि। नहि मानू, ई अहाँक सीमा थिक। बौआइत रहू आभासी दुनिआक आत्ममुग्धताक जंगलमे! जन-जन केर हृदयमे जतेक जीवन्त रूपसँ कोनो लोकप्रिय गीतकार रहैत छथि ओ बहुत कवि सभक लेल सेहो स्पृहणीय होइछ। अमर गीतकार कपिलदेव ठाकुर ‘स्नेहलता’ एहि कोटिक गीतकार छथि। अपना जीवनकालेमे अपन गीत सभक लोकप्रियतासँ आमजन केर हृदयपर राज करबाक ई असाधारण जनसम्मान विरले साहित्यकारकेँ भेटैछ। बाबा विद्यापतिक बाद ई सम्मान ओझाजी, मधुपजी, प्रदीपजी, स्नेहलताजी, दामोदरजी, रवीन्द्रजी, सौरभजी, सरसजी आ चन्द्रमणिजीएकेँ भेटि सकल।

[2024]

मैथिलीक कालिदास आचार्य सुरेन्द्र झा 'सुमन'

बाबा विद्यापतिक आसवसँ चिरजीवी मैथिली काव्य-जगत् प्राणवन्त बनल अछि। मैथिली साहित्य सरोवरमे मेधाक मृणाल-जाल पसरल अछि। एहि काव्य सागरमे यत्र-तत्र छिड़िआएल असंख्य मोती-माणिक्य अपन मणि-प्रभासँ मैथिलीक मान बढ़बैत छथि। एतऽ मेधाक उत्कर्ष अनुपम आ काव्य-प्रतिभाक प्रकर्ष अप्रतिम। एकसँ एक प्रातिभ सभक चमत्कार! आजुक विमर्शमे 'कला कलाक लेल' वा 'कला जीवनक लेल' केर द्वन्द्व अछि। कविता आम पाठकक लेल वा अभिजनक लेल केर विवाद सेहो। की कवितामे छन्द, रस, गुण, धर्म, गति, अलंकारादि पहिलुक काव्यशास्त्रीय निकष केर परिपाक हो वा आयातित काव्यशास्त्रानुसार एहि पुरा निकष सभसँ मुक्तिक छटपटौनी उचित अछि, एहिमे सहज प्रसाद गुणयुक्त गेयता हो वा अबोधगम्य गूढ़ गद्यांश हो। एहि प्रकारक विभिन्न विमर्श केर हमर एकमात्र उत्तर छथि महाकवि पं. सुरेन्द्र झा सुमन— मैथिलीक महाकवि कालिदास!

सुमनजी बल्लीपुर (समस्तीपुर) गाममे वैद्य एवं 'परमप्रिय पावन तिरहुत देश' सन गीत सभक गीतकार रूपमे यशस्वी पिता भुवनेश्वर झा 'भुवनेश'क घरमे दि. 9 अक्टूबर 1910कँ मेधारत्न रूपमे एहि धराधामपर अवतरित भेल छलाह। 1929 ई.मे कलकत्तासँ काव्यतीर्थ परीक्षामे शीर्ष स्थान प्राप्त कयलनि फेर मुजफ्फरपुर (बिहार)सँ 1930 ई.मे साहित्यशास्त्री आ 1932 ई.मे साहित्याचार्य परीक्षामे प्रथम स्थान प्राप्त कयलनि। सुमनजीक अनुपम मेधाक लघुरूप विभिन्न परीक्षामे सर्वोच्च स्थानमे प्रतिभासित भेल छल मुदा एहि प्रातिभक प्रतिभाक विराट् रूप हिनक रचना संसारमे अभरल। काव्य सौन्दर्यक एहि अभिनव रूपपर पैघ पाठकवर्ग प्रमुदित भेल। श्रृंगारहारमे संकलित एहि पद केर कमनीयताक आनन्द लेल जाय—

1. *अभियन्ता कन्दर्प ई भृकुटिक बान्ह बनाय।*
नयन ज्योत्स्नासँ तरल विद्युत देल छिटकाय।

हमरा जनैत कामिनीक आँखिपर लिखल गेल ई अनुपम बिम्बविधान समस्त साहित्यमे सर्वश्रेष्ठ अछि। मुनल आँखिपर कामदेव भौँह केर बान्ह बना देने छथि आ जखने आँखि खुजैत अछि कि पनिबिजली चमकि जाइत अछि। अभिनव उपमा! अपूर्व! श्रृंगारहारसँ उद्धृत किछु एहन पंक्ति सभक काव्य सौन्दर्य देखल जाय—

2. *मृग दृग चंचल दूरत गति दौड़ि रहल श्रुति कुंज।*
कुटिल भृकुटि धनु तनल पुनि हनल जाय युव-पुंज।

3. *चन्द्रहार उडु मणि खचित उर अंबरे खगोल।*
ग्लोबे थिक नितम्ब ई पूर्व-पश्चिमी गोल।

4. *कटि तट शोभा कूट छल काटि काटि निधि चारु।*
उर नितम्ब परिपुष्टि-हित सठा देल विधि कारु।

5. *नील कंचुकी कसि उरस पहिरलि मुक्ता-दाम।*
मेरु-शिखरपर तारांकित उतरलि यामिनी श्याम।

6. *जघन स्फटिक स्वच्छ मृदु मसृणतम कदली गर्भ प्रमान।*
करि कर अनुलम्बित जघन एकत सभ उपमान।

7. *तीनि चरण चलि त्रिविक्रम जीतल वलि छलि लेख।*
त्रिवलि जीति त्रिघली बलित एक एक बलि रेख।

एहिना सुमनजीक श्रृंगार तिलकमे संकलित किछु पद्यांशक काव्य चमत्कारसँ साक्षात्कार कयल जाय—

8. *भुज मृणाल, मुख कमल, चख मीन, केश शैवाल।*
कुच चकवा, लावण्य सर, मदन दग्ध हित बाल।

9. *पहु नहि, मधु निशि, विरह जरि पुनर्जन्म जौँ लेब।*
पिकक व्याध भै राहु बनि विधुक छोड़ैब कुटेब।

10. *एकहु खंजन कंज-गत भूपति पद चढ़बैछ।*
अहँक मुखकमल चित युगल मदने गर्त खसबैछ।

11. *भेल अराजकता एतय की डकैतहिक छूटि।*
जे कामिनि चललहुँ अहाँ विवश हमर चित्त लूटि।

12. *गृह त्रिदोष-औषधि युवति हरति सकल दुख मेलि।*
पित्त अधर रस, वात कुचमर्दन, कफ रति-केलि।

13. *भामिनि! यदि अहँ कुपित, पुनि कहब कथा शत बेरि।*
चुम्बन आलिंगन हमर थीक उचित दी फेरि।

14. *फूलक उद्‌भव फूलसँ कतहु सुनल नहि कान।*
देखल धनि-मुख-कमलमे नयन नलिन छवि मान।

15. *रस शृंगारक प्रान चान वा मदन वसन्ते।*
रचलन्हि धनिक शरीर प्रजापति नव रसवन्ते।

16. *धारि कमंडलु रटथि वेद अन्तर न विषय रुचि।*
सृष्टि व्यस्त धाता पुरान कथमपि न सकथि रचि।

एहि पद सभक लालित्य, मसृणता, अर्थ गौरव, शृंगारिकता सभक सूक्ष्मतापूर्वक अनुशीलनसँ स्पष्ट होइत अछि जे सुमनजीक कारयित्री प्रतिभा उच्चताक जाहि कंचनजंघा चढ़ि सगरमाथी शिखर केर स्पर्श करैत अछि ओ सरिपहुँ अद्‌भुत अछि। काव्यकलाक यैह हिमकिरीट रूप आ. सुमनजीकेँ महाकवि कालिदासक पंक्तिमे स्थान सुरक्षित करा दैत अछि।

शृंगारक अभिनव वातायन खोलैत एहि रचना सभमे रस, गुण, धर्म, उपमादि अलंकार सभक जेहन अनुपम प्रयोग भेल अछि ओ विस्मित करैत अछि। पद दूसँ चारिक चारुता चकित करैत अछि। पद 5मे प्रकृतिसुन्दरी रूपमे सन्ध्याक

अवतरण आह्लादित करैत अछि। छठम पदमे जाँघक उपमान समस्त प्रतिमान ध्वस्त करैत अछि। सातम पदमे परिणीताक पेटपर अभरल त्रिवलीकेँ तीन डेगमे पृथ्वी नापि लेबाक व्याख्या अद्वितीय बनल अछि। उद्धृत पद 8 केर उपमा आ एहिमे अभरल सरस शब्दचित्र सुन्दर बनल अछि। 9मे विरहसँ मुइलापर जे राहु बनि ग्रहणमे चन्द्रमाक कुटेब छोड़एबाक कल्पना भेल अछि ओ विलक्षण अछि। पद 12मे आयुर्वेदमे वर्णित समस्त रोगक मूल त्रिदोष (कफ, पित्त आ वात)सँ रक्षा केर उपाय केनिहारि कामिनीक जे सरस वर्णन भेल अछि ओ सरिपहुँ अद्‌भुत अछि। पद 13मे चुम्बन-आलिंगन आपस करबाक बात कविक चातुर्यक चरम अछि। जँ चुम्बन-आलिंगन आपस होयत तखन ओहिना फेर सभटा भेटि जायत। चातुर्यक पराकाष्ठा! पद 14मे जेना सुमनजी प्रकारान्तरसँ महाकवि कालिदासकेँ स्मरण कयने होथि। फूलसँ फूलक उत्पत्ति सुनल नहि जाइछ मुदा कामिनीक मुखकमलमे दू नयनकमल देखल। एहि पद केर सौन्दर्य जतबे रमणगर अछि एकर प्रभाव ओहने युगान्तकारी। हमसब अवगत छी जे श्रीलंकाक माटरा नगरमे एक गणिकासँ समस्याक प्रथम पंक्ति— कमल: कमलोत्पत्ति: श्रुयते न तु दृश्यते (कमलसँ कमल केर उत्पत्ति सुनल जाइछ मुदा देखल नहि जाइछ) सुनलापर समाधान रूपमे महाकवि कालिदास दोसर पंक्ति— बाले तव मुखाम्भोजे कथमीन्दीवर द्वयम् (हे स्त्री! तखन अहाँक मुखकमलसँ दू नयनकमल कोना विकसित भेल) कहने छलाह। ई विलक्षण समस्यापूर्ति महाकविक महाप्रयाण केर कारण भेल छल। सिंहलराज जानकीहरणकार कुमारदास (अपर नाम कुमार धातुसेना) द्वारा सर्वश्रेष्ठ समस्यापूर्तिपर दस सहस्त्र स्वर्ण मुद्राक घोषित इनामक लोभमे राजनर्तकी द्वारा माहुर खुआ महाकवि कालिदासक हत्या कयल गेल छल। राजा कुमारदास जखन सम्पूर्ण तथ्यसँ अवगत भेलाह तखन अपन मित्र महाकवि कालिदासक राजकीय चिता सजओलनि आ मित्रक रक्षा नहि कऽ सकबाक संतापसँ स्वयं धधकैत चितामे प्रवेश कऽ गेलाह। बादमे हिनक पाँच रानी सेहो चितामे प्रवेश कयलनि। कुल सातटा बोधि वृक्ष समाधि स्थलपर लगाओल गेल छल जाहिमे किछु अखनो माटरा शहरमे बाँचल अछि। दुनू महाकविक महाप्रयाण स्थलपर भगवान् बुद्ध केर मन्दिर स्थापित अछि जे अखनो माटरा महाबोधिय आ हतबोधिय (सिंहलीमे हत माने सात) रूपमे सुप्रसिद्ध अछि।

उल्लेखनीय अछि जे उपर्युक्त पद सभक अंगीरस शृंगार अछि मुदा ई शृंगार काम वासनात्मक नहि अछि। सुमनजीक रचना सभमे शृंगार वारांगना सभक

उत्कट सिंगार-पटार वा कृत्रिम भाव-भंगिमा-व्यवहार रूपमे नहि अछि। ई कोनो सर्वांगसुन्दर लावण्यवती कुलवधूक नैसर्गिक चारुता आ हास-लास्य रूपमे वर्णित अछि। ई सौन्दर्यक एहन रूप अछि जकरा देखलासँ मोनमे कोनो विकार नहि अबैछ अपितु ई हृदतंत्रीक तार झनझना मोन प्रमुदित करैत अछि। जेना केराक सुरेबगर थम्बवला गाछ सभक आगू राखल माटिक कोनो दीपशिखा! महाकवि कालिदासकेँ सेहो एहने 'दीपशिखा' मानल गेल। महाकवि कालिदासकेँ दीपशिखा कहबाक आधार रघुवंशम् केर ई श्लोक (6/67) अछि—

सञ्चारिणी दीपशिखेव रात्रौ यं यं व्यतीयाय पतिंवरा सा।
नरेन्द्रमार्गाट्ट इव प्रपेदे विवर्णभावं स स भूमिपालः॥

भाव अछि जे रातिमे जखन लोक दीप नेने राजमार्गपर चलैत छथि तखन मार्गक कात केर भवन आलोकित होइछ। एहिना इन्दुमती अपन स्वयंवरमे जाहि राजाक समक्ष जाइत छथि तखन हुनक आभासँ राजाक मुख चमकि जाइत अछि। राजमार्गपर जेना-जेना ई दीपशिखा आगू बढ़ैछ तेना-तेना पाछू होइत घर फेर अन्हारमे विलीन भऽ जाइत अछि। एहिना जाहि राजाक सोझासँ इन्दुमती आगू बढ़ि जाइत छलीह हुनका सभक मुख विवर्ण होइत जाइत छल। एहि अद्भुत श्लोक केर तुलना जँ सुमनजीक उद्धृत पद सं. 1सँ करी तखन सुमनजीक पद कनियो हीन प्रमाणित नहि होयत। दुनू उपमा केर शीर्ष, दुनू रस केर अनन्त स्रोत, दुनू भाव विह्वल करबामे सक्षम! हमरा समक्ष 'को वर छोट कहत अपराधू' वला स्थिति अछि। भाव गाम्भीर्यक निकषपर ई पद महाकवि सुमनजीकेँ मैथिली कवि सभक दीपशिखा केर गौरव प्रदान करैत अछि। सरिपहुँ ओ मैथिली श्रृंगार काव्यक कन्दर्प छथि। सुमनजीक उपमामे पार्थक्य केर कारण अछि समयक दीर्घ अन्तराल। पनिबिजलीक आविष्कार आधुनिक कालमे भेल जेकर अनुपम उपयोग महाकवि सुमनजी एहि पदमे कयलनि। उद्धृत पद 15 तऽ महाकवि कालिदासक विक्रमोर्वशीयम् केर भूमिका रूपमे लिखने छथि। ई तथ्यात्मक अछि जे सुमनजी महाकवि कालिदासक लेल अतिरिक्त मात्सर्य रखने छलाह। सुमनजीक आषाढ़स्य प्रथमे दिवसेमे महाकवि कालिदासक मेघदूतम् जेना अपन सम्पूर्ण सौन्दर्यक संग साकार भऽ गेल हो। कालिदासक श्रृंगार— तिलकपर आश्रित सुमनजीक पोथी मैथिली मन्दिर, दरभंगासँ प्रकाशित भेल छल। पूर्व उद्धृत पद 8, 9, 11,12,14,15 आदि श्रृंगारतिलक केर दोसर संस्करण (1969 ई.)सँ

लेल गेल अछि। वसन्त तिलक (4×16 मात्रा) आ शार्दूलविक्रीडित (4×19 वर्ण) सन वृहत् छन्द केर भाव-सागरकेँ दोहा (2×13, 2×11 मात्रा) रूपी लघु छन्दक गागरमे अँटा सुमनजी जे रसराजक छटा पसारलनि ओ अद्‌भुत अछि। दू प्रतिभा-पारससँ जे मणि-कांचन योग बनल ओ कल्पनातीत अछि।

रसराज श्रृंगारक सुमेरुसँ साक्षात्कार आओर सहज-सरल चमत्कार सभक आकार एवं सितुआमे समुद्र समेटबाक नूतन कल्पनाक वितानसँ एतबा धरि स्पष्ट अछि जे सुमनजी विशिष्ट छथि। सुमनजीक सरस साहित्य-सरितामे अवगाहनक बाद हमरा लेल संकट ई अछि जे हुनक कोन रचना सभक उद्धरण दी। जाहिपर ध्यान जाइत अछि वैह उद्धृत करबाक मोन होइत अछि। ई सुमनजीक साहित्यिक सौन्दर्यक सान्द्रत्व अछि। प्रकृति शतकमे प्रकृतिक स्तवन, दिवा-रात्रिक वर्णन, मास-व्योम भूमि प्रकरण आदि आएल अछि ओ प्रकृति केर मानवीकरण केर उत्कृष्ट उदाहरण बनि गेल अछि। सुमनजी प्रकृतिक मानवीकरण मात्र नहि कयलनि। मानवकेँ प्रकृतिवत् निरूपण सुमनजीक अपन वैशिष्ट्य अछि। कविक भाव-व्यंजना आह्लादित तऽ करिते अछि हुनक नूतन कल्पना, अलंकार योजना, शब्दशक्ति, रूपक, अन्योक्ति-वक्रोक्ति, सौन्दर्यक सितुआमे समुद्रक समावेशन, काव्यक अद्‌भुत रूप केर उद्‌भावना चमत्कृत करैत अछि। भारतीय वाङ्मयसँ कच्चा माल आ संस्कृत साहित्यसँ सामग्री सभक संचयन कऽ ओकरा अपन मेधाक टकसालमे ढालि जे सुमनजी मौलिक मैथिल रूप देलनि ओ सरिपहुँ अद्वितीय अछि। साओन भादवमे जे रस केर परिपाक आ नूतन विधान विद्यमान अछि ओ अन्यत्र अत्यन्त विरल अछि। साओन-भादव केर एक पद देखल जाय—

ककर कटाक्ष तड़ित चंचल अछि, ककर पुलक ई नव कदम्ब अछि।
जलद-जाल बनि ककर अलक आकुल ई पसरल दिग-दिगन्त अछि।

ककर बलाका ललित प्रेम-लिपि गगन-पत्रमे अंकित नित नव।
चिर सुहासिनी प्रकृतिप्रिया केर तरल वयस ई साओन-भादव!

प्रभात वर्णनमे जे राति-दिनकेँ प्रभातक माता-पिता रूपमे वर्णन अछि ओ अद्वितीय अछि—

जननी रजनी कोर बसि, दिवस पिताक दुलार।
पाबि गाबि खग-कुल मुखर, उदित प्रभात कुमार।

आयातित काव्यशास्त्रक किछु कथित पुरोधा सभ जे समकालीन अकविताकेँ कविता कहैत कथित विद्वत्ता झारैत कमल-कंचन-कामिनी, आरतीक थारी, अहो रूपं अहो ध्वनि, रजनी-सजनी आदि शब्द-समूहसँ शुद्ध कवितापर व्यंग्य करैत छथि ओ यथार्थमे कविताक अहित करैत छथि। कविताकेँ लोकसँ विमुख करबाक लेल विर्त छथि। एहने समीक्षक सुमनजीकेँ 'कवि सभक कवि' कहैत छथि। सुमनजीक एहि कवितासँ रजनी-सजनी केर व्यंग्य बाणक संधान करैत छथि—

नित रजनी सजनी बितत नखत कुसुम सजि सेज।
उत्कंठित चित सगुनि दिन-पति नहि तदपि अङेज।

ई एकटा यथार्थ थिक जे एहि भाव-भित्तिक लोकमे काव्य केर मर्म धरि पहुँचबाक सामर्थ्यक अभाव रहैत छनि।

सुमनजीक रचना पढ़ब आ चाहब जे समाचारपत्र केर भाषा भेटए एहन अपेक्षा उचित नहि। हिनक रचना सभक आनन्द लेल सामान्य बौद्धिक स्तर आ सरस हृदय मात्र चाही। जँ दुनूमे एकोटा केर अभाव रहत तखन सुमनजी पुरातनपंथी आ प्रगतिशीलता वा नवीनताक विरोध हेतु प्रतिबद्ध 'मैटरनिक' लगबे करताह। गद्यगंधी पद्य वा भाव-रस-गति रहित गद्यिता (अकविता) पढ़बाक आकांक्षीजन सभक लेल सुमनजी काव्य नहि रचलनि। ओ जीवन्त भाव-रस-प्रवाहयुक्त शुद्ध कविता लिखने छथि गद्यिता नहि। एहिमे गति-प्रगति संग जन-सरोकार सुगुम्फित सेहो अछि। भूमिहीनताकेँ असहनीय आ श्रमकेँ सभक मूल मानबाक सुमनजीक साहसकेँ जन-सरोकारयुक्त नहि कहब अन्याये होयत—

भूमि-हीन भूमि-पुत्र कोना सहल जाय?
धनी धन्य कोना जखन भूख बढ़ल जाय?
श्रम मूल, पत्र-फूल सम्पदा सहाय,
कोना तखन श्रमिक श्रमण श्रद्धा फल लेब?
अपन भूमि रतन यदि न भाजन भरि देब।

(भिक्षापात्र, पयस्विनी)

भूमिपुत्र सभक भूमिहीनता हुनको कचोटैत छल आ बढ़ैत भूख केर स्थितिमे विभवशाली सभसँ शिवि समान दानी होयबाक आह्वान एहि विकट समस्याक समाधानक दिशामे एक क्रान्तिधर्मी डेग अछि।

सुमनजी किसानकेँ बलराम आ मिथिलेशसँ श्रेष्ठ ओहिना नहि कहैत छथि। एहिमे किसानक कल्याण केर स्वर अभरल अछि—

समता अहाँक कतयसँ करता जनकपुरक श्रीमान।
किन्तु विदेह वैह कहबैत छथि माटिक अहाँ किसान॥
भूमि फलकपर दूर क्षितिज धरि शस्यक चित्र महान।
हल-तूली अछि अहँक हे कलाकार रूचिमान॥

देशपर आएल संकट केर स्थितिमे सामान्य लोकक चिन्तन केर ई सुन्दर आ प्रेरक चित्र देखल जाय—

हल्दीघाटीक शिला तापी क्षुधित क्यो उद्‌भट प्रतापी।
संग भामा-चेतकक रस-रसद पठबय जा रहल छी॥
जौहरी चित्तौर एखनहुँ स्वर्ण वर्णक शुद्धि रखनहुँ।
बनि निकष पाषाण कनकन, कनक कसबय जा रहल छी॥

(अन्तर्नाद, जा रहल छी)

उक्ति-प्रत्युक्ति (प्रतिपदा)मे सुमनजीक कृषक-माली, सागर-नदी, फल-फूल, खरिहान-खेत, गिरि-रज इत्यादिक तुलनामे जे सामाजिक सरोकार अभरल अछि, स्वर्णकेँ शोषक आ लौहकेँ शोषित रूप आएल अछि ओ युग चेतनाक सापेक्ष स्वर थिक। प्रगतिकामी सभक आँखि विस्फारित करबामे समर्थ अछि ई तुलना। ई सर्वथा सत्य जे सुमनजी हाथमे कचिया वा मरिया नहि लेलनि मुदा एकर अर्थ ई कथमपि नहि अछि जे ओ युगधर्मकेँ नहि चीन्हलनि वा नवीनताकेँ रोकबाक लेल गवाक्षक अर्गला चढ़ा देलनि। हऽर-कोदारि-खुरपीक पुजारी कृषक-श्रमिक सभक दुर्दशापर हुनको मोन विकल होइत अछि। कविताक आह्वान (प्रतिपदा)मे हिनका सभक घामकेँ सुमनजी पावन गंगाजल कहैत छथि—

कुंज-पुंजसँ कोलाहल सुनि जन-पथ देखि समक्ष।
हर-कोदारि-खुरपीक पुजारी अर्द्धनग्न कत लक्ष॥
क्षुधित पिपासित रक्त शुष्क कय जोति कोड़ि जी दाबि
सुजल सुफला जनिक कठिन श्रम गीत वन्दना गाबि।

कृषक श्रमिक केर श्रम जल चुबइत पावन गंगा-नीर
साग-भात लय ठाढ़ि खेतमे कविता कमला तीर।

आश्चर्य जे एहन चित्र सभक अछैत सुमनजीकेँ नवीनता आ युग सापेक्षताक विरोधी सेहो कहल गेल। अपन-अपन दृष्टि आ अपन-अपन चश्मा! सुमनजी क्रान्तिधर्मी कवि सेहो छथि।

यथार्थमे सुमनजी भारतवर्षक शानदार अतीतक चित्रणसँ प्रशस्त भविष्यक निर्माण केर संकेत करैत छथि। पुरातनताक सुरभि नेने नवताक स्वागतमे एहि दुनूक सन्धिस्थलपर ठाढ़ छथि। सुमनजी साहित्यक मूल स्वर सत्यम्-शिवम्-सुन्दरम् सम्बलित समाजक हित छल। यद्यपि सुमनजी मौलिक काव्यशास्त्रीय निकष केर आग्रही आ सक्षम ध्वजवाहक छलाह तथापि युग चेतनाकेँ अकानि तदनुरूप रचना कयलनि। ओ आयातित आधुनिक काव्यशास्त्रीय निकषकेँ हीन अवश्य मानैत छलाह मुदा आधुनिकताकेँ, युग सापेक्षताकेँ अपन स्वर दैत रहलाह। भारतीय प्राचीन परम्पराक गौरवगान करब कखनो चारण-धर्म निर्वहन मात्र नहि कहल जा सकैछ। ओ संवेदनायुक्त सुकवि छलाह आ लोक वा समाज कल्याणक निमित्त सचेष्ट सेहो।

'उत्तरा' खंडकाव्यमे अभिमन्युक वीरोचित उत्सर्गक बाद जे उत्तरा 'वेदना वेदी बनलि' 'विरहाग्नि ज्वालित' रहैत 'श्वास-श्वास चढ़ाय समिधा आत्म आहुति' दैत छथि, मुमुर्षाक बादो पांडु-कुल-अंकुर जोगएबाक लेल उत्तराक जीबाक विवशताक जे सान्द्र चित्रण भेल अछि ओ सुमनजीक काव्य-कौशलकेँ अभिनव वितान दैत अछि। एहने समय कृष्ण आबि उत्तराकेँ बोल-भरोस दैत कहैत छथि—

करिअ नहि अनुशोचणा कल्याणि जकर उपाय नहि
विधि-विधान प्रमाण मानिञ, एतय आन सहाय नहि

धर्म पथ चूलि जीवनक रथ दिवंगत ओ देवता
पुजिअ गुन-गन समटि जोगबिय वंश-बीजक तरुलता

अछि अहँक दायित्व सर्वोपरि सम्हारिअ उत्तरे
वीर-पत्नी रहि बनिअ पुनि वीर-जननी वत्सले!

वीर-पत्नीकेँ वीर-जननी बनबाक आह्वानपर पाठकक कोँढ़ फाटि जाइत अछि। उत्तराक उत्तर विह्वल करैत अछि—

वीर पत्नी क्षत्राणी बनि अनिष्टे
आब नहि प्रभु, वीर माता बनब इष्टे।

सुमनजीक भावयित्री प्रतिभाक प्रकर्ष भाव-विभोर करैत अछि। अंतमे उत्तरा शक्ति, युद्ध वा संघर्षकेँ हीन आ भक्तिकेँ श्रेष्ठ कहैत छथि मुदा कायरताकेँ स्वीकार्य नहि मानैत छथि—

शक्ति रथ चढ़ितहुँ न स्व-वन घुमथु भीमा
भक्ति-पथ चलि सहज पहुँचथु पद असीमा।
किन्तु कायरता नहि कखनो समर्थित हो
क्षमा नहि अक्षमक किन्हु समर्पित हो
न्याय-यज्ञहि मात्र हिंसा कथचित हो
कवित ललितहि अतिशयोक्तिहु प्रपंचित हो।

(सातम सर्ग)

ई सुमनजीक समाज कल्याणीए भावक प्रकटन थिक। महाकाव्य लेल आवश्यक समस्त काव्यशास्त्रीय निकषपर सुमनजीक दत्तवती महाकाव्य पूर्ण सफलताक संग खरा सोना प्रमाणित होइत अछि। एकर उपजीव्य कथासरित्सागर (सोमदेव) अछि। समस्त काव्य रसक पूर्णतामे उपस्थितिक बादो एहि महाकाव्यक अंगीरस शृंगारे अछि मुदा राष्ट्रगौरव, विभिन्न बाह्य आक्रमण, विखण्डन केर प्रयास आ एकर निषेध, राष्ट्र रक्षा आ भारत वन्दना करैत कखन शृंगारक स्थानपर वीररस एकर अंगीरस बनि जाइत अछि ई पता नहि चलैछ। उत्तर-दक्षिण आ पूरब-पश्चिम केर क्षेत्र सभक समन्वयसँ सुमनजी जे भारतवर्षक भावात्मक एकताकेँ परिपुष्ट कयने छथि ओ सरिपहुँ प्रशंसनीय अछि, हिनक राष्ट्वादी सोच केर प्रतिबिम्बन अछि—

सभक प्रकृति ओ विकृतिक प्रज्ञा लय केन्द्रित किछु लक्ष्य
मूल संस्कृतिक एक सूत्रमे ग्रथित राष्ट्र संरक्ष्य।
मगध अवध वैशाली मिथिला अंगहु वंग कलिंग
असम आन्ध्र द्रविडहु कर्नाटक केरल मलय प्रसंग।

गुर्जर महाराष्ट्र सौराष्ट्रहु हैहय केकय सिन्ध
कुरु पांचाल पंचनद मरु मालव गिरि वन दिग्बन्ध।
सभक समन्वय नय-परिणय विचार विनिमय अनुबंध।
महाभारतक नव रचना हित समुचित विग्रह-सन्धि।

(दत्तवती,11म सर्ग, उद्योग पर्व)

महाकवि पं. सुरेन्द्र झा सुमनक विपुल काव्य रचनामे अंकावली, अर्चना, अन्तर्नाद, अन्योक्तिका, कवि नवतिका, नीतिका, कथा-यूथिका, जतरा चारू धाम, बुद्ध बोध, मुक्तावली, सनेस, गाम धरती, प्रकृति शतक, प्रकीर्ण शतक, प्रतिपदा, पयस्विनी (1971मे साहित्य अकादेमी पुरस्कार), ललना लहरी, साओन भादव, शृंगारहार आदि यशस्वी भेल। उत्तरा तथा कृष्णावतरण दुनू खंडकाव्य सुप्रसिद्ध भेल। दत्तवती मैथिली महाकाव्य जगत् केर माइलक पाथर भेल। उपन्यास उगनाक दयादवाद आ संस्मरण मोन पड़ैत अछि समादृत भेल। बाँग्लाक बोरोदीदी (शरत् चन्द्र) आ रवीन्द्रनाथ ठाकुरक गीतांजलि एवं निबंधावली केर अनुवाद कयलनि। संस्कृतसँ पुरुष परीक्षा (विद्यापति), वैदिक ऋचा, आनन्द लहरी एवं सौन्दर्य लहरी (शंकराचार्य), कालिदासक रघुवंशम्, ऋतुसंहार आ शृंगार तिलक, शक्ति स्तवन, हितोपदेश, हरिस्मरणिका, राजशास्त्रम् सहित अनेक ग्रंथ सभक अनुवाद कयलनि। मिथिला मिहिर आ स्वदेशक ख्यातिलब्ध सम्पादक छलाह। हिनके सम्पादनमे प्रकाशित 'मिथिला मिहिर'क सुप्रसिद्ध मिथिलांक आइओ प्रासंगिक अछि।

महाकवि कालिदास 'मालविकाग्निमित्रम्'मे आदर्श गुरुक गुण विषयमे कहैत छथि—

श्लिष्टा क्रिया कस्यचिदात्मसंस्था सङ्क्रान्तिरन्यस्य विशेषयुक्ता।
यस्योभयं साधु स शिक्षकाणां धुरि प्रतिष्ठापयितव्य एव॥ (1/16)

किछु गुरु अपने ज्ञानसागर होइत छथि आ किछु शिष्यकेँ अपन गुण संचरणमे सक्षम। जनिकामे ई दुनू गुण अछि वैह शिक्षक प्रतिष्ठा पबैत छथि। सुमनजी स्वयंमे ज्ञान महोदधि छलाह आ शिक्षण कलामे निष्णात् सेहो। अपन एहि दुनू विरल गुण सभक कारणेँ सुमनजी एक सफल शिक्षक सेहो रहलाह।

राजनेता रूपमे सुमनजी सांसद सेहो भेलाह। जलमे रहितो कमल जेना जलसँ भीजैत नहि अछि तहिना सुमनजी राजनीतिमे रहि एकर पंकसँ असम्पृक्त पंकज बनल

रहलाह। अपन सम्पूर्ण जीवन मैथिलीकेँ एहि अद्‌भुत मृणाल-सुवाससँ सुवासित करैत दि. 5 मार्च 2002केँ एहि धरा-धामसँ महाप्रयाण कऽ आचार्य सुमन अपन मानसिक आचार्य महाकवि कालिदासक कोरामे जा बैसि गेलाह। सुमनजी काव्य-कलामे महाकवि कालिदास आओर सम्पादन-कलामे आ. महावीर प्रसाद द्विवेदी भाव केर प्रतिछवि छथि। एहन बहु आयामी प्रतिभा पुंजक अवतरण विरल होइत छैक। मिथिलाक सौभाग्य जे एकरे कोरामे एहन मणि-प्रभा चमकल।

सुमनजी कहियो कहने छलाह जे बादक कोनो कविक मूल्यांकन एहि बातसँ होएबाक चाही जे जँ ओ नहि भेल रहितथि तखन कविताक की दशा रहैत। एकर उत्तरक क्रममे हम यैह कहब जे जँ सुमनजी नहि भेल रहितथि तखन मैथिली कविता-कामिनीक रूप-शृंगार-अलंकारमे लावण्य नहि रहैत। सौन्दर्य शाश्वत होइछ आ तेँ सुमन-साहित्य सेहो शाश्वत अछि, कालजयी अछि।

[अर्पण, अंक 40, स्मृति विशेषांक, नवम्बर 2023, विद्यापति सेवा संस्थान, दरभंगा]

कविपंचानन विजय नारायण मिश्र 'प्रवासी साहित्यालंकार'

पूज्य पिता जगन्नाथ चौधरीक पुण्यतिथि 24 अप्रैल अछि। हम सब प्रयास करैत छी जे हुनक पुण्यतिथिपर किछु सारस्वत रूपसँ हिनकर 'तर्पण' कयल जाय। ओ सद्गृहस्थ संन्यासी छलाह। मैथिल परम्परामे जनककेँ विदेह मानल जाइत रहल जखन कि ओ राजा छलाह। राजा सन ऐश्वर्य ओहिना जेना पुरैनिक पातपर पानिक बुन्नी! पात पानिसँ भीजैत नहि अछि अर्थात् असम्पृक्त। यैह छल पूज्य पिताक स्वभाव। गृहस्थ रहितो वीतरागी, पदाधिकारी रहितो पद केर ठसकसँ अलग, समूहमे रहितो सबसँ पृथक्, अहर्निश पूजा-पाठमे रहितो कर्मकाण्डसँ विरत मात्र अध्ययनमे रत, पारिवारिक झंझटक निदानक भार अनुज श्री वासुदेव नारायण चौधरी आ डा. गोविन्द नारायण चौधरीपर छोड़ि सदिखन जप-तप-ध्यानमे रत। हम सब कहियो हुनका जप-तप-ध्यान, पूजा-पाठ, शास्त्रक अध्ययन-मनन आ नित्य-कर्म निवृत्तिवला काज सब छोड़ि आन कोनो काज वा बात-विचार करैत कहियो नहि देखलहुँ। तेँ हमसब प्रयास करैत छी जे प्रतिवर्ष 24 अप्रैलकेँ किछु सारस्वत आयोजन हो। पहिल पुण्यतिथिपर 24 अप्रैल 2015केँ हमर मैथिली कथासंग्रह 'भखरैत नील रंग'क लोकार्पण शिक्षक संघ भवन, मधुबनीमे श्री उदयचन्द्र झा विनोद एवं अन्य विद्वान् सभक कर-कमलसँ भेल छल। पूज्य पिताक दोसर पुण्यतिथिपर अनुज डॉ. अमरनाथक मैथिली उपन्यास 'सिनुरिया आमक गाछ'क लोकार्पण 24 अप्रैल 2016केँ गांधी संग्रहालयय, पटनामे शुद्ध साहित्यिक व्यक्तित्व आ पूर्व मान. मंत्री श्री राम लषण राम रमणजीक पवित्र हस्तकमलसँ भेल छल। तेसर पुण्यतिथिपर कविपंचानन विजय नारायण मिश्र 'प्रवासी साहित्यालंकार'क एकमात्र काव्यसंकलन 'प्रवासी प्रतिबिम्ब'क लोकार्पण गजहारा (मधुबनी) गाममे प्रवासीजी द्वारा भेल छल।

श्री विजय नारायण मिश्र वयोवृद्ध छलाह। अखन हालेमे दि. 07 दिसम्बर 2023केँ ओ गोलोकप्रयाण कयलनि। हुनक रचना संसार अद्भुत अछि। मैथिली आ

हिन्दीमे हिनक अनेक रचना अछि जे कतहु उपलब्ध नहि छल। प्रवासीजी 'विशुद्ध' आ 'रससिद्धि' कवि छथि। कतेक मंचसँ श्रोता सभकेँ भाव विभोर कयने छथि तकर गिनती नहि। हम जखन पहिल बेर हुनके श्रीमुखसँ 'अन्नपूर्णा', 'अर्पणा' आ 'सोनदाई' कविता सुनने रही तऽ भावोद्रेकमे दहोबहो नोरसँ आर्द्र भेल रही। आब काव्य रसक एहन परिपाक अत्यन्त दुर्लभ! एहन शब्द चित्र जे पाठक वा श्रोताकेँ विभोर कऽ दिए। अपूर्व! अद्‌भुत भाव विन्यास आ अप्रतिम शब्द संयोजनसँ सर्जित साधारणीकरणसँ सराबोर श्रोता सब ! विलक्षण !! तेँ हिनका 'विशुद्ध कवि' मानल हम। ई सत्य जे हम शुद्ध 'कविते' टा पढ़ैत छी अकविता, गद्यिता वा समकालीन कविता नहि।

आधुनिक समकालीन कविता कतऽ जा रहल अछि नहि कहि सकैत छी। एहिमे गूढ़ता संभव अछि, जीवनक नव यथार्थ संभव अछि, सोचक अलग विन्दु अछि, भावक पृथक् संसार अछि, नव बिम्ब विधान, नव रसक परिपाक, नव संयोजन, नव कल्पना, नव रचनाधर्मिता संभव अछि। की-की नहि अछि एहिमे अर्थात् सब किछु अछि। मुदा हमरा ई कहबामे कोनो संकोच नहि अछि जे अधिकांशमे 'कविते' नहि अछि।

एकटा प्रसंगक उल्लेख करैत छी। सुप्रसिद्ध साहित्यकार अज्ञेयजी एक बेर पटना आयल छलाह। साँझमे बहुत रास आलोचकगण बैसल रहथि। अज्ञेय दू पाँती पढ़लनि—

उसने मुझको काटा
मैंने उसको मारा।
हाथ मेरा लाल था
अपने ही लहू से।

उपस्थित आलोचकगण एकर व्याख्या अपन-अपन आंतरिक मनोवैज्ञानिक संरचनाक आधारपर कयलनि। केओ कहलनि जे अपने हिंसात्मक वर्ग संघर्षक स्वर स्पष्ट कयलहुँ, केओ कहलनि जे अपने साम्यवादक झंडा बुलंद कयलहुँ, केओ कहलनि जे अहाँ अस्तित्ववादक सार रखलहुँ, केओ कहलनि जे अपने Survival of the Fittestक व्याख्या कयलहुँ आदि आदि। अज्ञेयजी चुप! आलोचकगणक आर-आर व्याख्याक बाद अज्ञेयजी कहलनि जे हम ई सब किछु

नहि कहलहुँ अछि। हमर एक हाथपर मच्छर काटि रहल छल। ओकरा दोसर हाथसँ मारलहुँ तँ ओ जे हमर खून पीने छल ओहिसँ हमर हाथ लाल भऽ गेल। आलोचकगणकेँ जेना साँप सुङ्घा गेल हो। फेर सब भभाकऽ हँसि पड़लाह। स्थिति किछु एहने अछि।

मोन पड़ैत अछि काफी पूर्वक ओ घटना। 'तारिका' अपन कविता विशेषांक पठा हमरासँ किछु रचना पठएबाक आग्रह कयने रहय। जँ साँच कही तऽ ओहिमे जे गूढ़ 'कविता' सब छल ओकरा हमर मूढ़ मस्तिष्क बुझि नहि सकल। हम असमर्थता व्यक्त करैत अपन प्रतिक्रिया पठा देलहुँ। सम्पादकजी ओकरा एहिना छापि देलनि—

नयी कविता : एक स्पष्टीकरण

आधुनिक लय-ताल रहित कविताओं का जाना माना लेखक हूँ।
माफ करना—
मेरी पत्नी नींद में जो भी बकती हैं
उसी का प्रकाशनार्थ प्रेषक हूँ।

एहिपर बहुत रास नवोदित कवि सभक प्रतिक्रिया आयल जे अपने एतेक पैघ साहस कोना कयल, लोक अरसिक आ संवेदनाशून्य मानत, पैघ-पैघ कवि सभ लिखैत छथि तेँ हम सभ लिखैत छी, कविता आब रजनी-सजनीसँ आगाँ बढ़ि गेल अछि, हम सब की लिखैत छी से स्वयं नहि बुझैत छी, मात्र किछु नव करबाक लेल आ स्वयंकेँ भीड़सँ अलग देखएबाक लेल नव-नव भाव केर सृजन करैत छी। सत्य तँ यैह अछि जे 'कविता कवितोक लेल' नहि रहल अछि आ 'कविता जीवनक लेलसँ बहुत दूर हटि गेल अछि। की कारण अछि जे कवि सम्मेलनमे श्रोता सभक उपस्थिति नगण्य भऽ गेल अछि? एहनो कवि सम्मेलन देखल जाहिमे कविता पढ़यवलाक संख्या 15 आ आयोजक 5 आ हॉलमे सब मिलाकऽ उपस्थिति लगभग 25। एहन स्थिति कियेक भेल? आब मात्र हास्य कवि सम्मेलनमे लोक जुटैत अछि। गीत-गजलक लोकप्रियता बढ़ल मुदा आधुनिक कविताक लोकप्रियतामे ह्रास भेलैक। आधुनिक समयमे कविता पर्याप्त मात्रामे लिखा रहल अछि मुदा अधिकांशमे 'कविता' नहि रहैत अछि। जाहिमे 'कविता' रहैत अछि लोक ओकरा ससम्मान अखनो सुनैत

अछि आ गुनैत अछि। ई सत्य जे लय, ताल, तुक, छंद आदिक संयोजनक अभावक बादो नीक कविता लिखल जा सकैत अछि, लिखाइतो अछि मुदा जखन साधारणीकरण नहि हो, गति वा प्रवाह नहि हो आ रसक परिपाक नहि हो तऽ ओ कविक 'विद्वत्ता झाड़ब' मात्र बनिकेँ रहि जाइत अछि। एकरा जनप्रियता नहि भेटैत छैक। लोक एहिसँ नीक तऽ गद्ये पढ़ी, कथे पढ़ी से सोचैत अछि। इहो सत्य जे प्रत्येक श्रोता वा पाठक केर रूचि, भावबोधक स्तर, रस ग्रहण करबाक क्षमता, सम्वेदनाक सुग्राह्यता, साधारणीकरणक पैमाना आ सोच पृथक्-पृथक् होइत छैक मुदा नीक आ अधलाहक निर्णय करबाक क्षमता सबमे होइत छैक। जिनका जे नीक लागैत छनि ओ ओकरे अपन कंठहार बनबैत छथि। सभक अपन-अपन सोच आ बौद्धिक स्तर। ओहिमे अमुक नीक आ अमुक खराब कहब उचित नहि। ई नितान्त निजी मसला थिक। एहिपर विवाद करब उचित नहि, हमर अभिप्रेतो नहि। मुदा की करू? हमर स्पष्ट मानब अछि जे कविक रूपमे प्रवासीजी अंतिम रससिद्ध कवि छथि ओना आब शुद्ध कविता मूक भऽ गेल अछि।

प्रवासीजीक एहि धराधामपर अवतरण लदनियाँ प्रखंडक प्रतिष्ठित गाम गजहरामे माता जागेश्वरी मिश्राइन आ पिता सर्वेश्वर मिश्रक घर 28 जनवरी 1932 ई. केँ भेल छल। यैह हिनक उल्लिखित जन्मतिथि अछि। मुदा पारिवारिक स्रोतसँ प्रसिद्ध अछि जे हिनक जन्म रामनवमी 1932 ई.केँ भेल छल। तदनुसार हिनक वास्तविक जन्मतिथि 15 अप्रैल 1932 शुक्र दिन मानल जा सकैत अछि। सतेढ़ लक्ष्मीपुरक दामोदर मिश्रक सुपुत्री गुलाब देवीसँ हिनक विवाह भेल। प्रथम सुपुत्र श्री कृष्ण कुमार मिश्र (M.A., B.Ed.) त्रिभुवन विश्वविद्यालय, नेपालमे अंग्रेजीक प्राध्यापक छलाह। आब बिहार सरकारक सेवासँ अवकाशप्राप्त शिक्षक छथि। दोसर सुपुत्र श्री कौशल किशोर मिश्र (M.A.) आशुकवि छथि। हिनक काव्यसंग्रह अछि— 'बम बम महादेव', 'आइ-काल्हि', 'हम भारत के वीर सिपाही', 'दिव्यप्रभा' आ दुर्गा सप्तशतीक मैथिली अनुवाद। तेसर सुपुत्र डॉ. केशव कुमार मिश्र मधुबनीक लब्ध प्रतिष्ठ अधिवक्ता छथि।

प्रवासीजी भारतीय संस्कृति, दर्शन आ परम्परागत साहित्यक विपुल अध्ययन कएने छलाह। साहित्यक प्रति अनन्त स्नेह आ रूचि छलनि तेँ एहि दिशि आकृष्ट भेलाह। किछुये दिनमे रससिद्ध कविक रूपमे प्रतिष्ठित भऽ गेलाह। अँधराठाढ़ीमे प्रतिवर्ष महात्मा नन्दीश्वर झाक नेतृत्वमे विद्वत् गोष्ठी आ कवि सम्मेलन होइत छल। एहिमे लब्ध-प्रतिष्ठ विद्वान् आ कवि सभक जुटान होइत

छल। 1957 ई.क एहने आयोजनमे श्री विजय नारायाण मिश्र 'प्रवासी'केँ महात्मा नन्दीश्वर झाक निर्देशपर सृष्टि नारायण झा करतल ध्वनिक मध्य 'कविपंचानन'क उपाधिसँ अलंकृत कयने छलाह। ओहि समयक प्रतिष्ठित कवि सभक मध्य 24-25 वर्षक कविकेँ 'कविपंचानन' केर उपाधि प्राप्त करब अपूर्व छल।

प्रवासीजी मैथिली आ हिन्दी मंचक शान छलाह। कवि सम्मेलनमे हिनक कविता सुनबाक लेल लोक जुटैत छल। सिबनी (मध्यप्रदेश)क कवि सम्मेलनमे मर्मन्तुद प्रसंग आ आलंकारिक काव्यसँ मोहित भऽ हिनका 'साहित्यालंकार'क उपाधि देल गेल।

वर्ष 2004मे राष्ट्रभाषा परिषदक आयोजनमे साहित्यानुरागी पूर्व शिक्षा मंत्री श्री राम लषण राम 'रमण' प्रवासीजीकेँ साहित्य साधना पुरस्कारसँ सम्मानित कयलनि।

एकटा प्रसंगक उल्लेख करब उचित अछि। प्रवासीजीक छोट सुपुत्र डॉ. केशव कुमार मिश्रक सारि सुश्री सविता मिश्रक विवाह निकासी ग्राममे दिनांक 07.05. 2001केँ भऽ रहल छल। प्रवासीजी सेहो नेओत पुरय समधिआना गेल छलाह। बरिआती महाराजपुर (मधुबनी)सँ आबि रहल छल। बरिआतीक स्वागत काल समधि तुलानन्द मिश्र प्रवासीजीसँ कविता सुनेबाक आग्रह कऽ देलथिन। माइक आ लाउडस्पीकरक इंतजाम भेल। हँसी-खुशीक माहौल छल अवसरानुकूल प्रवासीजी कविता पढ़लनि—

राजहंसे जकाँ चान बिहरै जेना
क्षीर सागर सनक श्वेत आकाशमे...

थपरी गड़गड़ा गेलै। फेर टाटक दोघमे जुटल जनी-जातिक मध्यसँ मंद आ मधुर स्वर आयल— अन्नपूर्णा... अपर्णा।

प्रवासीजी कनेक थकमकेला। हँसी-खुशीक एहि माहौलमे मर्मस्पर्शी कविता नहि जमत। मुदा आग्रह केर फेर वैह स्वर टाटक दोघसँ आयल तखन प्रवासीजी पहिने 'अपर्णा' आ फेर 'अन्नपूर्णा' पढ़लनि। सब स्तब्ध ! विवाहक घोल-फचक्कामे एकाएक अखंड शांति पसरि गेल छल। केओ धोतीक खूँटसँ तऽ केओ रूमालसँ तऽ केओ आँचरसँ आँखि पोछैत! प्रवासीजी सोचने छलाह जे ई जमत नहि आ ई कविता तँ सभकेँ बर्फ जकाँ 'जमा' देलक। फेर ध्यान आयल

जे हँसी-खुशीक अवसर, विवाहक अवसर... शुरू कऽ देलनि— जनक राज का धनुष किसने तोड़ा। भाव-विह्वल भेल समुदायमे जेना हास्य रससँ प्राण आबि गेल हो, ठहक्कापर ठहक्का लागय लगलै फेर हँसी-खुशीक साम्राज्य स्थापित भऽ गेलै। ई छी रससिद्धता ! आ प्रवासीजी एहिमे निष्णात छथि। यैह कारण अछि जे हम कविवरकेँ अंतिम रससिद्ध कवि मानैत छी। रसक यैह सिद्धत्व हिनका आमजनक हृदयपर राज करा देलक।

प्रवासीजी मूलतः कवि छथि। वृत्तिएँ बुनियादी विद्यालयमे शिक्षक छलाह। सर्वप्रथम अकौर बुनियादी विद्यालयमे योगदान कयलनि। प्रथम स्थानान्तरण बुनियादी विद्यालय, सिमरी भेलनि। फेर एतयसँ स्थानान्तरित भऽ बुनियादी विद्यालय, नकटीमे योगदान कयलनि। एतयसँ स्थानान्तरित भऽ घोघरडीहा बुनियादी विद्यालयमे योगदान कयलनि। पुनः एतयसँ नकटी गेलथि आ फेर आपस घोघरडीहा अयलथि। सेवाक बेसी समय बुनियादी विद्यालय, घोघरडीहेमे व्यतीत भेलनि। वर्ष 1990मे सेवानिवृत्त भऽ गाम रहय लगलाह।

कविवर प्रवासी आमजनक कवि छथि। हिनक रचनामे सर्वत्र आमजनक समस्या पूर्णताक संग उकेरित भेटत। दहेज कुप्रथा आम मैथिलक समक्ष सुरसा जकाँ मुँह बयने ठाढ़ अछि। कविवर प्रवासीजीक कालजयी रचना— 'अन्नपूर्णा', 'अपर्णा', 'सोनदाइ' आदि एहि भित्तिपर चित्रित अछि। एहि कुप्रथाक कारणेँ कतेक कन्याक कत्ल कयल गेल तेकर कोनो हिसाब नहि अछि।

प्रवासीजी एक बेर कहने रहथि जे कलकत्ताक कोनो कवि सम्मेलनमे ओ 'अपर्णा' कविताक पाठ कयने छलाह। मनोयोगपूर्वक लोक सब कविता सुनि हिनक भाव-समुद्रमे भसिआइत रहल। कने स्थिर भेलाक बाद बंगालिन सब हिनकासँ प्रश्न करय लागलि जे अपर्णाकेँ किएक मारि देलियै। हमरा सभकेँ ई नहि अरघैत अछि, किछु उपाय करू, हम सब छटपटा रहल छी आदि आदि। तखन प्रवासीजी दोसर रचना 'अन्नपूर्णा' कऽ हुनका सबकेँ दोसर दिन सुनेलनि। एहिमे दहेजक ज्वलन्त समस्याक आसान समाधान देखाओल गेल जे वर दिवाकर एहि प्रणक संग घर छोड़ैत छथि जे पिता द्वारा लेल गेल 30 हजार टाका घूरेबाक योग्य भेलाक बादे आपस आयब। पंक्ति छल—

हम जा रहल छी दूर धर्मक नाम पर।
घूरब तीस हजार टाकाक संग जहिया गाम पर।
शिशु सतीशक खेत सबटा घुरा लेब भरोस अछि।

आइ प्रेयसि, माथ पर लागल कलंकक दोष अछि।

दहेजक बाजारमे बिकाइवला वर सब जाबत दिवाकर जकाँ नहि बनताह ताबत एहि समाजक कल्याण नहि भऽ सकत।

दोसर दिनक कवि सम्मेलनमे समस्याक एहन निदानसँ बंगालिन सब अत्यंत प्रभावित भेल छलीह आ प्रवासीजीक प्रति आदर आ श्रद्धा निवेदित कयने छलीह। यैह छी कविक कल्पनाक कमाल!

एक बेर लौकहीमे कवि सम्मेलन चलि रहल छल। भोजपुरीक यशस्वी कवि राकेशजी मिथिला आ विशेष कऽ दरभंगापर व्यंग्य करैत कविता पढ़लनि—

अजब गजब दरभंगा देखा
सबको भूखा प्यासा नंगा देखा...

प्रवासीजीक आह्वान जवाब देबाक लेल कयल गेल। प्रवासीजी कवितासँ जवाब देलनि—

ओ बौने तुम चाँद को मत छूना
जल जाओगे... जल जाओगे...

एहि ठाम चानसँ जरि जेबाक कल्पना मिथिलाक शान्त रहबाक बादो आवश्यकतानुसार दग्ध करबाक क्षमताक इशारा अछि। कहबाक काज नहि जे श्री राकेशजी मंचेसँ लंक लऽ लेलनि।

प्रवासीजी गाम-गिरामक कवि छथि। हिनक काव्यमे गामक सुगंध अछि तऽ एकर दोसर स्याह पक्ष सेहो अभरल अछि।

‘आरि पिता छटथिन अरिया केर भोरहरियामे’ (अपर्णा) केर शब्द चित्र अखनो गाममे भेटैत अछि।

‘मरकत मणि सन देह जेना बिजलौका छिटकइ’ (अपर्णा) वा *‘गोपी आम जकाँ ओ हाथे हाथ घुमली’* (अपर्णा) वा *‘पहिल वर्षामे भिजल माँटिक सुगन्ध’* (अन्नपूर्णा), *‘रोहिनियाँ गोपीक पहिल आमोद’* (अन्नपूर्णा), *‘स्वर्ण प्रतिमा जेना चानीक धार पैसि नहाइत अछि’* (सोनदाइ), *‘सुपक पाकल सिनुरिया सन कान्ति देहक लाल छनि’* (सोनदाइ) प्रभृति उपमा-उपमेयक सृजन बिनु गाम रहने कठिन अछि।

प्रकृति केर सुन्दर रसमय चित्रणमे कविवर प्रवासीजीकेँ सराहनीय सफलता भेटलनि अछि। 'प्रातक इजोरिया'मे कवि कहैत छथि—

राजहंसे जकाँ चान विहरै जेना
क्षीर सागर सनक श्वेत आकाशमे।
ई जे महफा सनक लाल ओहारमे
निशि सोहागिन पहुक देश चलि जाइए,
आ आषाढक प्रथम दिन जेना घन कने
आबि माटिक पिपासाकेँ छलि जाइए।
इन्द्रजालक तमाशा जकाँ लोकके
छमछमा ई इजोरिया सिहा जाइ छै,
चान पानिक लहरि पर झुलै हीड़ला
लखि चकोरीक हिय तिलमिला जाइ छै।
आकि चन्द्रानना केर गहना छिटल
छटपटा अछि रहल बद्ध भुजपाशमे।
राजहंसे जकाँ ...

आह ! की सुन्दर बिम्ब विधान आ की सुन्दर भाव संयोजन ! लाल ओहार लागल महफामे बैसि रजनीकेँ प्रियतम गृह जेबाक चित्र आ चन्द्रमाक छविकेँ लहरि संगे ऊपर नीचाँ होइत देखि ककर मोनमे 'ब्रह्मानन्द सहोदर'क सर्जना नहि हो ! प्रकृति केर ई मानवीकरण अनुपम ! एहिना—

मन्द सिहकै पवन एहि अहल भोरमे
जनु किशोरी किरिन ठेहिया गेल अछि।
आ परातक लगै चन्द्रमा ई जेना
थार चानीक औन्हल खिया गेल अछि।

(प्रातक इजोरिया)

आ

रत्न गुम्फित अमित वेणि मे 'छल धनि' क
से जेना झरि झहरि कऽ पसरि गेल छल,

अर्ध रवि लाल प्राचीक ऊपर जेना
ठोप भालक ई सौंसे लेपा गेल छै।
चन्द्रमा तएँ डुमइ ल बढ़ल जा रहल
अंग तनयाक उघरल देखा गेल छै।
आ कि चुनरी प्रकृति सुन्दरिक लाल सन
उड़ि रहल व्योम पर फरफराइत अछि।
भारतीक सीर मे आरतीक पात सन
बाल रवि केर छवि झिलमिलाइत अछि।

(स्वर्ण प्रभात)

उपमान-उपमेयक सुन्दर संयोजन, उत्कृष्ट उत्प्रेक्षाक सर्जन आ भावानुकूल शब्द चित्रसँ कविकेँ प्रकृति चित्रणमे अप्रतिम सफलता भेटल अछि। पंडितराज जगन्नाथक उक्ति 'रसो वै स:' एहि ठाम साकार होइत अछि। कुन्तक कहैत छथि—

साहित्य मनयो: शोभाशालितां प्रतिकाप्यसौ अन्यूनानतिरिक्तत्वं मनोहारिण्य वस्थित:

अर्थात् शब्द आ अर्थ एहि दुनू द्वारा शोभावर्द्धनमे समान मात्रा (निकतीसँ जोखिकेँ, कनेको कम बेसी नहि)सँ उत्पन्न कोनो विलक्षण मनमोहक स्थितिकेँ साहित्य कहल जाइत अछि। प्रवासीजी कतेक ठाम अपन निकतीसँ जोखि-जोखि शब्द आ अर्थक संतुलित मात्राक कौशल देखबैत छथि आ अपन विलक्षण काव्यसँ चमत्कृत करैत छथि।

भामह केर उक्ति— शब्दार्थो सहितौ काव्यम् प्रवासीजीक काव्यमे साकार अछि। रस साहित्यक आत्मा वा प्राण अछि। आ. विश्वनाथ कहैत छथि— वाक्यं रसात्मकं काव्यम् (साहित्य दर्पण)। भरतमुनि रसक उत्पत्तिक व्याख्या करैत कहैत छथि— विभावानुभाव व्यभिचारि संयोगाद्रस निष्पति : (नाट्यशास्त्र)। अर्थात् विभाव, अनुभाव आ व्यभिचारी भावक संयोगसँ रसक अनुभूति होइछ। प्रवासीजीक काव्यमे रसक पूर्ण परिपाक भेल अछि। शान्त, शृंगार, करुण, हास्य, वीर, रौद्र, भयानक, अद्भुत आ वीभत्स सब रस उपलब्ध अछि हिनक काव्यमे। 'अन्नपूर्णा', 'अपर्णा', 'सोनदाइ' आदिमे तऽ करुणा अपन उत्कर्षपर अछि। कविता पढ़ि वा सुनि नोर नहि खसय ई असंभव !

अपर्णाक मरकत मणि सन देह जे कहियो बिजलौका छिटकाबैत छल ओ अस्थि मात्र अवशेष अछि। अपन सर्वस्व बेचि पिता समधिक सोझाँ टाका छिरिया दैत छथि। तखनक चित्रण मर्मन्तुद अछि—

बजली तखन अपर्णा— बाबू कफन कहाँ अछि?
सेहो लेनहिएँ आउ आब व्यर्थे कनैत छी।
पश्चिम क्षितिजक लुकझुक सूर्य अपर्णा भेली-
एहि घरक हम किछु नहि जनलहुँ— अहीं जरा देब
दूधक गाछ ने भेलहुँ, नोरक धार भेल छी।

हमर समाद मायकेँ जा कऽ कने सुना देब।
ओकर धिया दुनू कुलकेँ बेदाग राखलक
हम दुनियाँ केँ त्यागक मंत्र महान देल अछि।
अपन सुता केँ काटि समाजक बलिवेदी पर पिता!
आइ अपनहि हाथेँ बलिदान देल अछि।

ककर कोँढ़ नहि फाटि जाइत एहि मर्मन्तुद हाक्रोशपर! दूधक गाछ! नोरक धार!! दूधक गाछक अभिनव कल्पना मर्मस्पर्शी आ भावप्रवण अछि। हृदय विदीर्ण भऽ जाइत छैक एहन चित्रणपर। रसक एहन परिपाक! रसक यैह निष्पत्ति कविवर प्रवासीजीकेँ शीर्ष कवि सभक पंक्तिमे अग्रणी स्थान सुरक्षित करैत अछि।

एक्के ठाम वात्सल्य, श्रृंगार, करुण, भयानक आ शान्त रसक केहन सुन्दर परिपाक भेल अछि से देखल जाय—

लटकि पीठ पर सटा गाल मे गाल कहए जे दैया
मिसरी सन बोली बछडू लए हम बनि गेलहुँ कसैया।
हे भगवती चढ़ा बलि भाइक हमरा स्वर्गो नहि चाही
जहिया काज पड़त माँ हमरा देमय पड़त गवाही।

(सोनदाइ)

वीर रसक एक उदाहरण देखल जाय—

बिसरि मोह प्राणक, शिखर पर ध्वजाकेँ
दहक गाड़ि, भैरव जकाँ कवि गरजिकेँ
जगावह मनुजकेँ— उठै जो रे मुर्दा !

उठै जा उठै जा ई अन्हेर भेलह।
उठह कवि बजावह बिगुल बेर भेलह।

(आह्वान)

कविपंचानन प्रवासीजीक काव्यमे रस अपन उच्चताक स्पर्श करैत अछि। काव्यक जे चारू सौन्दर्य तत्त्व— भाव सौन्दर्य, विचार सौन्दर्य, नाद सौन्दर्य आ अप्रस्तुत योजनाक सौन्दर्यमे भाव सौन्दर्यमे रसक प्रमुख स्थान अछि। प्रेम, करुणा, हर्ष, त्याग आदिक मर्मस्पर्शी चित्रण कऽ कवि जे भाव-संसारक रचना करैत छथि से अनुपम अछि।

एहि भाव सौन्दर्यक निकषपर प्रवासजीक रचना पूर्ण सफल प्रमाणित होइत अछि।

काव्यक सौन्दर्य तत्त्वमे विचार सौन्दर्यक महत्त्वपूर्ण स्थान अछि। काव्यमे गरिमा आ विचारक उच्चता आवश्यक रहैछ। आदर्शक स्थापना सेहो कविक उद्देश्य रहिते अछि। एहि निकषपर प्रवासीजीक काव्य खरा सोना जकाँ चमकैत अछि। सर्वत्र अनाचार आ अनुचित कृत्यकेँ ई निन्दा करैत समाजमे आदर्श स्थिति आबय ताहि लेल प्रयास करैत छथि। 'अन्नपूर्णा'मे चारि बिघा खेत बेचि अन्नपूर्णाक विवाहसँ कोजागरा तक पूर्ण होइछ फेर डेढ़ बिघा भरना राखि कहुना विदागरीक तैयारी होइत अछि। दृश्य देखल जाय-

प्राण आहुर कटय बुचिया केर ही धधकैत छै।
की हेतै बौआक जीवन, से बुकोर लगैत छै।
ओकर सब किछु छीनि हमरे टा सुहाग जुड़ैल अछि।

अपन दुधमुँहा सहोदर हेतु हम की कयल अछि।
अहीँ लेखा करब हे माँ भगवती ! अपराध केर।
रहब साक्षी शिशु अनुज लए जेठ बहिनक साध केर।

हिचुँकि हठ पर विवश बाजलि— "धर्मकेँ हम दागलहुँ,

बहिन भऽ कऽ अपन बौआ केर गर्दनि काटलहुँ।
माय बाबू कोना खयथिन, बाउ पहिरत आब की ?
अपन नैहर जरा तपलहुँ नाथ छी हम पातकी।"

सुनैत मातर वर दिवाकर निर्णय लैत छथि जे हम स्वयं कमा कऽ तीस हजार टाका जमा कऽ सब खेत घुरा माथपर लागल कलंकक दोष मेटायब। ई अछि प्रवासीजीक विचार सौन्दर्य! आदर्शक स्थापना निमित्त उठाओल गेल एक स्वस्थ डेग!

काव्य सौन्दर्यक तेसर तत्त्व अछि नाद सौन्दर्य। एहिमे छन्द, लय, तुक, गति आ प्रवाहक समावेश अबैत अछि। कवि पंचानन प्रवासीजी एकर पूर्ण ध्यान रखैत छथि।

वामनक उक्ति— रीतिरात्मा काव्यस्य हिनक कवितामे पूर्ण साकार अछि तहिना आनन्दवर्धक कथन— काव्यस्य आत्मा ध्वनि: प्रवासीजीक काव्यमे सबठाम प्रतिध्वनित होइत रहैत अछि। एहिना पंडितराज जगन्नाथक वाणी— रमणीयार्थ प्रतिपादक: शब्द: काव्यम् केर प्रतिपादन 'प्रवासी प्रतिबिम्ब'मे प्रकर्षपर अछि। हिनक कोनो कविता एहन नहि अछि जे गेय नहि हो। सर्वत्र गेयात्मकता अछि आ जँ साँच कही तऽ यैह थिक प्रवासीजीक रचना सभक आन्तरिक आ वास्तविक सौन्दर्य। शब्दक जे तीन धर्म— भाव धर्म, चित्र धर्म आ संगीत धर्म अछि एहि तीनू धर्मक निर्वाह करैत अछि कविपंचानन केर शब्द सब। नीक भाव सर्जना कऽ सुन्दर चित्र सजबैत संगीतक अविरल धारमे बहत प्रवासीजीक काव्य पाठक वा श्रोताकेँ भावधर्मक गंगा, चित्रधर्मक यमुना आ संगीतधर्मक अन्त: सलिला सरस्वतीक त्रिवेणीमे निमज्जित करा निर्भ्रान्त कऽ दैत अछि। यैह थिक कवि पंचानन प्रवासीजीक सार्थकता।

कहल गेल अछि— *अलंकरोति इति अलंकार:।* जहिना आभूषणसँ नारीक लावण्य बढ़ि जाइत अछि तहिना अलंकारसँ कविता-कामिनीक शोभा आर जगजियार होइत छै। अलंकार सम्प्रदायक प्रतिष्ठापक आचार्य दण्डी कहैत छथि—

काव्य शोभाकरान् धर्माण अलंकारान् प्रचक्षते।

प्रवासीजीक काव्य ठाम-ठाम अलंकारसँ अनायासे अलंकृत अछि।

कान्ति क्रान्तिक कठिन काल कृपाणमे

(आह्वान)

पाणि पंकज पकड़ि परितोषाथि प्रियाक समीपमे
झरझरायल नोर अटकल छल नयन केर सीपमे

(अन्नपूर्णा)

कोकिल केर समाद करुण ई कुहुकि कहय संसारके

(वसन्त)

आ 'शुद्ध कालिका सन केशव काका केर कन्या' (अन्हरजाली)मे अनुप्रास आ उपमाक सुन्दर संयोजनसँ शोभा सहज द्विगुणित भऽ गेल अछि। प्रकृति वर्णनमे जे कविक काव्य कर्म कलापूर्ण आ कमनीय भेल अछि तेकर आधार भाव चित्र आ अलंकारे अछि। ई अलंकार सब सायास नहि अपितु भावानुकूले अनायास आबि काव्यक चारुता बढ़ा रहल अछि।

काव्य सौन्दर्यक अंतिम तत्त्व अप्रस्तुत योजना सेहो प्रवासीजीक रचनामे परिलक्षित होइत अछि।

गगनक सरमे शशि अपन प्रिया संग रभसि रहल,
आँजुर भरि नीर निशा प्रियतम पर फेंकि रहल,
शशि नुका रहल जल बीच तखन आँजुरक नीर,
बुन्नी बनि भू पर खसल, दिशा खिलखिला उठल।

अप्रस्तुत योजनाक सुन्दर दिग्दर्शनक संग उत्प्रेक्षा आ कल्पनाक चातुर्य चरमपर अछि। प्रकृति वर्णनमे लाल ओहार लागल महफाक बिम्बमे उपमेयक प्रकृति उपमानक प्रकृतिसँ साम्य रखैत अछि। तहिना अभिधा, लक्षणा आ व्यंजना शब्दशक्तिक प्रयोग प्रतिबिम्बित अछि 'प्रवासी प्रतिबिम्ब'मे।

कवि पंचानन प्रवासीजीक भावयित्री आ कारयित्री प्रतिभाक लघु मूल्यांकन कयलाक बाद आब हुनक लोकोपकारी दृष्टिपर विचार करब। अनाचारक प्रतिकार स्वरूप कविक पाँती देखू—

जतय पुरुषगण करथि नारि केर कोमल तनक शिकार
जाहि जाति केर नयन सौं झहरय नोरक धार।
जाहि देश केर तेकठी पर अबला केर हो बलिदान
तही ठाम पांचाली करइछ निर्मम रक्त स्नान।
जरा अबै छथि सहवासिनि केर भोगल सोनक काया,
केहन करुण मात्सर्य करथि कोहबरमे पहिले छाया।

थिकै अनैतिकता सौर गृह गद्दी सन्त महन्थी
विषमताक दृढ़ दुर्गक भीतर जनमल नक्सलपंथी।

काल पुरुष परचारि रहल छथि दऽ डंका पर चोट
एक बेर ई बुढ़िया धरती बदलत अपन करोट।

(बुढ़िया धरती बदलत अपन करोट)

मुक्त करब लक्ष्मीके कारागृह सँ जहिया
तहिया स्वर्ग धरा पर उतरल मानि सकै छी।

(काल पुरुष मनु संततिकेँ ललकारि रहल अछि)

गृहिणीक मरबाक जतय हो मतलब पाँच हजार,
प्रति अन्त्येष्टिक बाद निपइ छथि नवकनिञा चिनमार।

वित्त ईष्ट पत्नीक लिस्ट अछि गहना गेंटल पेटी,
ठुट्ठा लए नहि सिरिजमान भेल कोनो बाप के बेटी।

(बुढ़िया धरती बदलत अपन करोट)

नारीक कल्याण, उत्थान आ परित्राणक लेल कविवरक ई दृष्टिकोण श्लाघ्य आ महान् अछि। बाल विवाह, बहु विवाह, बेमेल विवाह, दहेज प्रथा, पर्दा आ अंकुश सब नारी जातिक दुश्मन अछि आ प्रवासीजी अपन रचनामे प्रमुखतासँ एकरा सभक निन्दा करैत छथि तेँ नारी विमर्शक पुरोधा छथि प्रवासीजी ! एहिना श्रमिक वर्गक ओ श्रेष्ठ मानैत छथि तेँ कहैत छथि—

कुमकुम कस्तूरी की गमकत गमकै भालक बहल पसीना।

जनकल्याण, देशभक्ति, अनाचारक विरोध आ आदर्शक स्थापना निमित्त प्रयासरत छथि प्रवासीजी। देशभक्तिक दू पाँती—

माता केर एक ठोप नोर खसत जाहि ठाम देहक सम्पूर्ण रक्त ततय बहा दैत छी।

(भारत सन देश अछि)

'प्रवासी प्रतिबिम्ब'मे प्रवासीजीक बहुत रास मैथिली कविता संगृहीत अछि। एकर निर्माण तऽ निश्चित रूपसँ प्रवासीजीक प्रति हमर श्रद्धाक परिणाम अछि मुदा ई संभव नहि होइत जँ प्रो. धीरेन्द्र 'धीर' 'अन्नपूर्णा'क प्रति नहि पठबितथि। प्रवासीजीक एक्को टा पोथी उपलब्ध नहि छल। जाहि जन सहयोग प्रेस, सुपौलसँ 1975 ई.मे 'अन्नपूर्णा' मुद्रित भेल ओ प्रेस राताराती बिका गेल आ सब सामानक संग 'अन्नपूर्णा' पोथीकेँ सेहो निपत्ता कऽ देल गेल। मात्र संयोग छल जे एक प्रति प्रेससँ देखबाक लेल धीरजी आवासपर अनने छलाह। वैह मात्र बचि गेल। हम जखन खोज कयलहुँ तऽ धीरजी उत्साह प्रदर्शित करैत ओकर छायाप्रति हमर पेशकार श्री कृष्ण कुमार सिंहक अनुज श्री रामचन्द्र सिंहक मार्फत पठेबाक कृपा कएलनि। हम श्री धीरजीक प्रति कृतज्ञता आ श्रद्धा निवेदित करैत छी जे ओ 'अन्नपूर्णा'केँ जोगा कऽ रखलनि आ हमरा उपलब्ध करएलनि। अपन कर्मठ पेशकार सुपौल निवासी श्री कृष्ण कुमार सिंह आ हुनक अनुज श्री रामचन्द्र सिंहकेँ हृदयसँ आशीर्वाद दैत छी जे हिनका सभक पंथ सदिखन प्रशस्तसँ प्रशस्ततर होनि।

'प्रवासी प्रतिबिम्ब'मे प्रो. धीरजी द्वारा प्रकाशित 'अन्नपूर्णा'क कविता-क्रम ओहिना राखल गेल अछि। बादमे उपलब्ध भेल अन्य कविता सब एकर बादे स्थान पओलक अछि।

कविपंचानन श्री विजय नारायण मिश्र 'प्रवासी साहित्यालंकार' मिथिले नहि मिथिलाक बाहरो सुप्रसिद्ध छथि। हमर ई सौभाग्य जे हिनक रचना सभक संग्रहक 'प्रवासी प्रतिबिम्ब'क नामसँ प्रकाशित करा सकलहुँ। एहि संदर्भित हुनक आशीर्वचनक पत्र मार्मिक अछि। हम हुनक भावकेँ कहाँ धरि प्रत्यक्ष कऽ सकलहुँ से सुधी पाठके सभ कहताह। प्रवासीजीक श्रीचरणमे प्रणाम निवेदित करैत छी।

कवि श्रेष्ठ प्रवासीजीक संतति सभसँ अमित सहयोग आ आदर भेटल ताहि लेल हुनका सभक प्रति आदर निवेदित करैत छी आ आशीष दैत छी। विशेष कऽ डा. सुमनजी आ रजनीशजी एहि यज्ञमे अपन समिधासँ संग पूरलन्हि। प्रवासीजी संबंधी विवरणी, फोटो आ प्रसंगक विषयमे कयल गेल सहयोग अविस्मरणीय अछि।

आचार्य महेश झाक सहयोगक बिना ई काज पूर्ण नहि भऽ सकैत छल। अंधराठाढ़ीसँ गजहरा जा कऽ सम्पर्क कऽ फेर हमरासँ सम्पर्क करैत सामग्री उपलब्ध करायब, विभिन्न विन्दु सभक चर्चा करब, जिज्ञासा करब, पोथी लेल चढ़िआयब आदि अनेक एहन बात छै जे 'प्रवासी प्रतिबिम्ब'क मूलाधार थिक। महेशजी बेसी काल प्रवासीजीक पौत्री सुश्री उमासँ हाल समाचार दूरभाषसँ ज्ञात करैत छथि। सुश्री उमाकेँ प्रवासीजीक सेवा-टहल आ परिचर्या लेल अशेष आशीर्वाद दैत छी।

प्रवासीजीक प्राय: ई पहिल काव्यसंग्रह अछि जे लोक देखि सकत। ई दुर्भाग्य हमरा सभक छल जे एहन वयोवृद्ध रससिद्ध कविक कोनो रचना उपलब्ध नहि छल तेँ एहि दिशि प्रवृत्त भेलहुँ हम। प्रत्यक्ष आ परोक्ष सब सहयोगी सभकेँ अनेकश: धन्यवाद।

ई पोथी मैथिलीमे अछि आ मैथिली कविता संग्रह थिक मुदा नहि जानि किएक हम विद्यावारिधि वाचस्पतिपर हिन्दीमे लिखल गेल कविपंचानन केर कविता एहिमे पृथक् सँ देबाक लेल हृदयसँ विवश भेलहुँ। एहिना डॉ. जयकान्त मिश्र आ हमर स्थानान्तरणपर प्रवासीजीक हिन्दी कविता देलहुँ अछि। सुधी पाठक हमर 'विवशता' स्वीकार करथि से विनम्र अनुरोध ! आखिर प्रवासीजीक प्रतिबिम्ब तऽ ओहूमे अछि ने! 'प्रवासी प्रतिबिम्ब'पर प्रवासीजीक सुपुत्र श्री कौशल किशोर मिश्र 'सुमन'क कविता हुनक उद्‌गार अछि से निवेदित।

दि. 07 दिसम्बर 2023केँ सहसा सूचना भेटल जे प्रवासीजी ब्रह्मलीन भऽ गेलाह। हम आ महेशजी गजहरा जा चित्रपर प्रणाम निवेदित कयलहुँ। शुद्ध कविताक सरिता जेना सुखा गेल हो।

['प्रवासी प्रतिबिम्ब', 2018, सम्पादकीय केर परिमार्जित रूप]

मिथिला विमर्शक पुरोधा पं. सहदेव झा

सर्वप्रथम मिथिला विमर्श की? एहि विषयपर विचार करब उचित। की मिथिला विमर्श कवि-कुल-कान्त कालिदासक मैथिलत्व प्रमाणित करबामे अछि? वा विद्यावारिधि वाचस्पतिक जन्मतिथि वा जन्मस्थानक निर्धारणमे नुकाएल अछि? वा मिथिलाक पुरा प्रातिभ सभक प्रखर प्रतिभाक प्रतिबिम्बनसँ ओकरा आर जगजियार करबामे अछि? परम्परासँ मानल गेल अछि जे श्रीधर नान्यदेवक सेवामे अयबासँ पूर्व सेन साम्राज्यक महामाण्डलिक छलाह। 1097 ई.मे नान्यदेव राज्यारूढ़ भेलथि तखन 1205 ई.मे श्रीधर 'सदुक्ति कर्णामृत'क संग्रह कोना कयलनि? की हुनक समय 133 वर्षक छल? नान्यदेव, श्रीधर, लक्ष्मणसेनक कालखंडमे संगति कोना बैसाओल जाय? मैथिल दही-चूड़ाक भोजन मात्रसँ शीतल रहैत छथि तेँ मैथिल शौर्यक कतहु चर्चा किएक नहि होइत अछि? मिथिला नरेश म.म. पुरुषोत्तम ठाकुर 1623ई.मे युद्धभूमिमे अपन शहादत देने छलाह। एहिसँ पूर्व राजा शिवसिंह सेहो रणक्षेत्रमे अद्‌भुत वीरताक प्रकर्ष देखा मातृभूमिक बलिवेदीपर शीशोत्सर्ग कऽ वीरगति पओलनि। तथापि मैथिल शौर्यक लोहा इतिहास किएक नहि मानलक? कन्दर्पीघाटक युद्धमे मिथिलेश नरेन्द्र सिंह अपन अप्रतिम युद्ध कौशल आ अनुपम नेतृत्व शक्तिक बलेँ आम मैथिलक आह्वान कयलनि। जाति-धर्मक बंधन तोड़ि आम मैथिल अपन स्वाभिमानक लेल युद्धभूमि कन्दर्पी कूच कएलक। एहि विकट युद्धमे असंख्य मैथिल आत्मोत्सर्ग कऽ विजयश्रीक वरण कयलनि मुदा इतिहास एहि घटनाकेँ उचित स्थान नहि देलक, किएक? मिथिला मुकुटमणि मंडनकेँ कथित शास्त्रार्थमे शंकराचार्यसँ पराजित देखा जे माधवाचार्य अरण्य रोदन कएलनि ओकरा सुनबाक सामर्थ्य सात सयसँ बेसी साल तक किनको किएक नहि भेल? मैथिल ललनाक सुकोमल हाथसँ चित्रित मिथिला पेंटिगक विश्वव्यापी चर्चामे एतेक वर्ष

किएक लागल? माछ-मखानक उद्योग अखन धरि किएक जोर नहि पकड़लक? आदि-आदि प्रश्नक उत्तर खोजब मिथिला विमर्श थिक। बहुत रास प्रश्न अखनो अनूत्तरिते अछि मुदा किछु प्रश्नक उत्तर ताकलो गेल अछि।

आश्चर्यक गप्प ई जे एहन किछु प्रश्न सभक उत्तर तकनिहार आम मैथिल छथि, कोनो सरकारी संस्था, विश्वविद्यालय वा कोनो विभागक पदाधिकारी नहि। अपन उर्वर मेधाक बलेँ बहुत रास एहन मिथिला विमर्श संबंधी प्रश्नक उत्तर ताकल गेल अछि। कवि-कुल-कान्त कालिदासक मैथिलत्व प्रमाणित करबामे पं. लक्ष्मण झाक अप्रतिम योगदान (कालिदास कहां और कब?, Kalidas : A Heritage of Mithila) अछि। ओना पं. जीवनाथ झा, पं. जयमन्त मिश्र, आचार्य (पं) बलदेव मिश्र (विक्रम पत्रिका, कालिदास विशेषांक), पं. आद्याचरण झा, पं. आदित्यनाथ झा, डा. भारती श्रीवास्तव (हिन्दी कथा-साहित्य में मिथिला का योगदान), डा. रामचन्द्र ठाकुर (मिथिलापभ्रंश का आकर स्रोत), डा. कृष्णानंद (कालिदास बिहार के थे), आर.आर. दिवाकर (बिहार थ्रू एजेज), पं. रामप्रकाश शर्मा (मिथिला का इतिहास), साहित्याचार्य पं. दुर्गानन्द झा (प्रथम कालिदास समारोह, उच्चैठमे पठित आलेख), पं. दिगम्बर झा (मिथिला एवं कालिदास), डा. रंगनाथ दिवाकर (मधुबनी जिला स्थापना दिवस स्मारिका आ स्वतंत्र ग्रंथ महाकविक महाप्रयाण) प्रभृति विद्वान् एहि विषयपर महत्त्वपूर्ण शोध कार्य कयलनि आ महाकवि कालिदासक मैथिलत्व स्थापित कयलनि। एहिना ठाढ़ीकेँ वृद्ध वाचस्पतिक जन्मभूमि प्रमाणित करबामे पं. सहदेव झाक अवदान महत्त्वपूर्ण अछि।

मैथिल मेधाक महोदधिमे असंख्य मानव मोती अपन रश्मिप्रभा विकीर्ण करैत छथि। सभक उद्देश्य मात्र मानव कल्याण। एहि मणिप्रभासँ सुवासित होइत अछि भारतीय वाङ्मय। एहन मोती सभक आभासँ संसार आलोकित भेल अछि। सब अपन-अपन मेधाक सर्वश्रेष्ठ उपयोग करैत छथि। एहिमे निजी उत्कर्ष सेहो ध्येय रहिते अछि। किछु एहनो छथि जनिकर उद्देश्य निजी उत्कर्ष मात्र नहि रहैत अछि। ओ समाज आ मात्र मिथिलाक उत्कर्ष देखऽ चाहत छथि। एहने मनीषी सभकेँ मिथिला विमर्शक सुच्चा सेवी मानैत छी हम। एहिमे पं. सहदेव झा अन्यतम छथि।

ठाढ़ीकेँ विद्यावारिधि वाचस्पतिक जन्मभूमि प्रमाणित करबाक बात हो, अंधराठाढ़ी रेलवे टीशनक नामकरण वाचस्पतिनगर करबाक घटना हो वा परोपट्टामे अभरल पुरातात्त्विक महत्त्वक मूर्त्ति, शिलालेख वा अन्य सामग्री सभकेँ जोगाकेँ संगृहीत करैत वाचस्पति संग्रहालयक स्थापना हो वा 'मित्रवाणी'क वाचस्पति विशेषांक (1956-57 ई.) मादे ठाढ़ीकेँ वाचस्पतिक जन्मस्थान प्रमाणित

करबाक निर्णायक उद्घोष हो वा क्षेत्रमे पसरल छुआ-छूत, पाखंड, अज्ञानता, भ्रांति आओर अशिक्षादि सन अभिशापकेँ अपन बौद्धिक क्षमता, उदार दृष्टिकोण आ समन्वयवादी सोचसँ समाप्त करबामे प्रभावी भूमिका केर निर्वहन हो वा कर्णाट कालपर दू दिवसीय संगोष्ठी (22-23 अक्टूबर 1999)क सफल संयोजन हो पं. सहदेव झा सदिखन अग्रिम पंक्तिमे ठाढ़ रहैत छलाह। सुन्दर आ समावेशी समाजक निर्माणमे अग्रणी रहैत छलाह। अनेक महत्त्वपूर्ण काजो कयलनि जाहि लेल ओ स्मरणीय अवश्य छथि मुदा पं. सहदेव झा मैथिल मानसपर राज करैत छथि अपन एक काजक लेल। ओ काज थिक मंडन-शंकर शास्त्रार्थमे कथित रूपसँ मंडनक पराजयक प्रवाद केर मूलोच्छेद करब। दिन, सप्ताह, मास, वर्ष, शताब्दी आ सहस्राब्दी गुदश्त भेल मुदा मिथिला मुकुटमणि मंडनक कथित शास्त्रार्थमे पराजयक प्रवाद मिथिलाकेँ गछारने रहल।

प्रवाद छल जे आदि शंकराचार्य मिथिला आबि मीमांसक मंडन मिश्रसँ शास्त्रार्थ कयलनि। शास्त्रार्थमे भारती पंच छलीह। ओ अपन पति मंडनकेँ शास्त्रार्थमे पराजित घोषित कयलनि। फेर ओ स्वयं शंकराचार्यसँ शास्त्रार्थ कयलनि। ब्रह्मचारी शंकराचार्यकेँ कामशास्त्रीय प्रश्न पुछि हुनका परास्त कयलनि। शंकराचार्य समयक याचना कऽ मृत राजा अमरूकक देहमे प्रवेश कऽ कामकलाक अभ्यास कऽ फेर आबि भारतीक प्रश्नक उत्तर दऽ भारतीकेँ नत कयलनि आ दुनूकेँ अपन शिष्य बना लेलनि। फेर मंडन सुरेश्वराचार्य नामसँ अभिहित भेलाह आ शंकराचार्यक बाद श्रृंगेरी पीठक दोसर आचार्य भेलाह।

ई सम्पूर्ण प्रवाद 'शंकर दिग्विजय'कार माधवाचार्य द्वारा पसारल गेल छल। आचार्य शंकरक मिथिला आगमन आ मंडन मिश्रक घरक पता पुछलापर एक पनिभरनी द्वारा देल गेल विलक्षण उत्तर केहन मोहास्त्र अछि से देखल जाय-

स्वत: प्रमाणं परत: प्रमाणं कीराङ्गना यत्र गिरो गिरन्ति।
द्वारस्थनीडान्तरसन्निरुद्धा: जानीहि तन्मन्डनपंडितोक:॥

माधवाचार्य मिथिलाक पनिभरनीक मुहसँ शुद्ध संस्कृतमे जे सुग्गा-मैनाकेँ द्वारपर शास्त्रार्थ करैत देखा बोर देलनि एहिमे आम मैथिल फँसि गेल। ओ गद्गद् होइत रहलाह आ माधवाचार्य कथित रूपसँ शंकर-मंडन शास्त्रार्थमे मंडनक पराजय देखा मिथिला लुटि लेलनि। मिथिला एहि बोरमे फँसि छटपटाइत रहल। बड़का-बड़का दार्शनिक, संस्कृतक पैघ-पैघ विद्वान् आ महान् हस्ती सभक जन्म मिथिलामे भेल

मुदा किनको ध्यान माधवाचार्यक एहि अन्यायपर नहि गेल। सब अपन मेधाक नव-नव रूपसँ निजी उत्कर्षमे लागल रहलाह। कतेक शताब्दी व्यतीत भेल, सहस्त्राब्दी अवसानपर छल।

एहने समय वृद्ध वाचस्पतिक गाम ठाढ़ीमे 28 जुलाई 1919 ई.कैं माता महासुन्दरी देवी आ पिता उमाकान्त झाक दोसर पुत्ररत्न रूपमे सहदेव झा एहि धरा-धामपर अवतरित भेलाह। विपन्नावस्था छल। मनोनुकूल अध्ययनक सुयोग नहि भेटलनि। अग्रज नन्दीश्वर झा आ अपने अत्यन्त मेधावी रहथि। कहुना टुकदुम-टुकदुम जीवनक गाड़ी घिचा रहल छल। मेधासूर्य कहिया धरि बदरीमे नुकाएल रहि सकैत अछि?

नन्दीश्वरजी मैट्रिक आ मध्यमा दुनू कयलनि। ओ वीतरागी छलाह। विवाहक बाद एक सन्तान भेलनि आ ओ सहसा गृहत्याग कऽ देलनि। 1947मे आपस गाम घुरलाह आ ब्रह्मस्थानमे कुटी बना रहऽ लगलाह। अनुज सहदेव साहित्यमे शास्त्री आ व्याकरणमे आचार्य भेलाह। अपन इच्छा रहनि जे नैयायिक बनी मुदा अर्थक अभावमे ई सपना पूरा नहि भेलनि। काशी गेल छलाह मुदा तीन मासमे आपस गाम आबि गेलाह। सुप्रसिद्ध वेदान्ती विश्वम्भर झाजीसँ वेदान्त पढ़लनि मुदा मातृक हुलासमे नानाक मृत्यु आ श्राद्धमे चलि जयबाक कारणेँ परीक्षा नहि दऽ सकलाह। गाम आबि पुन: स्वाध्याय शुरू कयलनि। न्याय, वेदान्त, मीमांसा आ आयुर्वेदक अध्ययन कयलनि।

1937 ई.मे ब्रह्मचर्याश्रम संस्कृत पाठशाला, मदनेश्वर स्थानमे संस्कृत शिक्षक रूपमे वृत्ति शुरू कयलनि। दस वर्ष बाद नोकरी छोड़ि गाम घुरि गेलाह। किछु वर्ष बाद जनवरी 1950मे उच्च विद्यालय, अँधराठाढ़ीमे संस्कृत शिक्षक रूपमे योगदान देलनि। 2 अक्टूबर 2002कैं सेवानिवृत्ति धरि एतहि रहलाह।

अध्ययनमे रूचि शुरूएसँ छलनि। जतेक पढ़थि मोन ओतबे औनाइत रहलनि। जखन-जखन दर्शन केर गैंठी सोझरेबाक प्रयास करथि मंडन मिश्रक पराजयक बात कचोटैत छल। मंडन सन प्रातिभकैं पराजय आ सुरेश्वराचार्य बनब हिनका अरघैत नहि छल। सुरेश्वराचार्य विषयक चिन्तनमे लागल रहैत छलाह। एहिनामे एक दिन अपन गुरु विश्वम्भर बाबूसँ सुरेश्वराचार्यक कोनो पोथी अध्ययनार्थ मँगलनि। घर आबि जखन ओ देखलनि तखन आश्चर्य भेलनि। ओ पोथी मंडन विरचित ब्रह्मसिद्धि छल। पोथीक मननसँ हिनक मोन विकल भेल। पूर्वसँ औनाइत मोनमे ई बात पैसि गेल जे मंडन कथमपि सुरेश्वराचार्य नहि भऽ सकैत छथि। यैह प्रस्थान विन्दु बनल आ सहदेवजी ओहि यात्रापर विदा भऽ गेलाह जे शंकर-मंडन विषयक कथित शास्त्रार्थक प्रवादकैं खंड-खंड कऽ देलक। ई 1970 केर घटना थिक।

आश्चर्य एहि बातक अछि जे ओरिएंटल मैन्यूस्क्रिप्ट लाइब्रेरी, मद्रास द्वारा एस. कुप्पूस्वामी शास्त्रीक नेतृत्वमे 1914सँ 1922 धरि चलल पाण्डुलिपि संग्रहण अभियानमे भेटल 'ब्रह्मसिद्धि'क तीन पाण्डुलिपिमेसँ एकहुटा मिथिलासँ नहि भेटल छल। बादमे 1936 ई.मे कुप्पुस्वामीक विस्तृत भूमिका संग ई पोथी प्रकाशित भेल। इहो कम आश्चर्यजनक नहि अछि जे 1936सँ 1970 धरि कोनो मैथिल मेधाक ध्यान एम्हर नहि गेल आ शंकर-मंडन शास्त्रार्थ विषयक प्रवाद जड़िआएले रहल। 1970मे जखन पं. सहदेव झा ब्रह्मसिद्धि पढ़लनि तखन हुनक औनाइत मोन स्थिर भेल। 1970सँ जून 1973 धरि एहि विषयक गहन अध्ययन कयलनि आ एहि विषयक प्रथम आलेख 'मंडनक अद्वैत वेदान्त' मिथिला मिहिरक दि. 5 जुलाई 1973 अंकमे प्रकाशित भेल।

शुरूमे जखन ओ अपन बात विद्या व्यसनी अपन मित्र सभकेँ कहैत छलाह तखन कतेक बेर अनेक स्वनामधन्य विद्वान् सभक उपहासक पात्र सेहो बनैत छलाह। कतेक विद्वान् सहमत तऽ होइत छलाह जे बात तथ्यात्मक तऽ अछि मुदा हवाक विपरीत अछि तेँ ओम्हर नहि जाउ। मुदा ई अध्ययनक आन्तरिक शक्तिसँ सम्बलित छलाह, पाछू नहि भेलाह। ओ मर्द केहन जे विपरीत परिस्थितिसँ विचलित भऽ पलटि जाए!

माधवाचार्य अपन शंकर दिग्विजयमे एहि शास्त्रार्थ विषयक कहैत छथि जे मीमांसक मंडन शास्त्रार्थमे अपन मान्यता एहि श्लोकसँ प्रतिपादित कयलनि-

वेदान्ताः न प्रमाणं चिति वपुषि पदे तत्र संगत्ययोगात्
पूर्वो भागः प्रमाणं पदचयगमिते कार्यवस्तुन्यशेषे।

शब्दानां कार्यमात्रं प्रति समधिगता शक्तिरभ्युन्नतानां
कर्मभ्यो मुक्तिरिष्टा तदिह तनुभृतमाऽयुषः स्यात् समाप्ते॥

ई शुद्ध कऽ माधवाचार्यक प्रलाप छी। मंडनक ई सिद्धांत कथमपि नहि भऽ सकैत अछि। जँ वेदान्तसँ ब्रह्मक सिद्धि नहि भेल तखन वेदान्तकेँ प्रमाण नहि मानल जा सकैत अछि। मंडन मिश्रक पोथी 'ब्रह्मसिद्धि'क नामे ई स्पष्ट करैत अछि जे मंडन मिश्र मानैत छथि जे वेदान्तसँ ब्रह्मक सिद्धि संभव अछि। एहि ग्रंथमे सर्वत्र मंडन वेदान्तसँ ब्रह्मसिद्धिक सिद्धान्तक प्रतिपादन कयने छथि। एतेक तक जे हुनक मीमांसाग्रंथ 'विधि विवेक'मे सेहो वेदान्तक प्रामाणिकता प्रतिध्वनित होइछ—

उपनिषदात्म-तत्त्वन्तु विधिनिरपेक्षवाक्यात् प्रतीयते।

मंडन मिश्रकेँ द्वैतवादी मीमांसक रूपमे चित्रित कऽ हुनक पराजयक मिथ्या कलंक लगओनिहार शंकर दिग्विजयकार माधवाचार्यकेँ इतिहास कहियो माफ नहि करत। ई सत्य अछि जे मंडन आ शंकर दुनू वेदान्ती छथि। मुदा दुनुमे किंचित् पार्थक्य अछि। शंकरक मान्यता अछि जे संन्यासीकेँ ब्रह्म चिन्तन मात्रसँ मोक्षप्राप्ति संभव छैक। जखन कि मंडनक धारणा अछि जे जँ गृहस्थ ब्रह्मचिन्तनक संग यज्ञ, दान, तप आदि सत्कर्म करथि तखन संन्यासीक अपेक्षा अधिक शीघ्रतासँ जीवनचक्रसँ मुक्ति वा मोक्ष प्राप्त कऽ सकैत छथि। एहिना ब्रह्मक स्वरूप, साक्षात्कार, मुक्ति, प्रारब्ध आदि विन्दुपर दुनूमे मतभिन्नता अछि। मंडन ईशावास्योपनिषद केर प्रसिद्ध पाँती—

ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्चित् जगत्यां जगत्।
तेन त्यक्तेन भुंजिथाःञ्जी मा गृधः कस्यस्विद्धनम्॥
कुर्वन्नेवेह कर्माणि जीजीविषेत् शतं समाः।
एवं त्वयि नान्यथेतोस्ति न कर्म लिप्यते नरे॥

आओर छान्दोग्योपनिषद् केर विश्वविश्रुत पाँती—

कुटुम्बो शुचौ देशे स्वाध्यायमधीयनो
ब्रह्मलोकमभिसम्पद्यते न चा पुनरावर्तते न चा पुनरावर्तते।

केँ अपन अभीष्ट मनि काम्य कर्मकेँ मोक्ष प्राप्तिक सोपान मानैत छथि। 'शंकर दिग्विजय' कार सबहक इतिहास बोध केहन अधम अछि एकर प्रमाण अछि जे शंकराचार्य मात्र 32 वर्ष (788-820 ई.) जीवित रहलाह आ हुनक जन्मसँ दू सय वर्ष पूर्व भेल हर्षवर्द्धन (606-647 ई.)क समकालीन बाण आ शंकराचार्यक दू सय वर्ष बादक उदयन संग हुनक शास्त्रार्थ देखाओल गेल अछि। अन्य परवर्ती प्रातिभ— दंडी, मयूर, भट्ट भास्कर प्रभृति विद्वान सभकेँ शास्त्रार्थमे परास्त कऽ देलनि— हाय रे इतिहास दृष्टि ! जन्मसँ दू सय वर्ष पूर्व एवं दू सय वर्ष बाद भेल प्रातिभकेँ परास्त कऽ देलनि। 'बाप छल पेटमे आ पूत गेल गया' वला स्थितिपर मात्रा मुस्की अबैत अछि।

शंकराचार्यमे दिव्यत्व रूढ़ करबाक निमित्ते शंकर दिग्विजयकार सब एहन पाप कयलनि जेकर जतेक निन्दा कयल जाय ओ कम अछि। विश्व साहित्यमे एहन कपट आ अनाचार कहियो नहि भेल छल। इतिहास एहि अनाचारपर रक्ताश्रु बहबैत रहल। इतिहासक एहि रक्ताश्रुकेँ अपन अध्ययन-औषधि मज्जित रुइसँ पोछबाक काज पं. सहदेव झा कयलनि। ई सत्य जे एहि शल्यक्रियामे अनेक छोट-मोट नस-नाड़ी कटल आ ओ सब तदनुसार विलाप सेहो कयलनि तथापि हजार वर्षक गन्दगी साफ भऽ गेल।

शंकरक आचार्यत्वक प्रतिष्ठा तऽ 'भामती'क बादे भेल। प्रसिद्ध बौद्ध विद्वान् आ नालन्दा वि.वि. केर अध्यक्ष शांतिरक्षित (आचार्य शंकरक परवर्ती) अपन 'तत्त्वसंग्रह' ग्रंथमे अनेक वैदिक मतावलम्बी विद्वान् सभक मत केर खण्डन कयलनि। एहि सूचीमे शंकराचार्यक नाम नहि अछि। ई स्पष्ट करैछ जे ताबत धरि शंकराचार्यक आचार्यत्व एम्हर स्थिर नहि भेल छल। वाचस्पति जखन 'भामती' व्याख्या लिखलनि तेकर बादे शंकरक आचार्यत्व स्थापित भेल। इहो विचारणीय विन्दु अछि जे वाचस्पति अपन पाठ 'भामती'मे ब्रह्मबोधक व्याख्या करैत शंकरक सिद्धान्त— 'तत्त्वमसि' आ 'अहं ब्रह्मास्मि' सन् वेदान्त वाक्यसँ ब्रह्मक प्रत्यक्षानुभूति भऽ सकैत अछि, ब्रह्मज्ञान आ अविद्याजनित भ्रम एकहि समयमे एकहि ठाम नहि रहि सकैत अछि आदिक अपेक्षा मंडनक सिद्धांत— प्रत्यक्ष ब्रह्मबोधक संग प्रत्यक्ष अविद्याजनित भ्रम नहि रहि सकैत अछि, वेदान्त वाक्यक अतिरिक्त आनो शब्द सभसँ परोक्ष ज्ञान होइत अछि वेदान्त वाक्योसँ ब्रह्मक परोक्षे ज्ञान होइत अछि, अविद्याजनित प्रत्यक्ष भ्रमकेँ प्रत्यक्ष ब्रह्मबोधे दूर कऽ सकैत अछि। आ एहन ब्रह्मबोधक सर्जना लेल काम्य कर्म— उपासनादिक आवश्यकता अछि। वाचस्पति शंकरक 'भामती' व्याख्यामे शंकराचार्यक सिद्धान्तक अपेक्षा मंडन मिश्रक सिद्धान्तकेँ अधिक मनोयोगपूर्वक पल्लवित करैत छथि। एहिना शंकराचार्यक मत— माया वा अविद्याक आधार मायोपाधिक ब्रह्मे छथि वा अविद्याक बिना परमेश्वर सर्जक नहि भऽ सकैत छथि। किछु एहने भाव मंडन द्वारा प्रतिपादित अछि। वाचस्पतिक एहि रहस्योद्घाटनक बाद एकर विरोध सेहो भेल मुदा वाचस्पति अत्यन्त सूक्ष्मतापूर्वक शंकरक सिद्धान्तकेँ मंडनक सिद्धान्त दिशि मोड़ि दुनूमे वैदुष्यपूर्ण सामंजस्य स्थापित कऽ दैत छथि। एहि सूक्ष्म समन्वयपर सहदेव झा विस्तृत प्रकाश दैत छथि। अपन ग्रंथ 'मंडन मिश्र और उनका अद्वैत वेदान्त' (सम्पादक-डॉ. तारानन्द वियोगी) आ 'मिथिला के वेद वेदान्त'मे पं. सहदेव झा अत्यन्त वैदुष्यपूर्ण ढंगसँ शंकर-मंडन शास्त्रार्थ विषयक प्रवादकेँ जड़िसँ उखाड़ि

देलनि। प्रवादक उन्मूलन आ भावाद्वैतक स्थापन पं. सहदेव झाक अमर कृति अछि। हजार वर्षक मिथ्या पराजयक कलंककेँ अपन मेधासँ समाप्त कयलनि। पं. जनार्दन झा(पाठशाला गुरु), पं. मुरलीधर झा(गुरुजी), पं. विश्वम्भर झा, पं. रविनाथ झा, पं. भगीरथ झा(छोटा गुरु), पं. हरिशंकर झा(छोटा गुरु) आ पं. कृष्णलाल झाक अनुपम शिष्य पं. सहदेव झा अपन गुरुजनकेँ कृतार्थ कयलनि। अग्रज महात्मा नन्दीश्वर झाक फलाहारी-सदाचारी-नोनत्यागी अनुपम व्यक्तित्वक प्रभाव हिनकापर पड़ल छल। अनेक पोथी आ शताधिक आलेख-वार्तादि लिखलनि। प्रमुख पोथी अछि– अँधराठाढ़ी प्रखण्ड की ऐतिहासिक महत्ता (1973), एक आदर्श नगर अँधराठाढ़ी (1974), वाचस्पति संग्रहालय : एक झलक (1989), वाचस्पति मिश्र (मैथिली अकादमी, पटना, 1984), मिथिला की धरोहर (1985), वाचस्पति मिश्र : एक संस्मरण (1995), मण्डन मिश्र और उनका अद्वैत वेदान्त (1999) आ मिथिला के वेद वेदान्त (2004)। मैथिली विश्वविद्यालय, दरभंगा (सम्प्रति विघटित) द्वारा विद्या वाचस्पति केर उपाधिसँ अलंकृत भेल छलाह। चेतना समिति, पटनाक सम्मान समारोह दि. 22 नवम्बर 1996केँ तत्कालीन राज्यपाल डॉ. ए आर किदवईक कर-कमलसँ ताम्रपत्रसँ सम्मानित भेलाह। हम स्वयंकेँ सौभाग्यशाली मानैत छी जे हमरा हिनक साहचर्य आ आशीर्वाद भेटल। महेशजी जखन हिनक प्रस्तावित स्मृतिग्रंथ 'सहदेव सुषमा : पं. सहदेव झा स्मृतिग्रंथ' (2012)क सम्पादनक सौभाग्य हमरा देलनि तखन भावुक भेल रही।

दर्शनक गूढ़ तत्त्व केर व्याख्या हमर अभिप्रेत नहि रहल अछि। हम मात्र एतबे कहबाक प्रयास कऽ रहल छी जे मंडन शंकरसँ शास्त्रार्थमे परास्त नहि भेल छलाह। शंकर-मंडन शास्त्रार्थ विषयक प्रवाद तथ्यहीन, अनैतिहासिक, काल्पनिक, मिथ्या आ अनाचार छोड़ि आर किछु नहि अछि। ई पं. सहदेव झा अपन गौरव ग्रंथ 'मंडन मिश्र और उनका अद्वैत वेदान्त (संपा.-डा. तारानंद वियोगी)मे स्थापित कऽ चुकल छथि। लगभग दस शताब्दीसँ पसरल एहि प्रवादक मूलोच्छेद कऽ पं. सहदेव झा मिथिले नहि सम्पूर्ण विश्व वाङ्मयपर उपकार कयलनि। एहिमे डॉ. वैद्यनाथ मिश्र, डॉ. तारानन्द वियोगी, डॉ. उदयनाथ झा अशोक, पं. इन्द्र नारायण झा, मैथिली पुत्र प्रदीप, डॉ. नारायण झा, डॉ. चित्त नारायण पाठक, डॉ. भद्र नारायण पाठक, पंकज मिश्र, राम चैतन्य धीरज, डॉ. रंगनाथ दिवाकर, डॉ. देव शंकर नवीन, रमेश आ सुरेन्द्र नाथ आदि कतेक विद्वानक साथ भेटल। आब ई कथित शास्त्रार्थ निर्मूल भऽ चुकल अछि आ मिथिला मुकुटमणि मंडन मिश्रक अपराजित मेधासूर्य सभक समक्ष आबि चुकल अछि। ई शुद्ध रूपसँ पं. सहदेव झाक सारस्वत अवदान थिक।

शुरूमे हम मिथिला विमर्शक क्रममे किछु प्रश्न ठाढ़ कयने रही। संभवत: किछु प्रश्नक उत्तर अपने लोकनिकेँ भेटल होयत। मैथिल शौर्यक अनुपम दिग्दर्शन कंदर्पीघाटक युद्धमे भेल छल आ कंदर्पीक कछारमे कहियो हमरा 'पवित्री' भेटल छल। हम ओकरा कोनो वस्तु/आभूषण मानैत रही। पं. सहदेव झासँ एहि विषयपर जिज्ञासा कयने रही तऽ ओ कन्दर्पीयुद्धक विषयमे बहुत किछु कहलनि। जिज्ञासा बढ़ैत गेल आ खोज प्रारंभ भेल अंतत: कन्दर्पीघाटमे मिथिला विजय स्तम्भ निर्माण करा सकलहुँ। मिथिला विमर्शपर अखनो काज केनिहारक कमी नहि छैक। बहुत काज चलि रहल अछि जे सुखद अछि। अखनो बहुत काज बाँचल छैक। मिथिला विमर्शक पुरोधा पं. सहदेव झा जे ज्योति जगा देलनि ओहि दीप केर रक्षा करब हमरा सभक कर्तव्य थिक। निजी उत्कर्ष हुनक ध्येय नहि छल। व्यक्तित्व एकदम साधारण मुदा.. जखन ज्ञानगंगा हुनक श्रीमुखसँ बहरायत छल तखन सभकेँ चकबिदोर लागि जाइत छल। कहियो पं. सहदेव झाक विषयमे हम जे लिखने रही ओहिसँ अपन बात आइ फेर समाप्त करब।

जँ साधारणमे असाधारण देखबाक इच्छा हो, मिथिला-मैथिलीक उत्कर्षक लेल छटपटौनीक भावना महसूस करबाक हो, धर्म-दर्शन-पुरातत्त्वक त्रिवेणीमे निमज्जित होयबाक मनोभाव हो, विदेह जनकक प्रतिरूप देखबाक सेहन्ता हो वा मैथिल मेधा परंपरामे अवगाहन करबाक लालसा हो तऽ एक बेर ठाढ़ीक 'सरस्वती मंदिर' (पं. सहदेव झाक घरकेँ पूज्य पिता जगन्नाथ चौधरी एही शब्दसँ अलंकृत कऽ ओतऽ जयबाक इच्छा प्रकट कयने छलाह) अवश्य जाय आ हुनक भावद्वैतक दर्शनसँ साक्षात्कार अवश्य करी। यद्यपि आब एहि सरस्वती मन्दिरक मुख्य पुजारी पं सहदेव झा नहि छथि तथापि घरमे लागल हुनक तस्वीरसँ एक अलग आभा अखनो बहराइत अछि जे एक अजीब ऊर्जासँ भरि दैत अछि। वियोगीजी कहैत छथि जे सहदेवजीक आत्मामे मंडनक वास अछि। हम जखन-जखन हुनक घरमे लागल हुनक विशाल फोटो देखैत छी तऽ लगैत अछि जे ओ मंडन मिश्र आ वाचस्पतिक पंक्तिमे बैसि मिथिला विमर्शपर निश्छल बालसुलभ हँसी-हँसि रहल छथि। मिथिला विमर्शक एहि अद्भुत पुरोधाकेँ सादर नमन!

[आचार्य पं. महेश झाक 'मिथिला विमर्शक पुरोधा पं. सहदेव झा' (2018) पोथीक भूमिका केर परिमार्जित रूप]

मैथिल गांधी कारो बाबू

11 जनवरी 1911कँ कुशेश्वरस्थान प्रखण्डक बेरि गाममे पिता नारायण बल्लभ चौधरी आ माता मधुकुँवरि देवीक पुत्ररत्न रूपमे गिरिवरधारी चौधरी एहि धरा-धामपर अवतरित भेल छलाह। हिनक अग्रज हरिगोविन्द चौधरी (1898-23. 8. 1934) कलकत्ता विश्वविद्यालयक स्नातकोत्तर हिन्दीक परीक्षामे समस्त कीर्त्तिमान ध्वस्त करैत वर्ष 1926 ई.मे प्रथम वर्गमे प्रथम स्थान प्राप्त कऽ नूतन कीर्त्तिमान स्थापित कयने छलाह। बापूसँ हरिगोविन्द चौधरीक पत्राचार होइत छल। हरिगोविन्द बाबूकेँ खादी अतिप्रिय छल। कारो बाबूक 1926मे उपनयन संस्कार खादीए वस्त्रसँ भेल। अग्रजक प्रयाससँ युवक गिरिवरधारी चौधरीक प्रवेश 17 मार्च 1929 ई.केँ बापूक उद्योग मन्दिर, साबरमती आश्रममे भेल छल। बापू जखन नमक सत्याग्रहक घोषणा कयलनि तखन गिरिवरधारी चौधरी एहिमे हुनक संग छलाह। आश्रममे बहुत रास लोक अपन नाम देने छलाह जाहिमे 5 मार्चकेँ गिरिवरधारी चौधरीक अतिरिक्त बिहारक आठ अन्य व्यक्ति घोषणा-पत्रपर हस्ताक्षर कयने छलाह। किन्तु अंग्रेज सभक दमनकारी नीतिसँ बहुत केर हिम्मत जवाब दऽ देलक आ 10 मार्च तक आन सभक संग ई आठो गोटे अपन-अपन नाम आपस लऽ लेलनि। गिरिवरधारी अलग धातुक लोक ! हुनक मन-प्राणपर बापूक अभिनव प्रभाव छल। ओ दृढ़ संकल्प आ इच्छा शक्तिक बलेँ एहि सत्याग्रहमे बापूक संग देलनि। इतिहास प्रसिद्ध दाण्डी यात्रा साबरमती आश्रमसँ बापूक नेतृत्वमे 12 मार्च 1930केँ शुरू भेल। 5 अप्रैल 1930क राति सब दाण्डी यात्री दाण्डीक सैफी विलामे विश्राम कयलनि आ 8.30 बजे भोरमे 6 अप्रैल 1930केँ नोन आन्दोलनक इतिहास रचलनि। बापू समुद्रक जल सुखा चुटकी भरि बनल नोन अपन हाथमे लैत नमक कानून, 1882केँ भंग कयलनि। एहि चुटकी भरि नोनसँ बापू अंग्रेज सभक सत्ता हिला देलनि। ओहि दिन दाण्डीमे खूब नोन बनल आ दू टीला नोन अहमदाबादक नोन व्यापारी सेठ रणछोड़जी 525 रु.मे कीनि लेलनि। 24 दिनक एहि अविराम यात्रामे कुल 338 किलोमीटर केर दूरी

80 (शुरूमे 78 फेर दू यात्री आर) दाण्डी सत्याग्रही सब तय कयलनि। 78 यात्रीमे गुजरातसँ 31, महाराष्ट्रसँ 13, उत्तर प्रदेशसँ 8, कच्छसँ 6, केरलसँ 4, पंजाबसँ 3, राजपुतानासँ 3, बम्बईसँ 2 आ सिन्ध, नेपाल, तमिलनाडु, आन्ध्र, उत्कल, कर्णाटक, बंगाल आ बिहारसँ एक-एक दाण्डी यात्री छलाह। एहिमे गिरिवरधारी चौधरी बिहारसँ एकमात्र दाण्डी यात्री छलाह। एहिपर डा. राजेन्द्र प्रसाद गिरिवरधारी चौधरीकेँ छातीसँ लगा आशीष दैत कहने छलाह— आपने बिहार की लाज रख ली।

गिरिवरधारी चौधरी कारो बाबूक रूपमे परोपट्टामे प्रसिद्ध छलाह। कारो बाबू कहियो एक खादी धोती छोड़ि कोनो दोसर वस्त्र जेना गंजी, कुर्ता, स्वेटर, कोट आदि नहि धारण कयलनि। केहनो शीतलहरी किएक नहि हो, खादीक धोतीक ऊपर कोनो परिधान नहि, बस खादीक कोनो चद्‌दरि ओढ़ि लेलहुँ। कतहु जयबाक हो तखनो पयरमे कोनो पैताबा-जुत्ता वा चप्पल नहि, ओहिना खाली पयर चलि देलहुँ। ई सब आइ कहनाइ एकदम आसान लगैत अछि मुदा एकरा सभक पालन करब अत्यन्त कठिन। आत्मानुशासन आ सन्त-ऋषि सभक सोचवला मनुक्खे एना कऽ सकैत अछि। प्रचंड दुपहरियामे एक दिन सड़कपर खाली पयर चलिकेँ देखू वा भयंकर शीतलहरीमे एक दिन गंजी-कुरता-स्वेटर-मफलर हटाकेँ देखू तखन वास्तविक रूपसँ एहसास होयत जे ई व्रत कतेक कठिन अछि। कारो बाबू आजन्म अपन एहि अनुपम धर्मक निर्वहन कयलनि।

दाण्डी यात्रासँ आपस गाम आबि कारो बाबू छुआछूत, जातिप्रथा, अशिक्षा सन कुप्रथाकेँ ग्राम स्वराजक मार्गमे बाधक मानि एकरा सभक उन्मूलन करबाक लेल प्रयास कयलनि। सिंघिया आ कुशेश्वर स्थानमे एहि लेल सब जातिक विशेष रूपसँ अनुसूचित जाति केर सामूहिक भोजक आयोजनमे हिनक महत्त्वपूर्ण भूमिका छल। स्वतंत्रता प्राप्तिसँ पहिने शुम्भामे एक भू विवादक फरिछौट करबाक लेल आयोजित पैघ कार्यक्रममे जिलाक हाकिम सब जुटल छलाह। समाजक गणमान्य व्यक्ति सभक जुटानमे वैद्य राधाकान्त, हरिनगरक मधुकान्त झा, सिंघियाक बद्री मल्लिक, रामबाड़ीक शिबन पंडित, बेरिक कारो बाबू आदि प्रमुख छलाह। एहिमे रवि राम सेहो छलाह जे जातिसँ बहिष्कृत छलाह। कारो बाबू एहि रवि रामक व्यथा सुनि हुनकेसँ भोजन तैयार करा सभक संग हुनको भोजन लेल बैसा छुआ-छूत आ जाति बहिष्कार समाप्त करा देने छलाह। कथित पैघ जातिक किछु कठपिंगल सभकेँ एहन सहभोज अरघैत नहि छल मुदा कारो बाबूक सर्व स्वीकार्य व्यक्तित्वक आगू ई सब बिला गेल। खादी ग्रामोद्योगक प्रचार प्रसारमे पछुआ रहल बिहारक स्थितिपर राजेन्द्र बाबू हिनका देखबाक भार देलनि। 1936 ई.मे छतवन खादी ग्रामोद्योग केन्द्रक प्रभारी सेहो भेल छलाह। पहिने मात्र 15-20 मन खादी सूत उत्पादन

करयवला केन्द्र हिनक नेतृत्वमे 117 मन सूत उत्पादन केर रेकर्ड बनेने छल। खादी ग्रामोद्योगक प्रचार-प्रसारक लेल कारो बाबू अखंड बिहारक सब जिलाक गहन भ्रमण कयलनि। एहि अभियानक परिणाम भेल जे ओहि वर्ष भारतवर्षमे बिहारक खादी ग्रामोद्योगकेँ देश भरिमे दोसर स्थान भेटल आ रेकॉर्ड उत्पादन भेल।

1942 ई.मे 'अंग्रेजों भारत छोड़ो' आन्दोलनमे सिंघिया थानापर उग्र प्रदर्शन भेल। थानाकेँ स्वाहा कऽ देल गेल। गोली चलैत रहल आ यूनियन जैक उतारि थानापर तिरंगा फहरा देल गेल। थानेदार सारंगी खानक गोली खत्म भेलै आ ओ अग्निपुत्र सभक भीड़ द्वारा मारल गेल। एहि काण्डमे सिंघियाक बाबू कुलदीप नारायण सिंहक शहादत भेल। हिनक पुत्र रामगुणी सिंह पिताकेँ गोली मारनिहार अंग्रेज सिपाहीक बंदूक वीरतापूर्वक छीनलनि। कुलदीप बाबूक दोसर पुत्र सुरेश सिंह एहि अग्निकाण्डक नामजद अभियुक्त भेल छलाह। सिंघिएक बाबू रामनेवाज सिंह, बिरौलक बाबू विन्ध्येश्वरी प्रसाद सिंह, विभिन्न ठामक अनिरुद्ध झा, पं. राधाकान्त झा, ताराकांत झा, कारो बाबू प्रभृति स्वतंत्रता सेनानी रूपमे चमकि गेलाह। दमनचक्र शुरू भेल। पुलिस हिनको शिकारी कुकुर जकाँ ताकि रहल छल। गामक एक बाल विधवा बहिनक अंतिम संस्कार करैत काल कारो बाबू कटिहारीसँ गिरफ्तार भेला आ उत्तरीय पहिरने लहेरियासराय जहल चलि गेलाह। दस मास बाद कारागारसँ मुक्ति भेटलनि। फेर ग्राम स्वराज आ ग्रामोन्नतिक विभिन्न काजमे लागि गेलाह। मधुमक्खी पालन, मत्स्य पालन, कोल्हू-धनकुट्टी मशीन सभक उपयोग, पशुधन संवर्द्धन हेतु नस्ल सुधार कार्यक्रम, गौसेवा, कृषिकर्ममे आधुनिकताक प्रवेश, उन्नत खेतीपर जोर, शिक्षा आदि कार्यक्रम सभक सूत्रधार भेलाह। एहिमे सतीघाट आ कुशेश्वरस्थानमे उच्च विद्यालय, जगह-जगह कन्या, प्राथमिक आ मध्य विद्यालय सभक स्थापनामे हिनक अवदान अत्यन्त महत्त्वपूर्ण रहल अछि। स्वतंत्रता सेनानी पेंशन आ पद सभक त्याग आ सिरागू घरमे देवी-देवता सभक चित्रक संग बापूक चित्र राखब हिनक विरल वैशिष्ट्य छल। मनसा-वाचा-कर्मणा ई बापूक भक्त छलाह तेँ सुप्रसिद्ध महाकवि चन्द्रभानु सिंह हिनका 'गांधीक सुच्चा चेला' कहने छलाह। सम्पूर्ण परोपट्टामे हिनकर मान छल आ सभकेँ हिनकापर अटूट विश्वास सेहो छल। परोपट्टा भरिमे अपना समयक एहन व्यक्तित्व दोसर नहि।

आइ. आइ. टी., मुम्बई आ नेशनल साल्ट सत्याग्रह मेमोरियल, दाण्डी द्वारा सैफी विलामे 80 नोन सत्याग्रही सभक आदम कद कांस्य प्रतिमा लगाओल गेल जाहिमे बिहारक एकमात्र लाल कारो बाबूक कांस्य प्रतिमा (replica) सेहो गर्वसँ ठाढ़ अछि।

मैथिल गांधीक रूपमे परोपट्टा भरिमे प्रसिद्ध कारो बाबूक महाप्रयाण 18 अगस्त 1990कँ भेल छल।

प्रखण्ड मुख्यालय सतीघाटमे समारोहपूर्वक हिनक प्रतिमाक स्थापना भेल। हाड़ गलाबैवला भयंकर शीतलहरीक बावजूद जुटल भारी भीड़क समक्ष कुशेश्वर स्थान(प.) प्रखण्ड मुख्यालय, सतीघाटमे दिनांक 11 जनवरी 2018कँ कारो बाबूक संगमरमरक प्रतिमाक समारोह पूर्वक अनावरण तत्कालीन मान. सांसद रामचन्द्र पासवानजी आ मान. विधायक शशि भूषण हजारीजी कयलनि।

गांधीजीक धवल चरित्रपर त्रिपुरी कांग्रेसमे नेताजी सुभाषचंद्र बोस संग भेल अन्याय, क्रांतिकारी सभक निन्दा आ भगत सिंहक फाँसी, मुस्लिम तुष्टीकरण आ देशक विभाजन सन् विषयकँ बहुत गोटे कलंकक कथा मानैत छथि मुदा लगभग अस्सी वर्षक आयु प्राप्त केनिहार मैथिल गांधी कारो बाबूपर कहियो कोनो आँगुर नहि उठल। पूर्ण सामाजिक जीवनमे रहितो कहियो कोनो दाग नहि लागल। आमलोक हुनका हृदयसँ सम्मान करैत रहल। जीवन भरि अजातशत्रु तऽ छलाहे देहावसानक बादो ओ अजातशत्रु बनल रहलाह। समाजक सेवामे सर्वदा रत, दोसराक सेवामे हरदम व्यस्त। सभदिन सर्वप्रिय बनल रहलाह। पंचैतीमे नीर-क्षीर विवेकी रहबाक कारणेँ कहियो कोनो विवाद नहि भेल। दुनू पक्ष हिनक सम्मान करैत छल। आजन्म कारो ऋषि रूपमे आदर भेटलनि जे हिनक आदर्श आ गुरु बापूकँ सेहो नहि भेटि सकल। गुरु-शिष्यमे ई अन्तर आह्लादकारी अछि।

बहुत कम गोटेकँ ज्ञात होयत जे मोहनदास करमचंद गांधीकँ महात्मा गांधी बनबैमे मिथिलाक अपूर्व योगदान अछि। चम्पारण सत्याग्रहक सफल नेतृत्वकर्त्ता धरणीधर प्रसाद समस्तीपुर जिलाक विद्यापति नगरक आलमपुर सिमरीक वासी छलाह। चम्पारण सत्याग्रहसँ बापूक सूर्य भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन केर नभपर उगल जे कालान्तरमे समस्त भारतवर्षकँ ज्योतित कयलक। एहिना प्राय: लोककँ यैह ज्ञात छैक जे गांधीकँ महात्माक उपाधि विश्वकवि रवीन्द्रनाथ टैगोर देलनि। मान्यता यैह अछि जे रवीन्द्रनाथ टैगोर 12 अप्रैल 1919कँ लिखल अपन पत्रमे बापूकँ माइ डियर महात्मा संबोधित कयने छलाह। ई पत्र 16 अप्रैल 1919कँ इंडिया डेली नामक अंग्रेजी अखबारमे प्रकाशित भेल छल। ई सत्य नहि अछि। 24 अप्रैल 1917 ई.क मिथिला मिहिरक अंकमे सम्पादक पं. योगानन्द कुमर मिथिला मिहिरक अपन सम्पादकीयमे बापूकँ महात्मा कहने छलाह। गांधीकँ महात्मा बनेबाक मिथिलाक एहि अवदानक जखन समुचित मूल्यांकन नहि भेल तखन हुनक सुच्चा शिष्य सेहो इतिहासमे ओ स्थान नहि पाबि सकलाह जेकर ओ वास्तविक अधिकारी छलाह।

तथापि जन स्मृतिमे हुनक स्थान नि:सन्देह अत्युच्च अछि। एहि परिवारपर अखनो कारो ऋषिक आशीर्वाद अछि।

परिवारमे अग्रज रमापति चौधरी साक्षात् ऋषि छलाह। हुनक अनेक रचना जीवन-दर्शनक विभिन्न आयाम सभक दिग्दर्शन करबैत अछि। अनुज भजलेराम चौधरी मूक-बधिर रहितो हुनक आन्तरिक प्रतिभा जाग्रत छल। कारो बाबूक परिवार एक ऋषि परिवार अछि। मिथिलामे ऋषि परम्पराक प्राय: ई अंतिम परिवार अछि। वर्तमान युगक विडम्बनासँ दूर, आधुनिकताक अंधसुरंगमे एकल परिवार दिशि भागि रहल दौड़सँ परे, येन-केन-प्रकारेण धनार्जनक प्रतियोगितासँ असम्पृक्त ई परिवार अखनो निष्ठापूर्वक जीवन-दर्शनक आदर्श अछि। अपन सरलता, सहजता, विद्वत्ता, ईमानदारी, निष्ठा, व्यवहारकुशलता आ संस्कार संरक्षणमे अग्रणी! अखनो सभ गोटे संग छथि। ई सब ओहि कारो ऋषिक आशीर्वाद थिक। आइ सहज मानवीय गुण सभक जे लोप भऽ रहल अछि एहि सभसँ ई विरल परिवार अखनो बाँचल अछि। एहि शानदार परम्पराक निर्वहनमे परिवारक स्त्रीगण सभक सेहो महत्त्वपूर्ण योगदान अछि। हिनका सभक त्याग आ संतोषक भित्तिपर परिवारक परम्परा अवलम्बित अछि। श्रीमती रेणु चौधरी (पति श्री श्यामानन्द चौधरी) अपन एक किडनी भायकेँ दान करैत भ्रातृद्वितीयाक मंत्र आ उद्देश्यकेँ साकार कयलनि। जँ किनको विदेह सभक मर्म जानबाक इच्छा हो, मैथिल संस्कार सभक व्यवहारिक रूप देखबाक उत्कंठा हो, विद्वत्ताक परम्परामे अवगाहन केर कामना हो, कर्मनिष्ठ ईमानदारीक फलाफल देखबाक जिज्ञासा हो, आत्माक सौन्दर्य केर दर्शनक अरमान हो, त्याग आ संतोषक उच्चताक परिचितिक अभीप्सा हो, पुरातनतामे आधुनिकताक समायोजन अभीष्ट हो वा सहज मानवीय गुण सभक एकत्रित प्रभाओ केर सुन्दर समावेशी संस्कृतिक साक्षात्कारक सपना हो तखन एक बेर एहि परिवारमे अवश्य आउ। अपनेकेँ समस्त प्रश्नक उत्तर भेटि जाएत। नैसर्गिक रूपसँ जीवनक मर्म आ आनन्दक स्त्रोतसँ साक्षात्कार अवश्य होयत। ई सब ओहि ऋषि परम्पराक प्रतिफल थिक।

[गिरिवरधारी चौधरी जन्म शती समारोह स्मारिका, 2011, प्रधान सम्पा.- श्री श्यामानन्द चौधरी, प्रकाशक- हरिगोविन्द स्मारक पुस्तकालय, बेरिमे प्रकाशित आलेख केर परिमर्जित रूप]

मैथिलीक अद्भुत अभियानी जटाशंकर दास

मिथिला-मैथिलीक विकास लेल आजन्म समर्पित किछु अभियानी जे कालक कपालपर अपन शिलालेखीय उपस्थिति अंकित करओलनि ओहि समूहमे अग्रिम पंक्तिमे ठाढ़ भेटैत छथि अमर अभियानी जटाशंकर बाबू। भारतीय स्वतंत्रताक संग्राममे अपन कैशोर्य आ जुआनीक समिधासँ आहुति दैत दृष्टिगोचर होइत छथि अद्भुत स्वतंत्रता सेनानी जटा बाबू। आजन्म मिथिला-मैथिलीक कल्याण लेल तत्पर नजर अबैत छथि जटाशंकर दास। मधुबनी जिलाक सरहद गाममे माता देवकी देवी आ पिता मनमोहन दासक घरमे 3.3.1923कँ एक मेधावी बालक केर जन्म भेल। छात्र जीवनेसँ हिनकर फराक वैशिष्ट्य अभरि रहल छल। भारतवर्ष तखन अंग्रेज सभक चाँगुरमे छल। स्वतंत्रताक अलख जागि गेल छल। मिथिला सहित सम्पूर्ण भारतवर्ष दलमलित भेल छल। पंडौल उच्च विद्यालयक छात्र जटाशंकर सेहो सत्याग्रह, जुलूस, प्रदर्शन आ स्वतंत्रता आन्दोलनमे सक्रिय छलाह। यैह सक्रियता हुनका पंडौल स्कूल यूनियन केर सचिव रूपमे निर्वाचित करओलक। ई सक्रियता तत्कालीन अंग्रेज सभकँ नहि अरघल। शिकायत भेल आ तत्कालीन तिरहुत प्रमंडलायुक्त मि. R E Swanzy, ICS (मुजफ्फरपुरमे कार्यकाल 2.5.1938सँ किछु व्यतिक्रम संग 28.4.1942 धरि) 1940मे बालक जटाशंकर, पिता मनमोहन दास आ पंडौल उच्च विद्यालयक प्रधानाध्यापककँ सम्मन पठा बजओने छलाह। सभकँ चेतौनी देल गेल जे जटाशंकर दास स्वतंत्रताक आन्दोलनमे नहि पड़थि अन्यथा निष्कासन एवं कठोर दंड देल जाएत। एहि चेतौनीसँ आगिमे जेना घी पड़ि गेल हो। बालक जटाशंकर स्वैंजी साहेबक समक्षे स्वतंत्रताक नारा शुरू कऽ देलनि। कहुना शान्त कएल गेलाह। व्यवधानक बादो 1941मे मैट्रिक उत्तीर्ण कयलनि। परिवारक आर्थिक स्थिति सुदृढ नहि छल तखन खेत भरना राखि आइ. कॉममे सीएम कॉलेज, दरभंगामे नाम लिखाओल गेल। परिवारक आर्थिक

परेशानीपर भारत देशक गुलामी भारी पड़ि गेल। एहि ठाम सेहो स्वतंत्रता संग्राममे सक्रिय रहलाह। आयुक्त केर अदालत देखिए नेने छलाह। आब कलक्टर केर डर समाप्त भऽ गेल छलनि। पिकेटिंग, धरना-प्रदर्शन, जुलूस, भाषण, जनजागरण कार्यक्रम सभमे नव जोशसँ भाग लैत छलाह। एहि सक्रियताक कारणेँ फेरसँ अंग्रेज सभक कोपभाजन भेलाह। रहबाक लेल कमलेश्वरी चरण सिन्हाक सदाशयतासँ संभव भेल नेशनल स्कूलक हिनकर कमरापर पुलिस छापा मारलक। सरहद गाममे हिनक घरपर सेहो राति भरि तलाशी भेल। पुलिसकेँ सन्देह छल जे जटाशंकर दास स्वतंत्रताक लेल संघर्षरत अग्निपुत्र सभक संसर्गमे छथि। छापामारी-तलाशीमे कोनो अनुचित सामग्री नहि भेटल। पुलिसिया दबाओपर जटा बाबू भूमिगत भेलाह आ यत्र-तत्र घुमि-घुमि स्वतंत्रताक अलख जगबैत रहलाह। फेर 22 जनवरी 1944केँ भेल एक छापामारीमे गिरफ्तार भेलाह। दरभंगा कैम्प कारा आ फेर भागलपुर कारामे बन्द रहलाह। संयोग देखल जाय जे भागलपुरेसँ बी कॉम कयलनि। एतहु सक्रिय छलाह आ छात्रसंघ केर सचिव निर्वाचित भेलाह। स्वतंत्रता संग्राममे सक्रियता एवं पुलिससँ नुक्का-चोरी खेल कारणेँ हिनक पढ़ौनी शुरूएसँ प्रभावित होइत रहल छल। तथापि एहनो स्थितिमे पढ़ाई केर महत्त्व जानि कहियो एकर पूर्ण त्याग नहि कयलनि। बचपनसँ मेधावी छलाह तेँ स्वतंत्रताक आन्दोलनमे रहितो ओ पढ़ाईमे सेहो सफल भेलाह। 1949मे इलाहाबाद विश्वविद्यालयसँ एम कॉम कयलनि। एतहु छात्र राजनीतिमे सक्रिय रहलाह। इहो सुखद संयोग अछि जे जाहि इलाहाबाद विश्वविद्यालय केर छात्र मंत्रिमंडलमे नारायण दत्त तिवारी मुख्यमंत्री छलाह ओहिमे जटा बाबू आर्थिक मंत्री केर दायित्वक निर्वहन कयलनि। स्वनामधन्य डॉ. अमरनाथ झाक आशीर्वाद आ प्रशंसा हिनका भेटल छल। खर्च लेल दरभंगा राज परिवारक इलाहाबाद रहनिहार सदस्य सभक निजी ट्यूटर केर काज सेहो कयलनि।

जटाशंकर दासक घनिष्ठ संबंध सुप्रसिद्ध स्वतंत्रतासेनानी सूरज नारायण सिंहसँ छल। हुनक ई सक्रिय सहयोगी वा दहिना हाथ रूपमे जानल जाइत छलाह। डॉ. राजेन्द्र प्रसादजी आओर जटा बाबूक एक संवाद ओहि समय बेस चर्चित भेल छल। भेल छल जे एक सभामे राजेन्द्र बाबू चरखाक चर्च करैत एकरा जीवन-यापन लेल उपयुक्त कहलनि। बिनु तर्क-वितर्क कयने जटा बाबू किछु नहि मानैत छलाह। ओ पुछलनि जे हम एक घंटा प्रतिदिन ट्यूशन कऽ मास भरिमे 5/= कमाइत छी आ एक घंटा प्रतिदिन चरखा चलओलासँ मासमे मात्र 1/= अर्जित कएल जा सकैछ। तखन हम ई काज किएक करी?

एहिपर राजेन्द्र बाबू समझएलनि जे जीवन केर मूल उद्देश्य मात्र अर्थोपार्जन नहि भऽ सकैछ। सभटा काज अर्थ उपार्जन लेल नहि होइछ। सामाजिक दायित्व केर निर्वहन सेहो आवश्यक अछि आ चरखा समाजक गरीब सभसँ जुड़बाक लेल उपयुक्त अछि। एहिमे जाति-धर्मक कोनो बंधन नहि अछि। सब एक समान चरखासेवी। चरखासँ आमदनी कम भऽ सकैछ मुदा ई एकसँ दोसराकेँ जोड़बाक लेल एक सशक्त माध्यम अछि। सभक सहभागितासँ ई काज होइछ। ट्यूशन वा आन कोनो काज करी मुदा एक घंटा मात्र अपन समाजकेँ, अपन राष्ट्रकेँ आओर एहि चरखाकेँ अवश्य दी। गरीबक जीवनचक्र अछि चरखा।

राजेन्द्र बाबूक भाव जानि जटाबाबू विह्वल भेलाह। हुनक भावकेँ ऋषिवाणी मानि जीवन भरि समाजसँ जुड़ल रहलाह आ गरीब सभक उत्थान आ कल्याणक लेल समर्पित रहलाह।

शुरूमे एम कॉम केर बाद 1952 धरि जालान केर उद्योगमे लेखा कार्य देखलनि फेर एहि वर्षसँ स्मॉल स्केल इंडस्ट्री विभागमे बिहार सरकारक सेवामे योगदान देलनि। बिहार लघु उद्योग निगममे प्रबंध निदेशक, बिहार राज्य हस्तकरघा एवं हस्त शिल्प निगममे संयुक्त निदेशक, बिहार राज्य हस्तकरघा बुनकर संघ (अतिरिक्त प्रभार) केर प्रबंध निदेशक; मुख्य कार्यपालक पदाधिकारी, बिहार राज्य खादी ग्रामोद्योग बोर्ड, उद्योग निदेशालयमे ओएसडी आदि पद सभकेँ सुशोभित कयलनि। संयुक्त बिहारमे आदित्यपुर (जमशेदपुर)मे जे औद्योगिक क्षेत्र विकसित भेल एकर केन्द्रविन्दु जटेबाबू छलाह। ओहि ठामक हुनकर स्वप्न साकार भेल मुदा मिथिलाक विकासक स्वप्न पूर्ण साकार नहि भेल। लघु उद्योग, हस्तशिल्प सभकेँ प्रोत्साहन लेल खूब परिश्रम कयलनि। प्रशिक्षण दिया अनेक युवक-युवती सभक भविष्य सँवारि देलनि। मिथिला चित्रकलापर हिनकर बहुत ध्यान रहैत छल। कलाकार सभकेँ कोना नीकसँ नीक प्रशिक्षण हो, तैयार सामान सभक प्रदर्शनी कोना आयोजित हो जे कलाकार सभक सामग्रीकेँ उपयुक्त बाजार भेटि सकए एहि लेल सदिखन साकांक्ष रहैत छलाह। मिथिला पेंटिंग केर विकासक विन्दुपर सरकारी आ निजी दुनू स्तरपर हिनक अवदान अत्यन्त महत्त्वपूर्ण रहल अछि। कश्यपजी भारती विकास मंच, बरहेताक चेयरमैन हिनका ओहिना नहि बनओने छलाह। राजेन्द्र बाबूक बात कहियो नहि बिसरलाह जटाशंकर दास। यैह भाव हिनका समाजक सब वर्गसँ जोड़ने रहल।

जीवनक प्रति यैह दृष्टिकोण हिनक सेवाक मूलाधार रहल जे हिनका लोकप्रिय बनओलक। स्वतंत्रता संग्रामसँ जे देशसेवाक अभिनव ज्योति मानसमे

प्रस्फुटित भेल छल ओ आजादीक बाद मिथिला-मैथिलीक लेल सेवाभावी रूप धारण कऽ लेलक। मिथिला-मैथिलीक सर्वांगीण विकास लेल अनेक महत्त्वपूर्ण आलेख आर्यावर्त, इंडियन नेशन, सर्चलाइट, प्रदीप, टाइम्स ऑफ इंडिया, हिन्दुस्तान टाइम्स एवं अन्य लब्धप्रतिष्ठ पत्र-पत्रिकादिमे लिखलनि। अधिकांश आलेख सम्पादकीय पृष्ठपर संगे प्रकाशित भेल छल। हिनकर सारस्वत अवदान सेहो महत्त्वपूर्ण रहल छल। एहि क्रममे अपन भाउज अन्नपूर्णा देवी (पति गौरीशंकर दास)क बरखीक भोजमे कटौती करैत हुनक भुतिआएल गीत सभक संग्रह प्रकाशित कऽ हुनका अमर करबाक कथा अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अछि। रमानाथ झा व्याख्यानमाला अन्तर्गत लोकनायक जयप्रकाश नारायणपर देल गेल व्याख्यान मैथिली अकादमी प्रकाशित कयलक। मैथिल दधीचि बाबू भोलालाल दासपर जटाशंकर दासक विनिबंध साहित्य अकादेमी, नयी दिल्ली छापलक। महान् उपन्यासकार शरतचन्द्रक पंडित मोशाय केर जटा बाबू द्वारा मैथिलीमे अनूदित पोथी 'की यौ पंडितजी' अप्रकाशिते रहि गेल। जटा बाबूक सन्तति विशेष रूपसँ साहित्यिक-सांस्कृतिक व्यक्तित्व श्री आशीष नीरजजीसँ हमर विनम्र आग्रह जे हुनक सभटा आलेख एवं प्रकाशित-अप्रकाशित रचना सभकेँ ग्रंथावली रूपमे अवश्य प्रकाशित करथि। एहि सारस्वत यज्ञमे हमसब अवश्य सहयोग करब।

जटाशंकर दासक मूल स्वभाव एक क्रान्तिकारीक स्वभाव छल। परिवर्तनकामी जटा बाबू यथास्थितिवाद केर मनसा-वाचा-कर्मणा विरोधी छलाह। स्थिति सदिखन सुन्दरसँ सुन्दरतर आ सुन्दरतम हो एहन परिवर्तनकामी छलाह। अनैतिक आचरण वा अनाचारपर हुनक स्वाभाविक आक्रोश जीवन केर प्रत्येक क्षेत्रमे परिलक्षित भेल अछि। सरकारी सेवामे रहैत ओ लोकनायक जयप्रकाश नीत आन्दोलनकेँ अपन समर्थन देलनि। लोकनायक जयप्रकाश केर आह्वानपर सरकारी सेवासँ त्यागपत्र समर्पित कयलनि। लोकनायक जयप्रकाशजी हिनकर पारिवारिक स्थितिसँ अवगत छलाह तेँ हिनक त्यागपत्र अग्रसारित नहि भेल। आपात् कालमे हिनकर सरकार विरोधी तेवरक कारणेँ हिनका अनिवार्य सेवा निवृत्तिक निर्णय भेल। धन्य कही तत्कालीन मान. शिक्षामंत्री विद्याकर कविकेँ जे मंत्रिमंडल केर बैसारमे अड़ि गेलाह जे जँ हिनका बर्खास्त करब तखन हमरो कयल जाय। एहन स्थितिमे हिनक सेवा बाँचल। तथापि एहि कारणेँ हुनका सेवाविस्तार नहि देल गेल।

सरकारी सेवासँ मुक्तिक बाद जटा बाबू पूर्णकालिक मैथिली अभियानी बनि गेलाह। हिनक वैशिष्ट्य छल जे ओ मोनसँ मैथिलीक लेल समर्पित छलाह।

अपन घर आ बाहर दुनू ठाम ओ मैथिल संस्कार आ मैथिली भाषाक प्रबल समर्थक छलाह। अन्तर्मनसँ सुच्चा मैथिल! कोनो प्रच्छन्न भाव नहि। ई नहि जे मैथिली मंचपर मैथिलीक पाग पहिरी आ मंचसँ उतरि हिन्दी-अंग्रेजी झारी। हिन्दी-अंग्रेजीपर पूर्ण अधिकार रहितो ओ मैथिलीक पुरजोर समर्थक छलाह। मिथिला राज्य स्थापित हो ई हुनक मनोकामना छल। मिथिला-मैथिलीक लेल कोनो काज करबा लेल सदिखन तत्पर, कतहु जयबाक लेल हरदम तैयार। ओ चेतना समितिक संस्थापक सदस्यमेसँ एक छलाह। चेतना समितिक 58-59, 60-61, 61-62 आ 63-64मे सचिव निर्वाचित भेलाह। ओहि समय क्रमश: सर्वश्री दिवाकर झा, बाबू चन्द्रधारी सिंह आ श्रीकान्त विद्यालंकार सन मनीषी चेतना समितिक अध्यक्ष पदकेँ सुशोभित कयलनि। वर्ष 65-66 आ 77-79मे जटाशंकरजी उपाध्यक्ष निर्वाचित भेलाह। वर्ष 77-79मे तखन अध्यक्ष रूपमे दिवाकर बाबू छलाह। फेर वर्ष 86-88 आ 91-92मे जटाशंकर दास चेतना समितिक सचिव निर्वाचित भेलाह। एहि समय क्रमश: श्री विजय कुमार मिश्रजी आ पं. जयदेव मिश्र अध्यक्ष पदकेँ अलंकृत करैत छलाह। चेतना समितिक संग अनेक साहित्यिक-सांस्कृतिक आ सामाजिक संस्था सभसँ जुड़ल छलाह। अरिपन, मैथिली सेवा संस्थान, बसावन सिंह स्मृति संस्थान आदि संस्थामे सक्रिय छलाह। भारतीय विद्या भवन केर पटना शाखाक कुलसचिव भेलाह। बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् एवं मैथिली अकादमीक सम्मानित सदस्य छलाह। बांग्लादेशक अभ्युदय केर क्रममे बनल संस्था, जाहिमे तत्कालीन मान. मुख्यमंत्री भोला पासवान शास्त्री, तीन पूर्व मान. मुख्यमंत्री (कर्पूरी ठाकुरजी, दारोगा प्रसाद रायजी आ हरिहर सिंहजी) आ अनेक मान मंत्री-विधायकगण सदस्य छलाह। एहि बिहार-बांग्लादेश सहायता समितिक महामंत्री बनाओल गेल छलाह जटाशंकर दास। एहि अति महत्त्वपूर्ण संस्थाक संयोजक सूरज नारायण सिंह छलाह। जयकान्त मिश्रजी (आर्यावर्त), ब्रजनन्दन आजादजी (इंडियन नेशन), सुभाषचन्द्र सरकारजी (सर्चलाइट) सन यशस्वी सम्पादकगण एहि समितिक सदस्य छलाह। साँचे जटाशंकरजीक बहुआयामी व्यक्तित्व स्वयंमे एक संस्थाक रूप धयने छल। ई सरिपहुँ आश्चर्यजनक लगैछ जे एक आदमी कोना एतेक लोक एवं एतेक संस्था सभसँ जुड़ल रहि सकैछ। समय केर महत्त्व जनैत छलाह आ हिनक समय प्रबंधन प्रशंसनीय छल। छोटसँ छोट आ पैघसँ पैघ लोककेँ ओ अपन मधुर व्यवहारसँ एकदम अपन बना लैत छलाह। ई विशिष्ट गुण हुनका आजन्म अजातशत्रु बनाकेँ राखलक। दलीय राजनीतिमे सेहो सक्रिय भेलाह। जनता दलमे विघटन केर बाद बनल समाजवादी पार्टी (चन्द्रशेखर)क प्रान्तीय उपाध्यक्ष रहल छलाह।

पटनामे अपना समय केर एक प्रतिष्ठित व्यक्तित्व रूपमे समादृत छलाह जटा बाबू। पटनासँ बाहर नहि जएबाक इच्छाक कारणेँ पूर्व मान. रेलमंत्री ललित बाबू द्वारा प्रेषित तार, जाहिमे रेलवे बोर्डक सदस्य बनबाक लेल स्वीकृति देबाक अनुरोध छल, केँ नम्रतापूर्वक अस्वीकार कयने छलाह। एकर बादो एहन स्थिति बनल जे गामक धरती हिनका एक बेर फेरसँ बजा लेलक।

हिनकर जीवनपर बेनीपट्टीक सिद्ध सन्त रासबिहारी दासक पुत्री आओर निपुण कथावाचक, अनुपम व्याख्याता एवं महान् सन्त राधागोविन्द दासक बहिन (अप्रतिम कथावाचिका बहिनजी)क अत्यधिक प्रभाव छल। हिनके सत्प्रेरणासँ जटा बाबू 1970सँ पूर्व माछ-माँसु त्यागि सात्विक जीवन जीबए लगलाह। 'सादा जीवन उच्च विचार' आओर 'साधारणमे असाधारण' केर प्रतिमूर्त्ति छलाह।

अनेक सम्मानसँ अलंकृत भेलाह बाबू जटाशंकर दास जाहिमे भावाञ्जलिमे सुप्रसिद्ध सारस्वत व्यक्तित्व श्री भीमनाथ झा विरचित अभिनन्दन एवं अखिल भारतीय मिथिला संघ(1987), कर्ण कायस्थ महासभा (1990), चेतना समिति सम्मान (1994), अन्तरराष्ट्रीय मैथिली संघ, जनकपुर (1997) आ मरणोपरांत केकेएम द्वारा देल गेल कर्णश्री (बंगलुरु, 2017-18) आदि सम्मान प्रमुख अछि।

एक अद्भुत बहु आयामी व्यक्तित्व, एक बहुमुखी मेधाक स्वामी, समाजकेँ अपन अनुपम प्रभासँ पथ आलोकित कएनिहार एहि मेधासूर्यक अवसान दि. 4.8. 2006केँ भऽ गेल। एहि विरल व्यक्तित्वक पावन स्मृतिमे प्रणाम निवेदित करैत अपन लेखनीकेँ विराम दैत छी। नमन अशेष हे मैथिली अभियानी नरश्रेष्ठ!

[युगपुरुष जटाशंकर दास जन्म शताब्दी समारोह स्मारिका, प्रबंध सम्पा.- प्रो. महेन्द्र लाल कर्ण, प्रका. - चित्रगुप्त सामाजिक संस्थान, पटना आ लोकहित रंगपीठ सेवा संस्थान, मधुबनी,2023]

निष्काम कर्मयोगी प्रो. अखिलेश दास

एहि संसारमे स्वतंत्र सोच, दृष्टिकोण, मान्यता, मेधा आदि आधारपर मनुक्खक वर्गीकरण अनेक प्रकारसँ कएल जा सकैछ। आत्मश्लाघाक एहि युगमे सब अपनेमे व्यस्त अछि। अपन घर परिवारक छोटसँ छोट कार्यक्रम जेना किनको आगमन वा प्रस्थान, पारिवारिक जुटान, जन्म दिन, वर्षगाँठ वा अन्य महत्त्वपूर्ण दिवसक आयोजन, रिक्शासँ लऽकेँ हवाईजहाजसँ कएल यात्रा, विभिन्न छोटसँ छोट आ पैघसँ पैघ समारोह संबंधित समाद सामाजिक माध्यमपर अपलोड करबाक एहि आत्मप्रशंसाक हुलि-मालिमे आइ ई कल्पनो करब कठिन भऽ गेल अछि जे समाजमे एहनो मौन सेवी छथि जे बिनु कोनो तामझाम, प्रशंसा आ यशक अपेक्षा कएने मूक तपस्वी जकाँ निर्विकार भावसँ निःस्वार्थ जनसेवामे लागल रहैत छथि। एकर कोनो प्रचार नहि करैत छथि। एहने एक सरल स्वभावक स्वामी, निश्छल हृदय, समष्टिक लेल अपन व्यष्टिक सर्वस्व होम करबाक लेल उद्धत विरल व्यक्तित्वक नाम छल हमरा सभक पाहुन प्रो. अखिलेश कुमार दास। सरिपहुँ साधारणमे असाधारण व्यक्तित्व!

दि. 8 फरवरी 1987केँ हमर बहिन चि. अर्चनासँ हुनक बियाह भेल रहए। आइ हुनक अवसानोत्तर हुनकापर किछु लिखैत काल बहुत रास खट-मधुर चित्र सप्तवर्णी फेन जकाँ स्मृतिपटलपर उतरि रहल अछि। सुलतानपुरसँ पैदल बेरि चौक जाएब हो वा कुशेश्वरस्थान जा बाबाक दर्शन-पूजन हो, निरभ्र इजोरिया रातिमे नावपर झिल्लरिक आनंदक दृश्य हो; गाम, बलौर, विराटनगर, दरभंगा वा पटनाक कोनो पारिवारिक उत्सव वा जुटान हो सभ ठाम हुनक सहज सरल उपस्थिति मुदित करैत छल। कतबो दीर्घ साक्षात्कार रहल हो ओ कहियो अपना विषयमे किछु नहि कहथि। भारत-नेपाल संबंध, दुनू महान् देशक राजनीति, सामाजिक-सांस्कृतिक-

साहित्यिक विशिष्टता, वामपंथ-दक्षिणपंथ, रीति-रेवाज, अध्ययन-अध्यापन आदि विषयपर चर्चा होइत छल। सोच आ दृष्टिकोणसँ वामपंथी रहितो सहज मानवीय गुण केर सम्मान करब हुनकर स्वभावमे समाहित छल। सहानुभूति, दया, करुणा, परोपकार एवं धार्मिक भावनासँ परिपूर्ण एक सम्वेदनशील बहुपठित मानव। महाकवि कालिदासक मैथिलत्वपर आधारित शोधाश्रित हमर ग्रंथ 'महाकविक महाप्रयाण'मे जे पूर्वी हिमालयमे नेपालक उत्तरी भागक इलाम, पाँचथर आ अंतिम जिला तापलेजुंग, पाथीभारा एवं देवी मन्दिर सभक उल्लेख आएल अछि ओकर सम्पूर्ण श्रेय अखिलेशजीकेँ छनि। वैह अपन अनुभवसँ हमरा सम्बलित कएने छलाह। एहि दुर्गम क्षेत्रक हुनकर भ्रमण केहन दुष्कर रहल होएत ई सहज अनुमेय अछि। वामपंथी रहितो धार्मिक होएब हिनक अनुपम चारित्रिक विशालता छल।

हमरा सभमे कतेक बेर वामपंथ आ दक्षिणपंथपर गूढ़ गम्भीर गमर्थन होइत छल। ने हिनक अद्भुत तर्क-तरकश रिक्त होइत छल आ ने हमर प्रज्ञा पराजय मानैत रहए। एकर सुखद पक्ष प्राय: यैह रहैत छल जे सुप्रसिद्ध वामपंथी नेता भोगेन्द्र झाजीक उल्लेख होएते चर्चा थमि जाइत छल। एकर एकमात्र कारण रहए जे हम दुनू गोटे भोगेन्द्रजीक प्रति अतिशय आदरभाव रखैत रही। एहन चर्चा सभक बौद्धिक स्तर अत्युच्च रहैत छल जे हिनक बौद्धिक क्षमताक सगरमाथी स्वरूपक दिग्दर्शन करबैत छल। हिनक तर्कशक्ति विलक्षण रहए। आमजनक लेल उठाओल गेल विन्दु सभसँ हिनक समाजशास्त्रीय सूक्ष्म दृष्टि सभक जे संकेत भेटैत छल ओ साँचे अनुपम छल। एहन समस्त वार्तालापसँ एक चीज तऽ स्वच्छ दर्पण जकाँ चमकैत छल जे हिनक सम्वेदनशील मोनमे आमजन केर कष्ट, बेवसी, लाचारी, घुटन, संत्रास, अभाव आ सीमा केर अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान रहैत छल। ओ मौन साधक जकाँ एहि वंचित वर्गक कल्याण लेल जी-जानसँ लागल छलाह। मुदा एक बात जे हम लक्ष्य कएने छलहुँ जे अन्तसमे तूफान छल मुदा अधरपर निश्छल मुस्कान रहए। भीतरमे केहनो विपत्ति हो चेहरा सदैव अम्लान रहए। ओ यथार्थमे की सब करैत छलाह एकर भान किनको नहि होइत छल। हमसब मात्र एतेक जनैत रही जे अर्थशास्त्रक निष्णात विद्वान् छथि। दिनांक 28 नवम्बर 1984सँ दमक मल्टीपल कैम्पसमे अर्थशास्त्र केर प्राध्यापक छलाह। अर्थशास्त्र शिक्षण कार्यमे लागल रहलाक कारणेँ स्वाभाविक रूपसँ नेपालक आर्थिक स्थितिक हुनका पूर्ण ज्ञान छल आ ओ सदिखन आमजन केर आर्थिक उन्नयन लेल सचेष्ट रहैत छलाह। एहिना समाज उन्नयनमे सेहो सक्रिय छलाह। एहि विषयक दुनू संगठनसँ जुड़ल छलाह।

निर्धनता निवारण कार्यक्रम बोर्डक सदस्य छलाह। बुद्धिजीवी संगठन केर पूर्व प्रमुख रहल छलाह। एहिना शिक्षा एवं मानव संसाधन विकास केन्द्रक सम्मानित सदस्य रहल छलाह। नेपाल राष्ट्र प्राध्यापक संघक प्रमुख छलाह। आश्चर्यक गप्प ई रहए जे हमरा सभकेँ अपन एहि महत्त्वपूर्ण उपलब्धि सभक विषयमे कहियो किछु नहि कहलनि। जँ साँच कही तऽ एहि सभक विषयमे हमसब दिनांक 16 नवम्बर 2022केँ भेल हिनक महाप्रयाणक बादे किछु जानि सकलहुँ। आत्मप्रशंसासँ मीलों दूर रहएवला एहन व्यक्तित्व अत्यन्त विरल! एहिना पारिवारिक जीवनमे आएल कोनो उथल-पुथल, बिड़रो-बिहारि, दुख-दर्द, आर्थिक वा मानसिक कष्ट सभक कोनो रेख हिनक माथपर कहियो नहि अभरैत छल। तीनू संतानकेँ नीकसँ पढ़ा-लिखा सुयोग्य बना देलनि। भगिनी चि. आकृतिक नीक घरमे बियाह कयलनि। ओह! ओहि समयक हिनक खुशी आ मुहपर अभरल मुस्की अखनो मोन पड़ैत अछि तऽ मोन विभोर भऽ जाइत अछि। भागिन चि. अंकित आ भगिनी चि. श्रुति सुयोग्य एवं आत्मनिर्भर अछि। पारिवारिक जीवनमे जे काज बाँचल अछि ओ सब सेहो हुनके आशीर्वादसँ नीकसँ सम्पन्न होयत से विश्वास अछि। हमसब एहि लेल साकांक्ष छी। ओना ओ पारिवारिक जीवनमे आएल कोनो समस्या सभक समाधान स्वयं करैत छलाह। की मजाल जे सामाजिक वा पारिवारिक तनाओ सभक कोनो असरि हिनक ठोरपर हरदम विराजमान बालसुलभ मुस्कीमे केओ आन अकानि सकए। ई सब अद्‌भुत गुण हुनका विशिष्ट बनबैत छल। साधारण मानवमे ई संभव नहि। गीतामे भगवान् कृष्ण स्थितप्रज्ञ केर जे लक्षण कहैत छथि—

दुखेष्वनुद्विग्नमना सुखेषु विगतस्पृहः।
वीतरागभयक्रोधः स्थितधीर्मुनिरुच्यते॥2/5

विहाय कामान्यः सर्वोन्पुमांश्चरति निःस्पृहः।
निर्ममो निरहंकारः स शान्तिमधिगच्छति॥2/20

ओ सब हिनक व्यक्तित्वमे समाहित रहए। एक सुच्चा स्थितप्रज्ञ! साबुनक फेन जकाँ स्मृतिपटलपर अनेक चित्र अभरि रहल अछि। एहने एकटा चित्र 24 अप्रैल 2019केँ अभरल छल। पू. पिता जगन्नाथ चौधरीक महाप्रयाण दिवसपर हमसब एकटा छोटछीन सारस्वत समारोह अपन गाम सुलतानपुरमे करैत छी। ओहि वर्ष

पूज्य पिताक पाँचम पुण्यतिथि छल। हुनक प्रतिमाक अनावरण एवं हमर पोथी 'सुलतानपुर सौरभ'क लोकार्पण कार्यक्रम एहि सद्गृहस्थ सन्त जगन्नाथ चौधरी पुण्य-पर्व समारोहमे निर्धारित छल। बहुत लोक आएल छलथि। अखिलेशजी सेहो विशेष रूपसँ एहि कार्यक्रम लेल आएल छलाह। अवसर देखि एक बेर ओ हमरा बहुत रास नोट दैत कहलनि जे एकरो एहि कार्यक्रममे लगा देल जाय। हम मना कऽ देलहुँ जे एकर कोनो आवश्यकता नहि अछि आ हमसब एहि कार्यक्रम लेल किनकोसँ सहयोग नहि लैत छी।

'पू. बड़का बाबूक काजमे जहिना अहाँ छी तहिना हमहूँ छी। अहाँक पिता तऽ हमरो सभक धर्म पिता। जतबे अहाँक अधिकार ततबे हमरो सभक अधिकार। हम सब दिन हुनकामे पितेक छवि देखैत रहलहुँ। हुनकर काजमे सहयोगसँ अहाँ हमरा वंचित नहि कऽ सकैत छी। ई हमर कर्तव्य सेहो आ अधिकार सेहो। ई राखऽ पड़त। राखि लेल जाय।'

भावुक होइत हुनकर शब्द समूह हमरो भावुक कऽ देने छल। हुनकर अपन आस्था आ विश्वास रहए मुदा जेना ओ शब्द हमरापर कोनो जादू-टोना कऽ देने हो। हम निःशब्द अपन हाथ हुनका आगू पसारि देल। ओ जे द्रव्य देलनि से श्रद्धापूर्वक राखि लेल। अपन कर्तव्य निर्वहनमे ओ कहियो पाछू नहि रहलाह। ने पुत्र रूपमे, ने शिक्षक रूपमे आ ने धार्मिक व्यक्तित्व रूपमे। एहि प्रकारसँ ओ पितृ ऋण, ऋषि ऋण आ देव ऋण तीनू ऋणसँ उऋण भऽ गोलोकवासी भऽ गेलाह। दिनांक 16 नवम्बर 2022कैं हुनक महाप्रयाणक सहसा समादसँ सन्न रहि गेल रही। आम निर्वाचन कारणेँ भारत-नेपाल सीमा बन्द रहए। हमसब बादेमे विराटनगर जा सकल रही। पाहुन! अहाँ तऽ अपन कर्त्तव्य निर्वहनमे कहियो कोनो चूक नहि कयलहुँ हमहीँ सब चूकि गेल रही। हमहीँ सब अहाँकेँ सही रूपमे चीन्ह कहाँ सकलहुँ! सम्बन्धमे हम भले जेठ होइ मुदा भगवान् तऽ जेठ अहीँकेँ मानलनि तेँ ने अहाँकेँ असमय बजा लेलनि। आइ अहाँकेँ प्रणाम करैत मात्र क्षमायाचना! एहि पितृपक्षमे अश्रुतर्पण करैत छी। सादर नमन!

[2023]

मैथिल बियाहमे जयमाल प्रसंग

आजुक समयमे प्राय: बियाहमे वर-कनिञा एक-दोसराकेँ जयमाल पहिराबैत छथि। बिनु जयमाल प्रसंगक बियाह आब कम्मे होइत अछि। मिथिलामे सेहो बियाहक ई एक आवश्यक अंग बनि गेल अछि। ओना ई तथ्यात्मक अछि जे मिथिलामे पहिने जयमाल प्रसंग विरल छल। एहि कारणेँ बहुत लोक केर एहन धारणा बनि गेल जे वरमाल मैथिल विवाहक एक आयातित प्रसंग अछि वा कहू जे ई आधुनिकताक प्रभाव अछि।

ई सर्वथा सत्य जे मैथिल विवाह परम्परामे बहुत रास नव विधि वा प्रसंग सभ आयातित भेल मुदा जँ प्राचीन भारतीय वाङ्मयपर दृष्टिपात् करी तखन स्पष्ट होयत जे विवाहमे जयमाल प्रसंग केर उल्लेख अत्यन्त प्राचीन अछि। वेद-पुराणमे सेहो अनेकश: एहन प्रसंग आएल अछि।

ऋग्वेदमे स्पष्ट उल्लेख अछि जे जेना सुयोग्य वरकेँ सुयोग्य कन्यासँ विवाहक अधिकार अछि ओहिना कन्याकेँ सेहो अधिकार अछि जे योग्यतम आ स्वरूचिक अनुकूल वर केर चयन करए-

कियति योषा मर्यतो वधूयो: परिप्रीता पन्यसा वार्येण।
भद्रा वधूर्भवति यत् सुपेशा: स्वयं सा मित्रं वनुते जने चित्॥

(ऋग्वेद 10/ 27/ 12)

वरमाल प्रसंग केर उल्लेख विभिन्न वेद-पुराणादि एवं साहित्यिक ग्रंथसभमे आएल अछि। संक्षिप्त स्कन्दपुराण (गीता प्रेस, गोरखपुर, सं. 2075, 28म पुनर्मुद्रण, पृष्ठ 24)क माहेश्वर खंड-केदारखंडमे समुद्र मंथनसँ प्रादुर्भूत महालक्ष्मी द्वारा हाथीसँ उतरि श्रीजी द्वारा तैयार वनमाला, जाहिपर भ्रमर लुधकैत छल, श्रीहरिकेँ पहिरा वरण करबाक प्रसंग आएल अछि। एहिना शिवपुराण श्रीरुद्र संहिता (प्रथम खंड, तेसर

अध्याय)मे उल्लेख अछि जे राजा शीलनिधिक पुत्री राजकुमारी श्रीमतीक स्वंयवरमे विवाहोत्सुक नारदजीक वानर रूप देखि श्रीमती निराश होइत छथि आ फेर राजा रूपमे आएल भगवान् विष्णुकेँ जयमाल पहिरा वरण करैत छथि। महाभारतक वनपर्व (अध्याय 53-78)मे निषध देशक राजा वीरसेनक पुत्र नल आ विदर्भराज भीष्मक पुत्री दमयन्तीक कथा आएल अछि। दमयन्तीक स्वयंवरमे ओ नल आ नल रूपमे बैसल चारू देवतामे एककेँ घाम नहि चुबैत आ पिपनी नहि खसैत देखि वास्तविक नलकेँ चीन्ह हुनका गरामे जयमाल पहिराबैत छथि। महाभारतमे पांचाल नरेश द्रुपदसुता पांचालीक स्वयंवरक सविस्तार वर्णन अछि। एहि ग्रंथमे अनेक ठाम जयमाल प्रसंग अबैत अछि। आदिकवि वाल्मीकि अपन रामायणमे सीता स्वयंवरक वर्णन करैत छथि मुदा हुनकर जनकसुता जानकी दशरथनंदन श्रीरामकेँ धनुषभंगक बाद वरमाला नहि पहिराबैत छथि। जनकजी मात्र एतबे घोषणा करैत छथि जे जे केओ एहि धनुषपर प्रत्यंचा चढ़ा सकताह निःसंदेह तनिकर भार्या हमर पुत्री बनतीह-

इदं च धनुर्उद्यम साज्यं यः कुरुते नरः।
तस्य मे दुहिता भार्या भविष्यति न संशयः॥

(वाल्मीकि रामायण : 2-118-42)

महाकवि कालिदास रघुवंशम् मे सीता-राम विवाह वर्णनमे जयमाल प्रसंग केर उल्लेख नहि करैत छथि। ओना दोसर ठाम ओ इन्दुमती स्वयंवरमे अवश्य कहैत छथि जे बालगज केर सूँड समान जाँघवाली इन्दुमती स्वयंवरक माला सुनन्दाक हाथेँ रघुपुत्र अजकेँ पहिरबा देलनि—

सा चूर्णगौरं रघुनन्दनस्य धात्री कराभ्यां करभोपमोरूः।
आसञ्जयामास यथाप्रदेशं कण्ठे गुणं मूर्तमिवानुरागम्॥

(महाकवि कालिदास : रघुवंशम्, 6/83)

भारतीय वाङ्मयमे बहुत ठाम वरमाल प्रसंग केर उल्लेख भेल अछि। तेसर-चारिम शताब्दीमे रचित जैन रामकथाक आदिग्रंथ महाकवि विमलसूरि कृत प्राकृत भाषाक पउम चरियंमे जयमाल प्रसंग आएल अछि। प्रायः एहने स्थिति 8म-नवम शताब्दीक स्वयंभू देव कृत अपभ्रंश महाकाव्य पउम चरिउमे अभरल अछि। एहिमे सीता-राम विवाहमे धनुष यज्ञ आ दक्षिणावर्त-वामावर्त धनुषपर प्रत्यंचा चढ़एलाक बाद राम-सीता

विवाहक वर्णनमे जयमाल प्रसंगक उद्भावना नहि भेल अछि तथापि एहि काव्यमे विवाह प्रसंगे अनेक ठाम जयमालक वर्णन भेल अछि—

घत्तिय णयणुप्पल-माल महँ तहयहुँ जे जाउ पाणिग्गाहणु

(स्वयंभूदेव : पउम चरिउ, भाग 1, सन्धि 6, पृष्ठ 98, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नयी दिल्ली, चारिम संस्करण, 1989)। आगू श्रीमाला द्वारा किष्किन्धकेँ जयमाल पहिरा वरण करबाक वर्णन (पृष्ठ 118-119) आएल अछि। एहि ग्रंथक भाग 2 (भारतीय ज्ञानपीठ, काशी, प्रथम संस्करण, 1958, अयोध्या काण्ड, पृष्ठ 4)मे कैकेइ अपन स्वयंवरमे दशरथकेँ जयमाल पहिराबैत छथि—

घित्तमाल दसस्यन्दन-णामहो। मणहर-गइएं रहएं णं कामहो।

12म शताब्दीमे रचित कविचक्रवर्ती कम्बन केर तमिल भाषाक रामायणमे धनुर्भंगक बाद जयमाल केर उल्लेख नहि भेल अछि तथापि ओहि दिनक विषयमे ई अवश्य कहल गेल अछि जे आजुक दिन ओहि दिनसँ अधिक मनोहर अछि जाहि दिन समुद्रसुता श्रीलक्ष्मी श्रीहरि विष्णुकेँ वरमाल पहिरओने छलीह (कम्ब रामायण, सम्पा. श्रीअवधनन्दन, अनु. श्री न. वी. राजगोपालन, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, प्रथम संस्करण, 1964, पृष्ठ 158)। एहिसँ महर्षि कम्बक मादे दक्षिण भारतमे सेहो वरमाल प्रसंगसँ भिज्ञता स्पष्ट प्रमाणित होइछ। 1380 ई.मे राजा गोनबुद्ध रचित तेलुगुक रंगनाथ रामायणमे राम-सीता बियाहमे जयमाल प्रसंग नहि आएल अछि। गोस्वामी तुलसीदास अपन श्रीरामचरितमानस (रचनाकाल 1576 ई.)मे सीता स्वयंवरक सुन्दर चित्रण कएने छथि। ओ स्पष्ट शब्दमे सीता द्वारा रामकेँ जयमाल पहिरएबाक वर्णन करैत छथि—

सखिन्ह मध्य सिय सोहति कैसे। छविगण मध्य महाछवि जैसे॥
कर सरोज जयमाल सुहाई। बिस्व बिजय सोभा जेहि छाई॥
चतुर सखीं लखि कहा बुझाई। पहिराबहु जयमाल सुहाई॥
सुनत जुगल कर माल उठाई। प्रेम बिबस पहिराइ न जाई॥
सोहत जनु जुग जलज सनाला। ससिहि सभीत देत जयमाला॥

गावहिं छवि अवलोकि सहेली। सियँ जयमाल राम उर मेली॥
रघुवर उर जयमाल देखि देव बरिसहिं सुमन।
सकुचे सकल भुआल जनु बिलोकि रवि कुमुदगन॥

(गोस्वामी तुलसीदास : श्रीरामचरितमानस,
गीताप्रेस, गोरखपुर, 82, सं. 2051, पृष्ठ 209)

कवीश्वर चन्दा झा सेहो अपन रामायणमे जयमाल प्रसंगक उद्‌भावना कएने छथि—

जानकी हाथ मे माल लक्ष्मी धरू।
श्रीघनश्याम काँ देखि चिन्ता हरू॥

रामक ऊपर देल से माल।
त्रिदश दुन्दुभी बाज विशाल॥

(चन्दा झा रामायण, संपा. आ. बलदेव मिश्र,
तेसर संस्करण, 1363 श्रावणी पूर्णिमा, पृष्ठ 47-48)

महाकवि पं. लालदास अपन रमेश्वरचरित रामायणमे कहैत छथि—

जनक कहल सीता एहि काल।
पहिराबथु रामहि जयमाल॥

(लालदास : मिथिला रामायण, बालकांड,
साहित्य अकादेमी, नयी दिल्ली, 2020, पृष्ठ 92)

यज्ञक विभिन्न प्रकारमे धनुष यज्ञक उल्लेख नहि देखि किछु गोटे एकरा धनुष यज्ञ नहि कहैत छथि आ वैदेही विवाहक विशिष्ट बात-शिवधनु पिनाकपर प्रत्यंचा चढ़एबाक शर्त्त रहबाक कारणेँ एकरा स्वयंवर नहि मानैत छथि। हुनक कहब जे एहिमे सीताक स्वेच्छाक महत्त्व नहि छल तेँ एकरा स्वयंवर कहब उचित नहि। श्रौतयज्ञक अश्वमेध, राजसूय, वाजपेय, अग्निष्टोम, सोम, सौत्रामणि, विश्वजित् आदि यज्ञक 19 प्रकारमे एवं स्मार्त्त यज्ञक ब्रह्म, देव, पितृ, भूत, अतिथि सहित अनेक प्रकारक यज्ञमे धनुष यज्ञ केर चर्च नहि अछि। पुत्रक कामना लेल पुत्रेष्टि

यज्ञ हो, अपशकुन निवारण हेतु ज्योतिष्टोम यज्ञ हो, बहुत समय धरि चलएवला दीर्घसत्र यज्ञ हो, दिग्विजय यज्ञ हो, श्रीमद्‌भागवत कथा यज्ञ हो वा गीता आदि कोनो ग्रंथकेँ केन्द्रमे राखि गीता यज्ञ हो, ई सब यज्ञ थिक। एहिना विवाह निश्चित रूपसँ एक यज्ञ थिक। एहिमे वेदी बनैत अछि, अग्निमे हविष्य पड़ैत अछि। शास्त्रोक्त विधिसँ पूजन-हवन, दान-दक्षिणा, भोजनादि सब यज्ञ जकाँ। जखने सामूहिक रूपसँ जुटि कोनो देवी-देवता, मनोकामना, अभीष्ट वस्तु आदिकेँ केन्द्रमे राखि अग्निमे आहुति दैत पूजन-दान-दक्षिणा अर्पण होइत अछि तखने ओ यज्ञ थिक। अखनो पोखरिक यज्ञ केर अभिप्राय पोखरिक बियाहे मानल जाइत अछि। ई सत्य जे स्वयंवरमे कन्या स्वयं वरक निर्णय करैत छथि मुदा वरक विशिष्ट गुण प्रदर्शन निमित्त शर्त्त सेहो रहैत छल। स्वयंवरमे कन्या वरक रूप-गुणेपर निर्णय लैत छलीह। पुष्पवाटिका प्रसंगमे सीता रामकेँ देखि मुग्ध होइत छथि, भगवतीसँ प्रार्थना करैत छथि जे मनोरथ पूर हो। ई तऽ हुनके निर्णय छल आ जनकजीक प्रण केर एहि निर्णय प्रक्रियामे कोनो स्थान नहि रहए! तेँ जँ पुष्पवाटिका प्रसंग नहियो घटित भेल रहैत आ सीता अपन स्वयंवरेमे 'कोटि मनोज लजावन हारे' श्रीरामकेँ देखने रहितथि तखनो वैह स्थिति रहैत। सीता रामकेँ देखि ओहिना मोहित होइतथि आ स्वयं रामक वरण करितथि। तेँ एहि प्रसंगकेँ धनुष यज्ञ नहि कहब वा सीता स्वयंवर नहि मानब उचित नहि अछि। समाजमे अखनो किनको घरमे अन्नप्राशन, मुंडन-चूड़ाकरण, उपनयन, विवाह, द्विरागमन, प्रीतिभोज, श्राद्ध आदि कोनो अनुष्ठान-आयोजनक सफलता लेल बुढ़-बुढ़ानुस केर बोल-भरोस-'जग्यक मालिक जगदीश होइ छथि, ओ सब नीकसँ पार लगओताह' केर उक्ति एहि विषयक भ्रान्ति सभकेँ निर्णायक रूपसँ फरिछा दैत अछि।

स्वयंवरमे जयमाल आ गन्धर्व विवाहमे वरमाल प्रायः वरक चुनाओ केर आवश्यक विधि रूपमे मानल जाइत रहल छल। भारतीय वाङ्‌मयमे एहन प्रसंग सभपर दृष्टिपातसँ यैह उद्‌घाटित होइछ जे जयमाल वा वरमाल प्रसंग प्रायः कन्याक स्वरूचिपर वर केर वरण प्रसंगमे प्रचलित छल। कन्याक माता-पिता वा अभिभावक द्वारा चयनित वरसँ विवाहक विधिमे जयमाल एक आवश्यक अंग प्रायः नहि छल। भारतीय वाङ्‌मयमे विवाहक अनेक प्रकार वर्णित अछि जाहिमे ब्राह्म, दैव, आर्ष, प्राजापत्य, गन्धर्व, असुर, राक्षस आ पिशाच मुख्य अछि। एहि सभमे श्रेष्ठतम विवाह ओकरे मानल जाइत रहल जाहिमे कन्याक अभिभावक द्वारा चयनित आ दुनू पक्ष केर सहमतिसँ शुभ समयमे सुयोग्य वर समाङ सभक संग सासुर आबि समारोहपूर्वक बियाह करैत छलाह। एहिमे अग्निक समक्ष कन्याक पिता कन्याक हाथ वरक हाथमे दैत कन्यादान करैत छलाह जे पाणिग्रहण रूपमे

प्रचलित छल। ब्राह्म विवाहक यैह रूप प्रतिष्ठित छल आ समाजमे सभसँ बेसी प्रचलन आ मान्यता एकरे छल। राजा वा विभवशाली लोक अपन पुत्रीक स्वयंवर सेहो आयोजित करैत छलाह। स्वयंवरमे निर्णय केर प्रतीक वरमाले रहैत छल। वरमाल गन्धर्व विवाहमे अवश्य प्रचलित छल। प्रायः ब्राह्म बियाहमे वरमालाक विधि केर प्रचलन नहि भेटैत अछि। बियाहक विधि सभक अनुशीलनसँ यैह स्पष्ट होइत अछि जे जतए कन्याक इच्छाक अधिमान छल ओहिमे वरमाल प्रसंग बेसी लोकप्रिय छल आ जाहि बियाहमे अभिभावक सभक इच्छाक महत्त्व रहैत छल ओहिमे वरमाल प्रसंग प्रायः लोकप्रिय नहि छल। मिथिलामे बियाहक यैह रूप बेसी प्रचलित छल। यैह कारण अछि जे गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित आ मिथिलामे सेहो खूब प्रचलित मानसमे सीता-रामक विवाहमे जयमाल प्रसंग केर रम्य वर्णनक अछैत मिथिलाक सामान्य बियाहमे वरमाल प्रसंग प्रायःलोकप्रिय नहि रहल।

एतऽ इहो उल्लेखनीय अछि जे ब्राह्म विवाहकेँ वर्तमान समयमे परिवार प्रबंधित बियाह (Arrange Marriage) आ गन्धर्व विवाहकेँ आधुनिक कालमे प्रेम विवाह (Love Marriage)क सदृश मानल जा सकैत अछि। वर्तमानमे बियाहक एकटा नव प्रकार सेहो विकसित भेल अछि जाहिमे वर-कनिञा अपन पसन्दसँ अपन कथा स्वयं स्थिर करैत अछि आ दुनूक माता-पिता, सर-कुटुम्ब, समाज आदि हुनका सभक निर्णय वा इच्छाक सम्मान करैत दुनूक परिवार प्रबंधित बियाह आयोजित करैत छथि। स्वाभाविक रूपसँ एहन बियाहमे वरपक्ष आ कन्यापक्षमे प्रचलित दुनू विधि-व्यवहार केर समायोजन होइत अछि जाहिसँ विवाहक किछु नव विधि सभ सेहो प्रचलनमे अबैत अछि।

स्त्री सभक शिक्षाक स्थितिमे सुधार आ स्वावलम्बनमे वृद्धिसँ समाजक स्थितिमे बहुत परिवर्तन आबि गेल अछि। आइसँ तीस-चालीस बरख पूर्व बियाहमे गोत्राध्याय आ घोघट कालमे जखन बरियाती आङन अबैत छल तखन ओसारा सभपर पाल, पर्दा वा ओहार लगैत छल ताकि बरियाती सभक दृष्टि एहि ठामक स्त्रीगण सभपर नहि पड़ि सकए। आब तऽ बरियातीमे पुरुष सभसँ कम स्त्रीगण कहाँ रहैत छथि! तेँ ओहार टाँगबाक औचित्ये समाप्त भऽ गेल। आब बियाहे नहि कोनो आनो काज-उद्यममे प्रायः कतहु एहन ओहार नहि लगैत अछि। अपवादस्वरूप ठाढ़ीक दुर्गापूजामे अष्टमी, नवमी आ महादशमीकेँ राति सात बजेसँ नौ बजे धरि दुर्गास्थानमे अखनो पाल टाँगल जाइत अछि ताकि स्त्रीगण निर्विघ्न भगवतीक दर्शन कऽ सकथि आ वस्तुजात कीनि सकथि। एहि समय चूड़ी बाजारमे पुरुषक प्रवेश प्रतिबंधित रहैछ। एकरा परम्पराक निर्वहन वा स्त्रीगण लेल सम्मान प्रदर्शन केर प्रतीक मात्र मानल जा सकैछ। विभवशाली वर्गमे तऽ आब पूर्वसँ प्रचलित पर्दाप्रथा

प्राय: अतीतमे चलि गेल। घोघ काढ़ब सेहो आब अत्यल्प भऽ गेल अछि। घोघ आब पर्दा प्रथाक प्रतीक नहि रहि लाज-धाक-आदर प्रकट करबाक संकेत मात्र रहि गेल अछि। किछु दिनमे इहो बिला जाएत। जीवनमे परिवर्तन शाश्वत छैक। एकरा रोकल नहि जा सकैछ। बियाहक विधि सभमे सेहो परिवर्तन आएल। अनेक नव विधि केर समावेशन भेल आ पुरना विधि शनै: शनै: कात-करोट दिशि ठेला गेल। बियाहक एक एहने बढ़ल विधि अछि नृत्य (Dance)। एहिमे पुरुष सभसँ आगू रहैत छथि बरियाती केर स्त्रीगण। के केहन आ कतेक नाचलनि आ सामाजिक माध्यमपर कतेक फोटो/वीडियो अपलोड कएलनि एकर आन्तरिक प्रतिस्पर्धा चलैत रहैत अछि। सब आनन्द लैत छथि। दोसर विधि बढ़ल फोटो सेशन। एहिमे सेहो एहने स्थिति रहैछ। आब विवाहपूर्व फोटोग्राफी (Pre Wedding Shoot) सेहो होइत अछि। सिद्धान्तक स्थान औंठी पहिराएब आ कुमरम् केर स्थान मेंहदी-संगीत नेने जा रहल अछि। जँ औंठी पहिराएब (Ring Ceremony) पहिने नहि भेल तखन स्टेजपर जयमाल कालमे सेहो एहि नव विधिक समावेशन होइत अछि। वैभव प्रदर्शन आ आनन्दवादी दृष्टिकोण पूर्वसँ प्रचलित परम्परापर प्रहार करैत नव-नव विधि सभक आगमन केर मार्ग प्रशस्त कएलक। प्राय: जयमाल कालमे तऽ विचित्र स्थिति देखबामे अबैछ। कन्या जखने वरमाला पहिरएबाक लेल तत्पर होइत छथि की वरक किछु मित्रगण वरकेँ कन्हापर उठा लैत छथि ताकि कन्या वरकेँ जयमाल नहि पहिरा सकथि। एकटा विचित्र विजय केर भावक निकृष्ट प्रदर्शन होइछ। फेर कन्यापक्षमे सेहो जोश अबैत अछि। कन्याक भ्रातादि सभ कन्याकेँ सेहो उठा लैत छथि। एहन अशोभन प्रसंग कतेक बेर चलैत अछि। हुड़दंग, सीटी, पिहकारी, हो-हो केर कोलाहलमे आनन्द प्राप्त कएनिहार सभक एहन कृत्यसँ वर-कनिञा दुनूक गरिमा क्षरित होइत अछि। एकटा रम्य आ भव्य परम्पराक एहन निकृष्ट रूप देखलासँ मोन उद्विग्न होइत अछि। संभव जे कोनो समाजमे बाल वर-कनिञाकेँ कोरामे उठा जयमाल करायब एकर मूल रहल हो। किछु समाज (श्रीमाली)मे ई अखनो प्रचलित अछि जे वर अपन कोरामे वधूकेँ उठा सात फेरा लैत छथि। गनीमत जे अंधानुकरणक फेरमे एकर प्रचलन एम्हर नहि भेल। जँ कोनो दुबर-पातर वरकेँ स्थूलकाय कनिञा भेटि जाए तखन तऽ वरक घाम चुबि जाएत। कहियो अशिक्षा, गरीबी आ कमसिन कन्यासँ विवाहक कुत्सित प्रवृत्ति सभक निशानी एहन विधि सर्वप्रिय नहि भऽ सकैछ। बियाहमे अप्रासंगिक भेल विधि सभक समावेशन विकृति उत्पन्न करैत अछि। जयमाल कालमे हो-हल्ला, हुड़दंग वा अशोभन कृत्य करब वैह प्रवृत्ति थिक जाहिमे वरपक्ष कन्यापक्षक लेल जिगीषु केर आदिम मानसिकतासँ ग्रसित रहैत छथि। नारी आब सभ तरहेँ सबल छथि। समान स्थितिक एक पुरुष आ

एक नारीमे नारी बेसी शक्तिशालिनी छथि। आइ कोनो परिस्थितिमे नारीकेँ विजित वस्तु नहि मानल जा सकैछ। जयमाल प्रसंगकेँ अपन शक्ति प्रदर्शन, हुड़दंग, जिगीषा, जय-पराजय वा उपहास केर विषय बनाएब उचित नहि। एकर गरिमा बनल रहए एहि लेल सचेष्ट रहब उचित।

जयमाल विधि केर समावेश मिथिलाक बहुत रास विधिकेँ अप्रासंगिक कएलक। घोघट आ मुह देखाइ एहिमे विशेष रूपसँ उल्लेखनीय अछि। पूरा बरियाती जखन वरमाल कालमे कनिञाक मुह देखे लेलनि तखन घोघट आ फेर मुह देखाइ विधि केर कोनो औचित्य आब रहि नहि गेल अछि। मुदा एहि विषयक कोनो सार्थक सार्वजनिक प्रयास नहि भेल अछि। हमरा सभकेँ सिनेमामे देखाओल विधि वा आयातित विधि सेहो चाही आ अपनो विधि चाही। एहि कारणेँ जेना-जेना विधि बढ़ैत गेल तेना-तेना वेद घटैत गेल। जयमालक बादे आशीर्वाद स्वरूप जनिका जे मुह देखाइ देबाक हो से दऽ सकैत छथि। घोघट केर प्रासंगिकता समाप्त भऽ गेल अछि। विधि सभपर विभिन्न संगठनमे विचार-विमर्श कऽ एक मानक रूप स्थिर करब उचित अछि। बिलाइ बान्हबाक विधि केर प्रचलनसँ हमसभ परिचित छी। एहन अंधानुकरण उचित नहि।

पूर्वमे कहल गेल अछि जे मिथिलामे ब्राह्म विवाह बेसी लोकप्रिय छल। एहिमे जयमाल प्रसंग केर स्थान प्रायः नहि छल। बाह्य प्रभावक कारणेँ जयमाल शुरू भेल। मिथिलामे सर्वप्रथम ई कहिया शुरू भेल ई कहब कठिन अछि मुदा एतेक अवश्य कहल जा सकैछ जे बाह्य प्रथाक देखाउँसमे किछु बाहर रहएवाली स्त्रीगण अपन धी-भतीजीक विवाहकेँ किछु विशिष्ट बनएबाक लेल चुपचाप एकर शुरूआत कएलनि। एहि नव विधि केर आरम्भ गोपन रूपसँ कोबराघरमे शुरू भेल ताकि बूढ़-पुरान सभक दृष्टिमे नहि आबए आ हुनका सभक कोपभाजन नहि बनी। कोबरासँ शुरू भेल जयमाल कोबराघरक मोखापर आएल फेर परिछनक बाद दुरुखापर आएल आ आब सुसज्जित स्टेजपर आबि सार्वजनिक भऽ गेल। कोबराघरसँ स्टेज धरिक जयमाल केर यात्रामे बहुत रास किन्तु-परन्तु, सहमति-असहमति, स्वीकार-अस्वीकार, समर्थन-विरोध आदि केर पड़ाओ रहल मुदा आब एकर स्वीकार्यता प्रायः मैथिल मानसमे स्थान ग्रहण कऽ नेने अछि। यद्यपि इहो तथ्यात्मक अछि जे अखनो मिथिलामे बिनु जयमालक सेहो बहुत बियाह संपन्न होइत अछि।

समय केर संग बहुत किछु परिवर्तित होइत अछि। परिवर्तन जीवनकेँ एकरसतासँ बचबैत अछि। परिवर्तन आनएमे उपयोगिता एक प्रमुख मानदंड रहैछ। बियाहमे पहिने बरियाती दू दिन रहैत छल। 'मर्याद' निश्चित रूपसँ होइत छल वा कहू जे बरियाती तीन साँझ भोजन करैत छलाह। फेर मर्याद भोज हटल आ आब

तऽ बरियाती सभक एकहि बेर भोजन होइत अछि। एहिना श्राद्ध पहिने मास दिन धरि चलैत छल। फेर 13-15 दिनपर आएल। आब तऽ तीन-पाँच दिनमे समाप्तिक चलनसारि सेहो शुरू भऽ गेल अछि। परिवर्तन जीवन केर शाश्वत सत्य थिक। आइ बियाहमे तीन साँझ भोजन केर कल्पनो नहि कएल जा सकैछ जखन कि 35-40 बरख पूर्व यैह प्रचलित छल। ओहि समय बरियातीक एकहि साँझ मात्र भोजन कराएब सोचलो नहि जा सकैत छल। स्पष्ट अछि जे प्रत्येक समय केर अपन पृथक् मानदंड होइत अछि। ई मानदंड देश, काल आ परिस्थिति सापेक्ष रहि ओकरे अधीन आ अनुसार होइत छैक। जेना दौनी भेल धानक ओसौनी आ कुट्टल धानकेँ फटकनमे वायुप्रवाह भुस्सा-खखरी उधिया दैत छैक आ सुप्पत चाउर बचि जाइत अछि तहिना बियाह-दान आ अन्य रीति-रिवाजमे सेहो चलानी विधि सभ खखरी-भुस्सा जकाँ उधिया जाइत अछि। बहुत रास विधि सभक लोप भेल आ नव विधि आएल। जयमाल मैथिल समाजमे अपन लोकप्रियता बढ़ा रहल अछि। जँ गरिमापूर्ण ढंगसँ नीक जकाँ सम्पन्न हुअए तखन सरिपहुँ ई रम्य जयमाल विधि मैथिल बियाहक एक अनुपम आ विशिष्ट विधि बनल रहत।

[देसिल बयना, 14म अर्घ्य, मैथिली साहित्य मंच, हैदराबाद, सम्पा.- श्री चन्द्र मोहन कर्ण, दिसम्बर 2023]

श्वेतांग सभक स्याह आत्मा

23 जून 1757 केर पलासी युद्ध आ 23 अक्टूबर 1764कँ भेल बक्सर युद्धमे अंग्रेज सभक विजय भारतवर्षमे अंग्रेजी राज केर स्थापनाक मार्ग प्रशस्त कयलक। मुदा एहिसँ बहुत पूर्वे अंग्रेज सभ भारतवर्षपर अपन गिद्धदृष्टि जमा चुकल छल। मि. हॉकिंस इस्ट इंडिया कम्पनीक पहिल जहाज हेक्टार केर कप्तान रूपमे 24 अगस्त 1608कँ सूरत पहुँचि 16 अप्रैल 1609कँ आगरा आबि गेल छल। मुगल सम्राट् जहाँगीरक दरबारमे ठेहुनपर बैसि हैट उतारि जहाँगीरक अभिवादन करैत ओ जेम्स प्रथम केर पत्र जहाँगीरकँ देने छल। संगी विलियम कीलिंग अपन हैट उतारि सिजदा कयने छल। किछु प्रयासक बाद हॉकिंस जहाँगीरकँ अपना भरि सूरतमे फैक्ट्री खोलबाक आज्ञा देबाक लेल मना नेने छल मुदा पुर्तगीज सभक प्रभावक कारणेँ ओ अपन अभियानमे पूरा सफल नहि भेल। दरबारमे दू बरख रहलाक आओर जहाँगीरक कहलापर एक पैघ व्यापारीक आर्मेनियन ईसाई महिला मरियम खानसँ विवाह कयलाक बादो ओ अपन अभियानमे सफल नहि भेलाह आ 2 नवम्बर 1611कँ हुनका दरबारसँ विदा होमऽ पड़लनि।

फेर टॉमस रो जेम्स प्रथम केर दूत बनि 10 जनवरी 1616कँ जहाँगीरक दरबारमे कोर्निश करैत याचक बनि ठाढ़ भेल। अपन कौशल आ ब्रिटिश सुरा-सुन्दरीक चस्का लगा ओ जहाँगीरसँ फैक्ट्री लगएबाक अनुमति प्राप्त करबामे सफल भेलाह। ई मात्र अनुमति नहि छल। ई भारतवर्षक भालपर भविष्यक गुलामी केर हस्ताक्षर छल। भारतवर्षक इतिहास केर किछु चित्र अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अछि। जहाँगीरक दरबारमे हैट उतारि कोर्निश करैत कलपैत ठाढ़ याचक टॉमस रो केर चित्र, जहाँगीरक हरममे मरियम खान, फ्रांसिस स्टील, मिसेज हडसन इत्यादि मेम केर कामुक चित्र आओर 12 दिसम्बर 1911कँ दिल्ली दरबारमे महाराज

पंचम जार्ज आ महारानी मैरीक स्वागत-सत्कारमे नत ठाढ़ भारतीय सामन्त तथा प्रशस्तिगान गबैत भारतीय विद्वान् अयोध्या सिंह उपाध्याय हरिऔध (प्रभु पगकमल को छू यहाँ की भूमि भाग्यवती बनी), बदरीनाथ जौधरी प्रेमधन (सौभाग्य समागम), श्रीधर पाठक (जार्ज वन्दना) सभक चित्र। प्रश्नचिह्न तऽ जन-गण-मनपर सेहो लागल छल। पहिलुक चित्रमे अभरल याचक आ रखैल अंग्रेज दोसर चित्रमे महाराज आ महारानी बनि शोभित छल। एहि परिवर्तन केर आधारशिला छल अंग्रेज सभक सोचल-विचारल कुटिल रणनीति। एहि रणनीतिक तहत अंग्रेज सब स्वयंकेँ प्रभु आओर भारतीय सभकेँ दास मानबाक अन्हरजाली पसारलक। अशिक्षित, जाहिल गँवार मानि अंग्रेज सभ भारतीय सभकेँ कोनो जोकरक नहि मानलनि। शिक्षाक प्रसार लेल 1813 केर चार्टर अधिनियमक बाद इस्ट इंडिया कम्पनी शिक्षाक लेल एक लाख टाका आवंटित कयलक। अंग्रेज सब एतेक समझदार आ भारतमे शिक्षाक प्रसार लेल ततेक ने चिन्तित आ गम्भीर छल जे बेसी नहि दसे वर्ष लगओलक मात्र एहि निर्णय करएमे जे ई राशि कोना आ कथीपर खर्च हो! एकर बादो जखन उचित निर्णय नहि भेल तखन 17 जुलाई 1823केँ शिक्षापर एक समिति बना देल गेल। ई समिति सेहो पाँचटा सदस्य एम्हर आ पाँचटा सदस्य ओम्हरमे दू फाँक भऽ गेल। प्राच्यवादी समूहक मानब छल जे देशक भाषामे शिक्षा एवं सरकारी काज हो। दोसर आंग्लवादी समूह जेना आमिल पीने हो। ओकरा सभक मान्यता छल जे भारतीय कोनो भाषामे आधुनिक शिक्षा आ विज्ञान केर वाहिका बनबाक क्षमता नहि अछि। मात्र अंग्रेजीए एहिमे सक्षम अछि। 1833केर चार्टर अधिनियममे गवर्नर जेनरल केर कार्यकारिणी परिषद् मे एक अतिरिक्त सदस्यकेँ जोड़ल गेल आ 1834मे कट्टर आंग्लवादी थॉमस बेबिंग्टन मैकॉले (1800-1859) एकर प्रथम विधि सदस्य रूपमे नामित भेलाह। फेर ओ शिक्षा समितिक अध्यक्ष सेहो बनाओल गेलाह। 2 फरवरी 1835केँ तैयार मैकॉले मिनट्सक आधारपर 7 मार्च 1835केँ विलियम बैंटिंग कम्पनीक नीति घोषित कयलनि। एहि नीतिकेँ मैकॉलेक अंग्रेजी विषयक सोच आ नीति सभक प्रतिबिम्बने कहि सकैत छी। प्राच्यवादी एच टी प्रिंसेप, एच एच विल्सन प्रभृति केर पराजय भेल। न्यायाधीश फ्रेडरिक जॉन शोर अपन विभिन्न आलेखमे देशी भाषा आओर लिपिकेँ राज-काज एवं न्यायालय केर भाषा बनएबाक उद्गार प्रकट करिते रहि गेलाह एवं मोनियर विलियम्स हिन्दुस्तानी (हिन्दी) आ देवनागरीक प्रशंसामे गीत गबिते रहि गेलाह आओर अंग्रेजी 1837मे फारसीकेँ विस्थापित करैत राज-काजक भाषा बनि गेल। 1838सँ तऽ अधीनस्थ न्यायालय केर सेहो भाषा बनि गेल।

मैकाले पक्कठोस आंग्लवादी छल। ओ भारतीय धर्म-संस्कृति-साहित्यकेँ घृणाक स्तर धरि नापसंद करैत छल। हुनकर नजरिमे सम्पूर्ण भारतीय ज्ञान-विज्ञान आ साहित्य-दर्शन यूरोप केर कोनो पुस्तकालयक एक अलमीराक एक रैकपर राखल पोथीक परतर नहि कऽ सकैत छल। ओ एहन कुचक्र रचलनि जे निधिक अभावक कारणेँ हम सर्वजन सुलभ शिक्षा व्यवस्था नहि कऽ सकब। मात्र विभवशाली सभक नेनाकेँ शिक्षा देल जाएत आ निम्न वर्गीय नेना सब निस्पंदन सिद्धान्त (Theory of Filteration)क अनुसार ओहि विभवशाली वर्गीय नेना सभक संसर्गसँ स्वयं पढ़ि-लिखि लेत। ई आश्चर्यजनक अछि जे एहि तथ्य सभक बादो किछु भ्रमित लोक मैकॉलेक गुणगान करैत अघायत नहि छथि।

मैकॉले एहन कृष्ण भारतीयक कल्पना कयलनि जे रूप-रंगमे तऽ भारतीय रहथि मुदा जनिकर सोच अंग्रेज जकाँ हो। जे भारतीय वेद-पुराण-शास्त्र-धर्म-दर्शन-भाषा-संस्कृतिकेँ निकृष्ट मानथि आ यूरोपीय निकृष्टो चीजकेँ श्रेष्ठ मानथि। अपन अभियानमे ओ सफल भेल। अंग्रेजी ज्ञानवला सभकेँ कम्पनीक नोकरी सरलतासँ भेटए लागल आ देशी ज्ञानवला सभक लेल विपत्ति केर समय आबि गेल। जनसमुदायमे फकड़ा 'पढ़े फारसी बेचे तेल देखू बाउ करम केर खेल' एहि समयसँ प्रचलित भेल। जे विद्या अर्थकरी नहि होएत छैक ओकर जीवन बेसी नहि रहैत छैक। अंग्रेजीक तेहन मोहास्त्र चलल जे पैघ-पैघ पुरोधागण प्रभावित भेलाह। मैकॉले मानैत छल जे भारतीय सभमे ने शिक्षा अछि ने इतिहास बोध, ने संस्कार, ने विज्ञान आ ने कोनो निष्ठा। मैकॉलेक एहि मान्यता सभकेँ तथ्य केर निकषपर कसिकेँ देखब उचित। शिक्षा-संस्कारसँ शुरू करैत छी।

ई ऐतिहासिक तथ्य अछि जे इंग्लैंडक शिक्षाक इतिहास शुरू होइत अछि 597 ई.सँ जखन संत आगस्टाइन वर्तमान लंदन केर कैंट जिलाक कैंटरबरी (पाछू ऑगस्टाइन एबे रूपमे प्रसिद्ध)मे एक चर्चमे औपचारिक विद्यालय शुरू कयलनि। एहिसँ पूर्व इंग्लैंडमे मौखिके शिक्षा देल जाइत छल। 1096मे ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय आ 1209 ई.सँ कैम्ब्रिज विश्वविद्यालयमे पठन-पाठन केर प्रमाण भेटैत अछि। ओना 1167मे ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय केर स्थापना बहुत लोक मानैत छथि। आब भारतवर्षसँ जँ तुलना करी तऽ अंग्रेज सभक स्थिति विचित्र भऽ जाएत। प्राचीन भारतीय शिक्षा व्यवस्थामे जँ गुरुकुल, चौपाड़ि, टोल, चटसार, तोसाल आदिकेँ छोड़ियो देल जाय तखनो ईसापूर्व 700 ई.मे तक्षशिला विश्वविद्यालय, 400ई.मे नालन्दा विश्वविद्यालय आ आठम शताब्दीक विक्रमशिला विश्वविद्यालय

केर अस्तित्व स्पष्ट रूपसँ उद्घोष करैत अछि जे अंग्रेज सब शिक्षाक मामलामे भारतीय सभसँ बहुत पाछू छल। भारतीय वाङ्मयमे जे ऋषिका शब्द अछि ओकर अर्थ वेदपाठी वा वेद जाननिहारि स्त्री होइत अछि। वैदिक कालमे अंग्रेजी सभ्यतामे एहन कोनो शब्द नहि अछि। historyofinformation.com केर अनुसार 1500ई.मे इंग्लैंडक स्त्री साक्षरता दर 1%सँ कम छल। भारतीय वैदिक कालमे ई दर तऽ आर कमे रहल होयत। ourworldindata.org, CIA World Factbook आदि स्पष्ट रूपसँ कहैत अछि जे यूरोपमे 18म शताब्दीक शुरूमे यूरोप केर स्त्री साक्षरता दर 20%सँ कम छल। सीता समान अनुपम स्त्री आंग्ल वाङ्मयमे संभवे नहि अछि। याज्ञवल्क्य सन ब्रह्मवेत्तासँ शास्त्रार्थ कएनिहारि वाचक्नवी गार्गी समान स्त्री ओहि सभ्यतामे के छथि? याज्ञवल्क्य द्वारा वानप्रस्थ जाइतकाल दुनू जीवित पत्नी कात्यायनी आ मैत्रेयीमे धन केर दू भागमे बाँटि एक भाग लेबाक लेल कहलापर 'येनाहं नामृतं स्याम् किमहं तेन कुर्याम्' (जे वस्तु हमरा अमृतत्त्व नहि दिया सकैछ ओ लऽकैँ हम की करब) केर उद्घोष कएनिहारि ब्रह्मवादिनी मैत्रेयी सन चरित्र इंग्लैंडक सभ्यता-संस्कृति आ प्रज्ञा-वाङ्मयमे संभवे नहि अछि। जनिका प्राचीन भारतीय विज्ञान-प्रज्ञापर सन्देह अछि ओ कृपया एक बेर वृहदारण्यकोपनिषद् केर गार्गी-याज्ञवल्क्य संवाद अवश्य पढ़थि। पदार्थ केर मूल तत्त्व, फेर ओकर विखंडन अणुमे, अणुकैँ परमाणुमे आ परमाणुक खंडन केर बात कतेक ठाम आएल अछि। दुर्भाग्य एतबे जे ओहि ज्ञानकैँ डेबिकैँ नहि राखल जा सकल आ ओ सब काल केर गालमे बिला गेल। पाश्चात्य ज्ञान-विज्ञानमे सहस्राधिक वर्ष बादे 1886मे रदरफोर्ड/गोल्डस्टीन प्रोटॉन, जे जे थॉमसन 1897मे एलेक्ट्रॉन आओर चैडविक द्वारा 1931मे न्यूट्रॉन केर खोज भेल छल। एहि तथ्य सभकैँ अछैत भारतीयकैँ अंग्रेज सब निर्लज्जतापूर्वक जाहिल-गँमार आ ज्ञान-विज्ञान रहित अशिक्षित मानि लेलक। साँचे समरथ के नहि दोष गोसाईं!

अंग्रेज सभक मान्यता छल जे भारतीय सभमे इतिहास बोध नहि छल आ जँ हमसभ (विशेष रूपसँ जेम्स प्रिंसेप) नहि देखने रहितहुँ तखन सम्राट् अशोक भारतीय इतिहाससँ बिला गेल रहितथि! सरासर मिथ्यालाप! अंग्रेज सभक अपन इतिहासे शुरू होइत छैक ईसापूर्व 700 ई.सँ जखन केल्टिक सभक वास इंग्लैंडमे भेल। ईसापूर्व 43 ई.मे रोम एहि ब्रिटेनपर कब्जा कयलक। फेर ज्यूटलैण्ड, डेनमार्क आ जर्मनी एहि ब्रिटेनपर आक्रमण करैत 5म-8म शताब्दीक मध्य एकरा सात भागमे खंडित कयलक। 1016मे डेनमार्क केर राजा कैन्यूट एकरो राजा भेलाह। 1066मे

सैक्सोन (जर्मनी) स्टैम्फोर्ड पुल युद्धमे फेर एकरा पददलित कएलक। नार्मन आक्रमणकारी सैक्सोन सभकेँ हरा देलनि। 1215मे गृहयुद्धक आगिमे इंग्लैंडकेँ झरकलाक बाद मैग्नाकार्टापर हस्ताक्षर भेल। इंग्लैंड आ स्कॉटलैंडमे 22 जुलाई 1706केँ यूनाइटेड किंग्डम केर स्थापना संबंधी सन्धि भेल जे 1707मे दुनू देशक संसद द्वारा सम्पुष्ट भेल। अखनो दुनूमे आन्तरिक एकात्म भाव नहि भेल अछि आ रहरहाँ खटपट केर सूचना अबिते रहैत अछि। अंग्रेज सभकेँ अपन देशक पराजय, दासता आ गृहयुद्धक टेटर नहि देखाइत अछि आ ओ भारतवर्षकेँ हेय मानबाक पाप करब पुण्य मानैत अछि। भारतीय इतिहासक प्राचीनता ओकरा सभकेँ अरघल नहि आ आधुनिक शोध केर नाटक करैत रामायण, महाभारत सभकेँ मिथक मानि लेलक। पुराणकेँ 'सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशेमन्वन्तराणि च, वंशानुचरितञ्चैव' सभक बादो इतिहास नहि मानल गेल। एतबे नहि सम्राट् अशोकक तेरहम शिलालेखमे वर्णित सीरिया, मिस्र, सायरिन, एपिरसक एलेक्जेंडर आ मैसेडोनियाक एंटीगोनस गोनेट्सक दरबारमे अशोकक राजदूत सभक धम्मप्रचार लेल भेल उपस्थितिकेँ रीज डेविड्स एवं अन्य आंग्ल विद्वान् नहि मानैत एकरा राजकीय प्रलाप तक कहि देलनि। एहि अंग्रेज सभक धृष्टताक हिसाब-किताब प्रो. राधाकृष्ण चौधरी अपन ग्रंथ (प्राचीन भारत का राजनीतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास, पृष्ठ 139)मे कयलनि।

अंग्रेज सभ मानैत छल जे भारतीय सभमे इतिहास बोध नहि छल। अंग्रेज सभक ई दाबी तऽ भारतीय शिलालेख सभमे उत्कीर्ण तिथि एवं विवरण सभसँ सरलतापूर्वक समाप्त कयल जा सकैछ। अर्थशास्त्रमे कौटिल्य गोप नामक पदाधिकारीक वर्णन अनेक ठाम करैत छथि जनिकर काज विभिन्न समूह सभक सांख्यिकी सभक संग्रह करब छल (गोपाश्चिन्तयेत्, 35/ 1-2,)। कौटिल्य अपन ग्रंथमे विद्यार्थी सभकेँ दिनक उत्तर भागमे इतिहासक अध्ययन (पश्चिमितिहासश्रवणे, अध्याय 5 प्रकरण 2 श्लोक 14) केर बात आखिर कोना कहैत छथि? एहि ग्रंथसँ अभिलेखागारक अस्तित्व केर बोध सेहो होइछ। एहि सभकेँ भारतीय सभमे इतिहास बोध नहि मानब सरिपहुँ भारतीय प्रज्ञा संग अन्याय थिक।

ई सत्य अछि जे जेम्स प्रिंसेप 1836-38मे सम्राट् अशोकक शिलालेख सभक ब्राह्मी आ खरोष्ठी लिपि पढ़लनि मुदा हुनकासँ पहिनेसँ सम्राट् अशोक भारतीय दंतकथा, साहित्य इत्यादिमे जीवित छलाह। तेँ अंग्रेज सभक दाबी जे हुनके सभक अवदानसँ अशोक जीवित छथि मात्र आत्मप्रलाप मानल जाएत। ई सत्य जे भारतीय इतिहासक शैली दोसर छल। रामायण-महाभारत-पुराण इतिहास अंकन

केर भारतीय शैली छल। महाकवि कालिदासक रघुवंशम् एहि शैलीक अनुपम ग्रंथ थिक। इहो मानल जा सकैछ जे आंग्ल विद्वान् भारतीय इतिहासकेँ आधुनिक शैली आ अभिनव रूप देलनि मुदा ई किन्नहु नहि मानल जा सकैछ जे भारतीय सभमे इतिहास बोध नहि छल।

जहाँ धरि संस्कृतिक प्रसंग अछि एहिमे अंग्रेज सब बहुत पाछू अछि। ओतऽ 18 वर्षक होइत-होइत बेटा-बेटी प्राय: माय-बापक घर त्यागि दैत अछि। जखन बापे दूर तखन एहन स्थितिमे अन्य समस्त संबंध केर भविष्य सरलतासँ अकानि सकैत छी। इंग्लैंडक 2019मे अनुमानित जनसंख्या 6.64 करोड़पर 17000 आवासीय वृद्धाश्रम अछि (NHS England) आ भारतवर्षक 130 करोड़पर मात्र 728 ओल्ड एज होम अछि। ई तथ्य दुनू देशक संस्कृति आ आत्माक फर्क केर एक छोटछीन दिग्दर्शन अछि। श्रवण कुमार सन चरित्रक कल्पनो आंग्ल संस्कृतिमे संभव नहि अछि। ओना ई तथ्यात्मक अछि जे आब एतहु एकल परिवार (मियाँ-वीवी-बच्चा)क चलनसारि बढ़ल अछि। हालमे विवाह लेल आएल एक युवतीक परिचय विवरणीमे देखलहुँ जे ओ सासु-ससुरक संग नहि रहतीह। नारी स्वतंत्रताक एक निकृष्ट रूप! जखन ओ स्वयं सासु आ ददिया सासु बनतीह तखन हुनका अपन एहि कृत्यपर कतेक लाज होयत! तथापि बहुलांशमे अखनो भारतीय संस्कृतिमे लोक-लज्जा आ सामाजिक दवाब केर आँकुश अछि जे बूढ़ा-बूढ़ीक जीवनकेँ कष्टमय होइसँ बचबैत अछि। ओना माता-पिता एवं वरिष्ठ नागरिक भरण-पोषण व कल्याण अधिनियम, 2007 सरकारकेँ आनए पड़ल। भले एहिमे वृद्ध माता-पिताक उपेक्षापर 5000 टाका/ कारगारक दंड केर प्रावधान हो मुदा एहि अधिनियमक आवश्यकता पड़ल ई कोनो नीक संकेत तऽ नहिए अछि।

अनुवाद, शोध, अनुसंधान आदि क्षेत्रमे अंग्रेज सब अपने मुह मियाँ मिट्ठू बनैत रहल। ई साँच जे भारतीय वाङ्मय केर पाश्चात्य वितान निर्माणमे आंग्ल विद्वान् सभक उल्लेखनीय अवदान अछि। विलियम जोन्स, एच एच विल्सन, जेम्स प्रिंसेप, मैक्समूलर, ह्विटनी, कोलब्रुक, टी एच ग्रिफिथ, गॉथ, थीबा प्रभृति आंग्ल विद्वान् केर अवदानसँ हमसभ परिचित छी। मैकॉलेक विषबीजसँ अनुप्राणित भारतीय विद्वान् सब हिनका सभक प्रशस्तिगान करैत अघायत नहि छथि। मुदा जँ गम्भीर शोध करब तखन ज्ञात होयत जे हिनका सभक उत्कर्ष केर मूलमे कोनो ने कोनो भारतीय विद्वानेक मेधा अछि। भले युद्ध जीतलक सिपाही आ नाम भेल हवलदारक! विलियम जोन्स केर कालिदासक अभिज्ञान शाकुन्तलम्, मनुस्मृति

आदि केर अनुवाद एवं अन्य काजसभसँ निर्मित विराट् व्यक्तित्वक आधारशिलामे वैद्य पं. रामलोचन कविभूषण, पं. जगन्नाथ तर्कपंचानन आ पं. राधाकान्त शर्मणक घाम चुअल अछि। जर्मन कवि गेटे अभिज्ञान शाकुन्तलम् केर ई अनुवाद पढ़ि भावविभोर होइत एकर गुणगान कयने छलाह। प्रिंसेप केर मेधाक भव्य प्रासादमे रत्न पाल, कमलाकान्त विद्यालंकार, शारदा प्रसाद चक्रवर्ती एवं गोविन्द राम सभक मेधा आ परिश्रम केर पजेबा लागल अछि। मिताक्षरा (विज्ञानेश्वर), दायभाग (जीमूतवाहन) केर अनुवाद एवं संस्कृत व्याकरण आ कोशसँ जगजिआर भेल एच टी कोलब्रुकक उपलब्धिमे धमदाहाक पं. चित्रपति उपाध्याय एवं पं. श्याम सुन्दर ठाकुर केर मेधा अछि। श्रीमद्भागवत गीताक अनुवाद एवं बाँग्ला टाइपफेस केर श्रेय चार्ल्स विल्किंसकेँ भेटल जखन कि एहिमे क्रमश: कालिनाथ भट्टाचार्य आओर पंचानन कर्मकार केर दिमाग खपल छल। थीबा केर वेदान्त भाष्य विषयक ग्रंथ भास्कर केर अर्थ संग्रहसँ अनुप्राणित एवं काशीक आ. राम मिश्र शास्त्रीक अध्यवसायक प्रतिफल थिक। जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन केर श्वेत मैथिलक स्वरूप पं. हल्ली झा आओर पं. बौआजी मिश्रक मेधापर आश्रित अछि। यैह हाल प्राय: सभक अछि।

तथापि एकर अर्थ ई कथमपि नहि अछि जे हुनका सभक अवदान कम अछि। अवदान हुनको सभक महत्त्वपूर्ण अछि मुदा एहिमे भारतीय विद्वान् सभक उचित मूल्यांकन नहि भेल छल। हमर अभिप्राय मात्र एतबे अछि। मैकॉलेक कुटिल नीतिसँ प्रभावित विद्वान् एहिपर मंथन अवश्य करथि।

ई सत्य जे अंग्रेज सब भारतकेँ रेल, तार, डाक, सीआरपीसी आदि देलनि मुदा इहो सत्य जे एकरा सभक प्रसार ओहि क्षेत्रमे सेहो भेल जतए ब्रिटिश शासन नहि छल। अंग्रेज सभ जे भारतसँ लुटि लेलक ओ कम नहि अछि। तत्कालीन बंगालमे 1769-70, 1865-67, 1873-74, 1896-97, 1943-44 केर भयंकर अकाल सभमे हुनका सभक भूमिका अत्यन्त निन्दनीय रहल छल। प्रसिद्ध अमरीकी इतिहासकार मैथ्यू ह्वाइट अपन पोथी One Great Book of Horrible Thingsमे विश्वक शीर्ष 100 क्रूरतम घटनामे चारिम स्थानपर बंगालक अकालकेँ रखने छथि। एहिसँ एकर विभीषिका अकानि सकैत छी। आन ठामक अकाल सभक चर्च छोड़ि देल जाय तखनो मात्र बंगाल (असम-बिहार-ओडिशा-झारखंड सहित)मे दू करोड़सँ बेसी लोक मुइल छल। एकर कारण सभक विश्लेषण अंग्रेज सभक सम्वेदनाशून्य हृदयहीनता सभक प्रतिबिम्बन आ नीति सभक विफलता केर जीवन्त दस्तावेज लगैछ। भारतीय सम्पदासँ इंग्लैंड गुलजार भेल आ कहियो

विश्व केर सोनचिड़ै भारत विपन्नताक दंश भोगैत रहल। श्रीमती उत्सा पटनायक कोलम्बिया विश्वविद्यालयसँ प्रकाशित अपन निबंधसंग्रह (2018)मे कहैत छथि जे अंग्रेज सभ भारतवर्षसँ 1765-1938 मध्य 9.2 ट्रिलियन पाउंड वा 45 ट्रिलियन डॉलर वा तीन हजार लाख करोड़ रुपया केर लूट कयने छल। 1 अक्टूबर 2019कँ अटलांटिक कौंसिल समूहक समक्ष भारतीय विदेशमंत्री श्री एस जयशंकर अंग्रेज सभक एहि लूट केर चर्च कयने छलाह। William Darlymple अपन पोथी The East India Company : The Original Corporate Ridersमे इस्ट इंडिया कम्पनीक कारनामा लिखने छथि। क्रिस हॉल्टे उचिते एकरा समुद्री डाकू एवं लुटेरा सभक गिरोह कहने छथि (Holteऽs Thought on Sunday, 6 Aug. 2017)। सांसद विलियम टॉरेन अपन पोथी Empire in Asia (पृष्ठ 126-28)मे अंग्रेज सभक संरक्षणमे रहल नवाब शुजाउद्दौलाक बेगम सभकेँ न्यायाधीश पदनामकेँ कलंकित कएनिहार कुख्यात न्यायाधीश एलाइजा इम्पेक सहयोगसँ लुटबाक भयंकर चित्र देने छथि। Will Durant अपन पोथी The Case for Indiaमे अंग्रेज सभक लूट केर कथा एवं भारतीय इतिहास-संस्कृतिपर प्रहार सभक कच्चा चिट्ठा खोलने छथि। अंग्रेज व्यापारी विलियम वोल्ट्स 1772क अपन पोथी Consideration of India Affairs (पृष्ठ 194)मे इंग्लैंडमे भारतीय वस्त्रपर 80% आयात शुल्क एवं भारतमे अंग्रेजी वस्त्रपर मात्र 5% शुल्क एवं ढाकाक विश्वविख्यात मलमल केर बुनकर सभक औंठा काटि भारतीय वस्त्र उद्योगकेँ ध्वस्त करबाक करुण कथा कहैत छथि। श्री शशि थरूर अपन पोथी An Era of Darknessमे एहने विमर्श करैत छथि। धर्मेन्द्र गौड़क पोथी 'मैं अंग्रेजों का जासूस था'मे अंग्रेज सभक कुकर्म सभक चित्रण अछि। एहि वर्ष प्रभात प्रकाशनसँ प्रकाशित प्रशान्त पोलक विलक्षण पोथी 'विनाश पर्व' अंग्रेज सभक स्याह आत्माकेँ उघारिकेँ राखि देने अछि।

यथार्थमे अधिकांश अंग्रेज सभक चरित्र एहने कुकर्मी सभक चरित्र छल। अपवाद अवश्य छल मुदा भारतमे हुनका सभक उद्देश्य एकमात्र येन-केन-प्रकारेण धन संचय, कहुना अंग्रेजी राज बचाएब आ ईसाई धर्मक प्रचार-प्रसार करब छल। पहिने एहन पोथी सभक प्रसार नहि होइत छल तेँ आमजन अंग्रेज सभकेँ श्रेष्ठ आ दिव्य स्वरूप मानि नेने छल। बादमे भारतीय अग्निपुत्र सब अंग्रेज सभक रक्त बहा एहि धारणामे परिवर्तन आनएमे सफल भेलाह जे अंग्रेज सभ कोनो देवता नहि आम मनुक्ख अछि। एहि भावसँ आन्दोलन गति पकड़लक आ

भारत स्वतंत्र भेल। स्वतंत्रताप्राप्तिक बादो मैकॉलेक विषबीजसँ विकसित आंग्ल सभ्यता-संस्कृतिक गाछकेँ काटबाक कोन कथा जे नीकसँ पाँगलो नहि गेल। एकरे प्रभाव अछि जे अखनो मैथिलीमे कहल तथ्यात्मक बातो केर ओतेक महत्त्व नहि देल जाइत अछि जतेक अंग्रेजीमे कहल कोनो साधारणो बातकेँ महत्त्व भेटैत अछि। अंग्रेजी बजनिहारकेँ अकारण विशिष्ट आ मेधावी मानि लेल जाइत अछि। विदेशमे पढ़निहार (भले ओ मेधा बलेँ नहि टाका बलेँ गेल होथि) वा नोकरी (भले ओ निकृष्टे किएक नहि हो) कयनिहारकेँ विशिष्ट मानि लेल जाइत अछि। धिया-पुता संग मैथिलीमे बात करब जखन लज्जाजनक एवं हिन्दी-अंग्रेजीमे बात करब गौरवपूर्ण मानल जाइत हो वा अपन परम्परा-संस्कृति बिसरि पाश्चात्यक अंधानुकरणमे गौरव केर भान हो तखने मानि लेबाक चाही जे मैकॉलेक प्रेत अखन अछिए। भावसँ विशिष्ट होउ भाषासँ नहि। इंग्लैंडक मूर्खो अंग्रेजीए बाजत। ओकरा श्रेष्ठ कोना मानि ली? एहि मनोदशामे परिवर्तन केर आवश्यकता! आत्महीनताक ई प्रवृत्ति तखन बड़ कचोटैत अछि जखन मैथिलीक किछु पैघ पुरोधागणकेँ सेहो एहि अधम प्रवृत्तिसँ ग्रसित देखैत छी। एक प्रसंगसँ अपन आलेखकेँ समापन करब।

पटनासँ प्रकाशित एक प्रतिष्ठित शोध पत्रिका 'मिथिला-भारती'क अंक I-IV, भाग 5, 2018मे एक आंग्ल अध्यापक डॉ. रॉब लिनरॉथ, एसोसिएट प्रोफेसर ऑफ आर्ट हिस्ट्री, नार्थ-वेस्टर्न यूनिवर्सिटी, यू एस ए केर एक मैथिली आलेख 'पूर्व मध्यकालीन प्रतिमा सभमे दाताक चित्रण : एक प्रगति प्रतिवेदन' (पृष्ठ 14-25) प्रकाशित भेल छल। एहिमे बिनु कोनो उपयुक्त आधार देने डॉ. लिनरॉथ अँधराठाढ़ी शिलालेख केर पादपीठमे उत्कीर्ण एक अस्पष्ट पुरुषक आकृतिकेँ श्रीधर आ दोसर अस्पष्ट स्त्री आकृतिकेँ हुनक पत्नी कहैत छथि। सम्पादकीयमे एहि आलेखकेँ अंकक मुख्य आकर्षण कहल गेल अछि। चित्रावलीमे प्रकाशित चित्र सं. 2.2 केर नीचाँ श्रीधर आ हुनक स्त्री केर चित्र होयबाक स्पष्ट जानकारी सेहो अंकित अछि। आश्चर्यजनक! जखन दाता सभक शोध केर कठिन कल्पने करबाक अछि तखन राजा नान्यदेव आ रानीक चित्र किएक नहि? ब्रह्मा-ब्रह्माणी किएक नहि? महादेव-पार्वती किएक नहि? एहि विषयक जिज्ञासावश 'मिथिला-भारती'क एक यशस्वी सम्पादक श्री शिवकुमार मिश्रजीसँ बात कयने रही। वार्तामे ओ कहलनि जे ई नव शोध अछि आ अपने ई नहि बुझबै। एकर प्रतिक्रिया वा काटमे जे लिखि पठायब से हम प्रकाशित कऽ देब। हम हतप्रभ भेल सोचि रहल छलहुँ जे मैकॉले आओर ओकर अवैध सन्तति हमरा सभक की-की लुटि लेलक!

जँ एहि अंग्रेजक बात मानि ली तखन तऽ बेनवारा (दरभंगा) आओर सलेमपुर (मधुबनी)सँ प्राप्त महावराह विष्णु एवं 11म 14म शताब्दीक केर विभिन्न मूर्त्तिक पादपीठमे उत्कीर्ण आकृति सभकेँ मूर्त्ति निर्माणमे सहयोगी वा दाता सभक चित्र मानए पड़त! एहि कालखंडक अनेक मूर्त्तिक पादपीठमे जे पशु सभक आकृति अंकित अछि ओकरो सभकेँ दानदाताक मूर्त्ति मानए पड़त! यथार्थमे मूर्त्ति, आकृति, प्रतिमा, विग्रहादिमे जनिका फर्क नहि ज्ञात अछि वा जे ओहि समयक भारतीय परम्परासँ अनभिज्ञ छथि वैह किछु अनर्गल नव लिखि एहन प्रलाप कऽ सकैत छथि। समग्रतामे भारतीय इतिहास, परम्परा आ संस्कृतिकेँ जाननिहार एहन आगि लेसबाक कुकृत्य कखनो नहि करत! आजुक आत्म-प्रचारक प्रवृत्ति देखि लिनरॉथ एहन कठिन कल्पना कयलनि जे विवेच्य कालमे कथमपि संभव नहि छल। राजा-रानीक अछैत श्रीधर हुनका सभकेँ छोड़ि मात्र अपन दुनू प्राणीक चित्र दऽ राजा नान्य हाथेँ अपन मृत्युक आवाहन नहि कऽ सकैत छलाह!

ई सत्य जे— मा मा प्रापत्प्रतीचिका (पश्चिम दिशि नहि देखू) केर नीति आब नहि चलत। ई अप्रासंगिक भऽ गेल। एहन परिस्थितिमे अंग्रेजीक अंधविरोध करब उचित नहि। ज्ञान कतहु से आबए अवश्य ग्रहण करी। ऋग्वेदमे एहि विषयक एक मंत्र सेहो अछि— ॐ आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतः..। तखनो एकर ध्यान अवश्य रहए जे गुड्डी ताधरि गगनविहार कऽ सकैत अछि जाधरि लटाइक तागसँ ओकर जड़ि जमीनपर रहतैक। ताग कटिते गुड्डी अस्तित्वहीन भऽ जाइछ। तहिना कतबो अंग्रेजी सीखि आधुनिक वा गगनविहारी बनी मुदा अपन जड़ि, अपन भाषा-संस्कृति-परम्परासँ अवश्य जुड़ल रही। बाहर किछु बाजी घरमे मात्र मैथिली! मातृभाषे परम्परा आ संस्कारकेँ अक्षुण्ण राखि सकैत अछि। तेँ मन-प्राणसँ अपन भाषा-संस्कृति-परम्पराक सम्मान करैत रही। श्वेतांग सभक स्याह आत्मा रूपी मैकॉलेक प्रेत एकमात्र एहि मंत्रसँ बिला जाएत।

[देसिल बयना, 13म अर्घ्य, मैथिली साहित्य मंच, हैदराबाद, सम्पा.- श्री चन्द्र मोहन कर्ण, नवम्बर 2022 मे प्रकाशित रचनाक परिमार्जित रूप]

तिलकेश्वर धाम : एक अध्ययन यात्रा

भाइजी श्री राजीव लोचन चौधरीक 97 वर्षीय माता सविता चौधराइनक श्राद्धमे गाम गेल छलहुँ। ओतहिसँ बाबा तिलकेश्वरनाथ महादेवक दर्शन केर योजना बनल। कतेक दिनसँ एकर कार्यक्रम बनैत छल मुदा सफलीभूत नहि होइत छल। एहि बेर जेना तिलकेश्वरनाथ कृपा कऽ देने होथि। तिलकेश्वर मन्दिरमे लागल शिलालेख देखबाक उत्कंठा छल। 19 फरवरी 2023कें बच्चाभाइ श्री सुरेन्द्र शैल आ भ्राता श्री पंकज कुमारक संग हमसभ गाड़ीसँ विदा भेलहुँ। सुलतानपुरसँ सतीघाट, हरौली, बुचौली कोठी, सहोरबाघाट, पंचवटी, झझरा, चिगरी, लेरिझाघाट होइत बिथान अयलहुँ। फेर फुइया बाँध होइत तिलकेश्वर आबि गेलहुँ।

तिलकेश्वर स्थान भौगोलिक दृष्टिसँ चारि जिला— दरभंगा, समस्तीपुर, सहरसा आ खगड़ियाक संगमनी स्थल अछि। एकर उत्तर दिशि गोलमा, गोरधइ, अरथुआ, तेगच्छा, कुञ्जभवन आदि गाम अछि। दक्षिणमे गम्हरिया, फुलतोड़ा, ज्वालापुर, चिकनी आदि गाम अवस्थित अछि। पश्चिममे बहबा, बथौल आदि गाम एवं पूरबमे सहरबन्नी, मुशहरिया, कोसियार, पिपरा आदि गाम अछि। पूर्व केर प्रसिद्ध क्षेत्र फड़किया नाम आब विलुप्त भऽ गेल अछि मुदा एकर स्मृति एहि क्षेत्रमे देखल जा सकैछ। भारतवर्षक पूर्व मान. केन्द्रीय मंत्री रामविलास पासवानजीक गाम सहरबन्नी लऽगे अछि।

तिलकेश्वरधाममे बाबा तिलकेश्वरनाथक करिया पाथर केर मोटगर शिवलिंग केर दर्शन-पूजन बाद मन्दिरक प्रवेशद्वार केर प्रस्तर चौकठिमे उत्कीर्ण शिलालेख केर अवलोकन कएलहुँ। तीनटा शिलालेख प्रवेशद्वार केर एकहि प्रस्तर केर चौकठिमे मिथिलाक्षरमे उत्कीर्ण अछि। शिलालेख बहुत सीमा धरि घिसा गेल अछि आ सहजतासँ पठनीय नहि रहि गेल अछि। खल्ली लगा पोछि-पाछिकँ पढ़बाक प्रयास कएलहुँ।

प्रो. राधाकृष्ण चौधरी अपन मिथिलाक इतिहास (श्रुति प्रकाशन, दिल्ली, 2010, ISBN 9789380538280, पृष्ठ 266)मे तिलकेश्वरगढ़ अभिलेख विषयक वर्णन दैत कहैत छथि जे एहिमे रानी सौभाग्य देवी, मंत्री कर्मादित्य आ हैहट्ट भगवतीक उल्लेख भेल अछि। हुनका अनुसार शिलालेखमे लिखल अछि— अब्देनेत्र शशांकपक्ष गणिते श्री लक्ष्मणाक्ष्मपतेर्मासि श्रावण संज्ञकेँ मुनि तिथौ र्त्वात्यांगुरुउशोभने। हावीपत्तन संज्ञकेँ सुविदिते हैहट्टदेवी शिवा कर्मादित्य सुमंत्रिणेह विहिता सौभाग्य देव्याज्ञा।

बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी, पटना द्वारा प्रकाशित प्रो. राधाकृष्ण चौधरीक मिथिलाक इतिहास (ISBN 9789385792939, 2021, पृष्ठ 351-52)मे एहि शिलालेख विषयक पाठान्तर अछि— अब्देनेत्र शशांकपक्ष गणिते लक्ष्मणादयपतेर्मासि श्रावण संज्ञके मुनि तिथौ स्वास्यगुरुशोभने। हावीपत्तन संज्ञके सुविदिते हैहट्टदेवी शिवाकर्मादित्य सुर्मंत्रिणेह विहिता सौभाग्य देव्याज्ञा। अपन पोथी Selected Inscriptions of Bihar (1958, पृष्ठ 18) आओर मिथिलाक इतिहास (पृष्ठ 260)मे प्रो. चौधरी लगभग एहिना एहि शिलालेख केर मूल देने छथि-

पूर्वमे उद्धृत पद ...सौभाग्य देव्याज्ञा केर बादक पंक्ति एहि प्रकार देल गेल अछि—

मिथिलायां हावीडीहेति प्रसिद्धे देवी सिंहासन शिलायामुत्कीर्णमस्तीति।
तथैव तिलकेश्वरशिवमठे कर्मादित्यनाम्नैव कीर्त्तिशिलायामुत्कीर्णमस्ति॥

तीनू पोथीमे उद्धृत किछु शब्द खंडमे अन्तर अछि। ई पाठान्तर टंकण केर अशुद्धि भऽ सकैछ। मुदा आश्चर्यजनक तथ्य अछि जे तिलकेश्वर केर मूल शिलालेखमे एहन कोनो बात नहि अभरल। तिलकेश्वर मन्दिरक मूल शिलालेखमे किछु शब्द तऽ अखनो पठनीय अछि जेना शाके 1258 कार्तिक शुदि 1, कर्मादित्य केर नाम आदि। एहि तीनू पोथीमे तिलकेश्वर स्थान शिलालेख विषयक उद्धृत वर्णन तिलकेश्वर केर मूल शिलालेखमे नहि अभरैत अछि। कतबो मंथन कयल मुदा सौभाग्य देवी एवं हैहट्ट भगवती केर उल्लेख नहि भेटल। पं. भवनाथ झा लब्धप्रतिष्ठ शोध त्रैमासिक मिथिला भारतीक भाग 5, अंक I-IV, वर्ष 2018, पृष्ठ 191-192मे तिलकेश्वर स्थान शिलालेखक तीनू भाग केर मिथिलाक्षरसँ देवाक्षरमे लिप्यंतरण एहि प्रकार कएने छथि—

कारितो मण्डप: शम्भो: कैलासशुचभूतले।
प्रजापुत्रवसुर्नित्यं कुरु मद्विघ्नतारक॥
कर्म्माणि दुज श्रीशङ्कर: शिल्पि श्री श्री पातु
शाके 1258 कार्तिक शुदि 1
द्विजवंशाब्धिशीतांशुतेज:शर्म्मकुलश्रिया।
बोधि(धिं) समासृत(तं) श्रीमत्कर्म्मादित्येन मन्त्रिणा॥

यैह पाठ शुद्ध लगैत अछि। भाव अछि जे कैलास समान पवित्र एहि भूखण्डपर ई शिव मंडप बनल अछि। हमरा विघ्ननाशक भगवान् प्रजा, पुत्र, सम्पदादिसँ संयुक्त करथि। शक् संवत् 1258 कार्तिक प्रतिपदा तिथिकेँ एकर निर्माण द्विज श्रीशंकर पूर्ण करओलनि। देवी लक्ष्मी हुनक रक्षा करथि। द्विज वंश समुद्रमे उद्‌भूत चन्द्रमा समान धवल कुल केर ज्ञानी मंत्री श्रीमान् कर्मादित्य छलाह।

ओना ई तथ्यात्मक अछि जे तिलकेश्वर मन्दिरक चौकठिमे लागल एहि शिलालेख केर बहुत अक्षर घिसा गेल अछि। शिलालेख केर तीनू भाग एकहि चौकठिपर दू-दू पंक्तिमे एक साथ उत्कीर्ण अछि आ तीनूक बीचमे काफी स्थान छूटल अछि। चौकठि केर एक भागमे एक पद मात्र अछि जखन कि दोसर भागमे दू पद अछि। पहिल भागमे संभव जे शिलालेख केर पहिल पद हो किएक तऽ ओतए केर स्थान सपाट भऽ गेल अछि। संभव जे ओहि ठाम पद हो जे आब घिसाकेँ लुप्त भऽ गेल हो। उपलब्ध शिलालेख पढ़बामे जे व्यतिक्रम अबैछ ओ सेहो एहने संकेत करैत अछि।

इहो महत्त्वपूर्ण अछि जे ई चौकठि अत्यन्त भव्य आ कलापूर्ण ढंगसँ सजाओल गेल अछि। पाँच स्तरमे एकर ऊपरी भाग बाँटल गेल अछि। पहिल आ दोसर स्तर एकहि प्रस्तर खंडसँ तैयार लगैत अछि। एहि भागमे पुष्प सभक कलात्मक साज-सज्जा उकेरित अछि। एकर मध्यमे पद्मासन मुद्रामे बैसलि गजलक्ष्मी देवी केर आकृति उत्कीर्ण अछि जनिका दू टा गजराज सूँडसँ कलश उठा जलाभिषेक करैत देखाइत छथि। भारतीय स्थापत्य कलामे गजलक्ष्मीक चित्र उकेरित करब प्राचीन कालसँ प्रचलित अछि। भरहुत, साँची, रत्नागिरि (ओडिशा), बोधगया, उज्जैन, बस्तर केर टेमरा आदि स्थलपर गजलक्ष्मीक प्रतिमा उत्कीर्ण अछि। सातवाहन राजवंश आ नलवंश केर राजमुद्रापर गजलक्ष्मी विराजमान छलीह। अनेक आर स्वर्ण-रजत-ताम्र मुद्रापर गजलक्ष्मीक चित्र विराजमान अछि। गजलक्ष्मी कतहु द्विभुजी आ कतहु चतुर्भुजी रूपमे चित्रित छथि। तिलकेश्वर केर

गजलक्ष्मी द्विभुजी छथि। नालयुक्त कमल एकदम स्पष्ट अछि। एहि कमलनाल केर अवस्थिति गजलक्ष्मीक चित्रकेँ चतुर्भुजी होएबाक भ्रम उत्पन्न करैत अछि। गजलक्ष्मीक एहि आकृतिमे कर्णाट कालीन कमनीयताक अभाव अछि। ओना ई पूर्णतया संभव अछि जे ई मूर्त्ति सेहो मनोहारी रहल हो मुदा जल-फूल केर छींटा (ऊँचाईपर अवस्थित रहबाक कारणेँ चुरुमे जल लऽ फेकला)सँ एकर कमनीयता क्षरित भेल हो। ओना ई तय अछि जे जल-फूल चढ़ा श्रद्धालुजन एहि ऐतिहासिक शिलालेखकेँ सेहो एक दिन समाप्त कऽ देताह जेना आन कतेक शिलालेख वा ऐतिहासिक महत्त्व केर सामग्री सभकेँ समाप्त कऽ देलनि। जल-फूल अक्षत-चानन लेल तऽ मन्दिरमे करिया पाथर केर मोटका शिवलिंग विराजमान छथिए। भले लगातार जलपात्रसँ खसैत जल-धार केर प्रहार सहैत-सहैत ओ खुरदरा किएक नहि भेल होथि। श्रद्धा अछि तखन हुनकेपर जल चढ़ाउ। इतिहास जाहि वस्तुसँ वा शिलालेखसँ अभरैत अछि ओहि सभकेँ तऽ नष्ट नहि कयल जाय। मुख्य शिवलिंग, अरघा आ जलढरीक सूक्ष्मतापूर्वक अवलोकन कएलहुँ मुदा ओहि सभपर कोनो शिलालेख उत्कीर्ण नहि अछि।

चौकठि केर तेसर स्तर बेसी कलात्मक ढंगसँ सजाओल गेल अछि। एहिमे नृत्य करैत आ विभिन्न वाद्ययंत्र बजबैत नारी सभक कमनीय चित्र उत्कीर्ण अछि। सम्पूर्ण चौकठि कर्णाटकालीन कलाक कमनीयता केर प्रतिछवि प्रस्तुत करैत अछि। चौकठि केर वामभागमे कलशधारिणी, चाँवरधारिणी, धनुषधारिणी और असिधारिणी नारी सभक चित्र उकेरित अछि। एहि वामभाग केर पहिल-दोसर चौकठि केर मूलमे त्रिभंग मुद्रामे चित्रित एक स्त्रीक आकृति अत्यन्त मनोरम अछि। एहिमे वक्ष आ कटि केर मोहक निरूपण भेल अछि। एहि चौकठिमे आगाँ कोनो मानव आकृति नहि अछि मुदा पुष्प सभक आकर्षक कलाकारीसँ ई चौकठि बहुत सुन्दर लगैत अछि। तेसर चौकठि केर नीचासँ ऊपर क्रमश: असि धारिणी नारी, नृत्यरत युवती, धनुष धारिणी स्त्री, कलश धारिणी कामिनी उत्कीर्ण अछि। माथपर कलश धारिणी वसनहीना एहि कामिनीक पएरमे एक वानर आकृति लटपटायल अछि। एकरा ऊपर केर चित्रमे वैह वानर आकृति एक अनावृत्त पुरुष आकृति केर जननांगसँ केलि करैत देखाइत अछि। इहो आश्चर्यजनक अछि जे एहि चौकठि केर दहिना कात दोसर दिशि केर चित्र सभ लुप्तप्राय भऽ गेल अछि। घिसा गेल अछि। गहनतापूर्वक देखलासँ लगैत अछि जे एहि चौकठि सभक संयोजन वर्तमान मन्दिर निर्माण कालमे एहि परिसरमे उपलब्ध विभिन्न प्रस्तरखंड सभसँ भेल अछि।

तिलकेश्वर मन्दिर, 2011

तिलकेश्वर मन्दिर, 2023

खंडित प्रतिमा, 2011

खंडित प्रतिमा, 2023

खंडित शिव दरबारक भग्नावशेष, 2011

द्वारपर गजलक्ष्मी, 2023

तिलकेश्वर शिवलिंग, 2011

तिलकेश्वर शिवलिंग, 2023

मुख्य द्वारक एक भाग केर छवि, 2023

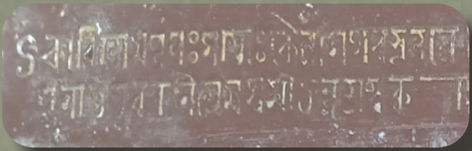

तिलकेश्वर शिलालेख, 2023

तिलकेश्वर शिलालेख, 2023

चौकठिपर उत्कीर्ण तिलकेश्वर शिलालेख, 2023

चौकठि केर ऊपरी भाग, 2023

तिलकेश्वर मन्दिरक मुख्य द्वार, 2011

एहि पाषाण स्तम्भ सभक कालखंड अलग-अलग लगैत अछि। रंगमे सेहो पार्थक्य अछि। चौकठि केर चारू भाग समरूप नहि अछि। ई संकेत करैत अछि जे विभिन्न कालीन प्रस्तर खंड सभक संयोजनसँ एहि मन्दिरक वर्तमान चौकठि सजाओल गेल अछि।

एहि मन्दिरक बाहर राखल मूर्त्तिक एक भग्नावशेष सेहो अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अछि। एकरे लऽग एक पूर्वाभिमुख बसहा केर निर्माण बादमे कराओल गेल अछि। आधुनिक कालमे निर्मित एहि बसहाक मुख महादेव दिशि नहि भऽ पार्वती मन्दिर दिशि किएक अछि, ई नहि कहल जा सकैछ।

भगवतीक खंडित प्रतिमाक कोनो अंश अखन सुरक्षित नहि अछि। एकटा पएर केर ठेहुनसँ अधोभाग मात्र देखाइत अछि। ई सेहो कहुना चीन्हल जा सकैछ। लगैत अछि जे भगवतीक एहि चरण केर किछु भाग सिंह केर पीठपर अछि। एहि खंडित प्रतिमाक दोसर चरण केर किछु भाग पद्मासन केर समानान्तर आएल अछि। एहि चरण केर तड़बामे चक्र अंकित अछि। श्री विकास वैभव, आइपीएस केर ब्लागपर silentpagesofhistory शृंखलामे उपलब्ध कुशेश्वरस्थान थानाक निरीक्षण क्रममे फरवरी 2011मे तिलकेश्वर यात्राक जे हुनक विस्तृत यात्रा वृत्तान्त अछि ओ सरिपहुँ शोधपूर्ण अछि। इतिहासक विद्वान् आ पुराविद् सभक ध्यान एहि स्थलपर गंभीरतापूर्वक नहि पड़ल छल। विकासजी एहि स्थल केर यात्रा करैत एकर खोज-खबरि लेलनि। पुराविद् सभकेँ हुनक एहि यात्रा वृत्तान्तसँ प्रेरणा लेबाक चाही। एहिमे जे तिलकेश्वर स्थान विषयक विस्तृत जानकारी आ चित्र सब अपलोड अछि ओ अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अछि। ओहि समयक पुरना फोटो सभमे खंडित मूर्त्तिक तड़बामे चक्र चिह्न स्पष्ट अभरल अछि। आब ओ नहि देखाइत अछि। जँ एहिसँ पूर्वमे कोनो विद्वान् वा पुराविद् केर नजरि पड़ल रहैत तखन संभव जे एहि भग्नावशेष विषयक किछु आर विशिष्ट जानकारी भेटैत। ई संभव नहि भेल। श्री विकास वैभवजीक यात्रा वृत्तान्तमे उपलब्ध चित्र आ वर्तमान चित्र सभमे जे फर्क अछि ओ महत्त्वपूर्ण अछि। ओ एक आर खंडित शिलाक चित्र देने छथि जेकर निचला भाग केर बनावट ओहने अछि जेहन अखन वर्तमान खंडित शिलाक अछि। सूक्ष्मतापूर्वक देखलासँ निर्धारित होइछ जे दुनू अलग-अलग शिलाखंड अछि। एहि शिलाखंडपर उत्कीर्ण प्रतिमा सभमे एक शिशु केर प्रतिमा बाँचल अछि। सूक्ष्मतापूर्वक देखलासँ यैह खंडित शिलाखंड महादेव विषयक लगैत अछि। बाँचल बालमूर्त्ति कुमार कार्तिक (स्कन्द) केर लगैछ। दोसर कात जे एक

चरण आ दोसर पएर केर चित्र बाँचल अछि से गणपति छथि। भग्नावशेष केर नीचाँमे एक पात्रमे छओ टा मोदक स्पष्ट देखाइत अछि। एकर दोसर कात उत्कीर्ण मूस केर आकृति अखनो सुरक्षित अछि। कमल केर आसनपर एक चरणचिह्न बाँचल अछि। संभव जे एतऽ भगवान् शंकर होथि जनिक एक चरण मात्र बाँचल हो। दोसर कात भगवती पार्वती सुशोभित होथि। तिलकेश्वर शिलालेखमे जे श्रीशंकर द्वारा शंकर स्थान निर्माणक बात आएल अछि ओहिसँ ई भान होइत अछि जे एहि शिलाखंडपर निर्मित शिव, पार्वती, कार्तिक आ गणपति केर प्रतिमा एहि ठामक मूल प्रतिमा छल। दोसर भग्नावशेष रूपमे उद्धृत महिषासुर मर्दिनीक मूर्त्ति सेहो स्थापित छल। श्री विकास वैभवजी अन्य भग्नावशेष सभक चित्र सेहो देने छथि जे आब मन्दिर परिसरमे उपलब्ध नहि अछि। हुनक किछु चित्र सभक साभार उपयोग कयलहुँ अछि ताकि 2011 ई.सँ 2023 ई. धरि एहि स्थानमे आएल परिवर्तन स्पष्ट भऽ सकए। अनेकश: आभार श्रीमान् विकास वैभवजी!

बसहा लऽग राखल खंडित प्रतिमामे सिंह आकृति केर सामने असियुक्त असुरराज ठाढ़ लगैत छथि। ओतहि भैंसाक मुण्ड आकृति सेहो अछि। लगैत अछि जे ई खंडित प्रतिमा महिषासुर मर्दिनीक मूर्त्ति रहल होयत। एकरो निर्माण करिया पाथरसँ भेल अछि। एहि खंडित प्रतिमाक पार्श्वमे एक गजराज केर आकर्षक चित्र उकेरित अछि। एकर सटल एक आभूषण युक्त चरणचिह्न सेहो उत्कीर्ण अछि। गजराजक नीचाँ एक पुरुष आकृति ध्यान-मग्न बैसल छथि। एहि सीधमे दोसर कात सेहो एक पुरुष आकृति उत्कीर्ण अछि। एहि खंडित प्रतिमाक बाँचल भागमे यत्र-तत्र आभूषणादिसँ कर्णाटकालीन मूर्त्तिकला केर बारीक चित्रण भेल अछि मुदा हतभाग्य जे एहन भाग कम्मे बचि सकल अछि। प्रतिमा ध्वंसक कसाई केर क्रूरताक कथा कहैत अछि क्षत-विक्षत भेल मूर्त्ति एवं ओकर आन्तरिक आक्रोश केर निशान एहि खंडित मूर्त्ति केर अवशेषपर सर्वत्र देखाइत अछि। पता नहि के छल ओ विधर्मी! मन्दिर एवं शिलालेख केर कालखंडपर विचार करब सेहो उचित।

हाबीडीह शिलालेखमे उल्लिखित अब्द नेत्र (2), शशांक (1), पक्ष (2)सँ लक्ष्मण संवत् 212 अर्थात् 1119+212 = 1331 ई. अबैत अछि। प्रो. राधाकृष्ण चौधरीजी द्वारा देल विवरणीक अनुसार लक्ष्मण संवत् 212 अर्थात् 1331 ई.क हावीडीह शिलालेख अछि। आगू डॉ. चौधरी मानैत छथि जे हावीडीह आ तिलकेश्वर केर शिलालेख कर्मादित्यसँ जुड़ल अछि। तिलकेश्वर शिलालेखमे अखनो 1258 शक् संवत् अर्थात् 1336 ई. आ कर्मादित्य केर नाम स्पष्ट रूपसँ

पठनीय अछि। कर्मादित्य प्राय: कर्णाट राजा रामसिंह देव केर मंत्री रूपमे सर्वमान्य छथि। कर्णाट राजा रामसिंह देव केर समय 1227-1285 ई. प्राय: मान्य अछि। हिनके समय तिब्बती यात्री धर्मस्वामिन् 1234-36मे तिरहुत केर यात्रा नेपालसँ बोधगया जाइत-अबैत काल कएने छलाह। रामसिंह देवक जन्म 8 मार्च 1188 ई. नेपालक वंशावलीसँ आकलित अछि। ओना लुसियानो पितेक (Medieval History of Nepal, p 53ff एवं 194) केर आधारपर प्रो. राधाकृष्ण चौधरी रामसिंह देवक जन्म 1183 ई. आ धर्मस्वामिन् केर रोएरिक कृत जीवनीक अनुवाद केर आधारपर हुनक राज्यारोहण 1227 ई.मे मानने छथि (Political and Cultural Heritage of Mithila, ISBN 9789383647071, पृष्ठ 102)। रामसिंह देवक शासन प्राय: 58 वर्षक छल। रामसिंह देवक पिता नरसिंह देव (1188-1227)क उत्तरार्द्धमे सेहो कर्मादित्य मंत्री छलाह। संभव जे रामसिंह देव केर अवसानोत्तर कर्मादित्य जीविते होथि। रामसिंह देवक समय 1227मे जँ कर्मादित्यकेँ पच्चीसो वर्षक मानी तखन एहि तिलकेश्वर शिलालेखक समय 1336 ई.मे कर्मादित्यक उपस्थितिसँ हुनक आयु कमसँ कम 134 वर्ष (1227-25= 1202, 1336-1202 = 134) मानए पड़त। कालदोष एक बेर फेर ठाढ़ होइत अछि। मुदा जँ तिलकेश्वर स्थान शिलालेख केर सूक्ष्म अनुशीलन करी तखन ई कालदोष नहि अभरत। शिलालेखमे शक संवत् 1258 अर्थात् 1336 ई. अंकित अछि। हावीडीह शिलालेखकेँ आकलन करी तखन ओकर समय ल.सं. 212 अर्थात् 212+1119 = 1331 ई. अबैत छैक। तिलकेश्वर शिलालेखमे ई कतहु नहि अभरल अछि जे कर्मादित्य एकर स्थापना कएलनि। तिलकेश्वर शिलालेखमे एहि शिवमण्डपकेँ पूर्ण करबाक श्रेय श्री शंकरकेँ देल गेल अछि। उल्लेखनीय अछि जे कर्मादित्य केर एहि वंश परम्परामे क्रमश: देवादित्य, धीरेश्वर आ वीरेश्वर भेलाह। वीरेश्वर सुत सप्तरत्नाकरकार चण्डेश्वर महाकवि विद्यापतिक पितामहभ्राता छलाह। इहो उल्लेखनीय अछि जे कर्मादित्य अत्यन्त ज्ञानी छलाह। हुनक कीर्त्ति केर उल्लेख दुनू शिलालेखमे भेल अछि। एहन उल्लेख हुनक अवसानोत्तर सेहो कएल जा सकैछ। तेँ एहि शिलालेखसँ कोनो प्रकारक कालदोष नहि अभरैत अछि। ई संभव अछि जे सौभाग्य देवी कर्णाट राजा हरिसिंह देवक नेपाल पलायन केर बादो जीवित होथि वा इहो कहल जा सकैछ जे हरिसिंह देवकेँ नेपाल पलायन कएलाक बादो भारतीय मिथिलामे सेहो कर्णाट राजवंश एहि स्थितिमे अवश्य छल जे मन्दिर-मठ आदि केर निर्माण करा सकए। प्रो. राधाकृष्ण चौधरी कर्णाट राजा रामराजक समय मधुसूदन

ठाकुर केर कण्टकोद्धारक पुष्पिकाक आधारपर कहैत छथि जे हरिसिंह देवक पलायन बाद उत्पन्न अराजक स्थिति आ ओइनवार कुल केर शासन समाप्तिक बाद उत्पन्न स्थितिमे कर्णाट लोकनि मिथिलाक स्वतंत्रताक लेल संघर्षरत छलाह। कण्टकोद्धारक पुष्पिकामे उल्लेख अछि— इति महाराजाधिराज कर्णाट चक्रवर्ती भुजबलभीम समस्त दिग्विजयार्जित समस्त सन्तोष निखिल भूमण्डल श्रीरामराज कारितायां महामहोपाध्याय समृपकुर श्री मधुसूदन कृतावनुमान लोक कण्टकोद्धार: सम्पूर्णमिति। ल.सं. 529 फाल्गुन शुक्लाष्टम्यांमध्ययनशलिना श्री भूदेव शर्मा भौरग्रामेऽपूरीय मिति (प्रो. राधाकृष्ण चौधरी कृत मिथिलाक इतिहास, विदेह, सम्पा. श्री गजेन्द्र ठाकुर, अंक 48, 15 दिसम्बर 2009, पृष्ठ 38पर उल्लिखित)।
एहिमे उल्लिखित समय ल. सं. 529 अर्थात् 1648 ई. अबैत अछि। स्पष्ट अछि जे ओइनिवार वंशक सत्ता केर समाप्तिक बाद उत्पन्न अराजकताक स्थितिमे पुन: कर्णाट सभ अपन सत्ता लेल प्रयासरत छलाह। इहो स्पष्ट अछि जे मिथिलामे 17म शताब्दीमे सेहो कर्णाट सभक अस्तित्व छल भले हुनका सभक क्षेत्र अत्यंत संकुचित रहल हो। किछु एहने स्थिति तिलकेश्वर क्षेत्रमे रहल हो एवं कर्णाट सभक राजपाट वा प्रभुता तिलकेश्वर क्षेत्रमे बाँचल हो जखन 1331-36 ई. मध्य श्रीशंकर एतऽ तिलकेश्वर नाथ महादेव स्थानक निर्माण रानी सौभाग्य देवी एवं मंत्री कर्मादित्यक स्मृतिमे करओने होथि। एहि शिलालेखमे उत्कीर्ण भाव (पुत्र, प्रजा आर सम्पत्ति हेतु विघ्ननाशक भगवान् सँ कएल गेल प्रार्थना) किछु एहने संकेत करैत अछि। कमसँ कम वर्तमानमे उपलब्ध तिलकेश्वर स्थान केर शिलालेख आधारेँ एतेक तऽ निश्चित रूपसँ कहल जा सकैछ।

तिलकेश्वरधाम बाढ़ि प्रभावित क्षेत्र अछि। आवागमन केर संसाधन नीक नहि छल तेँ कुशेश्वरस्थान जकाँ प्रशस्त नहि भेल छल। तथापि प्रत्येक पावनि-तिहारमे भारी मेला लगैत अछि। महाशिवरात्रिमे परोपट्टाक लोक दर्शनार्थ उनटि जाइत छथि। अदौ कालसँ एतऽ केर एक पक्षक कमला मेला नामी रहल अछि। पंद्रह दिन बादो मेला समाप्त नहि होइत अछि आ सामान सभक विक्री होइते रहैत अछि। माघ शुक्ल पूर्णिमाकेँ (एहि बेर 5 फरवरीकेँ) ई मेला लगैत अछि। एहिमे कुश्ती आ घोड़दौड़ प्रमुख आकर्षण केर केन्द्र रहैत अछि। मेलाक तीन दिवसीय दंगलमे नेपाल, पंजाब, हरियाणा, महाराष्ट्र आदि ठामक पहलवान सभक जुटान होइत अछि। मिथिलाक पहलवान सभ सेहो एहि कुश्तीमे भाग लैत छथि। अयोध्याधामक केशव दास एकर व्यवस्था देखैत छथि। एहि मेलामे घोड़ाक रेस

अद्भुत होइत अछि। इलाका भरिक लोकसभ अपन बड़का-बड़का घोड़ा लऽ उत्साहपूर्वक एहि रेसमे भाग लैत छथि। कुश्ती आ घोड़दौड़ केर विजेता सभकेँ चानीक तगमा, गदा, नकद आदि सम्मान-पुरस्कार भेटैछ। एहि ठामक विशिष्ट बात अछि जे जन-सामान्य सेहो विजेता पहलवानकेँ एतेक टाका चढ़ा दैत अछि जे ढाकी भरि जाइत अछि। सुगम आवागमन लेल पुल-पुलिया सहित पक्की सड़क केर निर्माण अंतिम चरणमे छल। एकर बाद ई क्षेत्र बेस प्रशस्त होयत। हमरा सभकेँ कुञ्ज भवन गामक श्री राजो सदा आ श्री रमाकान्त सदा मनोयोगपूर्वक सत्कार कएलनि आ बहुत रास जानकारी देलनि। दुनू माम-भागिनकेँ धन्यवाद दैत हमसभ तिलकेश्वरधामसँ विदा भऽ गेलहुँ।

['मैथिल पुनर्जागरण प्रकाश', 30 मई 2023]

सिल्डा यात्राक बहन्ने खुदीरामक स्मरण

30 अप्रैल! ई वैह दिन अछि जहिया मुजफ्फरपुरक जिला एवं सत्र न्यायाधीश डगलस एच किंग्सफोर्डकेँ बग्घीमे सवार मानि दू अग्निपुत्र खुदीराम आ प्रफुल्ल चन्द्र चाकी राति लगभग साढ़े आठ बजे अंग्रेजी सत्तापर बमप्रहार कयने छलाह। ई किंग्सफोर्ड वैह प्रेसीडेंसी मजिस्ट्रेट (1904-मार्च 1908) छलाह जे स्वतंत्रता आन्दोलन अभियानमे लागल क्रान्तिकारी सभकेँ क्रूर दण्ड देबाक लेल कुख्यात छल। वन्दे मातरम् केर सम्पादक अरविन्दो घोषकेँ किंग्सफोर्ड एकदम नापसन्द करैत छल किएक तऽ एहिमे अंग्रेज सभक बर्बरता आ कारस्तानी सभक समाचार छपैत छल। यैह हाल युगान्तर आ सन्ध्या केर छल। अरविन्दोकेँ एक दिन गिरफ्तार कयल गेल। सुनवाई यैह किंग्सफोर्ड करैत छल। विपिनचन्द्र पालकेँ गवाहीक लेल बजाओल गेल छल। ओ एहन गवाहीपर आपत्ति प्रकट कयलनि तखन किंग्सफोर्ड हुनका छओ मासक सजा दऽ देलक। अकारण देल सजासँ भीड़ उग्र भऽ गेल। लाठीचार्ज भेल। अराजकता पसरि गेल। सुशील सेन एक सार्जेंटकेँ नाकपर मुक्का मारि खसा देलनि मुदा किंग्सफोर्ड भागि गेल। सुशील सेनकेँ 15 बैंतक सजा देल गेल आ प्रत्येक बैंतपर सुशीलकेँ वन्दे मातरम् केर जयघोष बहुत चर्चित भेल छल। सन्ध्या पत्र केर सम्पादक ब्रह्म बान्धव उपाध्याय किंग्सफोर्डकेँ 'कसाइ काजी' केर उपाधि देलनि। युगान्तर समिति निर्णय लेलक जे एहि क्रूर किंग्सफोर्डक कत्ल कहुना कयल जाय। हेमचन्द्र जुलाई 1906मे फ्रांस जा रूसी अतिवादी निकोलस सफ्रैंस्कीसँ बम केर तकनीकी ज्ञान सीखने छलाह। हेमचन्द्र कानूनगो/परेश मल्लिक हर्बर्ट ब्रूमक 1075 पृष्ठक पोथी A Commentary on the Common Law Designed as Introductory to its Studyक 600 पृष्ठकेँ काटि ओहिमे पिक्रीक एसिड आ अन्य विस्फोटक पदार्थ भरि स्प्रिंग, कमानी, ट्रिगर लगा पोथी बम तैयार कयलनि आ किंग्सफोर्डकेँ डाकसँ ई पार्सल बम पठा देलनि।

संयोगसँ किंग्सफोर्ड एकरा तखन नहि खोलि आलमारीमे राखि देलनि जे बादमे हुनक सामान सभक संग मुजफ्फरपुर आबि गेल। मेजर मुस्प्रति विलियम, मुख्य विस्फोटक निरीक्षक बहुत बादमे 24 फरवरी 1909कँ पोथी बमकँ मुजफ्फरपुरसँ कलकत्ता आनलनि। कलकत्ता पुलिस कमिश्नर फ्रेडरिक एल हैलिडेक आवासपर एकरा निष्क्रिय कयल गेल।

किंग्सफोर्डकँ सुरधाम पठयबाक क्रान्तिकारी सभक योजनाक पता सरकारकँ लागि गेल छल। मार्चमे किंग्सफोर्डकँ जिला जज बना मुजफ्फरपुर पठा देल गेल।

20 अप्रैल 1908कँ कलकत्ता पुलिस कमिश्नर एसपी, मुजफ्फरपुरकँ पत्र देलनि जे किंग्सफोर्डक सुरक्षा व्यवस्था दृढ़ कयल जाय। दू सिपाही तहसीलदार खाँ आ फैजाउद्दीनकँ अतिरिक्त रूपमे किंग्सफोर्डक सुरक्षामे लगाओल गेल। ओम्हर कलकत्तामे सत्येन्द्रनाथ, हेमचन्द्र आदि अग्निपुत्र ओकर काल तैयार करैत छलाह। खुदीराम आ प्रफुल्ल चाकीक एहि पुनीत काजक लेल चयन भेल। बादमे एहि वादमे धर्मशालाक कर्मी खेमन आ रामधारी मिसरक बयान भेल छल जे दुनू बंगाली युवक 10-11 अप्रैल 1908कँ मुजफ्फरपुर आबि मोतीझीलमे अवस्थित किशोरी मोहन धर्मशालामे आश्रय लेने छलाह। एक गवाह केशवलाल चटर्जीक दावी छल जे ओ 10 अप्रैलकँ खुदीरामकँ सिकन्दरपुर मैदानमे देखने रहय। स्पष्ट अछि जे दुनू नरपुङ्गव मुजफ्फरपुर 10 अप्रैलकँ आबि गेल छलाह। दुनू अग्निपुत्र किंग्सफोर्डक गतिविधिक अध्ययन कयलनि। अदालत, आवास आ यूरोपियन क्लब सभक जानकारी लेलनि। अदालत आ आवासकँ बमप्रहारक लेल उपयुक्त नहि मानल गेल तखन निर्णय भेल जे साँझमे क्लब जाइत-अबैत काल किंग्सफोर्डकँ यमलोक पहुँचा देल जाय। 30 अप्रैलक तिथि तय भेल। दुनू सड़कपर तैयार भेल किंग्सफोर्डक विक्टोरियन बग्घीकँ क्लबसँ बाहर अयबाक प्रतीक्षा करैत छलाह। जज किंग्सफोर्ड आ अंग्रेज वकील प्रिंग्लै कनेडीक बग्घीमे बहुत समानता छल तेँ क्रान्तिकारी सभकँ भ्रम भेल। बग्घीकँ क्लबसँ निकलि किंग्सफोर्डक आवास दिशि बढ़ैत देखि दुनू बम चला देलनि। ओहि बग्घीमे वकील प्रिंगले कैनेडीक पत्नी आ बेटी छलीह। बमप्रहारसँ वकील कैनेडीक बग्घी क्षत-विक्षत भऽ गेल। घायल सभकँ जिला जजक आवासपर आनल गेल। कैनेडीक पुत्री ग्रेस कैनेडी घंटा भरिमे मरि गेलीह आ दि. 2.5.1908क भोरमे श्रीमती कैनेडी प्राण त्यागि देलनि। कर्नल ग्रेवियर IMS गवाही देलनि जे दुनू बमप्रहारसँ मुइलीह। बग्घी केर कोचमैन कालीराम आ सईस संगत दुसाध सेहो घायल भेल छल।

दुनू अग्निपुत्र मुजफ्फरपुरसँ रेललाइन पकड़ि भरि राति पैदल चलैत भोरमे वैनी स्टेशन लग जीतू हलवाई केर दोकानसँ मुरही लऽ पानि पीबाक उदेशमे छलाह। फतेह सिंह आ शिव प्रसाद सिंह नामक दू सिपाही दोकानपर चर्चा करैत छल जे किंग्सफोर्ड बचि गेल। आश्चर्यचकित खुदीरामक मुहसँ बहरा गेल— अँय बचे गेलो! दुनू सिपाहीकेँ सन्देह भेल आ मिलिकेँ खुदीरामकेँ पकड़ि लेलक। चाकी ससरि गेलाह। केहरि शिशु खुदीरामकेँ स्टेशनक प्रतीक्षालयमे राखल गेल। केहरि शिशुकेँ देखबाक लेल भीड़ उमड़ि पड़ल। भय छल जे जुटल भीड़ आक्रमण कऽ खुदीरामकेँ छोड़ा नहि ले। सभकेँ सूचना देल गेल। मुजफ्फरपुरक कलक्टर वूडमैन एसपी मुजफ्फरपुर मि. आर्मस्ट्रांगकेँ विशेष गाड़ीमे वैनी स्टेशन पठओलनि। भीड़ नायक जकाँ खुदीरामकेँ विदा कयलक। मुजफ्फरपुर स्टेशनपर जमा भेल भारी भीड़ नरश्रेष्ठ खुदीरामक स्वागत महानायक रूपमे कयलक। खुदीराम जखन वन्दे मातरम् केर जयघोष कयलनि तखन प्रत्युत्तरमे भीड़ द्वारा गगनभेदी वन्दे मातरम् केर जयनाद भेल। कलक्टर, मुजफ्फरपुर वूडमैनक समक्ष खुदीराम वीरतापूर्वक स्वीकार कयलनि जे ओ आ दिनेशचन्द्र राय (प्रफुल्ल चन्द्र चाकी) कलकत्तासँ किंग्सफोर्डक हत्या करबाक लेल आबि बमप्रहार कयलनि। धारा 302मे वाद दर्ज भेल आ 1.5.1908केँ वारंट निर्गत भेल छल। चाकीक मृत शरीर जखन कलक्टर वूडमैनक समक्ष खुदीरामकेँ देखाओल गेल तखन ओ दिनेश रूपमे हुनका चीन्हलनि। चाकी कहुना समस्तीपुर अयलाह। हुनका रेलकर्मी त्रिगुण चरण घोष अपना ओतऽ रखलनि। भोरमे नव वस्त्र आ जुत्ता पहिरा हुनका हावड़ाक लेल विदा कयलनि। मोकामा स्टेशनपर नन्दलाल बनर्जीक कारणेँ चाकी आत्मोत्सर्ग कयलनि। हिनक पार्थिव देह मुजफ्फरपुर आनल गेल। रस्तामे बरौनी जंक्शनपर सिपाही तहसीलदार खाँ आ फैयाजुद्दीन हिनकर पहिचान मुजफ्फरपुरमे क्लबक लगपासमे बौआइत दू युवकमेसँ एक युवक रूपमे कयलनि। प्रफुल्ल चाकीक मृत शरीरक पयरमे मुजफ्फरपुर घटनास्थलसँ प्राप्त जुत्ताक नाप 3.5.1908केँ सिपाही मोहम्मद जमीरुल हुसैन लेने रहय। बाढ़ अनुमंडलक तत्कालीन एसडीएम ज्योतिष चन्द्र सेन, मुजफ्फरपुर एसपी आर्मस्ट्रांग, मुजफ्फरपुरक कलक्टर वूडमैन, सत्र न्यायाधीश किंग्सफोर्ड सहित कुल 24 गवाहक गवाही भेल। एडीजे एच डब्ल्यू सी कॉर्नडफ केर अदालतमे वाद शुरू भेल। 13 जून 1908केँ न्याय करबाक नाटक करैत कॉर्नडफ खुदीरामकेँ फाँसीक सजा सुना देलक। उच्च न्यायालयमे अपील भेल आ 13 जुलाई 1908केँ सी एम डब्ल्यू ब्रेट आ ए ई रीब्स केर अदालत अपील खारिज कयलनि आ 11 अगस्त 1908क भिनसरबेमे मुजफ्फरपुर केन्द्रीय कारामे खुदीरामकेँ फाँसी दऽ देल गेल।

आजुक दिन सिल्डा आबि चौक लग लागल स्वतन्त्रता संग्रामक अमर सेनानी अग्निपुत्र खुदीरामक प्रतिमाक लोकार्पण लेल अनुरोध सिल्डावासी श्री प्रकाश हालधर कयने छलाह। प्रकाशजी खुदीरामक अनन्य उपासक छथि आ जँ कही जे हुनकामे खुदीरामक आत्माक वास अछि तखन कोनो अत्युक्ति नहि होयत। साधारण विभव केर लोक मुदा जीवन-यापन लेल आवश्यक सभ काज खुदीरामक नामसँ करैत छथि। शहीद खुदीराम बोस स्मृति विद्यालय, कदमासुली, सिल्डामे नेना सभकेँ नि:शुल्क शिक्षा दैत छथि। खुदीरामक नामपर एक विद्यालय बेलपहाड़ीमे सेहो चलबैत छथि। शहीद खुदीराम बोस स्मृति विद्यालय, सिल्डामे पैघ छात्रावास सेहो चलैत अछि। शहीद खुदीराम स्मृति समाज कल्याण संस्थान, सिल्डा समारोहपूर्वक प्रतिमाक अनावरण कार्यक्रम रखने छल। सचिव श्री प्रकाश कुमार हालधर, सलाहकार समितिक प्रमुख श्री सुब्रतो भट्टाचार्य, सदस्यगण सर्वश्री विपुल मल्लिक, संदीप चक्रवर्ती, रविशंकर महाता, सौगत राणा आ श्रीमती तनुश्री पाल सब जतनपूर्वक पण्डाल, रोशनी, स्टेज, सजावट आदिक तैयारी तऽ नीक कयने छलाह मुदा एकाएक उठल भारी आँधी-तूफान सब व्यस्थाकेँ उधिया देलक। कार्यक्रम बनल छल जे विभिन्न गीत-नृत्य सभक कार्यक्रम चलत आ साढ़े आठ बजे (जाहि समय खुदीराम आ चाकी आजुक दिन 1908 ई. कैँ मुजफ्फरपुर क्लबसँ बहराइत बग्घीपर सवारकेँ किंग्सफोर्ड मानि बम प्रहार कयने छलाह) प्रतिमाक अनावरण करैत कार्यक्रम सम्पन्न कयल जाय। मुदा प्रकृतिकेँ ई स्वीकार्य नहि छल आ साँझमे भयंकर आँधी-तूफान आबि गेल। प्रकृति सेहो जेना ओहि समयक प्रतीक्षा करैत छल। ठीक सबा आठ बजेक लगभग सब किछु सामान्य भऽ गेल। बरखा-बुन्नी आ आँधी-तूफान शान्त भऽ गेल। छिन्न-भिन्न भेल विद्युत व्यवस्था बहाल भऽ गेल, वातावरण से अत्यंत रम्य भऽ गेल। हम सभास्थल अयलहुँ। ओतऽ पुष्प-चन्दन-अंगवस्त्रम् आदिसँ स्वागत भेल आ गगनभेदी जय-जयकाराक मध्य साढ़े आठ बजे अग्निपुत्र खुदीरामक प्रतिमाक अनावरणसँ कार्यक्रम शुरू भेल। लब्धप्रतिष्ठ समाजसेवी सुब्रतो भट्टाचार्यजी संग खुदीरामक प्रतिमाक अनावरण करब हमरो मुदित कयलक। एहि आमंत्रणकेँ अपन सौभाग्य मानैत छी हम। मिथिलाक पारम्परिक परिधान धोती-कुरता आ पाग-डोपटा धारण कयने जखन खुदीरामक प्रतिमाक लोकार्पण कयलहुँ तखन बंगालक मिदनापुर, बिहारक मुजफ्फरपुर आ बैनी (समस्तीपुर)क खुदिरासँ सम्बन्ध जेना साकार भऽ उठल हो। उपस्थित जनसमूह सेहो एकर लक्ष्य आ सराहना कयलनि।

गीत-संगीत आ नृत्य केर भावपूर्ण प्रस्तुति भेल। एक बार विदाइ दे मा घूरे आसी केर विलक्षण प्रस्तुति जखन अदिति चक्रवर्तीक समूह प्रस्तुत कयलक तखन भावविह्वल कऽ देलक। एहि गीतक पाँती—

दश मास दश दिन पोरे
जन्म नेबो मासिर घरे, मा गो
तखन यदि न चीन्हते पारिस
देखिब गोलाय फाँसी
एक बार विदाइ दे मा, घूरे आसी

केर एहन भावप्रवण प्रस्तुतिपर सभक आँखि नोरा गेल छल। एहि अद्‌भुत गीतक गीतकार रूपमे काजी नजरूल इस्लाम, पीताम्बर दास आ मुकुन्द दासक नाम अबैत अछि। विश्व वाङ्मय केर ई अद्‌भुत घटना थिक जे एकाधिक कविकेँ एकर गीतकार मानल गेल। ओना बेसी शोध विद्वान् पीताम्बर दासकेँ एहि अमर गीतक गीतकार रूपमे मानैत छथि। बहुत शोधप्रज्ञ मुकुन्द दासकेँ आ किछु गोटे काजी नजरूल इस्लामकेँ सेहो। सत्य जे हो, अछि ई विलक्षण गीत! संभव जे तीनू गोटे कोनो-कोनो अन्तरा लिखने होथि। कहल जाइत अछि जे मुकुन्द दास, पीताम्बर दास, रवीन्द्रनाथ टैगोर आ काजी नजरूल इस्लाम आदि एहि गीतक पाठ करैत सभामे भाव-विह्वल भऽ जाइत छलाह। तेँ हुनका सभक नाम एहि गीतसँ जुड़ल। ओना ई सत्य अछि जे सम्पूर्ण बंगालमे एहि एक गीतपर जतेक नोर बहल अछि ओतेक कोनो आन गीतपर नहि। सम्पूर्ण देशमे ई गीत देशक लेल तप-त्याग-बलिदानक पर्याय बनल आ लोकप्रियताक नव प्रतिमान स्थापित कयलक। ई गीत 11 अगस्तकेँ भोरे-भोर खुदीरामकेँ मुजफ्फरपुर जेलमे फाँसी देलाक बाद लिखल गेल छल। एहिना मिदनापुरक बुनकर सभ खुदीराम नामयुक्त पाढ़िवला खुदीरामी धोती बुनलनि जेकरा धारण करब गौरव केर बात मानल जाइत छल। खुदीरामक जन्म 3 दिसम्बर 1889केँ मिदनापुरक हबीबपुरमे पिता त्रैलोक्यनाथ बोस आ माता लक्ष्मीप्रियाक घरमे भेल छल। ओना किछु गोटे हिनक पैतृक गाम महोबनीमे हिनक जन्मस्थानक दावी सेहो करैत छथि। पूर्वमे दू अग्रजकेँ अकाल काल-कवलित होयबाक कारणेँ एक टोटमा-टोटका स्वरूप तीन मुट्ठी खुद्‌दी (एहि कारणेँ खुदीरामक नामकरण) लऽ दीदी अपरूपाक हाथेँ खुदीरामकेँ बेचि देल गेल। तखन दीदी अपरूपा सोचने नहि होयतीह जे तीन मुट्ठी खुद्‌दीसँ ओ त्रिलोकक यश आ अक्षय आयु कीनि रहल छथि। यावच्चन्द्र दिवाकरो भारतवर्ष

रहत, जाधरि भारतवर्ष रहत खुदीरामक नाम रहत आ ताबत धरि छठम बरखमे मातृहीन आ सातम बरखमे पितृहीन खुदीरामकेँ माए-बाप बनि पोसनिहारि दीदी अपरूपाक नाम अमर रहत। अरविन्द घोष आ सिस्टर निवेदिताक व्याख्यान सभक बहुत प्रभाव खुदीरामपर पड़ल छल। 1906मे जखन मिदनापुरक कलक्टर डी. वेस्टन मराठा फोर्टमे कला प्रदर्शनीक समापन समारोहमे पुरस्कार बाँटि रहल छल तखन बाहर खुदीराम वन्दे मातरम् केर पर्चा बाँटि रहल छलाह। शिक्षक रामचरण सेन मना कयलनि आ एक सिपाही खुदीरामकेँ पकड़ि लेलक। तखन खुदीराम ओकर नाकपर मुक्का मारि पड़ा गेलाह। फेर गिरफ्तारीक बाद जखन हुनक रिहाइ भेल तखन मिदनापुरक युवक सब हुनका बग्घीपर बैसा हुनकर बग्घीकेँ स्वयं घिचैत पूरा मिदनापुर घुमओलक। शिक्षक रामचरण सेनकेँ बजा ठोकाइ भेल। खुदीरामक जनप्रियता एहिसँ अकानि सेहो सकैत छी जे बमप्रहारक निन्दा करबाक कारणेँ महात्मा गाँधी तककेँ भारी आक्रोश आ निन्दाक सामना करए पड़ल छल। लोकमान्य तिलक एहि पुरुषार्थ केर प्रशंसा करैत केसरी पत्रमे लिखलनि तखन हुनको गिरफ्तारी भेल। मुजफ्फरपुरमे 11 अगस्त 1908केँ भोरे-भोर फाँसी देल गेल। हुनक अंतिम यात्रामे अपूर्व भीड़ छल। अंतिम संस्कारक बाद खुदीरामक चिता भस्म सुरक्षित राखबाक लेल उपस्थित जन-समुदायमे प्रतिस्पर्धात्मक छीना-झपटी भेल छल। आमजन द्वारा प्रदर्शित ई अपूर्व सम्मान राष्ट्रपिता बापू तककेँ नहि भेटि सकल छल।

प्रफुल्ल चन्द्र चाकी (जन्मस्थान बीहड़, सम्प्रति बांग्लादेश, 10 दिसम्बर 1888, शीशोत्सर्ग 2 मई 1908, मोकामा, बिहार) पुलिस सब इन्सपेक्टर नन्दलाल बनर्जीक कारणेँ मोकामा स्टेशनपर स्वयंकेँ गोली मारि भारतमाताक श्रीचरणमे अपन शीश चढ़ा आत्मोत्सर्ग कयलनि। नन्दलाल बनर्जीकेँ मुजफ्फरपुरमे दरबार लगा 10 मई 1908केँ 1000/क पुरस्कार अवश्य भेटल मुदा 9 नवम्बर 1908केँ श्रीशचन्द्र पाल आ रानेन्द्रनाथ गांगुली कलकत्ताक सेंट जेम्स पार्क केर दक्षिण-पश्चिम कोनामे गोलीसँ नन्दलालकेँ सुरधाम पठा चाकीकेँ रक्त तर्पण कयलनि।

समारोहमे सुप्रसिद्ध बाँग्ला कवयित्री मोहिनी डे केर अमर रचना 'मुक्तिर मन्दिर सुपन तले कत प्राण होलो बलिदान' एक बच्ची सुदेष्णा राणा द्वारा गाओल गेल। ई अत्यन्त मर्मस्पर्शी छल। तृणा मंडल केर प्रस्तुति सेहो विलक्षण छल। सिल्डा सन छोट जगहमे देशभक्ति परक एहन उच्च स्तरीय कार्यक्रम सरिपहुँ भावविभोर कऽ देलक। अपन उद्‌बोधनमे हम पंचगौड़, मिथिला-बंगाल सम्बन्ध, स्वाधीनता संग्राममे बिहार-बंगालक अवदान, अग्निपंथा क्रान्तिकारी आ अहिंसाक पुजारीक सम्बन्धादिपर प्रकाश देलहुँ।

पहिने एकटा लाल मुरेठावला सिपाहीकेँ गाम पहुँचैत देरी गाम खाली भऽ जाइत छल। ई अग्निपुत्रे सभ द्वारा प्रदर्शित अंग्रेज पदाधिकारी सभक निरादर आ हत्याक परिणाम छल जे अंग्रेज सभक मिथ्या श्वेत रक्त आ दैवीय सिद्धान्त ध्वस्त भेल। अंग्रेज सभक मिथ्या प्रभामंडल समाप्त भेलासँ जनसमुदायकेँ विश्वास भेलै जे अंग्रेज सभ कोनो दैवी वा विशिष्ट शक्ति नहि रखैत अछि। एहि भाव केर उदय होयबाक कारणेँ आमजन स्वतंत्रताक आन्दोलनमे निधोख भाग लेलनि। 7 अप्रैल 1931केँ मिदनापुरक कलक्टर जेम्स पैडीक हत्या विमल दासगुप्ता आ जीवन ज्योति घोष कयलनि। 30 अप्रैल 1932 ई.केँ मिदनापुरक दोसर कलक्टर राबर्ट डगलसकेँ प्रद्योत भट्टाचार्य आ प्रभांशु मारिकेँ खसा देलनि। कोनो अंग्रेज मिदनापुरक कलक्टर बनबाक लेल तैयार नहि छल। ई छल अग्निपुत्र सभक प्रभाव! कतेक कहला-सुनलापर बर्नार्ड ई जे बर्ग तैयार भेल मुदा हुनको 2 सितंबर 1933केँ अनत बंधु पंजा आ मृगेण दत्त परलोक पठा देलनि। क्रान्तिकारी सभक स्वतंत्र शक्तिक एहसास एहिसँ होइत अछि जे फेर कोनो अंग्रेज मिदनापुरक कलक्टर बनबा लेल तैयार नहि भेल। 7 अप्रैल 1931सँ स्वतंत्रता प्राप्ति धरि जिला भारतीय पदाधिकारीक प्रभारेमे रहल। आजादीक बादे एतऽ नियमित जिला पदाधिकारीक पदस्थापना भेल। ई छल अग्निपुत्र सभक स्वतंत्र सत्ता! बापूक स्वतंत्रता आन्दोलनमे आगमनसँ पूर्व यैह अग्निपुत्र सभक प्रभाव छल जे आमजन अंग्रेज सभक विशेष दैवीय शक्तिक सिद्धान्तसँ मुक्त भेल आ स्वतंत्रताक आन्दोलन गति धयलक। जे केओ एहि अग्निपुत्र सभक कृत्यकेँ आतंकी कृत्य कहैत छथि हुनकर आँखि खोलबाक लेल असंख्य प्रसंगसँ मात्र किछु प्रसंगक चर्च करैत छी।

i) कलकत्ताक पुलिस कमिश्नर चार्ल्स आगस्टस टेगर्ट मानि 12 जनवरी 1924केँ गोपीनाथ साहा (फाँसी 1 मार्च 1924) द्वारा अर्नेस्ट डे केर हत्याक आरोपमे बन्द गोपीनाथक काल कोठरीक देवालपर कोयलासँ लिखल छल— भारतीय राजनीति क्षेत्रे अहिंसार स्थान नेई। ई क्रान्तिकारी सभक आर्ष वाक्य छल। ई भारतवर्षक स्वतंत्रताक लेल छल निजी लाभक प्रश्ने नहि छल।

ii) 1916मे अतुल्य घोष आ पुलिन मुखर्जीक नेतृत्वमे गोपीराय क्षेत्रमे भेल डकैतीक बाद गृहस्वामीकेँ Independent of United Indiaक बंगाल शाखा द्वारा पत्र देल गेल जे अहाँक खातामे 9891 रु. 5 पाइ जमा भेल अछि। स्वतंत्रता प्राप्तिक बाद सूदसहित ई राशि आपस कयल जायत। एहि पत्र केर ब्लॉक कुन्तल चक्रवर्ती नामक क्रान्तिकारीसँ जब्त भेल छल (मन्मथनाथ गुप्त : भारतीय क्रान्तिकारी आन्दोलन का इतिहास, पृष्ठ 65)।

iii) एकबेर सरकारी खजानाक डकैतीसँ प्राप्त रुपया चन्द्र शेखर आजाद सन्दूकमे राखि रहल छलाह। एक संबंधी जे हुनक माता-पिताक देखभाल करैत छल ओहिमेसँ 5 टाकाक याचना कयलक ताकि बूढ़ा-बूढ़ीकेँ भोजन भेटैत रहए। आजाद तमसा गेलाह। कहलनि— ई हमर स्वतंत्रता आन्दोलनक टाका छी। एहिमेसँ एक दमड़ी नहि दऽ सकैत छी। जाबत धरि खुआ सकैत छी अहाँ खुआउ। जखन असमर्थ भऽ जायब तखन कहब। एक राति आबि दुनूक छातीमे एक-एक गोली उतारि अहाँकेँ धर्मसंकटसँ मुक्ति दिया देब।

आतंकी सभक एहन सोच होइत अछि की? अहिंसाक बलेँ आजादी भेटल ई मात्र अर्द्धसत्य अछि। पूर्ण सत्य यैह अछि जे आजादी आनएमे एहि अग्निपुत्र सभक अवदान किनकोसँ कम नहि अछि। हम बड़भागी छी जे एहन बलिदानी नरश्रेष्ठ खुदीरामक प्रतिमाक अनावरण केर सौभाग्य हमरा भेटल।

[30 अप्रैल 2022]

मिथिलाक इतिहासमे कन्दर्पीघाट

जँ साँच कही तऽ ई कहबामे कोनो भाँगठ नहि जे ई कन्दर्पीघाटे अछि जे एहि भ्रम केर निवारण कयलक जे मिथिलाक मेधा मात्र मस्तिष्कमे मगन रहैत अछि आ चूड़ा-दही-चिन्नीक शीतल तासीरसँ एकर शौर्य सकदम्म भेल ठाढ़ अछि। ई तथ्यात्मक अछि जे मैथिल मेधाकेँ अखिल भारतीय स्तरपर सर्वकालिक श्रेष्ठता भेटल मुदा मैथिल शौर्यकेँ ओ सम्मान कहियो नहि भेटि सकल जे एकर मेधाकेँ भेटलै। मिथिलाक कोनो नरेशक प्रहार वा तलवार केर धार एहन तीक्ष्ण वा जोरदार नहि रहल जे भारतीय इतिहासक किछु पृष्ठ अपन नाम कऽ सकैत। जनक वंश अवसानोत्तर नान्यदेव 1097 ई.मे मिथिलाक चंचला राजलक्ष्मीकेँ स्थिर कयलनि। राजा शिव सिंह 1413सँ 1416 ई. धरि मात्र राज कयलनि मुदा अपन कल्याणकारी काज, अद्‌भुत वीरता आ प्रजा वत्सल छविक कारणेँ—

पोखरि रजोखरि आर सब पोखरा।
राजा ते शिव सिंह आर सब छोकरा॥

ताल ते भूताल ताल आर सब तैलया।
राजा ते शिव सिंह आर सब रजैया॥

सन लोकोक्तिक सृजनाधार भऽ जीवित किंवदंतीक पर्याय बनलाह। मिथिलामे स्वर्ण सिक्काक चलनसारि हिनके समय भेल। अपन नामक स्वर्ण सिक्का चलओनिहार ई प्रथम नरेश भेलाह। पंच गौड़ेश्वर शिव सिंह मैथिल शौर्य केर अनुपम छवि प्रस्तुत करैत मातृभूमिक बलिवेदीपर स्वयं राजा द्वारा शीशोत्सर्ग केर विरल उदाहरण

प्रस्तुत कयलनि। हिनकर बाद एहि वंश केर प्रतापी राजा भैरव सिंह अपन नामक सिक्का चलओलनि। असलान द्वारा गणेश्वर राय केर छलपूर्वक हत्या आ फेर हिनक वीरपुत्र कीर्त्ति सिंह द्वारा असलानसँ प्रभावी प्रतिशोध सेहो मैथिल शौर्य केर अनुपम चित्र प्रस्तुत करैत अछि। बादमे 1526 ई.मे नुसरत शाह संग भेल युद्धमे लक्ष्मी नाथ सिंह देव शहीद भेल छलाह। एहिना राजा पुरुषोत्तम ठाकुर 1623 ई.मे किलाघाटक लड़ाइमे देशक लेल वीरगति प्राप्त केनिहार नरेशक स्वर्णिम सूचीमे शामिल भेलाह। बादमे राजा राघव सिंह किछु अपन तरुआरिक धारक दिग्दर्शन करेबामे सफल भेलाह मुदा ओहो सम्प्रभुताक स्पर्श नहि कऽ सकलाह, उतार-चढ़ावक संग करद भूपसँ आगाँ नहि बढ़ि सकलाह। हिनक महावीर पुत्र मिथिलेश नरेन्द्र सिंह कन्दर्पीघाटमे भीषण युद्धक बाद सम्प्रभुताक रथपर सवार भेलाह। यैह अछि मिथिलाक इतिहासमे कन्दर्पीघाटक अद्भुत महत्त्व। आब एहि भीषण कन्दर्पीघाट युद्धपर विचार करब उचित।

कन्दर्पीघाट मधुबनी जिलाक झंझारपुर अनुमंडलान्तर्गत अंधराठाढ़ी प्रखंडक हरिणा आ कर्णपुर तथा झंझारपुर प्रखंडक महरैल गामक सन्धि स्थल अर्थात् तीनू गामक त्रिवेणीपर कमला बलान नदीक पूर्वी तटबंधक किनार अवस्थित अछि।

कन्दर्प केर शाब्दिक अर्थ कामदेव होइत अछि आ कामदेव एवं कुसुमक शाश्वत संबंध सर्वविदित अछि। एहि प्रक्षेत्रमे फूलक खेती, भंडारण आ विपणन केर अनुमान एहि तथ्यसँ सम्बलित अछि जे कन्दर्पीसँ सटल महरैल गाममे अखनो माली जातिक परिवार सभक संख्या मिथिलाक कोनो गामसँ बेसी अछि। महरैलसँ माली जातिक किछु परिवार सब उछाल गाम (बासोपट्टी प्रखंड) चलि गेलाह तथापि अखनो महरैलमे माली जातिक परिवार बहुत अधिक अछि। संभव अछि जे फूलक उत्पादन, भंडारण आ विपणनसँ जुड़ल रहबाक कारणेँ एहि क्षेत्रक नाम कन्दर्पी पड़ल हो। ई कन्दर्पी प्रक्षेत्र कहियो राज परिवार आ अन्य विभवशाली सभक सैरगाह रहल छल।

अठारहम शताब्दीमे भेल कन्दर्पीघाट युद्धक परिप्रेक्ष्यमे अलीवर्दीक मिथिला संग संबंधक उतार-चढ़ावपर विचार करब आवश्यक। अलीवर्दीक पिता औरंगजेबक पुत्र आजम शाहक सेवामे छलाह। 1707 ई.मे आजमशाहक मृत्युक बाद अलीवर्दीक आरम्भिक जीवन कष्टमय भऽ गेल छल। 1720 ई.मे अलीवर्दी अपन भ्राता मिर्ज़ा अहमद खान केर संग उड़ीसाक नवाब शुजाउद्दीनक सेवामे कटक आबि गेलाह। वीरता, कर्तव्य परायणता आ अदम्य साहस केर कारण

हिनका 1728 ई.मे चुक्ला (राजमहल) केर फौजदार बनाओल गेल। जान जेड हॉलवेल (Bengal Past and Present, 1915, p78-79), सलीमुल्ला (p78, हॉलवेल— Interesting Historical Events, Google Book, p61) प्रभृति इतिहासकारक मानब अछि जे अलीवर्दीक उन्नतिमे अलीवर्दीक प्रतिभा वा पौरुषक नहि अपितु ओकर परिवारक स्त्री समक योगदान अछि। हॉलवेल अलीवर्दीक भ्राता हाजी अहमद केर विषयमे एतेक तक लिखलनि जे ओ अपन पुत्री अपन मालिक शुजाउद्दीनक वासनाक भेंट चढ़ा देलनि। यद्यपि सर कलिकिंकर दत्त (Alivardi and his Times, p6) बादमे समीक्षोपरान्त लिखलनि जे अलीवर्दी अपन असाधारण योग्यताक बलपर आगू बढ़ल छल ने कि अपन परिवारक स्त्री सभक बलपर। 1733 ई.मे अलीवर्दीकेँ बिहारक नायब नाजिम वा डिप्टी गवर्नर बनाओल गेल। अलीवर्दी अपना अनुसारे मिथिलाक व्यवस्था कयलनि। राजा राघव सिंहक दमन भेल फेर स्थितिमे सुधार आयल आ राघव सिंह सरकार तिरहुत प्राप्त करबामे सफल भेलाह। 10 अप्रैल, 1740 ई.केँ गिरिया हाटक लड़ाइमे अपन मालिक शुजाउद्दीन केर बेटा सरफराजपर मारक प्रहार कऽ अपन तलवारक धारसँ अलीवर्दी मुर्शिदाबादक नवाब सरकार भेलाह। किछु एहने अलीवर्दीक दौहित्र सिराजुद्दौला संग मीर जाफर आ अन्य विश्वस्त 23 जून, 1757 ई.केँ पलासीक लड़ाईमे कयलनि, तेँ पलासीक लड़ाईकेँ गिरायाहाटक युद्ध केर ऐतिहासिक प्रत्युत्तर कहल जाइत अछि। अलीवर्दी अपन विश्वस्त मुस्तफा खान उर्फ बबरजंगकेँ मराठा सभक दमन आ सेनापति भास्करक मुड़ी आनलापर बिहारक सूबेदारी आ भारी इनामक बोर देलनि। काज सुतरि गेल तखन अलीवर्दी वादा खिलाफी करैत नठि गेलाह। ओ बिहारक सूबेदारी अपन भातिज आ जमाय हैबतजंगकेँ देबाक नेयार कयने छलाह। मात्र माँगल गेल इनामक राशि 17 लाख देल गेल। अलीवर्दी आ बबरजंगक बीच मनोमालिन्य भेल आ स्थिति एहन खराब भऽ गेल जे बबरजंग बीस हजार छाँटल घुड़सवारक संग राजमहल आ मुंगेर फतह करैत पटनापर चढ़बाक नेयारसँ कूच कयलक। जाफर खाँ केर बागमे युद्धक ओरियान भेल। हैबतजंग मिथिलेश नरेन्द्र सिंहसँ सेहो सहयोगक अपेक्षा कयलनि। नरेन्द्र सिंह नरहन स्टेट केर द्रोणवार कुलोद्भव अजीतशाहक संग हैबतजंगक बाँहि पूरलनि।

हैबतजंग आ बबरजंगक बीच युद्ध 14 मार्च, 1745 ई.केँ पटनाक लऽग जाफर खाँ केर बागमे भेल छल।

मिथिलाक सन्दर्भमे एहि युद्धक महत्त्वपूर्ण स्थान अछि। अपन दोसर प्रयासमे बबरजंग 21 मार्चकेँ घायल भऽ आपस भेल। एहि युद्धमे नरेन्द्र सिंह आ

अजीतशाहक जोड़ी अनुपम पराक्रम प्रदर्शित करैत हैबतजंगक जीतक मार्ग प्रशस्त कयलनि। चन्द्र कविक एहि पदपर विचार अपेक्षित—

ऐसे महाघोर जोर जंग सुलतानी बीच झूमत बबरजंग संगर करीन्द्र हैं।
औलिया नवाब नामदार पूछै बारबार ये दोउ कौन अरि वा नर परीन्द्र हैं।
साहेब सुजान जयनुद्दीन अहमद खान सामने ह्वै अर्ज करे कहे कवि चन्द्र हैं।
ये तो दोनवार केशोशाह के अजीतशाह आगे राघव सिंह जी के नवल नरीन्द्र हैं।

एहि युद्धमे नरेन्द्र सिंहक सेवासँ प्रसन्न अलीवर्दी आ हैबतजंग तिरहुतसँ कर वसूली प्राय: शिथिल करा देलनि। बख्शी अपन ग्रंथ मिथिला भाषामय इतिहासक पृष्ठ 189मे कहैत छथि जे आवश्यकतानुसार शाही सेनाकेँ ससैन्य संग देब अकर होयबाक शर्त्त छल। एहि युद्धकेँ प्रख्यात इतिहासकार प्रो. राधा कृष्ण चौधरी कन्दर्पी युद्धसँ जोड़िकेँ देखलनि जे ऐतिहासिक तथ्य नहि अछि। History of Muslim Rule in Tirhut पृष्ठ 181-188क बीच प्रो. राधा कृष्ण चौधरी कन्दर्पीघाट युद्धक समय आ कारण केर उल्लेख करैत लालकविक मादे कहैत छथि जे कन्दर्पी युद्धक नेतृत्व जयनुद्दीन कयलनि आ एहिमे राम नारायण, भिखारी महथा, सलावत राय, बख्त सिंह, नामदार खान आदि शाही सेनामे छलाह आ नरेन्द्र सिंहक सेनामे मित्रजीत सिंह, उमराव सिंह, हाला राय, केशो शाह, अजीत शाह, घड़ी राम, शेर खान आ जाफर खान आदि छलथि। लालकवि अपन कन्दर्पीघाट समर वर्णनमे एहिमेसँ जयनुद्दीन, नामदार खान, केशो साह, अजीतशाह, घड़ी राम केर कतहु चर्च नहि कयने छथि। ई सम्पूर्ण भ्रम लालकवि कृत कन्दर्पी समर वर्णन केर पूर्णतामे अनुपलब्धताक कारणेँ उत्पन्न भेल अन्यथा एहन भूल प्रो. राधा कृष्ण चौधरी सन् सुविज्ञ इतिहासकारसँ नहि भेल रहैत।

हैबतजंगक धूर्त्ततापूर्वक कत्ल 21 जनवरी, 1748केँ अफगान सब कयलनि। एकर बाद मिथिलाक पटनासँ मधुर आ आत्मीय संबंध प्रभावित होमऽ लागल। 1751 ई.मे मराठासँ सन्धि स्वरूप बारह लाख चौथ अलीवर्दीकेँ देबऽ पड़ल छल। 1752 ई.मे राजा रामनारायण बिहारक सूबेदार आ भिखारी महथा दरभंगाक फौजदार भेलाह। राजा रामनारायण शाही खजानाक खस्ताहाल देखि चिन्तित भेलाह। वित्त मामलामे ओ काफी उद्यमशील छलाह। ज्ञात भेल जे तिरहुतसँ काफी दिनसँ कर नहि आयल अछि। ओ तिरहुत केर मापी करा राजकर 1648142 टाका निर्धारित कयलनि आ तिरहुतसँ कर वसूली हेतु दूत मिथिला पठओलनि।

हैबतजंग-बबरजंग युद्धक बादसँ नरेन्द्र सिंह स्वयंकेँ अकर मानि चुकल छलाह। ओ दूतसँ कहलनि जे हम तऽ अपन कर युद्ध केर मैदानमे दैत छी। हुनक अभिप्राय छल जे जखन शाही सेनाकेँ सहायताक आवश्यकता होइत अछि तखन हम ससैन्य सहायतासँ शाही सेनाक सहयोगक माध्यमसँ कर दैत छी। दूत सब राजा रामनारायणकेँ नोन-मिर्चाई लगाकेँ कहलक जे नरेन्द्र सिंह युद्ध केर मैदानमे कर देबाक बात कऽ रहल छथि, ओ अपनाकेँ करद भूप नहि बल्कि स्वतंत्र राजा मानि चुकल छथि। बिनु युद्ध ओ एक छदाम देबाक लेल तैयार नहि छथि।

जयनुद्दीन हैबतजंगक कत्लक बाद मिथिलेश नरेन्द्र सिंहक कोनो प्रिय पात्र पटनामे नहि रहल छल जे स्थिति सम्हारि सकैत। दूत सभक कुटिचाली सुनि रामनारायण तामसे घोर भेल आ दरभंगाक फौजदार भिखारी महथाकेँ तिरहुत फतह करबाक आदेश देलक। कन्दर्पी युद्ध केर कारण यैह छल। आब एहि भीषण कन्दर्पीघाट युद्ध केर समय निर्धारित करैत छी।

प्रो. राधा कृष्ण चौधरी कन्दर्पी युद्ध केर समय History of Muslim Rule in Tirhutमे एक ठाम 1745-46क बीच (पृष्ठ 187), एक ठाम 1745-49क बीच (पृष्ठ 181) आ अन्यत्र एक ठाम 1752 ई. केर बाद (JBRS-XLVIII पृष्ठ 41) निर्धारित कयने छथि। प्रथम आ दोसर निर्धारण त्रुटिपूर्ण अछि आ तेसर निर्धारण सत्य अछि। गोपाल कवि श्रीमत्खंडवलाकुल विनोदक रचना काल लिखने छथि—

पक्ष अंग अरु रुद्र मिलि यवन साल सितवार।
आश्विन शुक्ल एकादशी कियो ग्रंथ तैयार॥

एहि अनुसार पक्ष 2, अंग 6, रुद्र 11 तथा 'अंकस्य वामा गतिः 'क आधारपर रचना काल 1162+592=1754ई. निश्चित होइत अछि। विस्तृत ज्योतिषीय गणनासँ ई 27 सितम्बर, 1754 ई. निर्धारित भेल अछि जे शुक्र आ पापांकुश एकादशीक दिन छल। एहि ग्रंथमे इहो उल्लेख अछि जे कन्दर्पी युद्धक बाद विजयोत्सवमे गोपाल कवि कन्दर्पी समर वर्णन सुना काफी धन, गज आ मान-प्रतिष्ठा प्राप्त कयने छलाह।

आय सुअवसर पायकेँ सभा मध्य गोपाल।
तव आशिष कविवर कियो सदा विजै महिपाल॥

काव्य आपनो राखि कै बाँची करि विस्तार।
काव्य प्रशंसा करहिं सभ सुन्यौ युद्ध प्रस्तार॥
महाराज मिथिलाधिपति दीन्हो दान अनेक।
गज आदिक भूरि धन लीन्हो हर्ष विवेक॥

(गोपालकवि : श्रीमत्खंडवलाकुल विनोद, 2/209-211)

श्रीमत्खंडवलाकुल विनोदमे तीन सर्ग अछि आ तेसर सर्गमे नरेन्द्र सिंहक काबुली सेनासँ युद्धक वर्णन अछि। एकर लेखन बादमे भेल छल। स्पष्ट अछि जे कन्दर्पीघाट युद्ध 1752 ई.सँ पहिने नहि आ 1754 ई.क बाद नहि भेल छल। 1754 ई.मे आश्विन शुक्ल एकादशीकेँ ग्रंथ पूर्ण भेल अर्थात् 1754 ई.मे सेहो कन्दर्पी युद्ध संभव नहि। काबुली युद्ध वर्णनमे समय लागल हेतै तेँ कन्दर्पीघाट युद्ध केर समय 1753 ई. निश्चित होइत अछि। लालकवि आ गोपाल कवि दुनू महाअष्टमीकेँ भीषण युद्ध मानैत छथि। इहो चर्च अछि जे छिटपुट भिड़न्त रामपट्टीएसँ शुरू भऽ गेल छल आ ओतहु रणडंक बाजि रहल छल। युद्ध महादशमी तक भेल। 1753 ई.मे महासप्तमी 4 अक्टूबर वृहस्पतिकेँ पड़ल छल। एहि प्रकारेँ कन्दर्पीघाट युद्ध केर समय 4सँ 7 अक्टूबर 1753 ई. निर्धारित होइत अछि।

कन्दर्पी युद्ध अत्यन्त भीषण छल। मिथिलांचल केर ई प्रथम युद्ध छल जाहिमे पारम्परिक अस्त्र-शस्त्रक अतिरिक्त उभय पक्ष आग्नेयास्त्रक प्रयोग कयलनि। महाअष्टमीकेँ हरिणाक मैदानमे कन्दर्पी युद्ध भयंकर रूप धऽ लेलक। बाबू नन्द नन्दन सिंहक वीर पुत्र राम सिंह अरिदल केर भीम पाण्डेय आ देव मल्लकेँ धराशायी कयलनि, बख्शी चाचिकमल्लकेँ यमपुरी पठा देलनि। जालिम सिंह ओ जुलुम सिंह राम सिंहकेँ घायल कयलनि तथापि राम सिंह जालिम सिंहकेँ मारि खसा देलनि। जुलुम सिंह मिथिला सेनाक जाफर खाँकेँ भूलुण्ठित कयलनि तऽ हुनका जखम खान वीरगति दऽ देलनि। भिखारी सेनाक सलावत राय जखम खानकेँ मारि देलनि आ युद्धोन्मादमे मैथिल सेनापर काल बनि टूटि पड़लाह। युद्धक पलड़ा भिखारी महथाक पक्षमे लऽत भऽ चुकल छल आ मैथिल सेना त्राहिमाम करऽ लागल छल। एहन विपरीत परिस्थितिमे उमराव सिंह अपन पराक्रमसँ मोर्चा सम्हारलनि। भीषण द्वन्द्ध युद्धक बाद उमराव सिंह सलावत रायकेँ स्वर्गक बाट धरा देलनि। अपन एहि सफलतापर उमराव सिंह रणोन्मत्त भऽ अपन घोड़ा भिखारीक हाथीपर फना देलनि आ अपने फानिकेँ भिखारी महाथाक हाथीपर छड़पि गेलाह।

भिखारी महथाकेँ परास्त करबाक क्रममे हुनक गोलीसँ उमराव सिंह वीरगति प्राप्त कयलनि। मिथिलाक आसन्न पराजयकेँ अपन शहादत केर शोणितसँ विजय तिलकमे परिणत केनिहार उमराव सिंहक प्रति सम्पूर्ण मिथिलांचल कृतज्ञ अछि। अपने सबकेँ ई जानि सुखद आश्चर्य होयत जे एहि महावीर उमराव सिंहक वीर पौत्र कुँवर सिंह भारतीय स्वतंत्रता संग्राममे अंग्रेज सभसँ लोहा लैत अपन एक भुजा दोसर हाथेँ काटि गंगा माताकेँ अर्पित कऽ अपन अतुलनीय पराक्रमसँ अपन वीर कुल केर मान बढ़ौने छलाह। एहि ठाम ई उल्लेखनीय अछि जे मँगरौनी गामक भिखिया झा कुँवर सिंहक आध्यात्मिक गुरु छलाह। ओ 'उज्जैन वंश प्रशस्ति'कार सेहो छलाह जेकर प्रकाशन सर के. के. दत्ता वीर कुँवर सिंहक जीवनीमे कयलनि। मँगरौनी एहि कुलक परम्परासँ गुरुद्वारा रहल छल।

वीर कुँवर सिंह अपन आध्यात्मिक गुरु भिखिया झाकेँ दस बीघा जमीन जगदीशपुरमे देने छलाह जेकरा भिखिया झा केर पौत्रद्वय कृष्णमणि झा आ केदारमणि झा वर्ष 1964-65मे स्थानीय लोकक हाथेँ केवाला कयलनि। कुँवर सिंहक समय जगदीशपुरमे लगैत हाटकेँ ओझा बाजार भिखिये झाक समृतिमे कहल जाइत छल। आब एकर स्वरूप बदलि गेल अछि। बूढ़-बुढ़ानुस सब अखनो एकरा ओझे बाजार कहैत छथि। ध्यातव्य जे वीर कुँवर सिंहक परिवारक लोक भिखिया झाकेँ गुरुजी, गुरु गोसाईं, गुरु महाराज, गोसाईंजी आदि सम्बोधनसँ सम्बोधित करैत छल मुदा सामान्यजन हुनका ओझाजी कहि आदर दैत छल। एहि परम्पराक उत्स कुँवर सिंहक पितामह उमराव सिंहक समय छल।

उमराव सिंह केर शहादतक प्रतिशोध मित्रजीत सिंह द्वारा बख्त सिंह आ हुनक दू वीर पुत्र गोविन्द सिंह आ लक्ष्मण सिंहकेँ धराशायी करैत लेल गेल। बख्त सिंहक तेसर पुत्र महताप सिंह मित्रजीत सिंहकेँ घायल कऽ अपन पिता आ भ्राता सभक हत्याक प्रतिशोध लेलनि। एहि बख्त सिंहकेँ प्रो. राधा कृष्ण चौधरी History of Muslim Rule in Tirhut (पृष्ठ 186)मे चक्रवार राजकुल केर बख्तावर सिंहक रूपमे चर्च कयने छथि। बख्तावर सिंह एक प्रतापी शासक छलाह आ 1718 ई.सँ 1727 ई. क मध्य हुनका द्वारा देल गेल अनेक दान पत्र आ सनद केर चर्च प्रो. चौधरी अपन ग्रंथ (Appendix, पृष्ठ 252)मे कयने छथि। बाद केर शोधसँ स्पष्ट भेल जे चकवार बख्तावर सिंह केर मृत्यु 1730 ई.मे भऽ चुकल छल(चकवार चन्द्रिका : गंगोत्री प्र. सिंह शर्मा, पृष्ठ 53-55)। स्पष्ट जे कन्दर्पीक बख्त सिंह कोनो दोसर बख्त सिंह छलाह। एहि विन्दुपर आर शोध

अपेक्षित। महताप सिंहकेँ बछरू झा वीरगति देलनि तऽ महिमा शाही बछरूकेँ अचेत कयलनि। बछरू झाक किशोरवय वीर पुत्र कमला कान्त अरिदलक रघुनाथ सिंहकेँ स्वर्गक सीढ़ी चढ़ा देलनि। मिथिलेश नरेन्द्र सिंह अपन गजेन्द्र गंगा प्रसादपर अमारी हौदामे सवार भऽ युद्ध क्षेत्रमे उतरलाह आ अपन पराक्रमसँ सबके चमत्कृत कयलनि। ओ आम मैथिलक आह्वान सेहो कयलनि। रणेक्षेत्रमे स्वयं मिथिलेश नरेन्द्र सिंहकेँ उतरबाक बात परोपट्टामे पसरि गेल आ हुनक आह्वानपर आम मैथिल-जाति धर्मसँ ऊपर उठि युद्धभूमि पहुँचि गेल। भिखारी महथाक पराक्रमी पुत्र श्याम महथाकेँ कमला कान्त वीरगति देलनि। पुत्र केर गति देखि हताश भिखारी महथा विचलित भऽ गेलाह आ युद्ध भूमिसँ पलायन कयलनि। हुनक सेना सिताहल नढ़िआ जकाँ युद्धभूमिसँ लंक लऽ लेलक। रखबाड़ी गोठ जयबाक बाट धऽ पड़ाइत काल विशाल बाधमे पानि केर अभाओमे मुँह बाबि कऽ बहुत सैनिक मरि गेल जाहि कारणेँ एहि बाध केर नाम मुबौआ बाध पड़ल जेकर अस्तित्व अखनो अछि। एहि युद्धमे मिथिलाक सेना आ आम मैथिल जाति-धर्मसँ ऊपर उठि युद्ध भूमिमे शीशोत्सर्ग कऽ विजयश्रीक वरण कयने छल।

युद्धक बाद शहीद सैनिक आ आमजनक संस्कारक समस्या उत्पन्न भेल। रक्त आ बाउल सानल जनेऊ उतारिकेँ जोखल गेल तऽ ओ 74 सेर भेल। 1915 ई.मे प्रथम बेर प्रकाशित 'मिथिला दर्पण' (कामेश्वर कल्याणी फाउंडेशन संस्करण 2005, पृष्ठ 83)मे रास बिहारी लाल दास चर्च करैत छथि जे लोक अपन गोपनीय पत्रपर 74 लिखैत छल। एकर अभिप्राय छल जे पत्रादेशीक अतिरिक्त जँ दोसर केओ पत्र पढ़लनि तऽ हुनका ओतेक ब्रह्म हत्याक पाप लागत जतेक जनेऊधारी कन्दर्पी युद्धमे मारल गेल छलाह। जनेऊ केर प्रतीकात्मक संस्कार एक कूपमे कयल गेल। दोसर कूपमे नरेन्द्र सिंहक हाथी गंगा प्रसादक संस्कार भेल। तेसर कूपमे सैनिक सभक संस्कार भेल। कन्दर्पीमे ई तीनू कूप हाल तक वर्तमान छल। संरक्षण केर अभावमे तीनू कूप भाथि गेल आ मिथिलाक इतिहासक एक गौरवपूर्ण अध्याय कालक गर्त्तमे बिला गेल।

कन्दर्पी युद्धमे अंधराठाढ़ी गामक भारी संख्यामे द्विजेतर जातिक लोक सेहो शहादत देने छल। एहि गाममे विधवाक विपुल संख्या छल। मिथिलेश नरेन्द्र सिंहक महारानी पद्मावती स्वयं अंधराठाढ़ी आबि विधवा सभक खोज-पुछारि कयने छलीह। विधवा सभकेँ कोनो कष्ट नहि हो एहि लेल राजसँ प्रति माह अन्न-वस्त्रक व्यवस्था करओलनि। एहि गामक विधवा सभकेँ कहियो कोनो कष्ट नहि

होयत, ई आशीर्वाद आ वचन देलनि। स्नान आ पेयजल हेतु विशाल महरानी पोखरि खुनाओल गेल जे अखनो ओहिना अक्षुण्ण अछि।

कन्दर्पी युद्धक बहुत बाद दरभंगा राज द्वारा कन्दर्पीमे नरेन्द्र विजया काली केर स्थापना कयल गेल छल। मूर्त्तिक नामकरण सब कथा अपने आप कहि दैत अछि। 1955-56ई.मे तटबंध निर्माणक बाद मंदिर हरिणा गाम संगे तटबंधक पेटमे आबि गेल छल। लगातार अबैत बाढ़िसँ तंग आबि हरिणा वासी 1965 ई.सँ तटबंधक बाहर गृह निर्माण करायब शुरू कयलनि। 1966ई.क भीषण बाढ़िमे मंदिर झुकि गेल। नरेन्द्र विजया कालीक मूर्त्ति मंदिरसँ उखाड़ि तटबंधक बाहर बसि रहल हरिणा ग्राम (थाना संख्या 268)मे गंगाधर झा ओतऽ राखल गेल। सुन्दर मंदिर निर्माणोपरान्त दि. 4.11.2010कैँ दीपावलीक राति ओहि मंदिरमे समारोहपूर्वक नरेन्द्र विजया काली केर पुन: प्राण-प्रतिष्ठा कयल गेल। एहि मंदिरमे लागल शिलालेखमे उत्कीर्ण अछि—

हरिशर विलासिनी हरिणा रणधारिणी नरेन्द्र कुल पालिनी जयतु विजया वीरा।
कमला तट कूर्दनी त्रिसप्तसेरस्सूत्रिणी हतापवर्ग कारिणी जयतु मानदा मेधा॥

एहि कन्दर्पी युद्धक सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण तथ्य यैह अछि जे ई युद्ध मात्र दू राजाक युद्ध नहि रहल छल। आम मैथिल जाति आ धर्मक बंधनसँ ऊपर उठि स्वदेश आ स्वशासन लेल एहि युद्धमे भाग लेलनि। हरिणा ग्राम पंचायत केर पूर्व मुखिया ओ अधिवक्ता अतिकुर रहमानक पुरखा पीर बख्शकैँ मात्र सोलह वर्षक अवस्थामे एहि युद्धमे भाग लेबाक कारणेँ जेठ रैयत बनाओल गेल छल जखन कि सामान्यत: ई पद कोनो बुजुर्गकैँ देल जायत छल।

कन्दर्पी युद्धपर प्राय: समकालीन इतिहासकार मौन छथि। गुलाम हुसैन 'रियाज एस सल्तिन' (अनु. एस. ए. करीम, कलकत्ता, 1902, पृष्ठ 296)मे लिखैत छथि जे भौआरा आ बेतियाक अनुशासनहीन आ ककरो सामने ने तऽ माथ झुकेनिहार आ ने राजकर देनिहार स्वतंत्र राजा सबसँ अलीवर्दी लगातार युद्ध कऽ हुनका सभकैँ पराभूत कऽ कर वसूल कयलनि। ई अलीवर्दी द्वारा राघव सिंह केर दमनक घटना छोड़ि आर किछु नहि छी। 1735 ई.क बाद अलीवर्दीक मिथिला प्रयाणक जानकारी इतिहास नहि दैत अछि।

कन्दर्पी युद्धमे भेल एकटा करद भूपक हाथेँ शाही सेनाक एहन फज्झति पूर्वमे कहियो भेलो नहि छल। ने तऽ ई समकालीन इतिहासकार सभकैँ स्वीकार्य छल आ ने हुनका सभक एहिपर विश्वास छल। आश्चर्य तऽ तखन होइत अछि

जखन सर कलि किंकर दत्त सन वरेण्य इतिहासकार बंगालक छोट-छोट भाट आ कवि सभक चर्च करैत छथि मुदा गोपालकवि, लालकवि, ईशकवि आदि कवि केर रचनाक चर्चा नहि करैत छथि। अनुपलब्धता जे नहि कराबय! ई सत्य जे विरुदावलीमे अतिशयोक्ति रहैत अछि मुदा इहो सत्य जे 16 अप्रैल 1748 ई.क रानी सराय केर प्रसिद्ध युद्धमे मारल गेल सरदार खान, मुराद शेर खान, शमशीर खान प्रभृति नामी सेनानायक सभकेँ एहि युद्धमे भाग लेबाक चर्च नहि अछि। जयनुद्दीन हैबतजंगक हत्या 1748 ई.मे भऽ गेल छल। हुनको एहि युद्धमे भाग लेबाक चर्च नहि अछि। कन्दर्पी युद्धमे मारल गेल उमराव सिंह, बख्त सिंह, सलावत राय, गोविन्द सिंह, लक्ष्मण सिंह, महताप सिंह, श्याम महथा प्रभृति सेनानायक सभकेँ 1753 ई.क बाद भेल कोनो युद्धमे भाग लेबाक चर्च इतिहासमे नहि अछि। ई एहि बातक प्रमाण अछि जे लालकवि आ गोपालकविक वर्णन मात्र अतिशयोक्ति वा विरुदावली नहि अछि अपितु ओ इतिहासक निकषपर पूर्ण रूपसँ तथ्यात्मक अछि। दुर्भाग्यवश मिथिलाक किछु इतिहासकारपर आत्महीनता एहि स्तर तक हावी अछि जे अपन आत्मगौरवो केर कथा ओ तखने सत्य मानैत छथि जखन कोनो विदेशी मूलर, जोन्स वा कोनो राबर्ट, मैकाले, विलियम नामधारी ओकर प्रशंसा करैत अछि। ई आत्महीनता जहिना घातक तहिना आत्ममुग्धता सेहो अनुचित अछि। इतिहासक सही मूल्यांकन हेतु दुनू प्रवृत्ति अनुचित। इतिहासक आकलन विभिन्न स्रोत, अन्त: आ बाह्य साक्ष्य, जनकंठमे सुरक्षित दंतकथा, परम्परा, प्राप्त सामग्री, अभिलेख, शिलालेख आदिक वैज्ञानिक विश्लेषणक आधारपर उचित होइत अछि ने कि मूल्यांकनकर्त्ता केर व्यक्तिगत मान्यता वा मनोभावक आधार पर। कन्दर्पी युद्धपर प्रत्यक्ष वा प्राथमिक (Primary), परोक्ष वा द्वितीयक (Secondary) तथा तृतीयक (Tertiary) स्रोत उपलब्ध अछि। समर वर्णन, तीनू कूप, मिथिलेश रमेश्वर सिंह द्वारा स्थापित नरेन्द्र विजया भगवती, महारानी पद्मावती द्वारा खुनाओल अंधराठाढ़ीक महरानी पोखरि, रखवाड़ी गोठक रस्ताक मुबौआ बाध, मिथिला विजय स्तम्भ निर्माण निमित्त भूमि पूजन समारोहमे बनौरक श्री राजदेव यादव आ नवलखा टोल, महरैलक श्री राम महतो द्वारा देल गेल कन्दर्पी युद्धमे प्रयुक्त तलवार आ जनकंठमे रचल-बसल दंतकथा सब कन्दर्पी युद्धकेँ ऐतिहासिक घटना प्रमाणित करबामे सक्षम अछि।

लालकवि आ गोपालकविक कन्दर्पीघाट समर वर्णन उपलब्ध अछि। लालकवि मँगरौनी निवासी 'कृष्णजन्म' कार कवि मनबोधक अनुज छलाह।

लालकवि 'गौरी स्वयम्वर' सेहो लिखने छलाह। गोपाल कवि जरैल परगनाक बेहटा ग्राम वासी छलाह। हिनक 'काव्य मंजरी', 'काव्य प्रदीप' आ 'श्रीमत्खंडवलाकुल विनोद' उपलब्ध अछि। दुनू कवि युद्ध क्षेत्र आयल छलाह आ पूरा युद्ध देखने छलाह। युद्ध केर चाक्षुष वर्णन एहि कारणेँ वास्तविक आ विश्वसनीय भेल अछि। लालकविक अपेक्षा गोपाल कविक समर वर्णन अधिक व्यापक आ सूक्ष्म अछि। लालकवि अपन वर्णनकेँ दोहा, भुजंग प्रयात, नाराच, पदाकुलक आ त्रिभंगी छन्दसँ सुसज्जित कयने छथि तऽ गोपाल कवि पूर्व उल्लिखित छन्दक अतिरिक्त कमला, धनाक्षरी, अनंग शेखर, तोटक, गीतिका, पुनर्यथा, मदनहरा प्रभृति छन्दक छटासँ सुशोभित कयने छथि। लालकवि केर कन्दर्पीघाट समर वर्णन छोट अछि मुदा एकर साहित्यिक सौन्दर्य अधिक आह्लादकारी अछि—

सुमुण्ड कंज रक्त पानि ओ सेमार केश के।
नदी बही जहाँ-तहाँ मैदान मिथिलेश के॥
भयो फतह वैरि जाल की निदान भोगिनी।
गयी अघाय खाय खाय गण्ड मुण्ड योगिनी।
अशेष मुण्डमाल जाल कालिका ले आउती।
कराल भूत साध भूतनाथ को पेन्हाउती॥

गोपालकवि कन्दर्पी युद्धमेकेँ किनका वीरगति देलक वा अचेत कयलक एकर विस्तृत वर्णन कयने छथि। उमराव सिंह आ सलावत रायक बीच भेल द्वन्द्व युद्धक चर्चा दुनू कवि मनोयोगपूर्वक कयने छथि। लालकवि पार्थ आ कर्ण समरसँ एकर उपमा दैत छथि एवं गोपाल कवि लक्ष्मण मेघनाद युद्धसँ एकर तुलना करैत छथि। दुनू वर्णनकेँ देखल जाय—

उठाई सलावति ने घोड़ेकेँ बागे।
भये सिंह उमराव आड़े हो आगे॥
बहादुर दोऊ की कहालौं बड़ाई।
पड़ी कर्ण पारथकेँ ऐसी लड़ाई॥
निकलि खापतें खूब तेगा चली है।
महाघन घटा दामिनी जो भयी है।

जखम खाय पीछे भये हैं नचारा।
पकड़कैं सलावत को नीचे दे मारा॥

(लालकवि कृत समर वर्णन, 38)

इत उत द्वंद भए कोपे नरसिंह वीर रावँ उमरावँ घोउ चले बहरायकैं।
दोउ वीरवर मानो युगल समीरवेग भए जैसे मेघनाद लखन लड़ाइकैं।
कहै उमरावँ तुम प्रथम चलावँ हाथ मेरी कुलरीति यह वीरता बड़ाइकैं।
चूके वीर सलावत हाथ लखि उमरावँ मारहिं सरोही शिर दिए भहराइकैं।

(गोपालकवि कृत समर वर्णन, 2/89)

दुनू कविक अपन-अपन विशेषता अछि। दुनू कवि मिथिलेश नरेन्द्र सिंहक दरबारमे प्रतिष्ठित छलाह। लालकविक अग्रज मनबोधक मृत्यु ग्रियर्सन 1788 ई. अनुमान कयने छथि। हम अपन ग्रंथ 'मिथिला गौरव प्रतीक कन्दर्पी'मे लालकविक समय 1720-1790 ई. निर्धारित कयने छी (पृष्ठ 56)।

कन्दर्पी युद्ध सम्पूर्ण मिथिलांचलकैं एक कयलक। एहिसँ पूर्व एहन त्रासद स्थिति मिथिलांचलमे कहियो आयल नहि छल। गामक गाम डाबा टँगल। सामान्यत: मिथिलामे डाबा टाँगब नीक नहि मानल जाइत अछि मुदा ई प्रथम अवसर छल जखन लोक मृत्युकैं विलाप, अवसाद, विषाद वा नैराश्यक कथा नहि मानि एकरा मातृभूमिक लेल आत्मोत्सर्गक विरल भावसँ देखलक आ अपन आत्मीय परिजनक शहादत केर आभासँ दीप्त आ गर्वोन्नत भालसँ एहन भयंकर त्रासदीकैं बिदारि देलक।

कन्दर्पी युद्धपर मिथिलाक इतिहासकार सभमे सभसँ बेसी काज प्रो. राधा कृष्ण चौधरी अपन ग्रंथ History of Muslim Rule in Tirhutमे कयलनि। मिथिलाक इतिहास केर आनो पुस्तक सभमे एकर चर्च अछि। साहित्यमे एहि युद्धपर विशेष चर्च भेल। पाछू लालकवि आ गोपालकविक रचना सभक उद्धरण देल गेल अछि। मिथिलेश नरेन्द्र सिंहक दरबारी कवि ईशकविक नरेन्द्र विजयसँ किछु पद देखल जाय—

आगे बढ़े सलावत राय, भये आड़ उमराव आय के।
दोउ बहादुर के बलि जांव, लड़े कर्ण पारथ जू ऐसे॥
तब तो खूब चली तलवार, चमचम चमके रण भीतर में।
जैसे महाघटा के बीच, चपला चमके ऋतु पावस में॥...

सुर पुर चले बजाय निशान, यो क्षत्री रण सन्मुख मरिगौ।
बिगड़े सकल सिपाही लोक, जब उमराव गिरे रण भीतर॥...
कोपे मित्रजीत रणधीर,क्षन में मारे बखत सिंह को।
एक एक को मारन लाग, रोडमल्ल को जाफर मारे॥
रण में हाला कियो हलाल, भानु सुकुल को खास हाथ से।
जेते मोगल शेष पठान, एके बखसी सभ को मारे॥...
एक एक तकि मारन लाग, भला भला करि हल्ला मचि गौ।
वदा वदी करि गीरन लाग, यो शिर धोप धारसै कटि गौ॥
उठे कबन्ध रिसाय रिसाय, छन भरि रनमे नाचन लागे।
हाहा गिरे एक पर एक, काहू कलेजा कोऊ गांथे॥
काहुक हाथ कटे दोउ बांह, काहुक जङ्घा दोउ कटि गौ।
ऐसे घायल पड़े अनेक, जहां-तहां सब लदिके चल गौ॥
अद्‌बुद धार बही तत्काल, जहां मैदान भई भूपति की।

(ईशकवि : नरेन्द्र विजय, पृष्ठ 9-11)

आल्हा छन्दक ईशकविक ई रचना बड़ लोकप्रिय भेल। एहिना महाराज रुद्रसिंहक शासनकालमे कर्ण कायस्थ श्यामदास (श्यामकवि) रचित दोहावलीमे कन्दर्पी विषयक पद संकलित अछि। किछु पद देखल जाय—

घोड़ा जोड़ा रथ चलै, कोतल चले हजार।
हैदल पैदल को गनै, गजदल लागु अंधार॥ 93
फौजदार महथा भए, तासु भिखारी नाम।
कन्दर्पी के घाट पर, आय कियो संग्राम॥ 94
नृप के कटक वनौधिया, महा महा बलवन्त।
जमादार उमराव सिंह, रण पर चढ़े तुरन्त॥ 95
उमानाथ बकसी तहां, गोकुलनाथ गंभीर।
बछरू कमलाकान्त दउ, चारौ परम सुधीर॥ 96
जाय तहां संग्राम किय, चारौ रण के शूर।
एक एक को मारि कै, सबहि मिलायो धूर॥ 97
महथा के दल हारि गौ, चहु दिश चले पराय।
जीते रण भूपाल मणि, सैन सहित हरषाय॥ 98

(श्यामकवि : दोहावली, 1841, पृष्ठ 10)

ईशकवि (नरेन्द्र विजय), लालकवि (कन्दर्पीघाट समर वर्णन वा भिखारी भंग), गोपालकवि (श्रीमत्खंडवलाकुल विनोद), श्यामकवि (दोहावली) प्रभृति पुरना रचनाकार सभकेँ छोड़ियो देल जाय तखनो पं. राजेश्वर झा (कन्दर्पीघाट), पं. जीवनाथ झा (वीर नरेन्द्र सिंह), डा. ललितेश्वर झा (टूटती बेड़ियां आ सन्त परीक्षा), डा. रंगनाध दिवाकर (मिथिला गौरव प्रतीक कन्दर्पी) श्री अमरनाथ झा (कन्दर्पीघाट), श्री सुरेन्द्र शैल(चौहत्तरि सेर जनेऊक सप्पत), श्री आनन्द मोहन झा (रणडंक बजाउ शंख फुकू ने) प्रभृति रचनाकार कन्दर्पीकेँ अपन लेखनीक प्रिय विषयवस्तु बनओलनि। कन्दर्पीपर सन्दर्भ, चर्च आ आलेखादि भरल पड़ल अछि। कन्दर्पी युद्ध मिथिलाक साहित्यकेँ प्रभावित कयलक। कन्दर्पी युद्धक प्रभूत प्रभाव मैथिल परम्परापर पड़ल छल मुदा कालक्रममे एहिपर कुहेस तोपा गेल।

विज्ञानक स्नातक भेलाक बादो स्नातकोत्तर हिन्दीमे शीर्ष स्थान आ विश्वविद्यालय अनुदान आयोगक फेलोशिप (नेशनल एजुकेशन टेस्ट) हमरा भेटल। शोधक विषय छल— 'हिन्दी भाषा और साहित्यकेँ विकासमे मिथिला का योगदान' आ शोध निर्देशक छलाह— डा. रमाकान्त पाठक।

हुनक इच्छा आ जिज्ञासापर शोधक क्रममे हम पहील बेर कन्दर्पी गेल रही। ओतऽ बाउलमे एक ठाम जुत्ता धँसि गेल छल। निकाललहुँ तऽ ओहि संग औंठी जकाँ एक आभूषण बहरायल। बादमे ज्ञात भेल जे ओ पवित्री छल जे यज्ञोपवीतमे बान्हल जाइत अछि। इहो जनतब भेल जे कन्दर्पी युद्धमे शहीद सभक पवित्रीयुक्त यज्ञोपवीत जोखल गेल छल जे 74 सेर (कच्ची) भेल छल। कन्दर्पीमे पवित्री भेटबाक घटना हमरा कन्दर्पीसँ भावनात्मक रूपसँ जोड़ि देलक। इतिहासमे कन्दर्पीपर बहुत सामग्री नहि भेटल मुदा जनकंठमे सुरक्षित किछु सामग्री तथ्यपूर्ण लागल। उपलब्ध सामग्री केर तटस्थ आ वैज्ञानिक विश्लेषणसँ मिथिलाक इतिहासक एक महत्त्वपूर्ण अध्यायक इतिहासमे भेल उपेक्षा अरुचिकर लागल। कन्दर्पीक इतिहासकेँ जगजियार करबाक सेहन्ता बलवती भेल। बीहनि मोनक कोनो कोनमे सुरक्षित भऽ गेल। झंझारपुरक अनुमंडल पदाधिकारीक रूपमे पदस्थापन एहि विचारकेँ खाद-पानि-बीज देलक आ कन्दर्पीघाटमे मिथिला विजय स्तम्भ निर्माणक नेयार भेल।

शुरू-शुरूमे तऽ निराश भेलहुँ जे लोक प्राय: एहि गौरवशाली इतिहासकेँ बिसरि रहल अछि। मनुष्य स्वभावत: अतीतजीवी होइत अछि। अपन अतीत ओकरा सुखद आ बेस पियरगर लगैत अछि। आवश्यकता मात्र इतिहास बोधकेँ जागृत करबाक छल। विस्मृतिक कुहेसकेँ हटेबाक प्रयास सफल भेल आ मिथिला विजय

स्तम्भ निर्माण निमित्त लोकमे जोश आयल। मुखिया, कर्णपुर श्री अरुण कुमार झा अपन पंचायत केर आमसभा दि. 3.1.2010मे मिथिला विजय स्तम्भ निर्माण निमित्त प्रस्ताव पारित करा अनुरोध पत्रांक 02 दि. 8.1.2010 द्वारा अंधराठाढ़ी प्रखंड पठओलनि। श्री रविश किशोर, अंचल अधिकारी-सह-प्रखंड विकास पदाधिकारी, अंधराठाढ़ी अपन पत्रांक 24 दि. 9.1.2010 द्वारा अनुरोध पत्र अनुमंडल पठओलनि। अनुमंडल पदाधिकारी, झंझारपुर अपन पत्रांक 12 सा. दिनांक 9.1.2010 द्वारा विभागसँ अनापत्तिक माँग कयलनि। 10 जनवरी, 2010कैँ भेल मिथिला विजय स्तम्भ निर्माण समितिक बैसारमे निर्णय भेल जे अनापत्ति पत्र केर प्रत्याशा आ कर्णपुर पंचायत द्वारा आमसभामे पारित प्रस्तावक आलोकमे आगामी वसन्त पंचमी सरस्वती पूजा दिन 20 जनवरी, 2010कैँ मिथिला विजय स्तम्भ निर्माण निमित्त भूमि पूजन कयल जाय। तदनुसार 20 जनवरी, 2010कैँ एक सुन्दर समारोहमे पं. शशिनाथ झाक पौरोहित्यमे भूमि पूजन हम कयलहुँ। एहि भूमि पूजन समारोहमे लालकवि कृत कन्दर्पीघाट समर वर्णन केर सस्वर पाठ पं. सुनील मिश्र कयने छलाह। अपन गौरवपूर्ण अतीतक स्मरण करबाक लेल एहि समारोहमे परोपट्टाक लोक उलटल छल। समारोहमे आम आ खास सब वर्गक उपस्थिति छल। मंत्रोच्चार, जयकारा आ करतल ध्वनिक अजस्र धारा तखन आर गरिमापूर्ण भऽ गेल जखन बनोर (पश्चिमी) गामक श्री राजदेव यादव आ नवलखा टोल, महरैलक श्री राम महतो द्वारा कन्दर्पी युद्धमे प्रयुक्त तलवार समर्पित कयल गेल। दुनू उत्साही व्यक्ति कहलनि जे अलग-अलग समयमे हुनका सभक पुरखाकैँ कन्दर्पी प्रक्षेत्रमे संस्कार स्थल कूपक लग खेतमे जोत-कोड़ करैत काल भूमिमे गड़ल ई तलवार भेटल छल। कतेक वर्षसँ घरमे पड़ल छल। एहन शुभ अवसरपर ई प्रदान करैत हम सब गर्वित छी। दुनू तलवार अनुमंडल पदाधिकारी, झंझारपुरक पत्रांक 203/गो. दिनांक 4.4.2010 द्वारा वाचस्पति संग्रहालय, अंधराठाढ़ी संरक्षणार्थ पठाओल गेल। एहि संग्रहालयमे दुनू तलवार संरक्षित अछि जेकर अवलोकन कयल जा सकैत अछि।

एहि ठाम इहो उल्लेखनीय अछि जे कन्दर्पीमे मिथिला विजय स्तम्भ केर निर्माण पूर्णत: जन सहयोगसँ भेल अछि आ एहिमे सरकारक एक छदाम नहि लागल अछि। किशनगढ़ (राजस्थान)सँ संगमरमर केर स्तम्भ, पान, मखान, माछ आ पुराणक अनुकृति आयल। मुख्य स्तम्भपर भारतवर्षक राष्ट्रीय प्रतीक चारि शेर सुशोभित अछि आ प्लेटफार्मक चारू कातक स्तम्भपर मिथिलाक चारू चिह्न-माछ, मखान, पान आ पुराणक अनुकृति शोभायमान अछि। मुख्य स्तम्भक पादपीठपर चारू कात क्रमश: जय अमर शहीद, जय मिथिला, जय मैथिली आ जय हिन्द उत्कीर्ण अछि। इहो संयोगे अछि जे महासप्तमी 1753 ई.कैँ युद्ध बजरल छल आ

महासप्तमी 2013 ई.कँ विशालकाय हाइड्राक माध्यमसँ मिथिला विजय स्तम्भ अपन प्लेटफार्मपर स्थापित भऽ गेल। 12 फरवरी, 2014 ई.कँ अपार उत्साही जनसमूहक करतल ध्वनि, जयकारा आ पुष्पवृष्टिक बीच तत्कालीन ग्रामीण विकास मंत्री श्री नीतीश मिश्राजी एहि मिथिला विजय स्तम्भक लोकार्पण भव्य समारोहमे कयलनि। एहि ठाम भूमि पूजन, लोकार्पण, शहादत स्थली संबंधी शिलालेख लागल अछि। पं. शशिनाथ झा रचित संस्कृत श्लोकावली सेहो शिलापटपर उत्कीर्ण अछि जे ऐतिहासिक तऽ अछिए एकर सम्पूर्ण इतिहास कहबामे सक्षम सेहो अछि।

प्रत्येक वर्ष 20 जनवरीकेँ मिथिला विजय स्तम्भ निर्माण समिति जखन कन्दर्पी युद्ध केर अमर शहीद सभकेँ पुष्पांजलि अर्पित करैत अछि तखन सब रोमांचित भऽ जाइत अछि। एहि बेर स्वतंत्रता दिवसपर MSU झंडोत्तोलन समारोह सेहो शुरू कयलक। अपन शानदार अतीत आ आत्मोत्सर्गक विरल भावसँ कन्दर्पी मिथिलाक गौरव केर प्रतीक बनि गेल अछि। मिथिलाक इतिहासमे एकर स्थान अत्यन्त महत्त्वपूर्ण आ अप्रतिम अछि।

[प्रो. अनिरुद्ध झा व्याख्यानमालामे दि. 14 अक्टूबर 2019 कँ चेतना समिति, पटनामे देल व्याख्यान एवं चेतना समितिक स्मारिका, 2019मे प्रकाशित आलेख केर परिमार्जित रूप]

शंकर-मंडन शास्त्रार्थ : एक पुनर्मूल्यांकन

विश्व वाङ्मयमे एहन अनाचार नहि देखल गेल जे एक प्रतिभा पुंजमे दिव्यत्व स्थापित करबाक लेल दोसर अपराजेय मेधासूर्यकेँ सायास शास्त्रार्थमे पराजित देखाओल जाए। एहन प्रवाद पसारल गेल जे शताब्दी नहि सहस्राब्दीसँ बेसी धरि अपन जड़ि गाड़ने रहल। एहन अधम कर्म कएलनि पूज्यपाद शंकराचार्यक चेला-चपाटी सब, मठाधीश सब। आइ भगवत्पाद शंकराचार्य हमरा क्षमा करथु जे अनेक पुश्तसँ दुधा वैष्णव, धार्मिक-सनातनी रहितो हम किछु कटुवचन कहबाक लेल बाध्य भेल छी। की कएल जाय? धर्म आ राष्ट्रमे द्वन्द्व हमर सोझाँ अछि। जँ दुनूमे एक केर चुनाओ करबाक हो तखन हम राष्ट्रक संग जाएब। आगू बढ़एसँ पूर्व एक प्रसंगक उल्लेख करब जे पूज्य छोटका बाबू डॉ. गोविन्द नारायण चौधरी सुनओने छलाह आ जेकर उल्लेख हम 'सहदेव सुषमा : पं. सहदेव झा स्मृतिग्रंथ' केर सम्पादकीयमे कएने छी।

भारतवर्षक प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहर लाल नेहरू जापानक यात्रापर छलाह। एक मध्य विद्यालयमे हुनक भ्रमण कार्यक्रम छल। स्वागत-सत्कारेमे किछु छात्र पंडितजीक नाप लेलक। सामान्य शिष्टाचार आ प्रोटोकॉल सभक निर्वहनक बाद हुनकर जापानी छात्र सभसँ प्रत्यक्ष संवादक कार्यक्रम छल। बातचीतक क्रममे पंडितजी छात्र सभसँ पुछलनि जे 'अहाँ सब सभसँ बेसी किनका मानैत छी?'

'भगवान् बुद्धकेँ!' छात्र सभक समवेत स्वर अभरल। पंडितजी पुछलनि जे 'भगवान् बुद्ध किछु माँगथि तखन?'

एक छात्र बाजल— 'जे माँगल जाइत से देब।' दोसर छात्र कहलक जे 'भगवान् बुद्धक कहलापर अपन मुड़ी काटि हुनका चरणपर चढ़ा देब।' चकित नेहरूजी बच्चा सभसँ पुछलनि जे 'जँ भगवान् बुद्ध अपन देश भारतवर्षसँ एक पैघ सेना लऽ जापानपर आक्रमण कऽ देथि तखन की करब? देश हुनक चरणमे समर्पित कऽ देब?'

हॉलमे स्तब्धता पसरि गेल। सब चुप। किछु काल बाद, जे छात्र अपन मुड़ी भगवान् बुद्धक चरणपर चढ़एबाक बात कएने छल, ओकर स्वर अभरल— 'तरुआरि उठा भगवान् बुद्धक घैंट छोपि लेब।' विस्मित नेहरूजी ओहि छात्रक देशभक्तिक खूब प्रशंसा कएलनि। एहि क्रममे हुनक सूट तैयार छल। बच्चा सभक अनुरोधपर पहिरलनि तऽ एकदम सही फिटिंग छल। पंडितजी जापानी विद्यार्थी सभक देशभक्तिक भावना, छात्र सभक नाप आ सिलाईमे दक्षतासँ मुदित होइत विदा भेलाह। एहि प्रसंगक उल्लेख एहि लेल कएलहुँ जे पूज्यपाद आदि शंकराचार्य हमरा सभक श्रद्धेय छथि मुदा हुनक अयोग्य चेला-चटिया सभक कुकृत्यसँ मिथिला सहित देशक भारी अहित भेल। निराधार शास्त्रार्थमे पराजयक कलंक लागल। कहू जे एक निरपराध-निर्दोषकेँ फँसरी चढ़ा देल गेल। आइ एक बेर फेर एहि प्रवादक मूल्यांकन करब हमर अभिप्रेत अछि।

प्रवाद यैह अछि जे आदि शंकराचार्य मंडन मिश्रकेँ शास्त्रार्थमे पराजित कएलनि फेर हुनक भार्या भारती शंकराचार्यसँ कामशास्त्र विषयक प्रश्न पुछि हुनका निरुत्तर कएलनि। शंकराचार्य मृत राजा अमरुकक देहमे कायान्तरणसँ प्रवेश करैत राजभवनमे भोग-विलास कएलनि आ फेर भारतीकेँ उत्तर देलनि। पराजित मंडन आ भारती शंकरक शिष्यत्व स्वीकारलनि तखन मंडन सुरेश्वराचार्य रूपमे अभिहित भऽ शंकराचार्यक बाद श्रृंगेरी पीठक आचार्य भेलाह। एहि मठ केर आचार्य अनुक्रमणिकामे पूज्यपाद शंकराचार्यक बाद दोसर स्थानपर मंडन मिश्र सुरेश्वराचार्य रूपमे अंकित छथि।

इतिहासक दृष्टिसँ देखी तखन एहि प्रवादक दुमहला राजप्रासाद बाउलक भीतपर ठाढ़ लागत। एहिमे तथ्यक एकटा पजेबा नहि, तर्क केर सुर्खी-चूना वा सत्य केर सीमेंट नहि, जनश्रुति वा परम्पराक पानि नहि, कोनो दृढ़ प्रस्तरखंड केर विश्वासक अवलम्बन नहि आ ने समय केर शिलापर उत्कीर्ण कोनो निर्विवाद शिलालेख। झूठक ई दुमहला सत्य केर छोटछीन झटका नहि थामि सकल आ भरभराकेँ खसि पड़ल। एकरा खसबाक तऽ छलैए, आश्चर्य एकर अवश्य अछि जे एकटा आधारहीन आ तथ्यरहित प्रवाद एतेक शताब्दी धरि लोककेँ कोना भरमाबैत रहल।

सामान्यत: यैह मानल जाइत अछि जे आदि शंकराचार्य महोदयक समय 788-820 ई. अछि। ओना एम्हर डॉ. परमेश्वर नाथ मिश्रजीक एक नयनाभिराम दीर्घकाय (530 पृष्ठ) पोथी अमिट काल रेखा : आदि शंकराचार्य और उनका आविर्भाव काल (मानव प्रकाशन, कोलकाता, 2021 ई.) आएल अछि जाहिमे डॉ. मिश्र पूज्यपाद आदि शंकराचार्यक समय ईसापूर्व 507-475 ई. निर्धारित कएने छथि। एहि वैदुष्यपूर्ण ग्रंथक स्थापना सभक सम्मान करितो ई कहबामे कोनो द्वन्द्व

नहि अछि जे छप्पन प्रकारक व्यंजन सभक सचार लागल मुदा कोनोमे ने नून आ ने चिन्नी! सभटा अनोन वा पनिसोह! ग्रहण करब कोना! एहि ग्रंथमे डॉ. मिश्र शंकर दिग्विजय ग्रंथकेँ इतिहासक निकषपर विश्वसनीय मानि लेलनि जे एहि महत्त्वपूर्ण ग्रंथकेँ प्राणहीन करैत अछि। टाटक भीतपर कंक्रीटक छत नहि देल जा सकैछ। जे स्वयं आधारहीन हो ओ दोसराक अवलम्बन नहि भऽ सकैछ।

पूज्यपाद शंकराचार्यक समय विषयक दू सिद्धान्त मुख्य रूपसँ प्रचलित अछि। पहिल 788सँ 820 ई. आ दोसर ईसापूर्व 507सँ 475 ई.। ईसापूर्व दोसर शताब्दीसँ आगूक अन्य शताब्दीक सिद्धान्त सेहो अछि मुदा ओ विशेष महत्त्वपूर्ण नहि भेल। शंकराचार्यक ईसापूर्व 507 ई.मे अवतरण माननिहार विद्वान् द्वारकाधामक दोसर शंकराचार्य चित्सुखाचार्य (ईसापूर्व 447-423 ई.?) विरचित वृहत् शंकर दिग्विजय ग्रंथक एहि श्लोक सभकेँ आधार मानैत छथि-

ततः सा दशमे मासे संपूर्णशुभलक्षणे।
षडिविंशशतके श्रीमद्युष्ठिरशकस्य वै॥
एकत्रिंशेऽथ वर्षे तु हायने नन्दने शुभे।
मेषराशिगते सूर्ये वैशाखे मासशोभने॥
शुक्लपक्षे च पञ्चम्यां तिथ्यां भास्करवासरे।
पुनर्वसुगते चन्द्रे लग्ने कर्कटकाह्वये॥
मध्याह्ने चाऽभिजिन्नाममुहूर्ते शोभनेक्षिते।
स्वोच्चस्थे केन्द्रसंस्थे च गुरौ मन्देकुजेरवौ॥

(The Age of Shankar सेमिनार 2003मे प्रकाशित श्री अनन्त लाल शर्माक आलेख, पृष्ठ 76-77)

अर्थात् युधिष्ठिर संवत् 2631 नंदन संवत्सरमे वैशाख शुक्ल पंचमी रविकेँ आदिशंकराचार्यक जन्म भेल। प्राचीन शंकर दिग्विजयमे एहि विषयक निम्न श्लोकक उद्धरण अनेक ठाम आएल अछि—

तिष्ये प्रयात्नलशेवधिबाणनेत्रे ये नन्दने दिनमणावुदगध्वभाजि।
राधेऽदिते रुडुविनिर्गतमङ्गलग्नेऽत्याहूतवान्शिवगुरुः स च शंकरेति॥

अनल 3, शेवधि 9, बाण 5 आ नेत्र 2 एवं अंकस्य वामा गतिः आधारेँ ई कलि संवत् 2593 अबैछ।

डॉ. परमेश्वर नाथ मिश्र अपन बहुसन्दर्भित एहि ग्रंथमे युधिष्ठिर संवत्, कलि संवत्, गंग संवत्, शंकराचार्य द्वारा पाटलिपुत्र आ स्रुघ्न नगरक उल्लेख, ह्वेनसांग द्वारा बोधिसत्व गुणमति द्वारा अद्वैत वेदान्ती आचार्य माधवसँ शास्त्रार्थक उल्लेख(पृष्ठ 76-77), विक्रमपूर्व आठम शताब्दीमे पाणिनिक आविर्भाव (पृष्ठ 97), कार्षापण मुद्रा (पृष्ठ 100-5), शंकराचार्य द्वारा स्थापित मठ सभक आचार्य परम्परा (पृष्ठ 108-23), समकालीन बदरिकाश्रम नरेश पूर्णवर्मा (पृष्ठ 127-30), माधवाचार्यक दिग्विजय ग्रंथमे महिष्मती नरेश सुधन्वा आ आचार्य शंकरक समकालीनता (पृष्ठ 192-93), नेपाल नरेश वृषदेव वर्मन (ईसापूर्व 522-486 ई.)क समय पूज्यपाद केर नेपाल आगमन (पृष्ठ 220-24), कश्मीर नरेश जलौक (पृष्ठ 247-50), महाराज सुधन्वा द्वारा युधिष्ठिर शक 2663 आश्विन शुक्ल 15कैं निर्गत ताम्रपत्र इत्यादिक वैदुष्यपूर्ण विश्लेषणसँ स्थापित करबाक प्रयास कएलनि जे भगवत्पाद शंकराचार्यक समय ईसापूर्व 507-475 ई. अछि। एहि ग्रंथमे राजा सुधन्वा द्वारा युधिष्ठिर शक 2633 आश्विन शुक्ल 15कैं प्रदत्त ताम्रपत्रक उल्लेख अछि जाहिमे भगवत्पाद शंकराचार्य द्वारा स्थापित गोवर्द्धनमठ, ज्योतिर्मठ, शारदापीठ आ श्रृंगेरीमठ नामसँ जगन्नाथपुरी, बदरिकाश्रम, द्वारकाधाम आ श्रृंगेरीमठमे चारि धर्म राजधानीक स्थापना (चतस्रो धर्मराजधान्यो जगन्नाथ-बदरी-द्वारका-श्रृंगर्षिक्षेत्रेषु भोगवर्द्धनज्योतिश्शारदाश्रृंगेरीमठापरसञ्ज्ञकाः संस्थापिताः) आ आचार्य रूपमे तोटकाचार्य (अपर नाम प्रतर्दनाचार्य), पृथ्वीधर (अपर नाम हस्तामलकाचार्य), पद्मपाद (अपर नाम सनन्दनाचार्य) आओर विश्वरूप (अपर नाम सुरेश्वराचार्य)क उल्लेख अछि। ताम्रपत्रमे सुधन्वा स्वयंकैं सोमवंश चूड़ामणि युधिष्ठिरक परम्परासँ भारतवर्षक राजसत्ताप्राप्त राजा कहैत छथि (पृष्ठ 408-9)।

आदि शंकराचार्यक समय के बी पाठक, गोविन्द भट्ट, यर्लेकर आ हल्ट्ज 788-820 ई. निर्धारित कएलनि जेकर समर्थन सर जदुनाथ सरकार (History of Dashnami Naga Sanyasis, दोसर अध्याय, पृष्ठ 28) कएलनि। यैह तिथि प्रायः फर्ग्यूसन, मैक्समूलर, विंटरनिट्ज, डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन् प्रभृति अधिकांश विद्वान् सभकैं मान्य अछि। डॉ. परमेश्वर नाथ मिश्रजीक अगाध विद्वत्ताक प्रति श्रद्धा रखितो हम हुनका द्वारा परिकल्पित पूज्यपाद शंकराचार्यक समयकैं इतिहास द्वारा सम्बलित नहि मानि सकैत छी। ई आगू आर फरीछ भऽ जाएत।

शंकर दिग्विजय ग्रंथ 14म शताब्दीमे रचल गेल। हरिहर राय आ बुक्का रायक विजयनगर साम्राज्यक राजगुरु एवं वेद भाष्यकार सायण केर भ्राता माधवाचार्य 1380 ई.मे एकर परिकल्पना कएलनि। एहि शंकर दिग्विजय ग्रंथसँ पूज्यपाद आदि शंकराचार्यक विराट् दिव्यत्व स्थापित भेल, हुनक दिग्विजयी स्वरूप

स्थिर भेल एहिमे कोनो संशय नहि अछि मुदा एहि दिग्विजयी रूप निर्धारणमे जे इतिहासक घनघोर उपेक्षा भेल ओ अत्यन्त दारुण आ आपत्तिजनक अछि। 8म शताब्दीसँ 13म शताब्दी धरि शंकर-मंडन कथित शास्त्रार्थ केर कोनो चर्च कतहु नहि भेल अछि। दिग्विजय नाम्नी काल्पनिक ग्रंथ सभमे आदि शंकराचार्यकेँ मंडन मिश्र, बाणभट्ट, दण्डिन्, मयूर, श्रीहर्ष, भट्ट भास्कर, उदयनाचार्य प्रभृति मनीषी सभकेँ पराभूत करैत दर्शाओल गेल अछि। बाण केर काल निर्धारित अछि। सम्राट् हर्षवर्द्धन (606-647 ई.)क समकालीन हुनक राजदरबारमे सुशोभित संस्कृतक प्रथम उपन्यास 'कादम्बरी' आ हर्षवर्द्धन केर जीवनी 'हर्षचरितम्' केर यशस्वी रचनाकार बाणकेँ एहि काल्पनिक ग्रंथमे शंकराचार्यसँ प्रत्यक्ष शास्त्रार्थ करैत आ पराजित होइत देखाओल गेल अछि। 'कविर्दण्डी कविर्दण्डी कविर्दण्डी न संशयः' प्रसिद्ध महाकवि दण्डिन् केँ सेहो एहने हाल भेल अछि। महाकवि कालिदास कोना बचि गेलाह एकर आश्चर्य अछि। हर्षवर्द्धन केर दरबारी 'सूर्य शतक' केर लब्धप्रतिष्ठ कवि मयूर भट्टकेँ सेहो यैह गति देखाओल गेल। अद्वैत वेदान्तक सुप्रसिद्ध कृति 'खण्डनखण्डकाव्यम्' आ 'नैषधीयचरितम्' समान प्रौढ़ रचनाक प्रणेता श्रीहर्ष बारहम् शताब्दीमे भेलाह। हिनको शंकरसँ शास्त्रार्थमे पराजयक कथित दंश देल गेल। 'वर्तयामः स पंथाः' गर्वोक्ति केर अमर उद्घोषकर्ता उदयनाचार्यकेँ सेहो शंकर दिग्विजयकार शास्त्रार्थमे शंकरसँ पराजयक कठिन कल्पना कएलनि। ओ स्पष्ट रूपसँ कहैत छथि जे जखन नीलकण्ठकेँ आचार्य परास्त कयलनि तखन उदयन आदि विद्वान् भयसँ थरथर काँपय लगलाह—

यमिनामृषभेण नीलकण्ठं जितमाकर्ण्य मनीषिधुर्यवर्यम्
सहसोदयनादयः कवीन्द्राः परमद्वैतमुषश्चकम्पिरे स्म॥

(सर्ग 15, श्लोक 72, शंकर दिग्विजय, पृष्ठ 504)

एहन कतहु अन्हेर हो!

10म-11म शताब्दीमे उद्भूत प्रत्यभिज्ञा दर्शन केर आचार्य अभिनवगुप्तकेँ सेहो शंकरसँ पराजित देखाओल गेल अछि। 11म शताब्दीक तैत्तिरीय संहिता, ब्राह्मण आ आरण्यक ज्ञानयज्ञ नामक अमर भाष्यकार भट्ट भास्करकेँ सेहो नहि छोड़लनि माधवाचार्य। हुनको पराजित देखाओल गेल। जँ विद्या वारिधि वाचस्पति परवर्ती कोनो गृहागत शंकराचार्यक अनुरोधपर भामती टीका नहि लिखने रहितथि तखन माधवाचार्य हुनको पराजित प्रातिभ सभक सूचीमे दऽ देने रहितथि। ओना इहो तथ्यात्मक अछि जे जाधरि वाचस्पति शंकरक भाष्यपर 'भामती' नहि लिखलनि

ताधरि शंकराचार्यक आचार्यत्व अखिल भारतीय स्वरूपकेँ नहि प्राप्त कऽ सकल छल। बादक नालन्दा विश्वविद्यालयक बौद्ध दार्शनिक शान्तरक्षित अपन 'तत्त्वसारसंग्रह'मे 50सँ बेसी विद्वान् केर सिद्धान्त सभक उल्लेख आ ओकर खंडन-मंडन कएने छथि। एहिमे शंकराचार्य नहि छथि। स्पष्ट जे हुनक आचार्यत्व सुस्थिर नहि छल। वाचस्पति महोदयक 'भामतीऽक बादे शंकराचार्यक आचार्यत्व जगजियार भेल।

आब एहि अद्भुत ग्रंथकार माधवाचार्यक इतिहास बोधपर दृष्टिपात् कएल जाय। सातम शताब्दीक बाण आ 12म शताब्दीक उदयनसँ प्रत्यक्ष शास्त्रार्थ करैत छथि ओ महापुरुष जनिक आयु मात्र 32 वर्षक छल। धन्य छथि शंकर दिग्विजयकार! एहन अनर्गल इतिहास दृष्टि रखलाक बादो ई ग्रंथ तेहन प्रवाद पसारलक जे मिथिला सहित सम्पूर्ण भारतवर्ष भ्रमित रहल। मिथिला मुकुटमणि मंडन सहित प्रचण्ड प्रातिभ सभक पराजयक कथित प्रवाद एक सहस्राब्दीसँ बेसी समय धरि चतरि-चतरि विशाल वटवृक्ष बनि गेल। विश्व वाङ्मयमे एहन अनाचार-अनर्थ दोसर नहि भेल। एहि कपटपूर्ण अन्यायसँ भले शांकर मठ केर प्रज्ञारहित शठ कर्ता-धर्ता गर्वित भेल होथि मुदा हुनका सभक किरदानीपर वैकुण्ठमे बैसल पूज्यपाद केर पवित्र आत्मा अवश्य विकल भेल होयत। अपराजेय गौतम-कणाद-कपिल-मंडन-उदयनकेँ पराजयक मिथ्या कलंकसँ दग्ध होइत देखि मिथिलाक कोँढ़ फटैत रहल। एक दू शताब्दी नहि एक सहस्राब्दीसँ बेसी मिथिला एहि अनाचारपर रक्तरंजित नोर बहबैत रहल।

मंडन-शंकर शास्त्रार्थ आ मंडन-सुरेश्वर ऐक्यपर पहिल प्रहार प्रो. एम हिरियन्ना (Journal of the Royal Asiatic Society, April 1923) कएलनि। शंकर दिग्विजयकेँ भ्रामक ग्रंथ मानैत हुनक मंतव्य यैह छल जे ई माधवाचार्य वा विद्यारण्यक कृति नहि कोनो बादक माधव केर रचना थिक। सुरेश्वराचार्य मंडन नहि छथि। बादमे पं. सहदेव झा, पं. वैद्यनाथ झा प्रभृति मनीषी सब निर्धारित कयलनि जे शंकरसँ गृहस्थ मंडन नहि गृहस्थ विश्वरूप पराजित भेल छलाह जे बादमे सुरेश्वराचार्य भेलाह। एहि विषयक अनेक निर्विवाद निष्कर्ष उपलब्ध अछि।

आ. कुप्पुस्वामी शास्त्री जखन 1936मे मंडनक ब्रह्मसिद्धिक सम्पादन आ प्रकाशन कएलनि तखन जेना मिथिलाक मेधाग्नि प्रज्ज्वलित भऽ गेल हो। अखनो ब्रह्मसिद्धिक एक प्रतिमे सुरेश्वराचार्य आ दोसरमे मंडन मिश्रक नाम रचयिता रूपमे अंकित देखि कचोट होइत अछि। मिथिलाक मनीषी सभमे पं. सहदेव झा आ पं. वैद्यनाथ झाक ध्यान एम्हर गेल।

पं. सहदेव झाक गवेषणात्मक ग्रंथ 'मंडन मिश्र और उनका अद्वैत वेदान्त' (सम्पादक डॉ. तारानन्द वियोगी) 1999ई.मे प्रकाशित भेल। बादमे पं. सहदेव झाक सारगर्भित ग्रंथ 'मिथिला के वेद वेदान्त' (2004 ई.) आएल। पं. सहदेव झाक दुनू ग्रंथ आ एहि विषयपर 1973 ई.सँ प्रकाशित होइत रहल आलेख सभक मूल स्वर शंकर-मंडन विषयक कथित शास्त्रार्थक प्रवाद आ भ्रान्ति सभक थल्ला उखाड़ि उपटाएब छल। एहिमे पं. सहदेव झा पूर्ण सफल भेलाह। पं. वैद्यनाथ झाजी एहि विषयपर अनेक आलेख लिखलनि। अपन 'मण्डनमिश्रसुरेश्वराचार्ययोः पार्थक्यम्' (सहदेव सुषमा : पं. सहदेव झा स्मृतिग्रंथ, संपा. डॉ. रंगनाथ दिवाकर, 2012, पृष्ठ 411-16) आलेखमे पं. वैद्यनाथ झा प्रमाणित कएलनि जे मंडन सुरेश्वराचार्य नहि भेलाह अपितु गृहस्थ संन्यासी विश्वरूपाचार्य शंकराचार्यसँ शास्त्रार्थमे पराजित भेल छलाह। पराजयक बाद वैह सुरेश्वराचार्य भेलाह। आचार्य (डॉ.) तारानन्द वियोगीजीक पोथी 'मण्डन मिश्र : मिथक आ यथार्थ' (2013) विस्तारसँ मंडन मिश्र महोदयक अपराजित रूपकेँ सोझाँ आनलक। पं. इन्द्र नारायण झा (अन्वेषण : मिथिला दिग्दर्शन), डॉ. उदयनाथ झा अशोक (महिषी के मंडन), डॉ. रंगनाथ दिवाकर (सहदेव सुषमा : पं. सहदेव झा स्मृतिग्रंथ), आचार्य पं. महेश झा (मिथिला विमर्शक पुरोधा पं. सहदेव झा एवं शान्ति निबन्धावली), सम्पादक द्वय रमेश आ सुरेन्द्र नाथ(मंडन मिश्र : मीमांसा अद्वैत समागम), डॉ. नारायण झा, डॉ. चित्त नारायण पाठक, डॉ. भद्र नारायण पाठक, पंकज मिश्र, डॉ. देव शंकर नवीन, राम चैतन्य धीरज प्रभृति विद्वान् शंकर-मंडन शास्त्रार्थ विषयक प्रवाद सभक मूलोच्छेद करबामे अपन-अपन सारस्वत समिधा देलनि।

एहि सभक बादो हमरा ई कहबामे कोनो द्वन्द्व नहि अछि जे मिथिलामे शांकर मठ केर तेहन ने प्रभाव छल वा कहू जे हुनका सभक अदंक मिथिलाकेँ तेना गछारने छल जे जखन मनीषी सहदेव झा अपन समसामयिक विद्वान् सभसँ एहि विषयक चर्च करैत छलाह तखन बेसी गोटे एहि बातकेँ तार्किक मानितो चुप-चुप रहबाक संकेत करैत छलथिन, तथ्यात्मक रहितो बसातक विपरीत नहि चलबाक सुझाओ दैत छलथिन। ई कथा स्वयं पू. सहदेव बाबू हमरा कहने छलाह। मुदा सत्य कखन धरि बदरीमे नुकाएल रहैत? पं. सहदेव झाक मेधासूर्य सभटा बदरीकेँ फाड़ि चमकि उठल, तेहन ने बिड़रो उठल जे अज्ञानताक सभटा करिया बदरी उधिया गेल आ मिथिला मुकुटमणि मंडन केर अपराजित स्वरूप दमकि उठल। सहस्त्राब्दीसँ बेसी पुरान अनाचारक सफल उपचार भेल।

यथार्थमे शंकर दिग्विजय ग्रंथ इतिहास विरुद्ध काल्पनिक प्रसंग सभसँ भरल पड़ल अछि। माधवाचार्य कृत श्रीशंकर दिग्विजय श्री श्रवणनाथ ज्ञान-मन्दिर

ग्रंथमालाक पहिल पुष्प रूपमे महंत शान्तानन्द नाथ द्वारा ज्ञान मन्दिर, हरद्वारसँ सं. 2000मे प्रकाशित भेल अछि। अनुवादक छथि सुप्रसिद्ध विद्वान् आचार्य पं. बलदेव उपाध्याय। 1944मे प्रकाशित एहि ग्रंथकेँ eGangotri ebook तैयार कयलक आ mumukshu_bhawan varanasi द्वारा 5 सितम्बर 2022केँ upload भेल। वैदुष्यपूर्ण ग्रंथ रहितो ई केहन अविश्वसनीय पोथी अछि जे एहिमे भगवान् बुद्ध शंकरसँ भेल युद्ध (शास्त्रार्थ)मे क्षण भरि ठठि भागि जाइत छथि, पहिल अणु-परमाणुविज्ञानी कणाद कोनो कोनामे नुका जाइत छथि, न्यायसूत्रक प्रणेता महर्षि गौतम अन्हरियामे स्वयंकेँ नुका लैत छथि, सांख्यशास्त्रक प्रवर्तक आचार्य कपिल परास्त भऽ पलायन करैत छथि आ पातञ्जल सब पराभूत भऽ करबद्ध होइत छथि—

बुद्धो युद्धसमुद्यत: किल पुन:स्थित्वा क्षणाद्र विद्रुत:
कोणे द्रक्कणभुग्व्यलीयत तम: स्तोमावृतो गौतम:
भग्नोऽसौ कपिल: पलायत तत:पातञ्जलाच्याञ्जलि
चक्रस्तस्य यतीशितुश्चतुरता केनोपमीयेत सा॥(15/169॥)

एहिना बाण, मयूर, दण्डी, मुरारिमिश्र, धर्मगुप्त मिश्रादिक पराजयक उल्लेख अछि—

स कथाभिखन्तिषु प्रसिद्धान् बिबुधान् बाणमयूर दण्डिमुख्यान्।
शिथलीकृतदुर्मताभिमानान्निजभाष्य श्रवणोत्सुकांश्चकार॥(9/14)।

एहन-एहन कतेक अनैतिहासिक शास्त्रार्थ सभक वर्णन भेल अछि। शंकर-मंडनक मध्य आरम्भिक वार्तालापमे शब्दक समस्त मर्यादा ध्वस्त होइत अछि। दुनू एक-दोसराकेँ मुण्डी, दुराचारी, मांसाहारी, शराबी, पागल, दुर्बद्धि, गदहा, कृतघ्न, मूर्ख, निर्लज्ज, पातकी, चोर आर नहि जानि की की कहैत छथि (8/16-8/31)। कोनो दू विद्वान् मध्य एहन कटु शास्त्रार्थ वा शब्दक मर्यादाभंग कहियो नहि भेल छल आ ने फेर कहियो होयत!

अव्यवहारिक तऽ ई ग्रंथ तेहने अछि जे अभिनवगुप्त अपन पराजयपर शंकराचार्यकेँ अपन मंत्रसँ भगन्दर रोग दऽ दैत छथि (16/2) आ पद्मपाद द्वारा मंत्रसँ अभिनवगुप्तक मृत्युक आवाहन कयलापर अभिनवगुप्त मृत्युकेँ प्राप्त करैत छथि (सर्ग 16, श्लोक 32, पृष्ठ 547-48), शंकर वायुमार्गसँ मंडन मिश्रक घर जबर्दस्ती घुसि जाइत छथि ओतऽ जैमिनी आ वेदव्यास बैसल छथि (8/12), ब्राह्मण भेषमे स्वयं वेदव्यास आ शंकरक 8 दिन शास्त्रार्थ चलैत अछि (सर्ग 7)

आ पद्मपाद द्वारा रहस्य अनावृत भेलापर शंकराचार्यकेँ वेदव्यासजी साक्षात् दर्शन दैत छथि (7/15) आ शंकराचार्य हुनका प्रणाम करैत छथि (7/ 10), काशीमे भगवान् विश्वनाथ वेद सहित शंकरकेँ साक्षात् दर्शन दैत छथि (सर्ग 6) आ शंकर अनेक पूर्ववर्ती प्रातिभ सभकेँ परास्त करैत छथि (6/82), शंकर तुषानलसँ दग्ध होइत कुमारिल महोदयकेँ अपन ग्रंथ देखबैत छथि आ कुमारिल भाष्य देखि प्रसन्न होइत मंडन मिश्रक नाम कहैत छथि (8/113-115), शास्त्रार्थ बाद शंकरक विजय केर घोषणाक बाद जखन भारती जाय लगैत छथि तखन शंकराचार्य अपन वनदुर्गा मंत्रसँ हुनका बान्हि दैत छथि, भारतीक कामशास्त्रीय प्रश्न—

फला: कियन्त्यो वद पुष्पधन्वन: किमात्मिका: किं च पदं समाश्रिता: ।
पूर्वे च पक्षे कथमन्यथा स्थिति: कथं युवत्यां कथमेव पुरुषे॥

पर शंकरक निरुत्तर होयब (9/69) आ फेर संन्यासी शंकर मृत राजा अमरूकक देहमे परकाया प्रवेश कऽ रास-रंगमे डुबि कामशास्त्रीय शिक्षा ग्रहण करैत छथि। कहाँ धरि गानल जाय? अनर्गल आ अनर्थकारी काल्पनिक अवधारणासँ परिपूर्ण ई पोथी मात्र मिथ्यालाप करैत अछि। इतिहास बोधयुक्त शोधार्थी आ सत्यक अन्वेषक एहि काल्पनिक पोथीसँ दूरे रहथि सैह उचित अन्यथा एहि पोथीक मननसँ कोनो विवेकी मनुक्ख अपन केश अपने नोचि लेत एहिमे कोनो सन्देह नहि।

एहि महत्त्वपूर्ण तथ्यपर सेहो माधवाचार्यक दृष्टि नहि पड़लनि जे आदि शंकराचार्य भर्तृहरिक स्फोटवाद केर खंडन कएने छथि। भर्तृहरिक वाक्यपदीय केर श्लोक-तत्त्वावबोध: शब्दानां नास्ति व्याकरणादृते (1/13) केर उद्धरण दैत कुमारिल भट्ट व्यंग्य करैत छथि—

अतएव श्लोकोत्तरार्द्धं वक्तव्यम्
तत्त्वावबोध: शब्दानां नास्ति श्रोत्रेन्द्रियादृते।

मंडन मिश्र सेहो ब्रह्मसिद्धिमे 'सत्यमाकृतिसंहारे यदन्ते व्यवतिष्ठते' कहि हरिकारिका (भर्तृहरिक)क उदाहरण दैत छथि। कुमारिल, शंकर आ मंडन द्वारा कएल गेल भर्तृहरिक उल्लेखमे एक मूलभूत पार्थक्य अछि। शंकराचार्य बिनु भर्तृहरिक नामोल्लेख कएने हुनक स्फोटवाद वा शब्दाद्वैतवाद केर घोर विरोध करैत छथि आ मंडन मिश्र अपन स्फोटसिद्धि (श्लोक 37)मे भर्तृहरिक मत केर समर्थन करैत छथि। एहिसँ एतबा धरि एकदम स्पष्ट अछि जे कुमारिल, मंडन आ

शंकर भर्तृहरिक परवर्ती छथि। कोनो देहधारी मनीषी अपनासँ बहुत बादमे एहि धराधामपर अवतरित विद्वान् केर सिद्धान्त सभक खंडन कोना कऽ सकैत छथि? एहिसँ शंकराचार्यक जन्म ईसापूर्वमे होयबाक डॉ. परमेश्वरनाथ मिश्रक मान्यता स्वत: खंडित होइछ। भर्तृहरिक अनुज विक्रमादित्य मानल जाइत छथि। भर्तृहरिक समय कोनो दृष्टिए ईसापूर्व नहि मानल जा सकैछ। छठम शताब्दी भर्तृहरिक प्राय: मान्य समय अछि। माधवाचार्य तऽ भगवान् बुद्ध (ईसापूर्व छठम शताब्दी)सँ उदयनाचार्य (12म शताब्दी) धरिक मेधासूर्य सभसँ शंकराचार्यक शास्त्रार्थ देखा देलनि। 32 वर्ष मात्र शंकरक ओरदाकेँ 18 सय वर्ष धरि नमरा देलनि। हुनक एहन अनर्थकारी निष्पत्ति तऽ 'बाप छल पेटमे आ पूत गेल गया' जकाँ हास्यास्पद अछि!

शंकर दिग्विजय (13/5)मे शांकर शारीरक भाष्यपर सुरेश्वराचार्य द्वारा टीका लिखबाक इच्छा, चित्सुखाचार्यक समक्ष शंकराचार्यक स्वस्ति आ सुरेश्वराचार्यकेँ परोक्ष भेलापर चित्सुखाचार्य द्वारा हुनक मेधापर शंका प्रकट करबाक कथा आएल अछि—

अस्त्वेवमित्यार्यपदाभ्यनुज्ञामादाय मूर्ध्ना स विनिर्जगाम।
अथाम्बुजाङ्घ्रेर्दयिता: सतीर्थ्या: तं चित्सुखाद्या रहसीत्थमूचु:॥

झूठपर झूठ! चित्सुखाचार्यकेँ आदि शंकरक समकालीन नहि मानल जा सकैछ। डॉ. तारानन्द वियोगी (मण्डन मिश्र : मिथक वा यथार्थ, मैथिली अकादेमी, पटना, पृष्ठ 50-52) अनेक प्रातिभ सभक मत आ शिलालेखसँ जतनपूर्वक चित्सुखाचार्यक समय 1220-1280 स्थिर करैत छथि। एहन स्थितिमे चित्सुखाचार्यकेँ आदि शंकरक समकालीन मानबाक दिग्विजय ग्रंथकार सभक चौर्यकर्म फेर सेन्हेपर धरा गेल अछि। यैह हाल शंकरक पूर्ववर्ती गौड़पादाचार्यसँ शंकरक कथित भेंट (16/33) आ हुनका द्वारा भाष्यक प्रशंसाक सेहो अछि। पूर्वमे गोलोकवासी दादागुरुसँ शिष्य शंकरक साक्षात् भेंट माधवाचार्ये सन त्रिकालदर्शीए करा सकैत छथि! ई बात अलग जे हुनक एहि त्रिकालदर्शी शक्तिक पोल सभठाम खुजि गेल अछि। शंकर दिग्विजयकेँ इतिहास समर्थित पोथी किन्नहु नहि कहल जा सकैछ। एकरा झूठक पुलिन्दा कहब उचित अछि। डॉ. गोविन्द चन्द्र पाण्डेय (शंकराचार्य : विचार और सन्दर्भ, पृष्ठ 8) शंकर दिग्विजयकेँ सुआइत 'आधुनिक युगमे रचल गेल एकटा जालसाजी' कहैत छथि। इतिहास विरुद्ध आ झूठ होएबाक कारणेँ ई पोथी कालजयी कृति नहि भेल आ एकर जीवन मात्र डेढ़ सहस्राब्दी रहल।

दर्शनशास्त्रीय दृष्टिसँ देखी तखन शंकर दिग्विजय अनर्थ करबाक लेल बिर्त भेटत। मण्डन मिश्रकेँ मात्र मीमांसक मानल गेल। मानल गेल जे शास्त्रार्थमे शंकर अपन प्रतिज्ञा एहि श्लोक (8/61)सँ रखलनि—

ब्रह्मैकं परमार्थसच्चिदमलं विश्वप्रपञ्चात्मना।
शुक्तौ रूप्यपरात्मनेव बहुलाज्ञानावृतं भासते॥
इहाज्ञानान्निखिलप्रपञ्चनिलया स्वात्मव्यवस्थापरं।
निर्वाणं जनिमुक्तिमभ्युपगतं मानं श्रुतेर्मस्तकम्॥

ब्रह्म सत् चित् निर्मल आ परमार्थ अछि। जेना शुक्ति चानीक रूप धारण करैत चमकैत अछि तहिना ब्रह्म स्वयं प्रपंच रूपसँ भासित होइछ। ज्ञानसँ ओहि ब्रह्मक प्रपंचक नाश होइत अछि आ ओ बाहरी पदार्थसँ हटि अपन शुद्ध रूपमे प्रतिष्ठित होइछ तखन ओ जन्म-मृत्युक बंधनसँ मुक्त भऽ जाइछ।

कहल गेल जे मंडन एहि श्लोक (8/64)सँ अपन सिद्धान्तक प्रतिपादन कएलनि—

वेदान्ताः न प्रमाणं चिति वपुषि पदे तत्र संगत्ययोगात्
पूर्वौ भागः प्रमाणं पदचयगमिते कार्यवस्तुन्यशेषे।
शब्दानां कार्यमात्रं प्रति समधिगता शक्तिरभ्युन्नतानां
कर्मभ्यो मुक्तिरिष्टा तदिह तनुभृतामाऽऽयुषः स्यात् समाप्तेः॥

चैतन्य स्वरूप ब्रह्मक प्रतिपादनमे वेदान्त प्रमाण नहि भऽ सकैछ किएक तऽ सिद्ध वस्तुक प्रतिपादनमे उपनिषद् क तात्पर्य नहि अछि। वेदक कर्मकांड भाग वाक्य द्वारा प्रकटित सम्पूर्ण कार्यकेँ प्रकट करैत अछि तेँ वैह प्रमाण अछि। शब्दक शक्ति कार्य मात्रकेँ प्रकट करबामे अछि। कर्मसँ मुक्ति प्राप्त होइछ तेँ ओहि कर्मक अनुष्ठान प्रत्येक मनुक्खकेँ आजन्म करबाक चाही।

इहो कहल गेल जे जखन किछु दिन चलल शास्त्रार्थमे मंडन अपन सिद्धान्तक प्रतिपादनमे असमर्थ भेलाह तखन ओ अद्वैत सिद्धान्तक खंडन हेतु उद्धत भेलाह (8/75)।

भारी शास्त्रार्थ बजरल छल। तत्त्वमसि, हुँ फट्, आदित्यो यूपः, रात्रिसत्र, विमु-अणु, जीव-आत्मा, सिद्धि-साध्य, प्रत्यक्ष-परोक्ष, आत्मा-परमात्मा, भेद-अभेद, जीव-ब्रह्म आदिपर भारी गमर्थन भेल। जखन कल्पनिके शास्त्रार्थक वर्णन करबाक अछि तखन माधवाचार्यक जे जे मोन भेलनि से से अनाप-शनाप लिखि देलनि। ने इतिहासपर ध्यान ने दर्शनक ज्ञान!

मंडन मिश्रजीकेँ द्वैतवादी मीमांसक रूपमे चित्रण कऽ माधवाचार्य जे अरण्यरोदन कएलनि एहि महापापक लेल इतिहास कहियो हुनका क्षमा नहि करत। मंडन सेहो शंकरे जकाँ अद्वैतवादी छथि। मंडन अपन एक ग्रंथक नामे ब्रह्मसिद्धि रखलनि। अपन एक ग्रंथ विधि विवेकमे सेहो मंडन वेदान्तक प्रामाणिकताक प्रतिपादन कएने छथि— उपनिषदात्मतत्त्वन्तु विधिनिरपेक्षवाक्यात् प्रतीयते। बेसीठाम ओ अपन अद्वैतवादी स्वरूपकेँ पल्लवित करैत छथि। दुनू महानुभाव अद्वैत वेदान्ती रहितो कतिपय विन्दुपर एक-दोसराक मतकेँ खंडित कएने छथि। ब्रह्मक स्वरूप, ब्रह्मसँ साक्षात्कार, वैदिक कर्मसँ मुक्ति, संन्यास, प्रारब्ध, अविद्या इत्यादिपर स्पष्ट रूपसँ दुनूमे मतान्तर अछि। मंडन ब्रह्मकेँ भावात्मक आनन्द-स्वरूप मानैत छथि आ शंकरकेँ एहिपर आपत्ति छनि। एहि परम्परामे यैह मान्य अछि जे जँ ब्रह्मकेँ सत् कहैत छी तखन एकर मात्र एतबे अभिप्राय जे ब्रह्म असत् नहि छथि, जँ हुनका आनन्द कही तऽ मात्र एतबे अर्थ जे हुनका कोनो कष्ट नहि छनि। शंकरक अद्वैत वेदान्तक उत्स 'ब्रहम सत्यं जगन्मिथ्या'पर आश्रित अछि तऽ मंडनक अद्वैत वेदान्तक आधार ईशावास्योपनिषद् आ छान्दोग्योपनिषद् केर एहि मंत्र सभमे सुरक्षित अछि—

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीवेषेत् शतं समा:
एवं त्वयि नान्यथेतोस्ति न कर्म लिप्यते नरे
कुटुम्बे शुचो देशे स्वाध्यायमधीयानो
ब्रह्मलोकमभिसम्पद्यते न च पुनरावर्त्तते न च पुनरावर्त्तते॥

शंकर संन्यासीकेँ मात्र ब्रहमचिन्तनसँ मोक्ष भेटबाक बात करैत छथि मुदा मंडन ब्रह्मचिन्तनक संग दान, तप, यज्ञादि कर्म कएलासँ गृहस्थकेँ संन्यासीक अपेक्षा जल्दीए मुक्ति भेटबाक बातपर दृढ़ छथि। मंडन केर वेदान्तकेँ आचार्य मधुसूदन सरस्वती भावाद्वैत कहलनि आ एकरा शांकर वेदान्तसँ बेकछा देलनि। दुनूक सिद्धान्तमे यैह मुख्य अन्तर अछि। दुनूमे जे मतभिन्नता अछि ओहि मतभेदक विन्दु सभकेँ बादमे कथित शास्त्रार्थक रूप देल गेल। शंकर-मंडनमे एहन कोनो प्रत्यक्ष शास्त्रार्थ नहि भेल छल। इतिहास आ दर्शनक अन्वेषणसँ ई तथ्य निर्णायक रूपसँ स्थापित होइत अछि। शंकर-मंडन शास्त्रार्थ पूर्णत: अवैज्ञानिक आ काल्पनिक अछि।

['सहदेव सुषमा : पं. सहदेव झा स्मृतिग्रंथ' (2014)क सम्पादकीय केर परिमार्जित रूप, 2024]

भारतीय संस्कृतिमे जातीय जीवन

सरिपहुँ भारतवर्षमे जातिपर लिखब अखनो एकटा साहसपूर्ण निर्णय मानल जाइत अछि तथापि डॉ. महेन्द्र नारायण राम 'भारतीय संस्कृतिमे जातीय जीवन' नाम्नी पोथीमे एक प्रयास कयलनि अछि।

'जाति' शब्द संस्कृतक 'जनि' (जन) धातुमे 'क्तिन' प्रत्यय केर संयोगसँ निष्पन्न भेल अछि। न्यायसूत्रमे एकर व्याख्या अछि— 'समान प्रसावात्मिका जाति:' अर्थात् जिनका सभक जन्मक मूल स्त्रोत समान हो। 'न्याय सिद्धान्त मुक्तावली'मे एकर परिभाषा देल गेल अछि— 'नित्यत्वे सति अनेक समवेतत्त्वम्जातिवर्त्य' अर्थात् जे नित्य हो आ अपन समान सब वस्तुमे समवाय संबंधसँ विद्यमान हो। व्याकरणमे एहि विषयक कहल गेल अछि—

आकृतिग्रहणा जाति: लिङ्गनाञ्च न सर्वभाक्।
सकृदाख्यातनिर्ग्राह्या गोत्रं च चरणै: सह॥

अर्थात् जाति आकृति द्वारा चीन्हल जा सकैत अछि, कोनो लिंगमे बदलैत नहि अछि। सेनारक सिद्धान्त अछि जे एक व्यवसाय, तीव्र वंशानुगत आधारपर घनिष्ठ सहयोग राखऽवला समूह जाति अछि। सर रिचलेक मत अछि जे साझा नाम, खास पेशा आ एक पितरक संतान वर्ग एक जाति अछि। नेसफील्डक मान्यता अछि जे अपन सम्प्रदाय छोड़ि दोसरासँ संबंधक बहिष्कार करऽवला समुदायक वर्ग एक जाति अछि। एहि विवेचनाक निष्कर्ष अछि जे एक पितरक संतान, एक व्यवसाय, समान कद-काठीवला समूहकेँ एक जाति मानल जा सकैत अछि। यद्यपि इहो पूर्ण सत्य नहि।

प्रश्न उठैत अछि जे जातिक उत्पत्ति केना आ कहिया भेल? वर्ण आ जातिमे कतेक पार्थक्य अछि? वर्णसँ जाति वा कर्मसँ जातिक उत्पत्ति भेल? एकर विस्तार कोना भेल? ऋग्वेदक दसम मंडलक 9म सूक्त 'पुरुष सूक्त' अछि। एहिमे 16 मंत्र अछि। यद्यपि किछु विद्वान् एकरा प्रक्षिप्त सेहो मानैत छथि। पुरुष सूक्त यजुर्वेद (31म अध्याय) आ अथर्ववेद (कांड 19, 6ठा सूक्त)मे सेहो ई आयल अछि। ऋग्वेदमे पुरुष सूक्तक प्रथम श्लोक अछि—

सहस्त्रशीर्षा पुरुषः सहस्त्राक्षः सहस्त्रपात्।
स भूमिं विश्वतो वृत्वाऽत्यतिष्ठद् दशांगुलम्!!

अर्थात् पुरुषक हजार (अभिप्राय असंख्य) माथ, आँखि आ चरण अछि। पृथ्वीकेँ सब तरफसँ झाँपि ओ ओहिसँ परे दस आँगुरमे पसरल अछि। एहि पुरुष सूक्तक 12म श्लोकक अत्यधिक चर्चा होइत अछि—

यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन्।
मुखं किमस्यासीत् किं बाहू किमरू पादा उच्येते॥

ब्राह्मणोस्य मुखमासीद्बाहू राजन्यः कृतः।
उरू तदस्य यद्वैश्यः पदभ्यां शुद्रो अजायत॥

भाव ई जे पुरुषक मुख के?, भुजा के?, जाँघ के? आ चरण के? उत्तर जे ब्राह्मण मुख, क्षत्रिय भुजा, वैश्य जंघा आ शूद्र पयर। एतऽ 'पदभ्यां शूद्रो अजायत' अर्थात् पयरसँ शूद्रक जन्म भेलपर विवाद होइत रहल अछि। जँ एकरे सत्य मानि ली तऽ 14म श्लोक सेहो मानल जाय—

नाभ्या आसीदन्तरिक्षं शीर्ष्णो द्यौः समवर्ततः।
पदभ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोको अकल्पयन्॥

'पदभ्यां भूमिः' अर्थात् पयरसँ पृथ्वीक उत्पत्ति भेल। एहिसँ तऽ पृथ्वी आ शूद्र सहोदर भेल। विष्णु पदसँ निःसृत गंगाकेँ देवाधिदेव महादेव अपन शीशपर सुशोभित कयने छथि—

गांगवारि मनोहारि मुरारिचरणच्युतम्।
त्रिपुरारि शिरश्चारि पापहारि पुनातु माम्॥

(गांगाष्टक)

गंगा आ पृथ्वीक सहोदरता जिनका प्राप्त हो ओ जन्मना परम पावन आ नमस्य छथि। एहि तथ्यसँ स्पष्ट जे शूद्र जन्मना हीन कथमपि नहि, कर्मना जे आनक गति से हुनको। गीतामे भगवान् कृष्णक वचन अछि—

चातुर्वर्ण्य मया सृष्टं गुणकर्मविभागशः।
तस्य कर्तारमपि मां विद्धयकर्तारमव्ययम्॥

(गीता-4.13)

ब्राह्मणक्षत्रियविशां शूद्राणां च परन्तप।
कर्माणि प्रविभक्तानि स्वभावप्रभवैर्गुणैः॥

(गीता-18.41)

स्पष्ट अछि जे भगवान् श्रीकृष्णक वर्ण विभाजन केर आधार कर्म अछि जाति नहि। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य आ शूद्र सभक स्वभावक गुणक व्याख्या गीतामे अछि।

जातिक आधार कर्म छल जन्म नहि। महाभारतमे सेहो यैह प्रतिध्वनित होइत अछि जे शुरूमे सम्पूर्ण समाज समान छल, कोनो विशिष्ट वर्ण नहि छल। सभ ब्रह्म समान छल आ कर्मक आधारपर वर्ण विभाजन शुरू भेल।

न विशेषोऽस्ति, वर्णानां सर्व जङ्गमिदं जगत्।
ब्रह्मणा पूर्वसृष्टं हि कर्मभिर्वर्णतां गतम्॥

(महाभारत, शान्तिपर्व-188.10)।

वैदिक साहित्यमे अनेकशः एहन प्रसंग अछि जे कथित निम्न कुलोद्भव भेलाक बादो अपन सद्गुणसँ कतेक लोक श्रेष्ठ ब्राह्मण रूपमे पूजित भेलाह ओ कतेक ब्राह्मण अपन अधम कर्मक कारणेँ शूद्रहुसँ हीन भेलाह। अश्वघोषकेँ बौद्ध धर्म अंगीकार करबासँ पहिनेक रचना वज्रसूचीमे यैह स्वर अभरल अछि—

शूद्रोऽपि शीलसम्पन्नो गुणवान् ब्राह्मणो भवेत्।
ब्राह्मणोऽपि क्रियाहीनः शूद्रात्प्रत्यवरो भवेत्॥

(वज्रसूची 43म श्लोक)।

भविष्य पुराणक पाँचू अध्याय वैदिक ऋषि लोकनिक क्रान्तिकारी विचारक प्रतिबिम्ब अछि। सभठाम कर्मक प्रधानता अछि, जाति वा कुलक नहि।

ऐतरेय ब्राह्मणक रचयिता महिदास ऐतरेय दासीपुत्र छलाह। ऋग्वेदक ऋषि कवषऐलुष सेहो दासीपुत्र छलाह मुदा अपन ज्ञानसँ श्रेष्ठ ऋषि रूपमे सर्वमान्य भेलाह। ई काल मेधावादी सभक काल मानल जा सकैछ। जातीय दंभ आ मेधाक सूर्यक बीच प्रतिस्पर्धाक सुन्दर उदाहरण मेधातिथि आ वत्सक मध्य भेल श्रेष्ठताक द्वन्द्व अछि। वत्स एक शूद्राक संतान आ मेधातिथि शुद्ध ब्राह्मण। मेधातिथि वत्सकेँ श्रेष्ठ नहि मानैत छलाह। दुनूमे श्रेष्ठता लऽ कऽ अग्नि परीक्षा भेल। वत्स विजेता भेलाह, मुदा मेधातिथि नहि माननलि। फेर रथस्पा नदी पार करबाक जल-परीक्षा भेल। एहिमे सेहो वत्से आगू रहलाह तथापि मेधातिथि नहि माननलि। बादमे सृष्टि-परीक्षामे मेधातिथि कोनो सृष्टिक सर्जना नहि कऽ सकलाह आ वत्स अपन योगबलसँ सृष्टि करबामे सफल भेलाह। तखन मेधातिथि निर्णायक रूपसँ अपन पराजय स्वीकार कयलनि। पंचविंश ब्राह्मण (14. 6.6), जैमिनीय ब्राह्मण (3,234-236) उपाख्यानसँ प्रमाणित होइछ जे ओहि समय श्रेष्ठताक आधार ज्ञान व कर्म छल, जन्म किन्नहु नहि।

महर्षि वाल्मीकि तऽ किरात सभक बीच रहैत दस्यु कर्ममे प्रवृत्त छलाह फेर सत्कर्ममे आबि यशस्वी महात्मा भेलाह। सुदक्षिण क्षैमि शूद्र छलाह तथापि वेदाध्ययन कऽ सामवेदक श्रेष्ठ आचार्य भेलाह। शुद्रा परिचारिका जाबाला पुत्र सत्यकाम जाबालाक कथा छान्दोग्य उपनिषद् मे आयल अछि। हिनक जन्मक विषयमे बुझलाक बादो ऋषि हारिद्रुमत गौतम हुनका शिक्षा देलनि आ ओ आचार्य भेलाह। ब्रह्मज्ञानक निष्णात आचार्य सत्यकामक आश्रममे दूर-दूरसँ आबि लोक शिक्षा प्राप्त कऽ ब्रह्मवेत्ता भेल। शुद्र प्रषध तपस्वी भेलाह। ऋषि गालब शूद्र पैजवनक प्रशंसा कयलनि (स्कन्द पुराण) आ चांडाल मातंग अपन सत्कर्मसँ ब्राह्मण रूपमे प्रतिष्ठा पओलनि। नेदिष्टक पुत्र नाभाग वैश्य छलाह, मुदा हुनक पुत्र सब अपन कर्मसँ क्षत्रियत्व प्राप्त कयलनि (विष्णु पुराण, 4.8.1)। अहिना क्षत्रिय शौनक ऋषि ब्राह्मणत्व प्राप्त कयलनि (विष्णु पुराण, 4. 8.1)। ब्राह्मण पुलस्त्यक

पौत्र रावण अपन कर्मसँ राक्षस कुलमे परिगणित भेलाह। वैदिक वाङ्मयमे एहन वर्ण परिवर्तन केर असंख्य उदाहरण अछि।

आब प्रश्न ई अछि जे वर्त्तमान जातीय व्यवस्था कोना आ कखन उत्पन्न भेल। प्राचीन कालमे शूद्र अपन गुण कर्मसँ ब्राह्मण भऽ सकैत छल, ब्राह्मण शूद्रोसँ हीन भऽ सकैत छल। वैश्य क्षत्रिय भऽ सकैत छल आ क्षत्रिय ऋषि (ब्राह्मण) भऽ सकैत छल। मुदा आजुक समयमे एक जातिमे जन्म लेलाक बाद जाति परिवर्तन संभव नहि छै। जातिक एहन दृढ़ता कहिया आरंभ भेल?

एहि प्रश्नक कोनो सटीक उत्तर नहि छल। हार्वर्ड विश्वविद्यालय केर डेविड रीचक नेतृत्वमे भेल अध्ययन Nature पत्रिकामे 2009 ई.मे प्रकाशित भेल छल। एकर अनुसार भारतीय सभ अपन मूल एनसेस्ट्रल नार्थ इंडियन (ANI) आ एनसेस्ट्रल साउथ इंडियन (ASI)मे पाबि सकैत छथि। 2016ई.मे एकटा आर अध्ययन कल्याणी विश्वविद्यालय (बंगाल)मे स्थापित नेशनल इंस्टीच्यूट ऑफ बायोमेडिकल जेनोमिक्स (NIBM) कयलक। एकर निदेशक पार्थ मजुमदार अपन सहयोगी नीता सरकार राय आ अनालाभ वसु संगे निष्कर्ष देलनि जे प्रथम अध्ययन, जाहिमे भारत आ अमेरिकाक वैज्ञानिक सब ANI आ ASI केर बात कयलनि, केर अतिरिक्त एनसेस्ट्रल तिब्बतो बर्मन (ATB) आ एनसेस्ट्रल आस्ट्रो एशियाटिक (AAA) मूल सेहो अछि। प्रथम अध्ययनमे 2000 वर्ष पूर्व तक जातिक दृढ़तापूर्ण अवधारणा नहि छल एहन विचार मानल गेल, मुदा NIBM केर अध्ययनक बाद पार्थ मजुमदार जनतब देलनि जे 70 पीढ़ी पूर्व जाति प्रथा दृढ़ नहि छल। एक पीढ़ी 22 वर्षक मानैत हुनक निष्कर्ष अछि जे 1575 वर्ष पूर्व जाति प्रथाक दृढ़तापूर्ण अवधारणा नहि छल। गुप्तकाल एकर उत्स अछि आ गुप्त साम्राज्यक चन्द्रगुप्त द्वितीय वा कुमारगुप्त प्रथम सामाजिक वा नैतिक बंदिश शुरू कयलनि जकर बाद सगोत्रीय विवाह शुरू भऽ गेल, एहिमे दृढ़ता आयल आ जातिप्रथा प्रारंभ भऽ गेल।

कालान्तरमे एहि जाति प्रथाक वीभत्स रूप सोझाँ आयल जखन ब्राह्मण स्वयंकेँ श्रेष्ठ आ आन विशेष कऽ शूद्रकेँ हीन मानब शुरू कयलनि। छुआछूतक बीमारी समाजमे पैसल। स्थिति एहन भऽ गेल जे नायक जातिक लोक ब्राह्मणसँ दूर रहि आ तायन 36 डेग दूर रहि गप्प कऽ सकैत छल। तायन जातिक लोक नायक जातिक लोकसँ 12 डेग फराके रहि गप्प कऽ सकैल छल। महाराष्ट्रमे माँग आ महार जातिक लोककेँ बाहर थूकबाक अनुमति नहि छल तेँ विवश ओ गर्दनिमे छोट घैल बान्हि चलैत छलाह। डाँढ़मे झाड़ू बान्हैत छलाह ताकि अपन पदचिह्नकेँ बहाड़ि मेटा सकथि।

कतेक ठाम एहन वर्गकेँ बाहर निकलबपर प्रतिबंध छल। अपमान, उपेक्षा, तिरस्कार आ असमानताक नग्न आ विद्रूप छवि पसरि गेल छल। कथित निम्न जाति सभक आ उदारवादी लोक सभक पैरुख धँसल जा रहल छल।

ई सत्य जे एहनो विषम परिस्थितिमे बहुत रास नररत्न कथित अधम कुलोदभव भेलाक बादो अपन प्रतिभा, सत्कर्म ओ आचरणसँ सर्वजन प्रतिष्ठित भेलाह। आलवार संत तिरूप्पाण, नायनार संत नन्दनार, संत चूड़ामणि चोखामेला, संत शिरोमणि रविदास, संत साधना कसाई, भक्त शिरोमणि नाभादास आ पथ प्रदर्शक नारायण गुरु दलित सप्तर्षिमे परिगणित भेलाह। हिनका सभक प्रति सब वर्णमे आदरक भाव रहल। आलवार आ नायनार (विष्णु आ शिव) सन्त सभक प्रतिष्ठा सब तरहक लोकक मध्य छल। वैष्णव साहित्य (तमिल, तेलुगू, गुजराती, कन्नड़, मराठी, उड़िया आदि)मे जाति वा वर्णक विभेद नहि आ ने एहि आधारपर केओ पूजनीय आ केओ दंडनीय। संस्कृत साहित्यमे मातंग दिवाकर (सम्राट् हर्षवर्द्धनक सभामे बाणभट्टक सम्पूज्य), भर्तृमेण्ठ (महावत कुलमे जन्म मुदा 'हयग्रीव वध' काव्यसँ वाल्मीकि केर पुनर्जन्मक रूपमे मान्य), शिंगभूपाल देव प्रभृति असंख्य उदाहरण मानल जा सकैछ जे कथित अधम कुलोत्पन्न भेलाक बादो लब्धप्रतिष्ठ भेलाह। सोमा धोबिनक कथा अद्यावधि मिथिलामे प्रचलित अछि। सोमवारी व्रत कथा (रूद्रधर कृत वर्षकृत्य)मे ओ देवीक रूपमे पूजित छथि।

एहन किछु देदीप्यमान नक्षत्र सभक अछैत ई कहबामे कोनो भाँगठ नहि जे कालान्तरमे जाति व्यवस्था घृणा, द्वेष, कलह, संघर्ष आ विवादक मूल प्रतिबिम्बित करऽ लागल। 1901मे भेल जनगणनामे विभिन्न जातिक संख्या 2378 छल। आब तऽ 3000सँ बेसी भऽ गेल। 1881 ई.मे उत्तराखंडमे मात्र दू जाति ब्राह्मण आ राजपूत लिखल गेल छल आब ओतहु एकर संख्या बढ़ि गेल अछि।

जातीय वैमनस्यताक उत्स प्राचीन वैदिक ग्रंथमे सेहो ताकल जा सकैछ। ब्राह्मण ग्रंथमे वर्णगत भेदभावकेँ प्रश्रय भेटैत देखाइत अछि। कर्मकाण्डकेँ कठोर कयल गेल जाहिसँ विकृति सभक प्रवेश भेल। एहिना धर्मसूत्र आ स्मृतिग्रंथ वर्ण वैषम्यकेँ बढ़ावा देलक। ई कहबामे कोनो संकोच नहि जे प्राचीन वैदिक साहित्यमे सब किछु श्लीले आ वरेण्ये नहि अछि। अन्याय आ असमानताक असंख्य अवधारणाक अवलोकन होइत अछि। प्रत्येक युगक यथार्थ मिन्न होइत अछि आ एकरा ओहि युगक यथार्थ मानल जा सकैत अछि। मात्र हिन्दू धर्मग्रंथेमे एहन स्थिति अछि सेहो सत्य नहि। सब धर्मक प्राचीन ग्रंथक यैह स्थिति अछि।

एकर निस्तारक मूल यैह अवधारणा भऽ सकैछ जे जे किछु ओहिमे नीक अछि से ग्रहण करी आ शेष त्यागि दी। सुप्पत चाउरक लेल खखरी आ भुस्सीकेँ ओसायब आवश्यक।

एहि आलेखक आरंभमे हम कहने रही जे जातीय व्यवस्थापर किछु लिखब अत्यधिक साहस वा कही जे दुस्साहसक काज थिक। एकर मूल कारण अछि जातीय आधारपर संविधान प्रदत्त आरक्षण। एहि विन्दुपर स्पष्ट रूपसँ दू वर्ग अछि— प्रथम आरक्षणसँ लाभान्वित भेनिहार आ दोसर एहिसँ प्रभावित भेनिहार।

प्रथम वर्ग युग-युगसँ उपेक्षित, शोषित, वंचित आ व्यथित रहलाक कारणेँ एकरा उचित, आवश्यक, प्रेय आ अधिकार मानैत अछि तऽ दोसर वर्ग एकरा हेय आ मेधा विरोधी मानैत अछि। अप्रतिम धनुर्धर एकलव्यक गुरुदक्षिणामे 'औंठादान' सभक हृदय विदीर्ण करैत अछि तऽ जखन सवर्ण वर्गक मेधावादी सब सेहो निराशामे व्यथित होइत '...लम्हों ने खता की और सदियों ने सजा पायी' कहैत आइ.आइ.टी (JEE,2017) मुख्य परीक्षाक आधिकारिक कट ऑफ मार्क्स उद्धृत करैत हाक्रोश करैत छथि जे सामान्य वर्ग-81, ओ.बी.सी.-49, अनु. जाति-32 आ अनु. जनजाति-27 अंक आनि परीक्षा उत्तीर्ण कयलक अछि, अर्थात् सामान्य आ अनुसूचित जाति/जनजाति मध्य अंकक अंतर तिगुना। पुरूखा सभक अपराधक सजा हमरा सभकेँ किएक देल जाइत अछि, तऽ मोनमे कचोट होइछ।

दुनू पक्षक अपन-अपन तर्क अछि, एहि विषयपर मनन करबा लेल राज मनीषी सब छथि। हुनका सभपर एकर छार-भार दऽ हम सब डॉ. महेन्द्र नारायण रामक पोथी 'भारतीय संस्कृतिमे जातीय जीवन' केर दिग्दर्शन करी।

पोथी 31 अध्यायमे विभक्त अछि। ई पोथी निषाद, डोम, मेहतर, मुसहर, चमार, पासी, धोबी, दुसाध, थारू, चौपाल, कुशवाहा, कुर्मी, यादव, स्वर्णकार, केसरवानी वैश्य, हलुआइ, कुम्हार, पमरिया, चिड़िमार, नट, क्षत्रिय, भूमिहार, ब्राह्मण (पंजी व्यवस्था), श्रोत्रिय ब्राह्मण, कुजड़ा, कुरेड़ी, कायस्थ, एराकी, खरबार आदि जातिक उत्स, मूल, उत्पत्ति, विकास, समाजक उत्थानमे विभिन्न जातिक अवदान आ जातीय महत्त्वपूर्ण व्यक्तित्व सभक गवेषणापूर्ण व्याख्या प्रस्तुत करैत अछि।

लेखक महेन्द्रजी जतनपूर्वक एकटा उत्कृष्ट शोधपरक पोथी लिखलनि अछि। सब जातिक मूल, उत्स आदिक विश्लेषण वैदुष्यपूर्ण अछि। मेहतर जातिक नाम, प्रकार आ गोत्रक वर्णन अन्यत्र दुर्लभ अछि। अत्यधिक जतनसँ मेहतर जातिक 166टा गोत्रक वर्णन हिनक शोध आ अध्ययनक एवरेस्टीय उच्चताक दिग्दर्शन करबैत अछि। एहि जातिक बलिदानी व्यक्तित्व सभक वर्णन सेहो आह्लादकारी

अछि। खुशरब भंगी, जेता भाई चूहड़ा, मातादीन भंगी, महावीरीदेवी भंगी, बब्लू आ चेतराम, रामचन्द्र भंगी, बुद्धा चूड़ा, ननकउ मेहतर प्रभृति शहीद सभक आत्मोत्सर्गक गाथासँ कोन वर्ग गर्वित नहि होयत? हिनका सभक चरित्र वर्णनसँ इहो भ्रम दूर होइत अछि जे भारतवर्षक आजादीक महासंग्राममे मात्र पढ़ल-लिखल जागरूके वर्ग भाग लेलनि। अनेकश: प्रसंग हमरो अश्रुत छल। ई सत्य स्वीकार करैत छी। शोधपरक लेखनीक एहने उच्चता आनो जातिक वर्णनमे अभरल अछि।

एहिना चमार जातिक वर्णन सेहो बहुपठित आ पाण्डित्यपूर्ण अछि। 'चरमण्य', 'चड़स', 'होल', 'जया', 'भस्य', 'वृधा', 'स्यूमन' प्रभृति शब्दक व्याख्या पुलकित करैत अछि। चमार जातिक गोत्र सभक विवरण दैत डॉ. महेन्द्रजी लिखैत छथि जे बहुत रास गोत्र ब्राह्मण, क्षत्रिय आ वैश्य सभक गोत्र अछि। एहिसँ हुनक निष्कर्ष जे शुरूमे चारू वर्णक मध्य आपसी संबंध छल आ ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य आ शूद्रक भेद नहि छल, अत्यन्त आह्लादकारी अछि। भले ओ किछु 'कठपिंगल' सभकेँ नहि अरघय। चमार जातिक देदीप्यमान नक्षत्र सभक वर्णनमे संत शिरोमणि रविदास, बाबा गज्जन शाह, धर्मदास, महात्मा श्रवणदास, महात्मा हरिदास, महात्मा समनदास प्रभृति नाम सुखद आनन्दानुभूति दैत अछि। मुसहर जातिक विशद् वर्णन आ दीनाभद्रीक कथा कहैत लेखक मुसहर सभक ओ आराध्य कोना भेलाह एहिपर अभिनव प्रकाश दैत छथि। धोबी जातिक वर्णनमे सोमा धोबिनक कथा किएक नहि कहलनि से नहि जानि। ई अपेक्षित छल। पासी जातिक उत्पत्तिक विषयमे क्रूक महोदयक मादे एकटा रोचक कथाक वर्णन भेल अछि जे परशुराम कुशसँ पाँच व्यक्तिक निर्माण कयलनि जे गामक रक्षा कयलक। ओ पाँचू पत्नीक माँग परशुरामसँ कयलनि। एक कायस्थ कन्यासँ हिनका सभक विवाह भेल आ पासी जातिक अभ्युदय भेल।

पोथीमे अनेक रोचक प्रसंग सब आयल अछि जे शोध सन नीरस विषयकेँ सरस बनबैत अछि। लेखक केर ई चातुर्य बेस रमणगर अछि।

दुसाध जातिक वर्णन वैदुष्यपूर्ण आ बेस ललितगर भेल अछि। महाभारतक पात्र दुशासनवंशीय होयबाक अवधारणाकेँ लेखक सप्रमाण खंडित करैत छथि। एहिना प्रह्लादवंशीय होयबाक मान्यताक प्रतिवाद करैत छथि। दुसाधकेँ राववंशीय मानबाक हिनक आधार ठोस भित्तिपर ठाढ़ लगैत अछि। ओ गहलौत आ सिसोदिया वंशक एक शाखाकेँ दुसाध माननलनि अछि। लेखक केर 'दुसाध जाति का वृहत् इतिहास' पूर्वमे प्रकाशित अछि आ एहि वर्णनमे ओहि वृहत ग्रंथक स्वाभाविक

प्रतिबिम्ब अभरैत अछि। महानायक सलहेस, देवता गोरैया बाबा, बहोर बाबा, चिन्तामन बाबा, तंत्रशक्तिक अधिष्ठात्री सामी, गोसाई, बन्नी प्रभृति अनेक नक्षत्र एहि जातिक आकाशमे सुशोभित छथि।

चौपाल जातिक आराध्य शशिया महाराज आ कुलदेवी मातरिक मादे लेखक एहि जातिक संघर्षक गाथा प्रस्तुत करैत छथि। रामायण आ महाभारत कालसँ निषादक विस्तृत विश्लेषण श्लाघनीय अछि। एहिना कुर्मी-कुशवाहा जातिक वर्णन सेहो ऐतिहासिक अछि। पमरिया जातिक उत्पत्तिक कथा रोचक अछि। भगवान् शंकर विष्णुक अंश रामावतारपर दशरथक राजभवन जा नाच-गान कऽ आनन्दोत्सव मनेलनि आ शंकरक वैह गण सब कालान्तरमे पमरिया जातिक पूर्वज मानल गेलाह। चिड़िमार जातिक दाता शाह लियाकत हुसैन, हाफिज, अब्दुल्ला, अब्दुल करीमशाह मौलाना, हजरत मिर्जावली, मोहम्मद मुबारकी प्रभृति व्यक्तित्व सभसँ मीर शिकार वा चिड़िमार जातिक आभा शोभायमान अछि। व्रात्यसँ नट जातिक उत्पत्ति सोहनगर अछि। यादव जातिक उत्पत्तिपर विपुल प्रकाश देल गेल अछि। भगवान् श्रीकृष्णक महानायकत्वसँ सब सुपरिचित छी। एहि वर्णनमे ययाति, देवयानी आ शर्मिष्ठाक प्रसंग लालित्यसँ परिपूर्ण अछि। प्रथम गणराज्यक स्थापनाक श्रेय यादव जातिकेँ देल गेल अछि। विश्व विश्रुत महानायक लोरिकक वर्णन गौरवान्वित करैत अछि। सोनार जातिक विस्तृत वर्णन रूचिगर अछि तऽ हलुआइ जातिक सामाजिक स्वरूप वर्णन करैत विलियम क्रूक महोदयक मादे महेन्द्रजी कहलनि अछि जे एक व्यक्ति अपन महुआक बावन टा गाछक पात, फूल आ फल तीनू पुत्रमे बाँटलक आ फूल लेनिहारक वंशज कलवार, पात लेनिहारक वंशज कानू आ फल लेनिहार पुत्रक वंशज तेली भेलाह। ई देवकथा जीविका उपार्जनक आधारपर जातिक निर्माणक कथा सेहो कहैत अछि।

भूमिहार आ ब्राह्मण जातिक विश्लेषण विशिष्ट आ वैदुष्यपूर्ण अछि। श्रोत्रिय ब्राह्मणक विश्लेषण विशेष रूपसँ कयल गेल अछि। मैथिल ब्राह्मणक पंजी व्यवस्था, मूल, गोत्र आदि केर विस्तृत वर्णन कयल गेल अछि। आनो आन जातिक विश्लेषण चमत्कृत करैत अछि। संबंधित जातिक लोक सब संभव जे एतेक अपन जातिक विषयमे नहि जनैत होथि। ई महनीय उपलब्धि थिक डॉ. महेन्द्रजीक।

पोथीक एहि लघु विश्लेषणक निष्कर्ष स्वरूप कहल जा सकैछ जे डॉ. महेन्द्र नारायण रामक ई पोथी पठनीय, संग्रहणीय आ विचारणीय अछि। सब जातिक लोकक लेल ई ग्रंथ उपयोगी अछि। एकर अध्ययनक बाद जातीय कटुतामे

कमी आबि सकैत अछि आ यैह एहि ग्रंथक सभसँ पैघ उपलब्धि रहत। सब जाति महान् आ विशिष्ट अछि एहि तथ्यक उद्घाटन भेला सन्ता लोक दोसर जातिकेँ हीन नहि मानत आ जातीय कटुताक दंशसँ समाज मुक्त भऽ सकत, एहन हमर विश्वास अछि। वर्तमान समयमे बढ़ि रहल अन्तरजातीय विवाहक फलस्वरूप जे नव समाज आब बनि रहल अछि ओहिमे जातीय व्यवस्था कतेक दिन धरि घिचा सकत एहि विन्दुपर आ विभिन्न जातिमे जे अर्थक आधारपर समन्वय पसरि रहल अछि एहि सभपर डॉ. महेन्द्रजी अलगसँ किछु लिखथि, एहि कामनाक संग एहि भूमिकाक समापन दिनकरक एहि पाँतीसँ करैत छी जे मेधाक कोनो जाति नहि।

एकर जय हो।

जय हो जग में जले जहाँ भी नमन पुनीत अनल को,
जिस नर में भी बसे हमारा नमन तेज को, बल को॥

[डॉ. महेन्द्र नारायण रामक पोथी 'भारतीय संस्कृतिमे जातीय जीवन'क भूमिका]

विकलजीक चित्रप्रिया, दासी आ चोखगर खोँच : रेडियो नाट्य जगत् केर त्रिवेणी 'चोखगर खोँच'

काव्येषु नाटकं रम्यम् कहल गेल अछि। एहि लेल जे कथा-कविता-गीत-संगीत आदि परोक्ष प्रदर्शन थिक। कथा-कविता, गीत-संगीत आदिमे प्राय: कोनो चीज चाक्षुष नहि रहैछ। लेखक अपन रचना कखनो घरपर कयलनि आ पाठ वा वाचन कोनो दोसर ठाम। गीत-संगीत, सिनेमादिमे सेहो यैह स्थिति रहैछ। प्राय: सभकिछु परोक्ष रूपसँ संचालित होइछ। मात्र नाटक एहन विधा थिक जाहिमे प्राय: सभटा प्रत्यक्ष रूपसँ संचालित होइछ। ने कोनो कट केर गुंजाइश आ ने रिटेक केर संभावना। ने कोनो त्रुटिपर सुधार केर अवसर। बहुत किछु लाइभ टेलीकास्ट वा जीवन्त प्रसारण जकाँ। यैह कारण अछि जे नाटकमे लेखक, अभिनेता-अभिनेत्री, गीत-संगीतकार आदि केर सर्जनात्मक प्रतिभाक चाक्षुष परीक्षण चलैत रहैत अछि। ई मूल्यांकन उपस्थित दर्शक आ प्रेक्षक तत्क्षण करैत रहैत छथि। जे कोनो दोष वा गुण अछि ओ तखने अभरि जाइत छैक आ तदनुसार प्रेक्षक ओहि प्रस्तुतिपर अपन धारणा बनबैत छथि। तेँ हमर मान्यता अछि जे एक सफल नाटकमे काव्य केर आन कोनो विधाक अपेक्षाकृत मौलिक मेधाक आवश्यकता अधिक रहैछ। वस्तुत: प्रेक्षक त्रिविमीय आयाममे दृश्य श्रव्य रूपक केर जे यथार्थ घटनाक्रम अपन सोझाँमे अपन आँखिसँ देखैत छथि, कानसँ सुनैत छथि, इन्द्रिय सभसँ पूर्णतामे महसूस करैत छथि एहि सभसँ हुनकामे साधारणीकरण भाव केर जे परिमाण अबैत अछि ओ अद्‌भुत होइत अछि। भाव तादात्म्य केर एहन उच्चतम अवस्थामे दर्शक स्वयं ओहि नाटकक एक पात्र बनि जाइत छथि। ई निर्द्वन्द्व रूपेँ कहल जा सकैछ जे भाव तादात्म्य केर ई परम अवस्था आनएमे नाटक शेष कोनो विधासँ बेसी सफल रहैत अछि। तेँ एकरा साहित्यक सर्वश्रेष्ठ विधा वा मुकुटमणि कहल जाइत अछि।

भारतवर्षमे नाटक केर परम्परा अति प्राचीन अछि। मानल जाइत अछि जे ब्रह्माजी ऋग्वेदसँ सामग्री (कथानक), सामवेदसँ गेयात्मकता, यजुर्वेदसँ अभिनय आओर अथर्ववेदसँ विभिन्न रस लऽ पंचम स्वतंत्र वेद रूपमे नाट्यवेद केर सर्जना कयलनि। नाटककेँ तेँ 'नाट्यस्तु पंचमो वेद:' कहल गेल अछि। आ. भरतकेँ एहि नाट्यवेदक परम्पराकेँ स्थिर कऽ शास्त्रीय रूप देबाक श्रेय देल गेल अछि। महाकवि भास, अश्वघोष, कालिदास, भवभूति, विशाखदत्त प्रभृति महाकविक अजस्र यश केर गंगोत्री हुनका सभक नाटके रूपी गोमुखीसँ नि:सृत भेल अछि। मैथिलीक विकासक बाद मैथिलीमे सेहो अनेक नाटक रचित भेल मुदा ई सब रंगमंच आधारित नाटक छल।

रेडियो नाटक केर उत्पत्ति बहुत बादमे भेल। हमसब नेनपनमे दू सलाइमे ताग बान्हि दूरसँ एक कात ठाढ़ सलाइधारी द्वारा बाजल ध्वनि दोसर कात सलाइकेँ कानमे सटा स्पष्ट सुनने छी। जखन कि ओहिना ओतेक दूरसँ ध्वनि सुनब संभव नहि होइत छल। स्पष्ट अछि जे दू सलाइक बीच बान्हल धागा ध्वनि संचरण केर माध्यम बनैत छल। आब वैज्ञानिक सब लागल छलाह जे बिनु कोनो माध्यमकेँ वा वायुमंडलकेँ माध्यम बना ध्वनि केर संचरण कोना भऽ सकैछ। एहि क्रममे अनेक शोध भऽ रहल छल।

विद्युत चुम्बकीय तरंग (Electromagnetic wave)पर 19म शताब्दीक आठम दशकमे विभिन्न वैज्ञानिक अलग-अलग खोजमे लागल छलाह। 1873मे जेम्स क्लार्क मैक्सवेल सिद्धान्तत: एकर खोज कयलनि। 1880मे हेनरिक रुडोल्फ हट्र्ज एकरा व्यवहारिक रूप देलनि। 1872मे विलियम हेनरी वार्ड बेतार संवादकेँ पेटेंट करओलनि। थॉमस अल्बा एडीसन 1880मे अपन ग्रासोफर टेलिग्राफीकेँ पेटेंट करओलनि। 1880मे गुल्येल्मो मार्कोनी एलेक्ट्रोमैगनेटिक तरंग केर खोज कयलनि आ 1896मे हुनका एकर पेटेंट भेटल। एहिसँ पूर्व 1894मे जगदीश चन्द्र बोस कलकत्तामे रेडियो तरंगक सार्वजनिक प्रदर्शन कयने छलाह। 24 दिसम्बर 1906केँ कनाडाक वैज्ञानिक रेगिनाल्ड फेसेंडेन अपन वायलिन बजओलनि आ दूर अटलांटिक महासागरमे चलैत जहाज सभक रेडियो ऑपरेटर सभ ओ धुन सुनलनि। रेडियो प्रसारण केर एहने शुरुआत छल। पहिल रेडियो स्टेशन ली द फॉरेस्ट 1918मे न्यूयार्कमे शुरू कयलनि। 2 नवम्बर 1920केँ पिट्सबर्गमे पहिल व्यवसायिक रेडियो स्टेशन शुरू भेल। इंग्लैंडक पहिल रेडियो स्टेशन 2MT 14 फरवरी 1922केँ चेम्सफोर्ड लऽग रिट्लेसँ शुरू भेल। दोसर रेडियो स्टेशन 2LO मार्कोनी हाउस, स्ट्रेंडमे 11 मई 1922सँ शुरू भेल। मारकोनीकेँ रेडियोक आविष्कारक मानल जाइछ।

भारतवर्षमे 23 जुलाई 1923कँ इरविन आधुनिक मुम्बईमे रेडियो स्टेशन केर उद्घाटन कयलनि। 1927मे मुम्बई-कोलकाता मध्य रेडियो प्रसारण शुरू भेल जे 8 जून 1936सँ सौँसे देशमे प्रसारित होमऽ लागल। पूर्वमे एकर नाम इंडियन स्टेट ब्रॉडकास्टिंग सर्विस छल। एहि दिनसँ एहि प्रसारण सेवाकेँ ऑल इंडिया रेडियो रूपमे एक छतरी तऽर आनल गेल। 1957मे सुप्रसिद्ध कवि सुमित्रानंदन पन्त एकरा लेल आकाशवाणी शब्द देलनि जे सर्वप्रिय आ ग्राह्य भेल।

बहुत लोक विशेष रूपसँ लिखल गेल ए कॉमेडी ऑफ डेंजर (लेखक- रिचर्ड ह्यजेज)केँ पहिल रेडियो नाटक मानैत छथि जे बीबीसी (18 अक्टूबर 1922कँ गठित) लंदनसँ 15 जनवरी 1924कँ प्रसारित भेल छल। ओना शेक्सपीयर केर प्रसिद्ध नाटक जूलियस सीजर केर चारिम अंकक तेसर दृश्यक कैसियस (स्वर-राबर्ट एटकिंस) आ ब्रुटस (स्वर-बासिल गिल) केर घोँघाउजक रेडियोपर प्रसारण 2LO द्वारा 6 फरवरी 1923कँ भेल छल आ शेक्सपीयरेक नाटक ए मिडसम्मर नाइट्स ड्रीम केर एक दृश्यक रेडियो नाट्य रूपान्तरण 25 जुलाइ 1923कँ इंग्लैंडक रेडियो स्टेशन 2LOपर प्रसारित भेल छल।

भारतवर्षमे 26 जनवरी 1948कँ पटना सहित अनेक ठाम रेडियो स्टेशन स्थापित भेल। स्वतंत्रता प्राप्तिक समय मात्र दिल्ली, बम्बई, कलकत्ता, मद्रास, त्रिचरापल्ली आ लखनऊमे रेडियो स्टेशन छल। पटनामे आकाशवाणी केन्द्रक स्थापना कालेसँ चौपाल कार्यक्रम शुरू भेल छल। एकर प्रथम मैथिली कम्पीअर छलाह वीरेन्द्र नाथ झा। दोसर मैथिली कम्पीअर भेलाह आनन्द मिश्र (1949-52)। मायानन्द मिश्र 1957मे कम्पीअर भेलाह।

आरम्भमे रंगमंचीय नाटकमे महिला पात्र सभक भूमिका पुरुषे सभ निमाहैत छलाह। एहन स्थिति रेडियो नाटक लेल विचित्र छल। प्रो. हरिमोहन झाक पत्नी सुभद्रा झा एवं सुमनजीक गाम बल्लीपुरक शकुन्तला चौधरी महिला पात्र सभकेँ आरम्भिक स्वर देनिहारि कलाकार भेलीह। पद्मश्री विन्ध्यवासिनी देवी सेहो लोहा सिंह नाटकमे खदेरन की मदरकेँ अपन स्वर देलनि।

चौपालमे मैथिली रेडियो नाटक केर प्रवेश वर्ष 1949मे कुमार गंगानंद सिंहक एकांकी जीवन संघर्ष केर रेडियो नाट्य रूपान्तरणसँ भेल। युक्तिनाथ झा, शंकर कुमार झा, सावित्री शर्मा, आनन्द मिश्र, शिवकान्त झा आदि लब्धप्रतिष्ठ लोक एहि प्रथम रेडियो नाटक केर प्रथम कलाकार छलाह। आरम्भमे हरिमोहन झाक कथा, गोनू झाक हास्य कथा, पौराणिक ऐतिहासिक आख्यान प्रभृति

विषयवस्तु रेडियो नाटक केर उपजीव्य बनल। बाबू लक्ष्मीपति सिंह पौराणिक आख्यान सभक रेडियो नाट्य रूपान्तरण कयलनि। आरसी बाबू कतेक रेडियो नाटक लिखलनि। हिनकर बातक बतंगर रेडियो नाटक लोकप्रियता आ शिल्पमे नव प्रतिमान स्थापित कयलक। मायानन्द मिश्रक इतिहासक बिसरल रेडियो नाटक एक सफल नाटक रूपमे चर्चित भेल जे संवादक भाषा, संगीत आ ध्वनि प्रभावक एक पैघ डरीर उकेरित कयलक। सुधांशु शेखर चौधरीक उफाँटि, नव आँखि, सोनाक टुकड़ी; रूपकान्त ठाकुरक मलिकाइन आ घर दूर बाट एक, राजकमल चौधरीक आन्हर जिनगी आ नाटक-सार, प्रभास कुमार चौधरीक अपराध, अन्तरात्मा, एकटा रहय सुभद्रा आदि; गोपालजी झा गोपेशक अहिवातक पातिल, आदर्श वर, शीशामे जिनगी आदि; भाग्य नारायण झाक मनोरथ आ सोनक ममता आ रवीन्द्रनाथ ठाकुरक हास्य व्यंग्य केर नाटक गुरु गुड़ चेला चीनी, पैंच उधार, मि. बोर आदि रेडियो नाटक लोकप्रियताक नव भाव-भित्तिक स्पर्श कयलक। डॉ. नरेश कुमार विकल केर पहिल रेडियो नाटक दासी आ दोसर नाटक चित्रप्रिया आकाशवाणीक पटना केन्द्रसँ 80क दशकमे प्रसारित भेल। दुनू नाटकमे गौरीकान्त चौधरी 'कान्त', प्रेमलता मिश्र 'प्रेम', कविता देवी, तनुजा शंकर, ब्रह्मानन्द झा, उमाकान्त झा केर स्वर छल। प्रस्तोता छलाह फार्म रेडियो ऑफिसर प्रभुनाथ राय। दुनू नाटक कतेक बेर पुनर्प्रसारित भेल। दुनू लोकप्रियताक नव मानदंड स्थापित कयलक। तेसर रेडियो नाटक चोखगर खोँच आकाशवाणी, दरभंगासँ नवम दशक केर उत्तरार्द्धमे प्रसारित भेल छल। एहिमे सीताराम शर्मा, हिनक सुपुत्री, मीरा झा, इन्द्रानन्द सिंह झा (खुरखुर भाइ) आदि अपन स्वर देने रहथि।

मैथिली रेडियो नाटक केर शलाका पुरुष गौरीकान्त चौधरी 'कान्त'क बिनु उल्लेख कयने रेडियो नाटकपर किछु लिखब झुझुआन लागत। आकाशवाणीक चौपाल कार्यक्रम जनप्रियतामे शीर्षपर छल। बादमे एहि चौपाल कार्यक्रमक मुखियाजी रूपमे गौरीकान्त चौधरी 'कान्त' तेहन रूढ़ भेलाह जे हुनक नामे मुखियाजी पड़ि गेल। गौरी कान्त चौधरी 'कान्त' (3 जनवरी 1937-29 दिसम्बर 2001) 31 जनवरी 1995कँ रेडियोक यशस्वी सेवासँ अवकाशग्रहण कयलनि। 1964मे एहि सेवामे आएल छलाह। हिनक बाद राम नरेश सिंहकँ चौपालक मुखियाजीक दायित्व भेटल। चौपालमे खुला मंच चौपाल केर स्थापना दिवस 6 जून 1966 छल। 6 जून 1967कँ प्रथम खुलामंच चौपाल सबौर कृषि महाविद्यालयमे आ दोसर तिरहुत कृषि महाविद्यालय, ढोलीमे 6 जून 1968कँ आयोजित भेल

छल। नाटक लोहा सिंह केर रंगमंचीय जीवन्त प्रदर्शन चौपाल केर खुला मंचपर पटनाक भारतीय नृत्य कला मन्दिरमे भेल। अवकाशप्राप्तिक बादो मुखियाजीपर वैशालीमे आयोजित खुला चौपालक कार्यक्रमकेँ सम्हारि देबाक अनुरोधपूर्ण दवाब छल। अत्यधिक अनुनय-विनयपर गौरीकान्त चौधरी मंचपर अयलाह आ राम नरेश सिंहकेँ दर्शक आ श्रोता सभक समक्ष शानदार परिचय करा प्रशस्त भविष्यक संकेत दैत मंचसँ उतरि श्रोता सभमे सम्मिलित भऽ गेलाह। रेडियो नाटक केर विकासमे रेडियोक पदाधिकारीक रूपमे अवदान देलनि आ रेडियो नाटककार रूपमे अप्रतिम सेवा सेहो कयलनि। लवकुश, सीता, जय-पराजय, नागयज्ञ, कालिदास, विदेह आदि हिनक सुप्रसिद्ध रेडियो नाटक अछि। हिनकर भाको बाबा हास्य श्रृंखला रेडियो नाटक अत्यन्त लोकप्रिय भेल छल। अनेक प्रतिभाक तराशएमे हिनक महत्त्वपूर्ण अवदान रहल अछि। मुखियाजीक समय चौपाल समूहक अन्य भोजपुरी कलाकारमे बुधन भाइ रूपमे पूर्वसँ चलि आबि रहल यशस्वी कला प्रतिभा गोपाल कृष्ण शर्मा छलाह। हिनका विषयमे कहल जाइत अछि जे दिल्लीमे आयोजित रवीन्द्रनाथ ठाकुरक नाटक कमलाकान्तमे नायक कमलाकान्त केर तेहन जीवन्त आ मर्मस्पर्शी अभिनय कयलनि जे राष्ट्रपति राजेन्द्र बाबू भूरि-भूरि प्रशंसा कयलनि आ प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू एतेक धरि कहलनि जे लगैत अछि रवीन्द्रनाथ ठाकुर ई मंचन देखलाक बादे ई नाटक लिखलनि। रेलसँ भेल दुर्घटनामे आहत हिनका लेल पूर्व मुख्यमंत्री अब्दुल गफूर अस्पताल जा चिकित्सक सभकेँ कहलनि जे विश्वक कोनो कोनामे इलाज करा हिनका बचाउ। बिहार सरकार समस्त व्यय वहन करत। मुदा ई संभव नहि भेल। हिनक अवसानोत्तर हिनक घरक सड़क केर नामकरण हिनके नामपर गोपाल कृष्ण शर्मा पथ भेल। ओहि समयक अन्य कलाकारमे मगहीक गौरी बहिन (स्नेहलता पारुथी), रूपा बहिन (शीला डायसन) आ गीता बहिन (पार्वती सिन्हा, पति शत्रुघ्न राजपुरीक मृत्युक बाद स्थायी रूपसँ नियुक्त) छलीह आ धर्मनाथ सिंह सेहो मगहीक कलाकार छलाह। मैथिलीक चेतन भाइ साकेतानन्दजी छलाह। साकेतानन्दजीक बाद आएल मैथिलीक कलाकार छत्रानन्द सिंह झाक नामकरण सभसँ छोट रहबाक कारणेँ स्नेहवश बटुक भाइ राखल गेल। बटुक भाइ मात्र रेडियो नाटके नहि अपितु मैथिली नाटककेँ अभिनव आयाम देलनि। हिनकर अनुपस्थितिमे कैलास झा बटेसर भाइ रूपमे अबैत छलाह।

आकाशवाणीक दरभंगा केन्द्र 2 फरवरी 1976सँ शुरू भेल। मैथिली रेडियो नाटक लेल बहुत नीक समय आएल। नव-नव अनेक रेडियो नाटक तैयार

भेल। लेखक आ कलाकार सभक नव पीढ़ी सोझाँ आएल। चौपाल, भारती, गामघर आ सिंगरहार सन कार्यक्रममे मैथिली रेडियो नाटक सभक प्रसारण प्रमुखतासँ भेल। राजकमल चौधरीक ललका पाग नव कीर्त्तिमान बनओलक। डॉ. नरेश कुमार विकल केर चोखगर खोँच लोकप्रिय भेल। एहिना रवीन्द्रनाथ ठाकुरक उत्तर विद्यापति, काठक पुतोहु चानीक समधि, झगड़ा खतम झगड़ा शुरू आदि; महेन्द्र मलंगियाजीक हमरो जे साम्ब भैया, मामा सावधान, ई जन्म हम व्यर्थ गमाओल, एक टुक पाप, काठक लोक, फटफटिया कक्का, ओ खाली मुह देखै छै आदि; मणिपद्मजीक वधू प्रवेश, गजरथपुरक अंतिम राति आदि; विनोदानन्द झाक सिसकैत कनिञा, अयाची आदि; इन्द्रानन्द सिंह झाक सत्य हरिश्चन्द्र केर रूपान्तरण, योगानन्द सुधीरक महिषासुर मर्दिनी, सीताराम शर्माक राजा सल्हेस, हारि नहि मानब आदि ; ताराचरण झाक हम परिणाम निराशा, पौत्र चाही, प्रतीक्षा करू; अमरेन्द्र मिश्रक युवा संकल्प, माता धरती, उमा शम्भु विवाह, श्रीकृष्ण जन्म; लीलानन्दक अभिशप्त जीवन, सोमदेवजीक लक्ष्मी घर दरिद्रा बाहर, शिवकान्त झाक गरम कोट, डॉ. कमलाकान्त झाक नवीन, डॉ. रामदेव झाक लोचन धाय पेधायल, पूर्णेन्दु प्रशान्तक भोरक भुतिआएल, विश्वनाथ तरुण केर कायाकल्प, चन्द्रशेखर राय कुसुम केर शंकरक पराभव, लक्ष्मीश्वर प्रसाद सिंहक दुर्जन, रुद्रकान्त झाक दुर्गा अवतरण; श्याम भास्कर केर आब हम सूति सकैत छी, अंतिम निर्णय, राम लखन ठाकुरक घून; कीर्त्तिनारायण किरणक कनोजरि, सारंग कुमारक अप्पन लोक (रूपान्तरण), सुशील पाठक केर मधुश्रावणी पावनि, धूमकेतुजीक नोनी, फूलचन्द्र झा प्रवीणजीक गुरुआइन, अमरनाथ मिश्रक खिलतोड़, रंगनाथ दिवाकरक सीकीक डाली मलकोकाक फूल केर नाम छत्रानन्द सिंह झा अपन शोधपूर्ण पोथी मैथिली रेडियो नाटक : उद्भव ओ विकास (मैथिली अकादमी, पटना, 2003 ई., पृष्ठ 39-40)मे आदरक संग नेने छथि। अपन एहि पोथीमे छत्रानन्द सिंह झा 1954मे प्रसारित डॉ. ब्रजकिशोर वर्मा मणिपद्मजीक रेडियो नाटक मिथिलाक बेटी, 1962मे प्रसारित भवानन्दजीक एक्के बापक बेटा, 1963-64मे प्रसारित सुधांशु शेखर चौधरीक पड़ल काज, 1989मे प्रसारित प्रफुल्ल कुमार सिंह मौनजीक लोरिक केर संकलन सेहो कयने छथि। 1953-54सँ 1989-90 ई.क मध्य रेडियो नाटक केर शिल्प, भाषा, संवाद, ध्वनि प्रभाव, संगीत आदिक मर्मसँ अवगतिक लेल ई अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अछि। दरभंगा रेडियो स्टेशनसँ वर्ष 1986मे प्रसारित रंगनाथ दिवाकर केर मैथिली नाटक सीकीक डाली मलकोकाक फूल अत्यन्त लोकप्रिय भेल। कतेको बेर एकर

पुनर्प्रसारण भेल। दरभंगा रेडियो स्टेशन द्वारा प्रसारित किछु सर्वाधिक लोकप्रिय नाटकमेसँ ई एक प्रमाणित भेल। दोसर मैथिली रेडियो नाटक बर्फ पघीलि रहल अछि रहए। तेसर रेडियो नाटक हिन्दीमे छल। रेडियो नाटक केर कलाकारमे हेमचन्द्र मिश्र, महेन्द्र नारायण चौधरी, मीरा झा, राजकुमारी झा, रेणु कुमारी, सरोज चौधरी, सरस्वती झा, सपन मजुमदार, अरुण कुमार झा, बौआजी, उमंगजी प्रभृति कलाकार यश अर्जित कयलनि। साकेतानन्द, सीताराम शर्मा, इन्द्रानन्द सिंह झा, श्याम भास्कर आदि रेडियो नाटक केर लेखन आ प्रस्तुति संग कलाकार रूपमे सेहो लब्धप्रतिष्ठ भेलाह।

नेपालसँ अनेक सफल रेडियो नाटक केर प्रसारण भेल। आजुक समयमे रेडियो केर लोकप्रियतामे भारी ह्रास आएल। तथापि एफ एम चैनल अपन छोट-छोट प्रहसनसँ रेडियो नाटककेँ जियाकेँ रखने अछि। धारावाहिक हास्य आ संदेशप्रधान नाटक सभक प्रसारण एखनो होइत अछि। रमेश रंजन केर धारावाहिक नाटक सङोर बेस लोकप्रिय भेल। यूट्यूबपर नाटक सभक ढेरी लागल अछि। मुदा ई कहएमे कोनो द्वन्द्व नहि अछि जे रेडियो नाटक केर स्वर्णयुग फेर पलटि नहि सकैत अछि। रामेश्वर सिंह कश्यप केर लोहा सिंह सन अपूर्व रेडियो नाटक केर लगभग चारिसए अंक प्रसारित भेल छल। प्रो. रामेश्वर सिंह कश्यप (12.8.1927-24.10.1992) अपन एक भोजपुरी रेडियो नाटक 'तसला तोर की मोर'मे एक पात्र केर रचना कयलनि लोहा सिंह। ई पात्र ततेक लोकप्रिय भेल जे एहि पात्रकेँ केन्द्रीय भूमिकामे राखि अपूर्व, अद्‌भुत आ अविस्मरणीय रेडियो नाट्य शृंखला लोहा सिंह तैयार भेल। ई नाटक लोकप्रियताक समस्त कीर्त्तिमान ध्वस्त कयलक। सप्ताहमे एक दिन प्रसारित होइवला एहि नाटक केर प्रसारण भारत-चीन युद्धक समय रोज होमऽ लागल। एकर प्रसारण काल सड़क सून-मसान भऽ जाइत छल जे एकर लोकप्रियताक परिचायक छल। एहि लोहा सिंह नाटक केर लोकप्रियताक स्थिति यैह छल जे पेकिंग चीनी रेडियोसँ एहन समाचार प्रसारित भेल जे प्रधानमंत्री पं. जवाहर लाल नेहरू पटना रेडियो स्टेशनमे लोहा सिंह नामक एकटा भैंसा पोसने छथि जे बरमहल चीनक देवालमे सींगसँ ढाही लैत अछि, चीनक देवाल ध्वस्त करबाक लेल। ई अपूर्व सम्मान एहि लोहा सिंह रेडियो नाटककेँ भेटल छल। आकाशवाणीसँ प्रसारित भोजपुरीक लोहा सिंह नाटक (प्रो. रामेश्वर सिंह कश्यप), मैथिलीक भाको बाबा नाटक (गौरीकान्त चौधरी 'कान्त') आ मगहीक सोना बाबू नाटक (शत्रुघ्न राजपुरी) जे स्वर्णिम डरीर उकेरित कयलक ओकर परतर फेर

कहियो नहि भऽ सकल। ई सत्य जे नब्बे केर दशकमे दूरदर्शनपर प्रसारित रामानन्द सागर केर कालजयी धारावाहिक रामायणकेँ सेहो एहने लोकप्रियता भेटल छल। मुदा रेडियो नाटक केर ओ स्वर्ण युग आब समाप्तप्राय भऽ गेल अछि।

आब हम डॉ. नरेश कुमार विकलजीक ओहि रेडियो नाट्य त्रिवेणीपर अबैत छी जेकरा बहन्ने रेडियो आ रेडियो नाटकपर एतेक खेरहा सुना देलहुँ। यथार्थमे रेडियो नाटकपर बहुत रास सामग्री हमरा उपलब्धो नहि भेल। छत्रानन्द सिंह झाजीक रेडियो नाटकपर प्रकाशित पोथी लेल कोन-कोन प्रयास नहि कयलहुँ मुदा ओ भेटि नहि सकल छल। जखन ओकरा भेटबाक छल तखन अत्यन्त सहजतासँ भेटल। सुहृद श्री रमानन्द झा 'रमण' नेहपूर्वक ई पोथी उपलब्ध करओलनि। एतदर्थ हुनका प्रति आभार प्रकट करैत छी। छत्रानन्द सिंह झा आब एहि संसारमे नहि छथि मुदा हुनक ई पोथी रूपी यशकाया तऽ अखनो एतऽ अछिए। हमरा एक बेर विकलजीक आग्रहपर हुनका भारतीय साहित्यकार संसद, समस्तीपुरक कार्यक्रममे संगे पटनासँ लऽ जयबाक आ अनबाक सौभाग्य भेटल अछि। ओहि सुच्चा सहृदय कलाकारक पावन स्मृतिकेँ प्रणाम करैत छी। श्री गंगेश गुंजनजीक एहि विषयक भेल काज हुनक शोध-प्रबंध अखन धरि अप्रकाशिते अछि। एहि कारणेँ उपलब्ध नहि भऽ सकल। एकर प्रकाशन उचित अछि। ओना श्री गंगेशजी दूरभाषिक वार्तामे जिज्ञासाकेँ अपन ज्ञान गर्वित मधुर वाणीक आशीषसँ उपकृत कयलनि। एहि लेल हुनको प्रति श्रद्धा निवेदित करैत छी।

विकलजीक एहि 'चोखगर खोँच' पोथीमे तीनटा रेडियो नाटक संकलित अछि— चित्रप्रिया, दासी आ चोखगर खोँच। प्रथम रेडियो नाटक अछि चित्रप्रिया। ई नाटक सुप्रसिद्ध चित्रकार राजा रवि वर्माक जीवन केर एक घटनापर आधारित अछि। भारतीय चित्रकला आ राजा रवि वर्माक विषयमे मैथिलीमे प्रायः कम लोककेँ ज्ञात अछि।

भारतीय चित्रकलाक शुरूआत नारायण ऋषिसँ मानल जा सकैछ जे उर्वीपर उर्वशीक चित्र बना प्राणवन्त कयने छलाह आ बादमे विश्वकर्मा ऋषिकेँ चित्रकलाक शिक्षा देलनि। वज्र नामक शिष्यकेँ मार्कण्डेय ऋषि द्वारा नृत्य, वाद्य, गान आ शिल्पकारीक शिक्षा प्राप्त करबाक सेहो उल्लेख भेटैत अछि। मध्यप्रदेशक भीमबेटका गुफाचित्र, सिंहनपुर गुफाचित्र, जोगीमारा गुफाचित्र, पचमढ़ी गुफाचित्र, राजस्थान केर अलनिया आ कालीबंगाक ईसापूर्व सभक चित्र, रामगढ़ पहाड़ीक सीता बेंगड़ा, सीता लाहड़ा आ लक्ष्मण बेंगड़ाक प्राचीन चित्र, अजन्ता-एलोरा-

बाघ-बादामी आदि गुफा सभक चित्र एवं अन्य लघुचित्र सभकेँ आदिम चित्र मानल जा सकैछ। जैन चित्रकला, पाल चित्रकला, राजपूत चित्रकला, दक्कन आओर गुजरात चित्रकला सभक विकास भेल। मुगल कालमे मीर सैयद अली, साजेद, वासवान, मिस्कीन, दासवथ आदि लब्धप्रतिष्ठ चित्रकार छलाह। निहालचन्द, विचित्र, मनोहर दास, साहेब दीन, रामलाल, सुरजन, श्रीकिशन, डालू, अलीरजा शाहदीन आदि चित्रकार यश अर्जित कयलनि। नाथद्वार, सिक्ख आओर बसोली चित्रकलाक विकास पंद्रहमसँ 18म शताब्दी धरि भऽ गेल छल। आधुनिक युगमे मदुरैक चित्रकार अलाग्री नायडू और राजा रवि वर्माक नाम बेस प्रसिद्ध भेल।

आइ जे हमसभ विभिन्न देवी-देवता सभक चित्र देखैत छी, हुनक आकृतिक अनुमान करैत छी आ हुनका सभकेँ चित्र देखि चिन्हैत छी ओ मात्र एहि त्रिकालदर्शी अमर चित्रकार राजा रवि वर्माक कारणेँ। पहिने देवी-देवताक मूर्त्ति मात्र मन्दिरमे भेटैत छल। आमजन एकर दर्शनसँ वंचित छल। तमाम विरोध, उत्पात, केस-फौदारी (केस सं.135/1896), गिरफ्तारी फेर न्यायाधीश रिचर्ड द्वारा बाइज्जत बरी करबाक घटना सभक सामना करैत ई क्रान्तिकारी अप्रतिम चित्रकार देवी-देवता सभक चित्रकेँ आकार देलनि। बम्बईमे 1894मे आलियोग्राफिक प्रेस स्थापित कऽ देवी-देवता सभक चित्र सर्वसुलभ करओलनि। एहि युगप्रवर्त्तक अमर चित्रकार केर जन्म किलिमन्नूर (केरल)मे 29 अप्रैल 1848केँ माता उमायाम्बा तम्बुरत्ति आ पिता एज्हुमविल नीलकंठन भट्टातिरिपदक घरमे भेल छल। माता तम्बुरत्ति कवयित्री छलीह। हिनक कृति पार्वती स्वयंवरम् केर प्रकाशन राजा रवि वर्मा हिनकर मृत्युक बाद करओने छलाह। त्रावणकोरक महाराज अयिल्यम् तिरुनाल केर संरक्षण हिनका प्राप्त छल। हिनका अपन माम राजराजा वर्मा, एक गुरु रामास्वामी नायडू आओर एक डच चित्रकार थियोडेर जेंसनसँ सामान्य, वाटर कलर पेंटिंग आ आयल पेंटिंग केर चित्रकारीक प्रशिक्षण भेटल छल। राजा रवि वर्माकेँ आधुनिक भारतीय चित्रकलाक जनक आओर पितामह केर विशेषणसँ विभूषित कयल गेल। त्रावणकोरक राजा हिनका राजाक उपाधि देलनि।

राजा रवि वर्माक एक कृति, जाहिमे त्रावणकोरक महाराज अयिल्यम् अपन अनुज संग मद्रासक गवर्नर जेनरल रिचर्ड टेम्पल ग्रिनविले केर स्वागत 1880ई.मे करैत छथि, 1.24 मिलियन डॉलरमे बिकायल छल। विश्वक सभसँ बेसी महँग साड़ी (40 लाख) विवाह पतुपर हिनके 11 चित्र आ रत्नादि सुसज्जित अछि। चेन्नई सिल्क केर मुखिया शिवलिंगम् एकर डिजाइन तैयार कयने छथि।

विकलजीक पहिल नाटक चित्रप्रिया अपन नामेसँ बहुत किछु कहि दैत अछि। राजा रवि वर्माक विवाह मरिवेक्कारा राजपरिवारक राजकुमारी पुरुरुत्ताती तिरूनाल भागीरथी तम्पूरत्तीसँ भेल छल। राजकुमारीसँ हिनक वैवाहिक संबंध सामान्य नहि छल। राजकुमारीकेँ अपन राज्य एवं धन-सम्पदाक गुमान तऽ राजा रवि वर्माकेँ अपन अप्रतिम कला साम्राज्य केर गौरव। दुनूक अपन-अपन गुमान दुनूक दाम्पत्य जीवनकेँ छाउर कऽ देने छल, समस्त सपनाकेँ सुड्डाह कऽ देने छल।

विकलजीक एहि रेडियो नाटक केर आरम्भ पिता-पुत्र केर संवादसँ होइत अछि। एहिठाम पिताक निर्णयपर रवि वर्मा झुकैत छथि एवं अपन पिताक वचनक सम्मान करैत राजकुमारीसँ विवाह करब गछैत छथि। वैह रवि वर्मा पत्नी विशाखाक जिदपर नहि झुकैत छथि आ कलाकारक स्वतंत्रताक जयघोष करैत छथि। रवि वर्मा द्वारा उर्वशी-पुरुरवा विषयक चित्र-निर्माण एहि नाटकक मूलाधार अछि। उर्वशी पुरुरवाक प्रेममे पड़ि गेल छलीह। देवता सभक शर्त्त छल जे जाहि दिन दुनू एक दोसराकेँ अनावृत्त देखि लेत उर्वशीकेँ पृथ्वीलोकसँ स्वर्गलोक आपस आबए पड़त। बहुत दिन भेलाक बादो उर्वशी जखन आपस नहि अयलीह तखन देवतागण उदास भेलाह आ षड्यंत्रसँ हुनका अनबाक कुचक्र रचल गेल। रातिमे उर्वशी-पुरुरवा अनावृत्त छथि। चोरीक हल्लापर दुनूक नीन टूटैत अछि। बाहर अबिते असमय बिजलौका चमकैत अछि आ दुनू एक-दोसराकेँ अनावृत्त देखैत छथि। शर्त्तक अनुसार उर्वशीकेँ जाए पड़ैत अछि। एहि अवसर केर चित्र बनएबाक अछि। संकट अछि जे चित्रकार कोनो अनावृत्त स्त्री देह आइ धरि देखनहि नहि छथि। विवाहित रहितो अविवाहित! पुछलापर पत्नी मना कऽ देलनि मुदा सुगन्धा तैयार होइत छथि। विकलजीक कथा कहबाक कमनीय कला-कौशल केर जतेक प्रशंसा कयल जाय ओ कम्मे होयत। नाटक केर अंतिम श्रव्य सरिपहुँ अद्भुत बनल अछि। रवि वर्माक हिआओ नहि होइत छनि जे सुगन्धाक समक्ष एहन प्रस्ताव राखथि मुदा कथोपकथन केर वैदुष्य अभरैत अछि आ बिनु किछु प्रत्यक्ष कहने स्थिति स्पष्ट भऽ जाइत अछि। केशर आ विशाखाक जाइते सुगन्धा प्रकट होइत रवि वर्मासँ चित्र पूरा करबाक लेल हुनकासँ मुड़ी उठएबाक अनुरोध करैत छथि। अहाँकेँ की कहल जाय? प्रश्नक उत्तरमे कहल गेल सुगन्धाक संवाद-किछु नञि! एक गोट अभागलि! सरिपहुँ भाव-विभोर करैत अछि। बादमे कहल गेल इत्यलम् केर तात्पर्य पुछलापर हुनक उक्ति— फेर नञि! आब कहियो नहि ! साँचे विह्वल करैत अछि।

एहि चित्रप्रिया रेडियो नाटक केर भाव आ भाषा दुनू विलक्षण अछि। रंगमंचीय नाटकमे अभिनेता अपन विभिन्न आंगिक अभिनय, मुद्रा, चेहराक भाव-भंगिमा आ आँखिक विक्षेपादिसँ जे प्रभाव प्रेक्षकपर प्रस्तुत करबामे सक्षम होइत छथि

ओ रेडियो नाटकमे मात्र ध्वनिक आरोह-अवरोह, फुसफुसी, अश्रव्य, मृदु, मध्यम, तीव्र आ शोर ध्वनिसँ संभव अछि। एहिमे ध्वनि-प्रभाव केर महत्त्वपूर्ण अवदान रहैत अछि। सहज मानवी मनोभाव जेना स्नेह-प्रेम, तामस-तिरस्कार, घृणा-नफरत, ममता-मात्सर्य, दुलार-मनुहार आदि केर अभिव्यक्ति लेल मात्र ध्वनि एकमात्र अवयव। एहन स्थितिमे रेडियो नाटक केर संवाद वा ध्वनि सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण अवयव भऽ जाइत अछि। संवाद जँ सभटा भाव केर अभिव्यक्ति दएमे सक्षम नहि भेल तखन श्रोतापर ओ प्रभाव नहि पड़त जे उचित आ आवश्यक होइछ। विकलजीक चित्रप्रिया रेडियो नाटक एहि निकषपर प्राप्तांक नहि अपितु विशिष्टताक संग उत्तीर्ण होइत अछि। छोट-छोट संवाद समस्त भावकेँ श्रोता सभक समक्ष पूर्णतामे रखैत अछि। एहि ठाम विकलजी शब्दक तीनू धर्म-भाव धर्म, चित्र धर्म आ संगीत धर्म केर निर्वहन अत्यन्त कुशलतापूर्वक कयने छथि। एक चित्र निर्माण केर लघुकथाकेँ एतेक दक्षतापूर्वक रेडियो नाटकमे पूर्णताक संग उपस्थापित करएमे विकलजी शब्द शक्तिक सुन्दर संयोजन कयने छथि। विकलजीक दोसर बात जे हमरा चमत्कृत कयलक ओ अछि हिनक मैथिलत्वक आग्रही स्वरूप। केरल केर कलाकारक कथा कहबाक कलेवर मैथिल माटि-पानिसँ निर्मित लगैछ। राजा जनक केर श्रद्धापूर्वक उल्लेख, कोहबर घर आ चतुर्थी रातिक चर्च, मैथिल महाकवि कालिदासक रसपूरित श्रृंगारी पद केर उदाहरण आदिसँ डॉ. नरेश कुमार विकल एहि कलिमन्नूर (केरल)क कथाकेँ जे मैथिल मात्सर्यक शब्द समूहसँ मैथिल धरातल केर अभिनव भाव-वितान देलनि ओ साँचे अपूर्व बनल अछि। सुगन्धा केर उदात्त चारित्रिक ग्राफ जे उच्चता प्राप्त करैत अछि ओ सेहो नूतन अछि। बिनु कोनो मोल नेने, बिनु कोनो प्रतिदानक अपेक्षा कयने जे ओ त्याग करैत छथि से अनुपम अछि। ओ रविकेँ कहैत छथि जे एहि चित्रसँ अहाँ अवश्य अमर भऽ जायब ई हमर अखंड विश्वास अछि। रवि कहैत छथि जे जहिया कतहु एहि चित्र केर चर्च होयत लोक चित्रप्रियाकेँ, ओकर उत्सर्गताकेँ नहि बिसरि सकत। सुगन्धाक कहैत छथि जे चर्च मात्र अहाँक होयत हमर नाम कतहु अंकित नहि रहत। ओहिपर रवि कहैत छथि जे हमर आत्माक सोनहला पृष्ठपर तऽ अवस्से अंकित रहतैक ने। यथार्थमे एहि चित्रसँ चित्रप्रिया चित्रकारक संग स्वयं सेहो अमरत्व प्राप्त करैत छथि। चित्रप्रिया! नारी नेहक नूतन नगीना!

राजा रवि वर्माक जीवनपर रंग रसिया (2014, निर्देशक केतन मेहता) सहित चारिटा फिल्म बनल अछि। फिल्ममे सुगन्धा चित्र निर्माण केर दृश्यक बाद आत्महत्या कऽ लैत छथि। ई कहएमे हमरा कोनो द्वैत नहि अछि जे अपन रेडियो

नाटकमे एहि श्रव्य केर निर्माणमे विकलजीकेँ ओहि फिल्मसँ बेसी सफलता भेटल अछि। विकलजीक एहि मर्मन्तुद दृश्य केर परतर फिल्मक दृश्य नहि कऽ सकल। फाँसीपर लटकल सुगन्धाक शव ओ भावप्रवणता नहि आनि सकल जे विकलजीक छोट-छोट संवाद एहि रेडियो नाटकमे आनि देलक। अनुपम !

दोसर रेडियो नाटक अछि दासी! भारतवर्षक एक यशस्वी सम्राट् ययाति, शुक्राचार्य, हिनक सुता देवयानी, दैत्यराज वृषपर्वा, हिनक बेटी शर्मिष्ठा केर कथा अछि। राजकुमारी शर्मिष्ठा अपन सखी देवयानीकेँ अपन वस्त्र पहिरने देखि तमसायत छथि। विवादमे देवयानी इनारमे खसैत छथि। ययाति हुनका हाथ पकड़ि इनारसँ बाहर करैत छथि। दुनूक पाणिग्रहण होइत अछि। शर्मिष्ठाकेँ देवयानीक दासी बनए पड़ैत अछि।

राजा नहुषपुत्र सम्राट् ययातिक राज्य पृथ्वीसँ स्वर्ग धरि विस्तृत छल। आ. चतुरसेन अपन ग्रंथ वैदिक संस्कृति : आसुरी प्रभावमे लिखने छथि जे स्वर्ग कोनो आन ग्रह-नक्षत्रपर नहि छल। ओ वर्तमान देश इराकमे स्वर्गक अवस्थिति कहैत छथि। एहिसँ ययातिक राज्य विस्तार अकानल जा सकैछ। भारतवर्षमे ययातिसँ पैघ प्रतापी आ प्रणयी राजा नहि भेल। इतिहासमे प्रणयराज रूपमे चर्चित सोलह जनपदमेसँ एक जनपद वत्स केर राजा उदयन सेहो हुनक समता प्राप्त नहि कयलनि। एहि प्रतापी सम्राट् ययाति केर कथा अनेक ठाम आएल अछि। विष्णु सखाराम खाण्डेकर एहि कथासूत्रपर ययाति नामक ग्रंथ रचलनि। भारतीय वाङ्मय केर ई एकमात्र पोथी थिक जाहिपर साहित्य अकादेमी पुरस्कार आ ज्ञानपीठ पुरस्कार दुनू भेटल। ओना ई दुनू सम्मान एक लेखककेँ अवश्य भेटल अछि मुदा दू पोथीपर जेना दिनकरजीकेँ उर्वशीपर ज्ञानपीठ आ संस्कृति के चार अध्यायपर साहित्य अकादेमी। मुदा मनीषी विष्णु सखाराम खाण्डेकरजीकेँ दुनू सम्मान एकहि पोथी ययातिपर भेटल छल। एहि पोथीक मैथिली अनुवाद करैत काल विकलजीकेँ ययाति-देवयानी-शर्मिष्ठाक त्रिकोण ततेक ने आकर्षित कयलक जे ओ एहि विवेच्य रेडियो नाटक दासी केर रचना कयलनि।

शर्मिष्ठा अपन सखी देवयानीसँ एक शर्त्त जीतैत छथि। देवयानी अपन वस्त्र पहिरने शर्मिष्ठाकेँ देखि तमसायत छथि आ वस्त्र मँगैत छथि। विवादमे शर्मिष्ठा देवयानीकेँ बहुत बात-कथा कहि दैत छथि। इनारमे देवयानी खसि पड़ैत छथि। देवयानीकेँ बाहर निकालैत छथि ययाति। एहि ठामक संवाद जे जँ हम फेर खसि पड़ी तखन? हम फेर निकालि लेब के आवृत्तिसँ जे विकलजी दुनूक मध्य स्नेह सूत्र केर सर्जना कयलनि ओ अत्यन्त मनोरम भेल अछि।

हाथ धऽ इनारसँ बाहर करबाक कारणेँ तऽ हमरा सभक विवाह भऽ गेल। ओ ब्राह्मण-क्षत्रिय विवाह केर लोपामुद्राक उदाहरण दैत छथि। विवाह नहि कयलापर कोनो पहाड़क खोहमे आजन्म अहाँक नाम केर माला जपबाक दृढ़ता आदि अवधारणासँ विकलजीक ई रेडियो नाटक रम्य भेल अछि। राजा वृषपर्वाक पुत्रीमोह, शुक्राचार्यक दुर्वासा रूप, देवयानीक शर्मिष्ठासँ प्रतिशोध लैत दासी बनबाक शर्त्त, शर्मिष्ठाकेँ दासीक स्थानपर जोगिन बनबाक निर्णय आ फेर दासी बनबाक स्वीकृति देब आदि प्रसंग सभक अद्‌भुत चित्रण भेल अछि। एहि रेडियो नाटक केर चारिम श्रव्य एकर प्राण थिक। एहिमे शर्मिष्ठाक विशिष्ट आत्मालाप केर संवाद अत्यन्त रमणीय अछि। पाछू कहने रही जे रेडियो नाटक केर प्राण ध्वनि वा संवादे होइत छैक। विकलजी एहि संवादमे अपन नैपुण्यक शीर्षपर आरूढ़ नजर अबैत छथि। अद्‌भुत!

हमसभ जनैत छी जे शर्मिष्ठा सेहो देवयानीक दासीरूपमे हस्तिनापुर गेल छलीह। बादमे ययाति केर प्रिया भेलीह आ तीन पुत्र केर माता भेलीह। शुक्राचार्यक शापसँ प्राप्त ययाति केर वृद्धत्व बदलैन योग्य छल। अर्थात् कोनो पुत्र अपन जवानी पिताकेँ दऽ हुनक वृद्धत्व लऽ सकैत छल। जखन देवयानीसँ उत्पन्न भेल दुनू पुत्र-यदु आ तुर्वसु एवं शर्मिष्ठाक दू पुत्र-द्रुह्यु एवं अनु अपन-अपन जवानीसँ बदलैन करबाक पिताक प्रस्ताव अस्वीकार कयलनि तखन शर्मिष्ठाक कोरपोछू पुत्र पुरु अपन पिताकेँ अपन जवानी देलनि। ययातिकेँ—

भोगा न भुक्ता वयमेव भुक्ताः तपो न तप्तं वयमेव तप्ताः
कालो न यातो वयमेव याताः तृष्णा न जीर्णाः वयमेव जीर्णाः

(हम भोगकेँ नहि, भोग हमरा भोगैत अछि। तप हम नहि कयल स्वयं तप्त भेलहुँ। जहिना काल शेष नहि भेल, हम समाप्त भेलहुँ तहिना तृष्णा जीर्ण नहि भेल हम जीर्ण भेलहुँ) केर ज्ञान भेलापर ययाति अपन पुत्र पुरुकेँ देल वृद्धावस्था आपस लैत पुरुकेँ समस्त भारतवर्षक राजा बना अपने वानप्रस्थ अंगीकार कयलनि। एहि रेडियो नाटकमे मात्र शर्मिष्ठाकेँ दासी बनबाक कथा धरिक प्रसंग आएल अछि।

तेसर नाटक चोखगर खोँच पूर्व केर दुनू नाटक केर प्राचीन भाव-भित्तिसँ इतर आधुनिक काल केर नाटक थिक। पकड़ौआ विवाहपर एतेक सशक्त नाटक कम्मे लिखाओल अछि। पता नहि किएक ई नाटक पढ़लापर हमरा ई नाटक सत्य घटनापर आश्रित लागैत रहल। पुछलापर विकलजी ई स्वीकार कयलनि।

एहि नाटकमे बहुत रास कथा आ पात्र केर समायोजन भेल अछि जे कतहु-कतहु कथाक अविरल गतिकेँ प्रभावित करैत अछि। पकड़ौआ विवाहक बाद वरकेँ कुम्हार जातिक होयबाक बात पता लगलापर सब वरकेँ दुर्गंजन करैत भागबाक लेल कहैत छथि तखन नीतूक संवाद समाजक आँखि खोलएमे सक्षम अछि— बेटी तँ मुहचुरू गाय होइत छैक। ओकरा जाहि खुट्टामे माए-बाप बान्हि दैत छैक, चुपचाप आँखिसँ नोर बहबैत पड़लि-पड़लि जिनगी बितबैत अछि...। जाहि दृढ़तासँ नीतू अपन विजातीय पति संग रहबाक निर्णय लैत छथि ओ प्रगतिशीलताक एक सक्षम डेग अछि। एहिना मरनीक चरित्र द्वन्द्वग्रस्त रहितो अपन भविष्यक लेल सावधान रहैत अछि। मरनीक संवादमे प्रयुक्त शब्द सभ ओहि वर्गक भाषिक लालित्यसँ सराबोर अछि। किछु शब्द सभक आनन्द लेल जाय— बोंगहाक पोता, टिक जरौना, लुत्ती, जोनिढाहा, जोनिपिट्टा, छू-छाप, कोढ़िया, मचरुआ, देह ततारि देब आदिक उपयोग करैत विकलजी जे एहि बिलाइत शब्द सभकेँ अपन छाहरि देलनि अछि ओ प्रशंसनीय अछि। एहि नाटकमे चरित्र विन्यासक दृष्टिसँ बिन्नीक माएक चरित्र अद्‌भुत भेल अछि। शराबी पतिक लेल सदिखन कड़गर रहएवाली आ अवाच्य कथा कहएवाली ई स्त्री अपन पतिपर आएल संकटकालमे सरिपहुँ दुर्गा रूप धारण करैत छथि। किछु संवाद देखल जाय— तोँ छहो हमर सींथक सेनूर! तोरेपर हमर दुनिया हय। हमर दुनू बेटी आ बेटाक तोँ भविष्य छहो। जिनगी छहो। आइ तोँ हमरे लऽगमे रहऽ। आइ हम तोरा कतहु आ किन्हु नहि जाय देबऽ...। तिरपित द्वारा पुलिसकेँ अयबाक बातपर ओ कहैत अछि— हम चकवारक बेटी छियै। गेटपर कत्ता लेने ठाढ़ि रहबै। गेट खोलबै आ जे अयतै गर्दनि छोपैत चलबै। जे होतए से होतै।... तोरा दिशि जे आँखि उठेतै तकर आँखि नोचिकेँ गोटी-गोटी खेलबै। तोहर देहकेँ कियो छू देलकै, रोइयो भग्न केलकै तेकरा देहमे आगि लगा कऽ सुड्डाह कऽ देबै। तोरा लऽग पहुँचैसँ पहिने हमर लहास लाँघए पड़तैक ओकरा सभकेँ। हम अखन जीबैत हतियै। एहि ठाम बिन्नी माएक आत्मविश्वास आ पति परायणताक अद्‌भुत रूप श्रोता सभक समक्ष अबैत अछि। पात्रानुकूल भाषा चयन आ शब्द संयोजन केर अनुपम गुण विकलजीक रेडियो नाटक सभकेँ विशिष्ट बनओने अछि। बाइजी नाचमे टाका उड़ेबाक प्रतिस्पर्द्धाक दृश्य सेहो रमणगर भेल अछि। निर्दोष युवक सभकेँ केसमे फँसा भविष्य बर्बाद करबाक ग्रामीण कुचक्र, गिरफ्तारीक लेल घूस देबाक षड्यंत्र आ अंतमे सत्यपर अडिग पत्रकारक विजय केर वर्णन सेहो सुन्दर भेल अछि। एडीएम आ एसपी साहेबक प्रयाससँ दुनू समूहक

मनोमालिन्य समाप्त होइत नाटक केर सुखद समापन होइत अछि। चोखगर खोँच एक पूर्ण सफल रेडियो नाटक रहल अछि।

हमरा जनैत कोनो रेडियो नाटककार केर रेडियो नाटक सभक प्रकाशित संग्रह रूपमे प्राय: डॉ. नरेश कुमार विकलजीक चोखगर खोँच प्रथम रेडियो नाटक अछि। विकलजीक कोनो कृति केर भूमिका हम लिखी एहि योग्य हम नहि छी। ई हमर सौभाग्य जे विकलजी एहि लेल हमरा कहलनि। एकर बहन्ने हम मैथिलीमे अनुपलब्ध रेडियो विषयक सामग्री, रेडियो नाटक केर इतिहास आओर आरम्भिक चित्रकार सभक संग राजा रवि वर्मापर किछु जानकारी राखि सकलहुँ एतदर्थ हम विकलजीक प्रति आभार संसूचित करैत छियनि। सरिपहुँ हम अपनेक अनुगृहीत छी श्रीमान्! विकलजीक एहि रेडियो नाटक केर त्रिवेणीमे अवगाहनसँ सुधी पाठक निरभ्र होयताह से विश्वास अछि।

[डॉ. नरेश कुमार विकलजीक पोथी 'चोखगर खोँच' केर भूमिका]

धन्यवाद!

मनोलिता प्रकाशन

डॉ. रंगनाथ दिवाकर

कुशेश्वरस्थान(दरभंगा)क सुलतानपुर गाम निवासी माता कृष्णा चौधरी आ पिता जगन्नाथ चौधरीक पुत्ररत्न डॉ. रंगनाथ दिवाकर बिहार सरकारमे अनेक उच्च पद सभकेँ सुशोभित करैत अतिरिक्त सचिव रूपमे सेवानिवृत्त भेल छथि। शुद्ध मेधावादी डॉ. दिवाकर स्नातक विज्ञानमे प्रतिष्ठा, स्नातक कलामे विशिष्टता आ स्नातकोत्तर हिन्दीमे प्रथम वर्गमे प्रथम स्थान प्राप्त कयलनि। 'ब्रह्मभट्ट वैभव', 'सहदेव सुषमा : पं. सहदेव झा स्मृति ग्रंथ', 'मधुबनी दर्पण', 'विरासत मधुबनी', समस्तीपुर जिला गजेटियर 'समेटियर', 'विरासत मुजफ्फरपुर', श्री विजय ना. मिश्र 'प्रवासी साहित्यालंकार'क काव्य संकलन 'प्रवासी प्रतिबिम्ब', 'भामती' आदि ग्रंथ/स्मारिका सभक सम्पादन कयने छथि। स्वतंत्र पोथीमे 'हिन्दी भाषा और साहित्य के विकास में मिथिला का योगदान', 'मिथिला गौरव प्रतीक कन्दर्पी', मैथिली कथासंग्रह 'भखरैत नील रंग', 'सुलतानपुर सौरभ', 'महाकविक महाप्रयाण', 'मिथिला मन्दार मञ्जरी' प्रमुख अछि। साहित्य अकादेमी पुरस्कारसँ सम्मानित पंजाबी कथासंग्रह 'अमर कथा' (ले. गुलजार सिंह संधू)क हिनक मैथिली अनुवाद साहित्य अकादेमीसँ प्रकाशित अछि। शोधमे रूचि रखैत छथि आ मिथिलाक इतिहास आ संस्कृति विषयक अनेक विवादास्पद घुरछीकेँ सफलतापूर्वक सोझरा देने छथि। मिथिलाक इतिहास-दर्शन-साहित्य-संस्कृति विषयक गहन अध्ययन तथा शोध केर तटस्थ वैज्ञानिक दृष्टि डॉ. दिवाकरक वैशिष्ट्य अछि। कन्दर्पीघाटमे मिथिला विजय स्तम्भक निर्माणक लेल अपर ग्रियर्सन रूपमे समादृत छथि। किरण पुरस्कार, मिथिला गौरव, कर्णश्री, मिथिला विभूति, मिथिला रत्न सहित अनेक पुरस्कार/सम्मानसँ अलंकृत छथि।

— *दीप नारायण*

सम्पर्क : फ्लैट सं. 102, अनन्त विकास अपार्टमेंट, वेदनगर, रुकनपुरा, नेहरू पथ, पटना– 800014
मो. : 8709610336, **ईमेल :** *rangnath.chy@gmail.com*

अनुप्रास प्रकाशन
मधुबनी, मिथिला (बिहार) 847 211
+91 94305 83847
anuprasprakashan@gmail.com

आवरण : अनुप्रास इंडिजाइन

मिथिला पारिजात मञ्जरी
₹ 300/-
9 789391 371562
www.anuprasprakashan.com